राबर्ट लुई स्टीवेन्सन के उपन्यास

The Black Arrow : A Tale of the Two Roses

का हिन्दी अनुवाद

ा पाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

गुलाब के दो फूल

पृष्ठभूमि

वसंत के ढलते हुए दिन थे। एक दिन तीसरे पहर टन्सटाल के मोट हाउस (खाई से घिरा हुआ दुर्ग) में अप्रत्याशित रूप से संकट की सूचना देने वाली घण्टियाँ घनघना उठीं। इन घण्टियों की आवाज़ सुनकर जो जहाँ था वहीं से दुर्ग की ओर दौड़ पड़ा। टन्सटाल ग्राम में कुछ ग्रामीण लोग झुण्ड बनाकर खड़े हुए थे और आश्चर्य कर रहे थे कि आखिर किस उद्देश्य से उन्हें दुर्ग में बुलाया जा रहा है?

टन्सटाल ग्राम उस समय राजा छठे हेनरी के राज्य में था और जैसी स्थिति उसकी आज दिखाई देती है, उस समय भी ठीक वैसी ही थी। गाँव में बीस के लगभग घर थे। इन घरों के द्वारों पर देवदार की मोटी-मोटी चौखटें, चढ़ी हुई थीं, ग्राम के चारों ओर एक हरी-भरी पहाड़ी तलहटी थी जो ग्राम से नदी तक चली गई थी। नदी से नीचे की ओर ढलान पर जहाँ पुल था, वहीं पर एक सड़क थी जो पुल को पार करती हुई दूसरी ओर चली गई थी। और पुल से थोड़ी दूर पर ही वन्य प्रदेश प्रारम्भ हो जाता था। इस मध्यवर्ती स्थल पर ही मोट हाउस बना हुआ था, और यह सड़क उससे भी आगे हालीवुड के गिर्जाघर तक चली गई थी। गाँव और जंगल के बीचोबीच कटान किये हुए मैदान में एक गिर्जाघर बना हुआ था। इस ढलान के चारों ओर हरी-भरी वनस्पति लहलहा रही थी जिसमें बट और नव पल्लवयुक्त देवदार के वृक्ष ऊँचा सिर किए हुए खड़े थे।

पुल के निकट ही एक पहाड़ी पर पत्थर का एक 'क्रास' बना हुआ था। यहीं पर आधी दर्जन औरतें और एक लम्बा-तड़ंगा आदमी, जो कि अपनी पत्नी का गुलाबी रंग का पेटीकोट पहने हुए था, इस घण्टी के सहसा बज उठने पर चर्चा करते हुए उतर रहे थे। आधा घण्टा पहिले एक हलकारा इस गाँव से गुजरा था। वह इतनी जल्दी में था कि उसने शराब का एक प्याला भी जल्दी

के कारण घोड़े पर चढ़े-चढ़े ही पिया था। लेकिन इस पुकार का उद्देश्य क्या था इससे वह भी बिलकुल अनभिज्ञ था। यह हलकारा सर डेनियल ब्रैकले का एक मुहरबंद लिफ़ाफ़ा सर ओलीवर ओट्स के पास ले जा रहा था। सर ओलीवर उक्त गिर्जाघर के बड़े पादरी थे और मकान के स्वामी की अनुपस्थिति में मोट हाउस की देख-रेख की जिम्मेदारी उन पर ही होती थी।

और जंगल के दूसरे छोर से एक घोड़े के दौड़ने की आवाज़ आ रही थी। यह पदचाप शीघ्र ही पुल से आने लगी थी। इस घोड़े पर सर डेनियल का पालित पुत्र रिचर्ड शैल्टन सवार था। यह आशा करते हुए कि कम से कम उसे तो इस पुकार का रहस्य विदित होगा, उन ग्रामीणों ने उसका स्वागत किया और उससे प्रार्थना की कि वह उन्हें उस खतरे 'की घंटी का रहस्य साफ़-साफ़ बतलाए। उसने उत्साह के साथ अपने घोड़े की लगाम रोक ली। इस तरुण ने अभी अपनी आयु के अठारह वर्ष भी पूरे नहीं किये थे, उसका चेहरा धूप से लाल पड़ गया था, उसकी आँखें भूरी थीं, हिरन की खाल की उसने जाकेट पहन रखी थी, काली मखमल का उसका कालर था और सिर पर एक हरे रंग की कलगी थी और कमर में इस्पात से बना धनुष लटक रहा था। वह हलकारा प्रतीत होता था कि जैसे कोई बहुत बड़ी खबर लाया हो। शीघ्र ही युद्ध के बादल ग्राम पर मँडराते दिखाई देते थे। सर डेनियल ने प्रत्येक उ. आदमी का आवाहन किया था जो धनुष-बाण लेकर लड़ सकता था या बरछा चला सकता था। ये सभी लोग सर डेनियल के भय से अभिभूत कैटले की ओर तेजी से चले जा रहे थे; लेकिन उन्हें किसके लिए लड़ना था और कहाँ लड़ना था, इसके बारे में उन्हें कुछ भी मालूम नहीं था। डिक भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता था। उसने उन्हें बताया कि सर ओलीवर शीघ्र ही स्वयं उधर आने वाले हैं और बैनेट हैच शस्त्र-धारण कर रहा है, क्योंकि वही आज के दल का नेतृत्व करेगा।

"इस प्रकार तो इस दयालु भूमि का विध्वंस हो जाएगा।" एक औरत ने कहा, "अगर सामन्त लोग इसी प्रकार युद्ध करते रहें तो हलवाहे लोगों को तो कन्द-मूल खाकर हा जीवित रहना पड़ेगा।"

"नहीं तो," डिक ने तत्काल कहा, "हर आदमी जो युद्धक्षेत्र में जाएगा उसे छै पेन्स प्रतिदिन मिलेंगे और हर तीरंदाज को बारह पेन्स मिलेंगे।"

"अगर वह जीवित बच जायँ तो इतनी उजरत में बहुत अच्छी तरह रह सकते हैं", औरत ने फिर कहा, "किन्तु अगर वह मर जायं तो, मेरे मालिक, उनके वारिसों का पुरसाँ हाल कौन होगा ?"

"तो अपने परम्परागत स्वामी के लिए समरक्षेत्र में लड़ते हुए प्राण देने से अधिक श्रेष्ठ मृत्यु और कौन हो सकती है।" डिक ने कहा।

"परम्परागत स्वामी किसी को किस प्रकार ठहराया जाय!" पेटीकोट पहनने वाले उस आदमी ने कहा, "एक बार वालशिंघमों के लिए युद्ध किया था। पिछले दो वर्ष तक हम ब्रायर्ले के अधीन रहे और फिर कैन्डलमास हमारा स्वामी हो गया। अब मुझे ब्रैकले के लिए हथियार उठाने पड़ेंगे। यह कानून हमें सब कुछ करने पर मजबूर करता है; और इसे आप परम्परागत स्वामित्व पुकारते हैं? और अब क्या तो हमें सर डेनियल से वास्ता और क्या सर ओलीवर से—जो कि ईमानदार से अधिक कानून का ज्ञाता है। मेरा तो छठे हेनरी—भगवान उनका मंगल करें—को छोड़कर और कोई भी स्वामी नहीं है। पर वह राजा बेचारा इतना भी नहीं जानता कि कौन-सा हाथ दायाँ और कौन-सा बायाँ है।"

"तुम दुर्भावनापूर्ण वचन कह रहे हो मेरे मित्र," डिक ने जैसे उसे प्रताड़ित किया। "अपने स्वामी के लिए दुर्वचन कहना और मेरे स्वामी राजा पर भी वैसा ही ठप्पा चढ़ाना उचित नहीं। और किंग हेनरी—देवता प्रसन्न हों—अब फिर से अपना उचित विवेक प्रयोग करने लगे हैं और वह मामले का शान्तिपूर्वक फैसला करेंगे। जहाँ तक सर डेनियल का सम्बन्ध है, तुम उनकी अनुपस्थिति में ही बहादुर बन रहे हो। फिर भी मैं तुम्हारी बातें उनके कान तक नहीं पहुँचाऊँगा, परन्तु बेहतर यह है कि तुम बात यहीं समाप्त कर दो।"

"मैं तुम्हारा तो बुरा नहीं मनाता, मास्टर रिचर्ड!" किसान ने कहा, "तुम तो अभी तरुण हो, लेकिन जब तुम पूरे आदमी बनोगे तो देखोगे कि तुम्हारी जेब बिलकुल खाली है। बस मैं कुछ और नहीं कहता। देवता सर डेनियल के पड़ोसियों पर कृपा करें और मरियम उनके अनुगत का मंगल करें!"

"क्लिप्सबी" रिचर्ड ने कहा, "तुम जो कुछ बोल रहे हो उसे कोई सम्मानित आदमी नहीं सुन सकता। सर डेनियल मेरे कृपालु स्वामी और संरक्षक हैं।"

"अच्छा, आओ तुम ही इस पहेली को सुलझाओ।" क्लिप्सबी ने उत्तर दिया, "यह तो बताओ सर डेनियल किस पक्ष से लड़ रहे हैं ?"

"यह तो मुझे मालूम नहीं।" कहते हुए डिक का मुँह थोड़ा रंगीन हो उठा। क्योंकि उन उथल-पुथल के दिनों में उसके स्वामी ने बहुत-से पक्ष बदले थे। और हर पुराने साथी का साथ छोड़कर नये दल में मिलने पर उन्हें उचित पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

"यही तो" क्लिप्सबी ने कहा, "न तुम कह सकते हो, न ही किसी और को मालूम है। क्योंकि वह उन लोगों में से है जो अगर सोने से पहिले लंकास्टर हैं तो सुबह को जागते-जागते अवश्य ही यार्क हो जाते हैं।"

उसी समय पुल पर घोड़े की टापें बज उठीं और इस दल ने घूमकर देखा कि बैनेट हैच अपना घोड़ा दबाए चला आ रहा है। उसका चेहरा लाल था और वह भूरे रंग का आदमी था। उसकी कलाइयाँ वज़नी और उसकी आकृति रौबीली थी। उसने चमड़े की जाकेट पहिनी हुई थी और तलवार और भाला धारण किया हुआ था। उसके हाथ पर इस्पात की दो पट्टी चढ़ी हुई थीं। वह उस इलाके का एक बड़ा आदमी था और युद्ध तथा शान्ति दोनों में वह सर डेनियल का दाहिना हाथ समझा जाता था।

"क्लिप्सबी" वह चिल्लाया "फौरन मोट हाउस की ओर रवाना हो जाओ। और दूसरे मुर्दों को भी उसी दरवाजे से ले जाओ। बायर से तुम्हें जैकेट और सालेट मिल जाएगी। हम लोग रात पड़ने से पहिले कूच कर देंगे। रात्रि-द्वार से गुजरने वालों में सबसे पीछे जो होगा, उसे सर डेनियल इनाम देंगे। सब कुछ ठीक-ठीक समझ रखना। तुम्हें तो मैं जानता हूँ कि किसी को भी कुछ गिनते नहीं हो। नेन्स", उसने उपस्थित स्त्रियों में से एक से कहा, "क्या बूढ़ा एपिलयार्ड शहर में है ?"

"मैं आपको बताती हूँ।" औरत ने उत्तर दिया, "वह अपने खेत में होगा, निश्चय ही।"

इसके बाद वह दल विघटित हो गया। क्लिप्सबी खरामा-खरामा पुल के पार जाने लगा। बैनेट और तरुण शैल्टन साथ-साथ घोड़े पर सवार होकर गाँव में से निकलकर चर्च के निकट से गुज़रते हुए चले गये।

"देखते हो उस चिड़चिड़े बूढ़े को।" बैनेट ने कहा, "वह सारा वक्त गिला करने और हेनरी दी फिफ्थ की बड़ाई करने में ही गुज़ार देगा और काम इतना

भी न करेगा, जितना एक नालबन्द घोड़े के सुम में नाल ठोकने में करता है। और इस सबका कारण यह है कि वह फ्रांसीसी युद्धों में भाग ले चुका है।"

जिस घर की ओर वह बढ़ रहे थे, वह इस गाँव का अन्तिम घर था जो एक ऊँचे स्थान पर बकाइन के वृक्षों से घिरा हुआ था। इसके तीन तरफ खुला हुआ चरागाह था। इस चरागाह की सीमा से वनखण्ड शुरू होता दिखाई देता था।

हैच घोड़े से उतर पड़ा। लगाम उसने खेत के बाड़े पर फैंक दी और उस बूढ़े सैनिक की ओर बढ़ा, जो कि घुटनों से नीचे गड्ढे में बैठकर करमकल्ले के फूल उखाड़ रहा था, और कभी-कभी किसी गीत का टुकड़ा भी गाता जाता था। उसने चमड़े की चीजें पहिन रखी थीं। केवल उसका कनटोप और गुलूबन्द ही फैल्ट की तरह के ऊनी कपड़े का था। उन पर लाल रंग की टाई बँधी हुई थी। उसका चेहरा, रंग और झुर्रियों में अखरोट के छिलके के समान दिखाई देता था। लेकिन उसकी भूरी आँखों में अब भी प्रकाश था और उनकी रोशनी आज भी किसी बाहरी सहायता की मोहताज न थी। वह कानों से बहरा था और इसकी उसे चिंता भी न थी। क्योंकि एगिनकोर्ट के अनुभवी तीरंदाज़ की हैसियत में वह इस मामूली-सी उथल-पुथल पर कोई ध्यान भी देना नापसंद करता था। इसीलिए न तो मोट हाउस की खतरे की घण्टी, और न ही बैनेट और उस तरुण के निकट आने की आहट अपने काम की ओर से उसका ध्यान बटा सकी थीं। वह निरन्तर खोदता जा रहा था और बहुत ही महीन आवाज़ में यह पंक्तियाँ गुनगुना रहा था।

"अब, मेरी प्यारी, अगर तुम कभी आओ,
मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि बस मेरे लिए शोक ही करना।"

"निक एपिलयार्ड" हैच ने कहा, "सर ओलीवर ने तुम्हें स्मरण किया है और यह आदेश दिया है कि इसी घण्टे के अन्दर-अन्दर तुम मोट हाउस के अंदर आकर कमान अपने हाथ में ले लो।"

तब कहीं बूढ़े ने सिर उठाकर ऊपर देखा।

"तुम्हारी उम्र दराज हो, मेरे मालिको!" उसने कुछ भिनभिनाते हुए कहा, "आज मास्टर हैच कहाँ चले?"

"मास्टर हैच कैटले की ओर कूच कर रहे हैं। हर उस आदमी को साथ

लेकर जो घोड़े की पीठ पर बैठ सकता है," बैनेट ने उत्तर दिया, "मालूम होता है कि संग्राम छिड़ने वाला है और मेरे स्वामी ने कुमुक माँगी है।"

"आह, क्या सचमुच ?" एपिलयार्ड ने प्रश्न किया "तो फिर मेरे लिए आप कितनी सेना दुर्ग-रक्षा के लिए छोड़कर जाएँगे ?"

"छै तगड़े आदमी, और प्रोत्साहन देने के लिए सर ओलीवर को छोड़ जाऊँगा।" हैच ने उत्तर दिया।

"मैं रक्षा का भार अपने ऊपर नहीं लूँगा।" एपिलयार्ड ने कहा, "इतनी संख्या तो बिलकुल ही नाकाफ़ी है। कम से कम चालीस आदमी मिलें तो मैं मोर्चा थाम सकता हूँ।"

"क्यों, तभी तो हम तुम्हारे पास आए हैं। तुम्हारे सिवा और कौन है जो इतनी थोड़ी ताकत लेकर मोट हाउस की रक्षा करने में समर्थ हो ?"

"अह, जब चुभन होती है, तो पुराने जूते की याद आती है।" निक ने कहा, "तुम्हारे पास एक भी आदमी है, जिसे घोड़े पर चढ़ने तक का भी सलीका हो, बरछा सम्भालना तो बड़ी मुश्किल बात है। रहा तीरंदाजी के बारे में—सो अगर हैरी दी फिफ्थ जीवित होते तो वह खड़े होकर तुमसे कहते कि मुझ पर तीर चलाओ। दूरी की मार के लिए वह इसी प्रकार तीरंदाजी सिखाया करते थे।"

"नहीं निक, अभी भी ऐसे आदमी हैं, जो शानदार प्रत्यञ्चा चढ़ा सकते हैं।" बैनेट ने कहा।

"प्रत्यञ्चा चढ़ा सकते हैं।" एपिलयार्ड चिल्लाया, "मुझे तो ऐसा एक भी तीरंदाज दिखाई नहीं देता जो मेरे मन माफ़िक निशाना लगा सके। अच्छा तुम्हारी आँखें और तुम्हारा सिर कन्धों के बीच में सुरक्षित है। भला, बताओ तुम लोग शूट (दूर की मार करने वाला) किसे कहते हो।"

"अच्छा," बैनेट ने आस-पास देखते हुए कहा, "अगर यहाँ से जंगल तक मार कर सकें तो उसे लोग शूट कह सकेंगे।"

"हे, यह लौंगिश शूट (थोड़ी-बहुत दूरी पर मार करने वाला निशाना) होगा।" बूढ़े ने अपने कंधे की ओर मुड़ते हुए कहा और फिर अपने माथे के ऊपर कलाई रखकर किसी चीज़ को ग़ौर से देखता रह गया।

"क्यों, किस चीज़ को देख रहे हो ?" बैनेट ने कुछ भर्राए हुए गले से

कहा । "क्या 'हैरी दी फिफ्थ' को देख रहे हो ?"

वह मँजा हुआ तीरंदाज़ पहाड़ी के ऊपर खामोशी के साथ बराबर देखता रहा । ढलवा चरागाह पर सूर्य पूरी तरह से चमक रहा था और कुछ सफ़ेद रंग की भेड़ें इधर-उधर नई निकली हुई पत्तियों को चरती फिर रही थीं । चरागाह पर चारों ओर खामोशी थी, बस केवल दूर पर उस खतरे की घण्टी की आवाज़ गूँजती सुन पड़ती थी ।

"क्या है, एपिलयार्ड !" डिक ने पूछा ।

"क्या हुआ ? बेवक्त चिड़ियाँ क्यों चहचहा रही हैं ।" एपिलयार्ड ने कहा ।

और यह स्पष्ट था कि जंगल के ऊपरी कोने पर—जहाँ से चरागाह की ओर जंगल ने बढ़ना शुरू किया था और बट वृक्षों तक बढ़ता चला आया था—कुछ जंगली चिड़ियों का एक झुण्ड घबराहट में इधर-उधर उड़ रहा था । वह स्थान इस स्थान से, जहाँ वे सब खड़े थे, केवल तीर की मार पर ही था ।

"फिर क्या हुआ अगर चिड़ियाँ उड़ रही हैं तो ?" बैनेट ने कहा ।

"ए" एपिलयार्ड ने उत्तर दिया, "तुम बड़े बुद्धिमान हो जो लड़ाई पर कूच कर रहे हो । ये चिड़ियाँ बड़े अच्छे सन्तरी का काम करती हैं । जंगल के इलाकों में तो इन्हें पहली युद्ध-पंक्ति ही समझना चाहिए । अब तुम देखो, अगर हमारा कैम्प यहाँ पड़ा हो; उधर कुछ तीरंदाज़ हमारी टोह लेने के लिए छिपे हुए हों, तो ऐसी स्थिति में इस स्थान पर ठहरना क्या बहुत बड़ी बुद्धिमानी होगी ?"

"बूढ़े झक्की, हमारे आस-पास कोई भी आदमी क्यों होने लगे हैं । अधिक से अधिक सर डेनियल के आदमी हो सकते हैं जो कि कैटले में हैं । तुम यहाँ पर इस तरह सुरक्षित हो जैसे लंदन के बुर्ज़ में । केवल कुछेक फुदकियों और गौरय्याओं के लिये क्यों हमें घबराहट में डाल रहे हो ?"

"इनकी बातें सुनिए ।" एपिलयार्ड भिनभिनाया, "कितने ही आदमी हैं जो कान खड़े करके रात-दिन इस ताक में घूमते हैं कि तुम पर या मुझ पर निशाना साधकर देखें ? मैं संत माइकेल की कसम खाकर कहता हूँ कि वे हमसे बिल्लियों की तरह नफ़रत करते हैं ।"

"जनाब, वे हमसे नहीं, भली बात यह है कि वे सर डेनियल से नफ़रत करते हैं ।" हैच ने किञ्चित संजीदगी से कहा ।

"हाँ, वह सर डेनियल से नफ़रत करते हैं और उस हरएक आदमी से भी, जो सर डेनियल की सेवा करता है।" एपिलयार्ड ने कहा, "और इस नफ़रत के सिलसिले में वह सबसे पहले बैनेट हैच और बूढ़े निकोलस तीरंदाज़ से नफ़रत करते हैं। अब ज़रा देखो, तुम और मैं यहाँ खड़े हैं और अगर कुछ तगड़े आदमी उधर झाड़ियों में छिपे हों तो बताओ वह अपने निशाने के लिए तुम्हें चुनेंगे या मुझे?"

"मैं शर्त से कह सकता हूँ कि वह तुम्हें ही चुनेंगे!" हैच ने उत्तर दिया।

"मैं अपने कवच के ऊपर पहने जाने वाले कोट से लेकर चमड़े की पेटी तक की कसम खाता हूँ कि वह तुम्हें ही चुनेंगे।" तीरन्दाज़ चिल्लाया, "तुम फुँके हुए लाल पत्थर हो बैनेट, वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों के लिये क्षमा नहीं करेंगे मास्टर! अगर भगवान् ने चाहा तो मैं बहुत शीघ्र उनके तीरों की मार से बाहर निकल जाऊँगा। इस प्रकार उनके वैमनस्य की परिधि से भी बहुत दूर निकल जाऊँगा। मैं बूढ़ा आदमी हूँ और घर पर मेरा गर्म बिस्तर मेरा इन्तज़ार कर रहा होगा। लेकिन तुम्हें यहीं ठहरना होगा और खतरा सिर पर उठाना होगा।"

"टन्सटाल जंगल में तुम्हारे समान झक्की मूर्ख यहाँ कोई और क्या होगा", हैच ने घबराते हुए कहा, "बेहतर यह है कि सर ओलीवर के इधर आने के पूर्व ही अपने शस्त्र धारण कर लो और अब कुछ देर के लिये बक-बक बंद कर दो और अब हैरी दि फिफ्थ से तुम इतना कुछ बात कर चुके हो कि उसकी जेब से उसके कान अधिक सम्पन्न हो चुके होंगे।"

एक तीर तुरही की तरह सन्नाता हुआ आया और एपिलयार्ड के कन्धे की पसली चीरता हुआ आर-पार हो गया। एपिलयार्ड औंधे मुँह अपनी गोभियों पर गिर गया। हैच के मुँह से चीख निकल गई और वह ऊपर उछला और फिर सहसा नीचे झुककर रेंगता हुआ, घर की ओलट लेने के लिये सरकने लगा। इसी बीच डिक शैल्टन बकाइन के वृक्ष की आड़ ले चुका था। उसने अपना धनुष चढ़ा लिया था। और जंगल की ओर निशाना साध लिया था।

लेकिन एक पत्ता भी खड़का नहीं, भेड़ें शान्ति के साथ चर रही थीं और परिंदे फिर से शान्त हो गए थे। लेकिन वह बूढ़ा ढेर हुआ पड़ा था। उसकी पीठ में गजभर लम्बा तीर गड़ा हुआ था, बैनेट हैच घर की बुर्जी की आड़ ले

रहा था और डिक शैल्टन पौधे के पीछे अपने तीर-कमान साधे पड़ा हुआ था।

"क्या तुम्हें कोई संकट दिखाई देता है।" हैच चिल्लाया।

"एक टहनी भी हिलती नहीं है।" डिक ने कहा।

"इसे इसी तरह पड़े रहने देना मैं बड़े शर्म की बात समझता हूँ।" बैनेट हैच ने हिचकते हुए कदमों से घर के पीछे से सामने आते हुए कहा। हालाँकि उसका चेहरा अब भी पीला पड़ा हुआ था, "मास्टर शैल्टन, जंगल की ओर ध्यान रखना, अच्छी तरह से निगाह रखना। देवता हमारी रक्षा करें। कोई बहुत ही सिद्ध तीरंदाज़ मालूम पड़ता है।"

बैनेट हैच ने बूढ़े तीरंदाज़ को अपने घुटनों पर उठा लिया। उसके प्राण अभी तक निकले नहीं थे। उसके चेहरे पर जीवन के चिह्न अभी तक स्पष्ट थे और उसकी आँखें मशीन की तरह खुलती थीं और बन्द हो जाती थीं। और प्राणान्तक पीड़ा से उसकी मुखाकृति विकारयुक्त दीख पड़ती थी और उसका मुँह बहुत भयानक दिखाई देने लगा था।

"क्या तुम्हें सुनाई देता है, निक !" हैच ने पूछा, अपनी यात्रा समाप्त करने के पूर्व तुम्हारी कोई इच्छा हो तो बताओ, भाई !"

"ये तीर मेरी गर्दन में से निकाल दो और मुझे मरने दो और मे'''री का नाम !" एपिलयार्ड ने उसास ली, "अब मैं इंगलैंड से विदा लेता हूँ, तीर को निकाल लो।"

"मास्टर डिक" बैनेट ने कहा, "यहाँ आओ और इस तीर को खींचकर निकालो। अब यह शीघ्र ही हम से विदा हो जाएगा। बेचारा गुनहगार !"

डिक ने अपनी कमान कन्धे पर से उतारकर रख दी और भरपूर ज़ोर लगा कर तीर को एपिलयार्ड के कन्धे से खींच लिया। तीर के निकलते ही रक्त का फव्वारा छूट पड़ा। एपिलयार्ड के पैर पेट की ओर सिकुड़ आए। उसने अन्तिम बार ईश्वर का नाम लिया और उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। उन गोभियों में बैठकर हैच ने घुटने टेक कर उसकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की। लेकिन शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए भी उसके मस्तिष्क में द्विविधा थी और वह कनखियों से जंगल की ओर उसी दिशा में देखता रहा था, जिधर से तीर आया था। प्रार्थना समाप्त होने पर उसने अपना फौलादी हस्तत्राण खोला और अपने मस्तक पर आया हुआ पसीना पोंछा। भय के कारण उसका चेहरा

पसीने से तरबतर हो चुका था।

"ए" उसने कहा, "अब अगली बार मेरी ही बारी है।"

"यह कृत्य किसने किया है बैनेट ?" रिचर्ड ने पूछा, जो कि अभी तक तीर को हाथ में लिए खड़ा था।

"यह तो देवता ही जान सकते हैं ?" हैच ने कहा, "यहाँ आस-पास में चलीस-पचास ईसाई आत्माएँ ऐसी होंगी जिन्हें हम दोनों ने बेघर-बार कर दिया है और उनका माल-दौलत हड़प ली है; वह और मैं। उसने अपने किये का भुगतान कर लिया और अब मेरी बारी शेष है। सर डेनियल के दिन बड़ी तेजी से निकट आ रहे हैं।"

"यह बड़ा अद्‌भुत तीर है।" छोकरे ने अपने हाथ वाले तीर पर गौर से देखते हुए कहा।

"मैं धर्म की सौगंध खाकर कहता हूँ, काला और काले डैने वाला। यह तीर हमारे लिए एक महान् अपशकुन का चिह्न है। यह काला चिह्न तो मौत का पैग़ाम है। उस पर कुछ न कुछ लिखा होगा, अवश्य। जरा खून साफ़ करके देखो तो, क्या देखा ?"

"एपिलयार्ड को जॉन एमेण्ड आल की ओर से।" शैल्टन ने पढ़ा "इसका क्या अर्थ होना चाहिये ?"

"नहीं, मैं इस चर्चा को पसन्द नहीं करता" हैच ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "जॉन एमेण्ड आल ? यह उन्हीं में से किसी गुण्डे का नाम होगा, जिन्होंने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया है। लेकिन अब क्या यहाँ अपने सिरों को निशाना बनाने के लिए खड़ा रहना है। मास्टर शैल्टन, तुम उसके घुटने पकड़कर उठाओ और मैं कन्धे पकड़ता हूँ। हमें चाहिए कि उसके घर में उसको लौटा दें। सर ओलीवर के लिये यह भयानक आघात होगा। उसे मरा देखकर उनका रंग काग़ज़ की तरह सफ़ेद पड़ जाएगा और वह हवाई चक्की के समान तेजी से प्रार्थना करेंगे।"

उन्होंने तीरंदाज़ को उठा लिया और उसके घर की ओर ले चले। इस घर में वह मुद्दत से अकेला ही रहता था। उन्होंने उसे भूमि पर ही लेटा दिया और उसके हाथ-पैर सीधे कर दिए।

एपिलयार्ड का मकान साफ़ और नंगा था। एक पलंग पड़ा था जिस पर नीला पलंगपोश बिछा हुआ था। एक कप-बोर्ड, एक बड़ा बक्स, जुड़े हुए स्टूलों

का एक जोड़ा, और चिमनी-कार्नर में एक मेज़ पड़ी हुई थी। दीवार पर एक दीवारगीरी थी जिस पर यह बूढ़ा तीरन्दाज़ अपने हथियार और कवच वगैरह टाँग रखता था। हैच उत्सुकता के साथ इधर-उधर देखने लगा।

"निक के पास रुपया था।" हैच ने कहा "उसने अभी तक कम से कम तीन बीसी पौण्ड बचा लिए होंगे। मेरी इच्छा थी कि मैं इस रहस्य पर प्रकाश डाल सकता। जब कभी कोई प्यारा दोस्त आपसे विलग हो तो सब से आवश्यक कार्य उसका वारिस बनना है, मास्टर रिचर्ड ! अब यह बड़ा बक्स देखना चाहिए। मैं एक बहुत बड़ी शर्त लगा कर कहता हूँ कि उसके इस विशाल बक्स में एक सोने का बुशेल ज़रूर होगा। वसूल करने में उसका हाथ सख्त था और वसूल किए हुए को रोक रखने में उससे भी अधिक सख्त। अब भगवान उसकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। लगभग अस्सी वर्ष तक वह अपने पैरों पर चला और वसूल करता रहा और अब बेचारा कमर के बल पड़ा है। अब उसके सब पाप धुल गए हैं। और उसकी चल सम्पत्ति किसी अच्छे मित्र को उत्तराधिकार में मिल जाय—तो मेरा ख्याल है—स्वर्ग में उसकी आत्मा को और भी अधिक प्रसन्नता होगी।"

"आओ तो हैच", डिक ने पुकारा, "उसकी पथराई दृष्टिहीन आँखों का तो ख्याल करो। क्या तुम बेचारे को उसकी आँखों के सामने ही लूटोगे ? मैं कहता हूँ वह उठकर बैठा हो जायगा।"

हैच ने क्रास को कई बार घुमाया, ताकि आस-पास जो कुछ भी अनिष्टकारी तत्व हो उसका निदान हो जाय। लेकिन अब वह पूर्णरूप से अपनी स्वाभाविक मनःस्थिति में लौट आया था और अब उसे आसानी से उसके अभीप्सित से वंचित करना सरल नहीं था। अविलम्ब ही वह उस बक्स को तोड़ने का उपक्रम करने लगता यदि दरवाज़ों पर खटका न होता और उसे खोलकर एक लम्बा, तगड़ा, शानदार, लाल, भूरी और काली आँखों वाला लगभग ५० वर्ष का आदमी अन्दर दाखिल न हो गया होता। उसने काली पोशाक पहिन रखी थी।

"एपिलयार्ड", नवागन्तुक ने पुकारा, ज्यों ही वह अन्दर आया, लेकिन अन्दर का दृश्य देखकर वह अवाक् खड़ा रह गया, "ओ, मरियम !" वह चिल्लाया, "देवता हमारी रक्षा करें। क्या हुआ है यह सब।"

"यह बहुत ही विद्रूप व्यंग हुआ श्रीमान् पादरी साहब।" हैच ने प्रसन्न मुद्रा

में कहा, "उसके अपने घर पर ही यह निशाना लगा। अगर दुनिया की किव-दन्तियाँ सही हैं तो अब उसे न लकड़ी की कमी रहेगी और न कोयले की।"

सर ओलीवर जुड़े हुए स्टूल की ओर बढ़ गए और बहुत शिथिल-से उस पर बैठ गए।

"ओह, कितनी बारीक नाप-तोल है, कितना बढ़िया निशाना है।" पादरी साहब सिसकने लगे और जल्दी-जल्दी कुछ प्रार्थना-मंत्र उच्चारने लगे।

इसी समय बैनेट ने प्रतिष्ठा-प्रदर्शन के लिए अपना हस्तत्राण उतारा और कोर्निश की।

"आह बैनेट !" पादरी ने अपनी भावनाओं पर अपेक्षाकृत काबू करते हुए कहा, "यह क्या है, किस दुश्मन ने यह सब किया है ?"

"सर ओलीवर, यह तीर आपके सम्मुख उपस्थित करता हूँ। दोनों ओर इस पर कुछ लिखा हुआ भी है" डिक ने कहा।

"नहीं, नहीं" पादरी साहब चिल्लाये, "यह कोई बहुत संकट का सूचक रहस्य है। जॉन एमेण्ड आल ! तो वाइक्लिफ के अनुयायियों का शब्द है। जहाँ तक शुभाशुभ का प्रश्न है, यह तो अनिष्ट का सूचक है। मुझे यह काला तीर बिलकुल ही अच्छा नहीं लगता। अब तो हमें अपनी आँखें खोल लेनी चाहिएँ। यह क्या है ? तुमने कुछ सोचा है बैनेट ! हमारे चारों ओर कितने शत्रु घिरते आ रहे हैं। और यह इन सभी से दुर्धर्ष कौन होना चाहिए ? सिमनेल ? लेकिन मुझे तो विश्वास नहीं होता। तो फिर वालशिंघम ! नहीं, वह अभी इतने नहीं टूटे हैं। वह आज भी सोचते हैं कि कभी दिन फिरेंगे तो हम पर शासन करेंगे। लेकिन साइमन माल्सबरी भी एक था। तुम्हारा क्या विचार है, बैनेट ?"

"आप श्रीमान् क्या सोचते हैं ?" बैनेट ने उत्तर दिया, "एलिस डकवर्थ के बारे में।"

"नहीं, बैनेट बिलकुल नहीं, वह नहीं।" पादरी ने कहा, "यह जान रखो कि विद्रोह कभी नीचे से नहीं उठता—सारे ईमानदार इतिहासकारों ने अपनी राय इसी प्रकार लिखी है। विद्रोह ऊपर से नीचे को सफर करता है और जब डिक, टाम और हैरी (सामान्य जनता) अपना बरछा उठाते हैं तो उन्हें यह विवेक नहीं होता कि उससे किस मालिक को अधिक लाभ पहुँचता है। अब सर डेनियल ने जब से महारानी के दल से मैत्री कर ली है तब से यार्किस्ट लार्ड उनके शत्रु हो गये हैं। वहाँ से, बैनेट, यह प्रहार हुआ है। क्या मसलहत इसमें

है—यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन इस दुःखद घटना का स्रोत वहीं है, यह मैं स्पष्ट अनुमान लगा सकता हूँ !"

"क्या सर ओलीवर, आप यह सुनना पसंद करेंगे " बैनेट ने कहा,"कि इस देश में भी लोहा इतना गर्म हो चुका है कि बस अब उससे आग ही निकलने वाली है। काफ़ी दिन से यह ग़रीब एपिलयार्ड भी यही कहता आ रहा था। और आपकी आज्ञा से मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि लोगों की भावना हमारी ओर से इतनी बिगड़ चुकी है कि उसे उभाड़ने के लिए न किसी यार्किस्ट की जरूरत है और न लंकास्टर की। आप मेरे सीधे-सादे विचारों को सुन लीजिए। आपने, जो कि धर्म का काम करते हैं और सर डेनियल ने, जिनमें किसी भी हवा में अपनी किश्ती खेकर जाने का सामर्थ्य है—आप लोगों ने अनेक ग़रीबों का माल हड़प लिया है। अनेकों को सूली पर लटका दिया है। आप लोगों का कैसा अन्त होगा, मैं यह कल्पना कर सकता हूँ। आज आपका कानून पर अधिकार है इसलिए सोचते हैं कि सब कुछ ठीक है। लेकिन जिन ग़रीबों को आपने सताया है वे और भी क्रुद्ध होते जा रहे हैं और जब यह काला तीर चलेगा तो अगर मेरी ओर बढ़ा तो पहिले आपकी छाती चीर कर आएगा।"

"नहीं बैनेट, तुम गलती कर रहे हो। तुम्हें अपनी भूल सुधारकर प्रसन्न होना चाहिए।" सर ओलीवर ने कहा, "तुम झक्की हो बैनेट, बातूनी, गाल बजाने वाले, तुम्हारा मुँह तुम्हारे कानों की अपेक्षा भी अधिक चौड़ा है, इसे ठीक करो बैनेट, इसे ठीक करो !"

"नहीं, मैं कुछ भी ठीक न करूँगा। जैसी आपकी मर्जी हो वैसा ही करते रहें।" वेतन-भोगी योद्धा ने कहा।

पादरी अपने स्टूल से उठा और अपनी गर्दन के पास लटकने वाले लिखने के डिब्बे से उसने मोम निकाला और सर डेनियल की सत्ता की उस बड़े बक्स पर मोहर लगा दी। कपबोर्ड पर भी—। बैनेट यह सब देखकर मन ही मन असन्तुष्ट था। फिर सारा दल उस घर से निकलकर अपने घोड़ों पर सवार होने के लिए बाहर आ गया।

"हमें बहुत पहले चल पड़ना चाहिए था, सर ओलीवर," बैनेट हैच ने सर ओलीवर के लिए रकाब सँभालते हुए कहा।

"ठीक है बैनेट, लेकिन परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं।" पादरी ने उत्तर

दिया, "अब एपिलयार्ड नहीं रहा—ईश्वर उसकी आत्मा को शान्ति दे—जो कि दुर्ग-सेना की कमान सँभाल लेता। मैं तुम्हें अपने पास रख लूँगा। काले तीरों के वक्त में कोई तो हो जो मुझे चैन की साँस लेने योग्य रखे। 'वह तीर जो छिन में छोड़ा जाता है' ईसू का कहना है'''मुझे उसका संदर्भ याद नहीं है। मैं बड़ा बुद्धू पादरी हूँ जो सांसारिक झंझटों में फँस चुका है। अच्छा चलो अब चलें, मास्टर बैनेट। आदमी चर्च में पहुँच चुके होंगे।"

इस प्रकार वह घोड़ों पर चढ़कर चर्च की ओर बढ़ चले। उनकी पीठ पर वायु के झोंके टकरा रहे थे जिससे पादरी के चोगे का पिछला छोर हवा में फहरा उठता था। जैसे ही ये लोग आगे बढ़ रहे थे, पीठ पीछे बादल भी उठते आ रहे थे और अस्तोन्मुख सूर्य का अस्तित्व उनसे पूर्णतः ढक चुका था। वह अब तक तीन घरों को पार कर चुके थे। दूर-दूर पर बिखरे इन्हीं चन्द मकानों से मिलकर यह पुरवा बना है जिसे टन्सटाल का गाँव कहते हैं। जब वह मोड़ से गुजरे तो सामने चर्च दिखाई देने लगा। इसके चारों ओर दस या बारह मकानों का समूह था और चर्च के सहन से आगे बस चरागाह ही था। द्वार पर कुछ आदमी इकट्ठे हो रहे थे। कुछ घोड़ों पर चढ़े हुए थे और कुछ घोड़ों की लगाम पकड़े खड़े थे। उनके पास विभिन्न प्रकार के हथियार थे। किसी के पास भाला, किसी के पास फर्सा, किसी के पास तीर-कमान और कोई हल में चलने वाले घोड़े पर ही चढ़ा हुआ था। हलवाले घोड़े अभी भी हल की धूल से सने हुए थे। यह लोग ठेठ देहात के थे। और अच्छे योद्धा सर डेनियल के साथ मैदान में लड़ रहे थे।

"हमें बहुत विलम्ब नहीं हुआ है, हालीवुड के धर्म-चिह्न की विजय हो। सर डेनियल इस शक्ति को देखकर अवश्य ही प्रसन्न होंगे।" पादरी ने अन्दर-ही अन्दर आदमियों की गणना करते हुए कहा।

"देखो उधर कौन गया। अगर तुम सचमुच के आदमी हो तो ठहर जाओ।" बैनेट ऊँची आवाज़ में चिल्लाया।

एक आदमी चर्च के सहन में से खिसक रहा था। इस आवाज़ को सुनकर भी उसने छिपने का प्रयत्न करने की अपेक्षा जंगल की ओर भाग खड़ा होना ही उचित समझा। द्वार पर खड़े लोग जिन्हें इस अजनबी की उपस्थिति का बिलकुल भी पता नहीं था, एकदम जाग पड़े और विचलित हो उठे। जो नीचे

खड़े थे, उन्होंने रकाब में पैर डाल दिये और जो चढ़े हुए थे वह उसका पीछा करने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन उन्हें पवित्र भूमि का चक्कर काटकर पीछे आना था, इससे यह प्रतीत होता था कि उनका शिकार हाथ से निकल जाएगा। हैच जो बड़ी ऊँची अवाज में कसमें खा रहा था अपने घोड़े पर सवार होकर ज्यों ही उसे दौड़ाने लगा त्यों ही वह बिगड़ खड़ा हुआ और इस तरह दुलत्तियाँ उछालने लगा कि हैच धूल चाटने लगा। हालाँकि वह फौरन ही सँभल गया और लगाम उसके हाथ में आ गई लेकिन समय काफ़ी निकल गया था और— भगोड़े ने काफ़ी दूरी पार कर ली थी। और उसे गिरफ़्तार कर लेने की अब कोई आशा शेष न रह गई थी।

इन सबमें सबसे बुद्धिमान डिक शैल्टन था। भगोड़े के पीछे व्यर्थ की दौड़ लगाने की अपेक्षा उसने अपनी कमान चढ़ा ली थी और वह हैच से पूछ रहा था कि क्या वह उसपर निशाना लगाए।

"तीर चलाओ, जल्दी चलाओ।" पादरी खूनी की-सी आवाज़ में चिल्लाया।

"उसे निशाने पर बैठा लो, मास्टर डिक!" बैनेट ने कहा, "पक्के सेब की तरह से ऊपर से जमीन पर गिरा दो।"

वह भगोड़ा अपनी सुरक्षा की जगह से केवल कुछ छलांग इधर था। लेकिन चरागाह का यह अन्तिम छोर बहुत ऊँची चढ़ाई के बाद पहाड़ी के ऊपर पहुँचता था और वह आदमी अब अपेक्षाकृत सुस्ती से दौड़ने लगा था। हालाँकि संध्या का धुँधलका छाया हुआ था और भागने वाला सीधा नहीं दौड़ रहा था किन्तु डिक का निशाना इन असुविधाओं को कुछ भी गिनता न था, पर फिर भी निशाना मुश्किल तो था ही। जैसे ही उसने कमान चढ़ाई उसके हृदय में भगोड़े पर दया आ गई और साथ ही यह संदेह भी पैदा हो गया कि उसका निशाना अवश्य चूक जाएगा। उसके अन्तर में एक संघर्ष उठ खड़ा हुआ।

आदमी के ठोकर लगी और वह गिर पड़ा। हैच और उसका पीछा करने वालों ने बड़े जोर की हर्ष ध्वनि की, लेकिन वह उछल सकने से पहिले ही अपनी आवाज़ का परिमाण आँक रहे थे। आदमी बड़े आहिस्ते से गिरा था और बड़े आहिस्ते से ही वह उठ खड़ा हुआ। वह पीछे घूमा और उसने अपनी टोपी हवा में घुमाई और अगले ही क्षण वह घोर जंगल में खो गया।

"भगवान करे उसे प्लेग मारे।" बैनेट चिल्लाया, "उसके पाँव चोरों के हैं। सन्त बैनवरी की कसम, किस तरह दौड़ता है लेकिन मास्टर शैल्टन, तुमने उसे छोड़ दिया। उसने तुम्हारे अन्तर्द्वन्द्व का लाभ उठा लिया। मैं उससे हसद नहीं रखता।"

"नहीं, लेकिन चर्च में वह क्या लेने आया था।" सर ओलीवर ने पूछा, "मुझे डर है कि चर्च में भी कोई आपत्ति खड़ी की गई होगी। क्लिप्सबी, भले आदमी, घोड़े से नीचे उतर आओ और अच्छी तरह से कब्रगाह में देख-भाल करो।"

क्लिप्सबी थोड़ी ही दूर गया था कि वह एक कागज़ लेकर लौट आया। "यह लेख चर्च के द्वार पर पिन किया हुआ था।" उसने पर्चा पादरी के हाथ में देते हुए कहा, "मुझे तो और कुछ मिला नहीं, पादरी साहब!"

"आज मैं चर्च के अधिकारों की बात कहता हूँ", सर ओलीवर चिल्लाया। "इससे एक धर्म-स्थानकी पवित्रता नष्ट होती है। सम्राट् की प्रसन्नताके लिए अथवा अपनी जागीर के स्वामी के लिए भी कोई चर्च के द्वार पर इस तरह कागज़ चिपका जाय! नहीं, इससे गिर्जा अपवित्र होता है और लोगों को इससे भी कम अपराधों पर जीवित जला दिये जाने की सजाएँ मिली हैं, लेकिन यहाँ हमारे पास क्या है। रोशनी तेजी के साथ धीमी पड़ रही है। गुड मास्टर रिचर्ड, तुम्हारी आँखें अभी जवान हैं—जरा पढ़कर बताओ तो—इसमें क्या लिखा है?"

डिक शैल्टन ने कागज़ अपने हाथ में ले लिया और उसे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगा। वह सब कुछ बड़े ही भौंडे छन्द में लिखा था। शब्द बहुत ही अशुद्ध थे और लिखावट बहुत ही भद्दी थी। जो कुछ वह था उसका सारांश यह था :

"मेरी पेटी में चार काले तीर हैं,
उन चार ग़मों के प्रतिशोध के लिये जो मैंने सहे हैं,
चार उन बदमाश लोगों के लिए,
जिन्होंने मुझे समय-समय पर सताया है,

एक छूट चुका है और एक जल्द छूटेगा,
बूढ़ा एपिलयार्ड मर चुका है,

एक मास्टर बैनेट हैच के लिए
जिसने लाल पत्थर, दीवारें और छप्पर सभी कुछ जलाए,

एक सर ओलीवर ओट्स के लिए,
जिसने सर हैरी शैल्टन का गला काटा था,

सर डेनियल आपके हिस्से में चौथा आएगा,
इससे हम लोगों का अच्छा मनोरंजन होगा,

तुममें से प्रत्येक को अपना हिस्सा मिलेगा,
एक काला तीर, एक काले दिल में,
तुम अपने घुटनों पर गिरकर ईश्वर से प्रार्थना कर लो,
तुम मृतक चोर हो, निश्चय ही और बस,

जॉन एमेण्ड आल
ग्रीनवुड का निवासी
और उसके साथी।

पुनश्च : हमारे पास और भी तीर हैं और उनका प्रयोग तुम्हारे अनुयायियों पर किया जायगा।

"अब तो दान-दक्षिणा करने का दिन आ गया समझो।" सर ओलीवर वेदना के स्वर में बोले, "दोस्तो ! यह दुनिया बड़ी नीच है। और उत्तरोत्तर यहाँ अनाचार बढ़ता जाता है। मैं हालीवुड के क्रास पर हाथ रखकर कसम खाता हूँ कि मेरा उस दिवंगत नाइट की मृत्यु से क्रिया अथवा उद्देश्य किसी भी रूप में कोई सम्बन्ध नहीं है, मैं तो एक शिशु के समान निर्दोष हूँ। और उन्होंने एक गलती और की है। उसका गला भी नहीं काटा गया था, क्योंकि अब उसके प्रमाण मौजूद हैं।"

"इस सबकी आवश्यकता नहीं है, पादरी महोदय" बैनेट ने कहा, "यह प्रलाप अत्यन्त अप्रासंगिक है।"

"नहीं, मास्टर बैनेट, ऐसा नहीं है। तुम अपनी हैसियत का ख्याल रखो कृपा करके", पादरी ने उत्तर दिया, "मैं अपनी निर्दोषिता सिद्ध कर दूँगा; मैं

किसी प्रकार भी ग़लतफहमी के लिए अपने प्राणों से हाथ न धोऊँगा। मैं सभी लोगों को साक्षी रखकर कहता हूँ कि मेरा दामन इस मामले से बिलकुल साफ़ है, मैं तो उस समय मोट हाउस में भी नहीं था। मुझे तो ६ बजे ही कहीं कोई सूचना लेकर भेज दिया गया था।"

"सर ओलीवर," हैच ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "चूँकि आप यह उपदेश बन्द नहीं करेंगे, इसलिए मैं दूसरा उपाय उसे बन्द करने का करता हूँ। गोफे, तुरही तो बजाओ।"

और ज्योंही तुरही बजाई जाने लगी, वह स्तम्भित पादरी की ओर आया और कोई बात बड़े ज़ोर से उसके कान में कह गया।

डिक शैल्टन ने पादरी की आँखों को अपनी ओर एक अजीब अन्दाज़ में घूमते हुए देखा। शैल्टन के लिए बेचैनी का कारण था क्योंकि सर हैरी शैल्टन उसका ही अपना पिता था। लेकिन उसने एक भी शब्द नहीं बोला और उसकी मुख-मुद्रा निर्विकार बनी रही।

हैच और सर ओलीवर काफ़ी देर तक इस बदली हुई स्थिति पर बात करते रहे। उन्होंने दस आदमी किले की रक्षा के लिए और दस आदमी पादरी को जंगल के पार पहुँचाने के लिए भी नियुक्त कर दिए। इसी बीच चूँकि बैनेट को पीछे ही रह जाना था इसलिए कुमुक की कमान डिक शैल्टन के सुपुर्द कर दी गई। वास्तव में सैनिकों के चुनाव में कोई संजीदगी नहीं प्रयोग की गई थी। वह सभी आदमी सुस्त, कामचोर और युद्धकला में निहायत निकम्मे थे, जबकि डिक न केवल लोकप्रिय था वरन् वह अपनी आयु से भी अधिक परिपक्व था और अपनी जिम्मेदारी समझता था। हालाँकि उसका सारा यौवन उस ऊबड़-खाबड़ देहात में बीता था लेकिन सर ओलीवर और हैच से उसे पढ़ने-लिखने की शिक्षा मिल चुकी थी। उसने अस्त्र-शस्त्र संचालन और कमान करने में भी काफ़ी सामर्थ्य प्रदर्शित किया था। बैनेट का व्यवहार उसके प्रति सदैव ही कृपालुतापूर्ण रहा था। बैनेट उस किस्म के लोगों में से था जो क़ब्र के समान अपने शत्रुओं के लिए बेरहम था, लेकिन अपने मित्रों, साथियों के लिए वह अत्यन्त ईमानदार और उदार था। जिस समय सर ओलीवर तेज़ी के साथ अपने मालिक सर डेनियल ब्रैकले को अन्त समय में घटने वाली घटनाओं का ब्यौरा लिखने लगे तो इसी बीच हैच, डिक शैल्टन का उत्साह बढ़ाने और उस

मुहिम पर उसके लिए शुभ कामना करने चला आया ।

"तुम्हें यहाँ से बहुत दूर जाना है, मास्टर शैल्टन" उसने कहा, "पुल पर से घूमकर जाना है । किसी बहुत विश्वासी आदमी को अपने से ५० कदम आगे रखना ताकि आपत्ति के समय सर-सन्धान करने का अवसर तो मिल जाय । जब तक जङ्गल के पार न हो जाओ, जरा सम्भलकर जाना । अगर बदमाश तुम पर आक्रमण करें तो घोड़े को आगे की तरफ़ एड़ लगा देना । रुकने से कुछ न बनेगा और हमेशा सबसे आगे रहना । मुड़कर मेरी तरफ़ नहीं देखना । तुम अपनी जिन्दगी को प्यार करते हो । टन्सटाल में अब कोई सहायता मिल नहीं सकती और अब चूँकि तुम राजाओं से सम्बन्धित युद्ध के लिए कूच कर रहे हो, और मैं यहाँ सङ्कट का सामना करने के लिए पीछे रह गया हूँ और सन्तों की कृपा बनी रहे, न जाने हम फिर कभी एक दूसरे से मिल भी पायेंगे अथवा नहीं । मैं तुम्हें एक अन्तिम सलाह देता हूँ, सर डेनियल पर निगाह रखना; वह तनिक भी विश्वसनीय नहीं है । इस काले पुजारी में भी विश्वास न करना । वह स्वयं इतना बुरा आदमी नहीं है, वरन् दूसरों के हाथ की कठपुतली है और सर डेनियल के हाथ की बन्दूक है । जहाँ कहीं जाओ, अपनी लार्डशिप हासिल करना, पक्के और शक्तिशाली दोस्त बनाना । इन बातों पर सदैव ही ध्यान रखना और अपने बैनेट को सदैव याद रखना । उससे भी अधिक गुंडे लोग जमीन पर चलते-फिरते हैं । सो अब कूच करो—भगवान् तुम्हारी यात्रा सफल करें !"

"और देवता सदैव तुम्हारा साथ दें बैनेट !" डिक ने कृतज्ञता प्रकट की, "तुमने सदैव ही मुझ अनुगत पर कृपा की है । मैं सदैव यही कहूँगा ।"

"और अगर यह एमेण्ड आल (सबकी अक्ल दुरुस्त करने वाला) मेरे सीने में —हो सकता है—अपना तीर घुसेड़ने में सफल हो गया तो तुम एक सुनहरा निशान उसके चारों ओर लगा देना । हो सकता है तुम मेरी आत्मा की शान्ति के लिए एक पौण्ड खर्च कर सको ।" हैच ने थोड़ी उद्विग्नता से कहा ।

"तुम अपनी वसीयत के रूप में उसे पाओगे, बैनेट !" डिक ने उत्तर दिया "लेकिन ऐसी अशुभ बातें क्यों करते हो दोस्त, हम लोग फिर मिलेंगे ।"

"सन्त ऐसा ही करें मास्टर शैल्टन" दूसरे ने उत्तर दिया । "लेकिन अब सर ओलीवर आ रहे हैं । जितना उसका कलम तेज है, उतनी ही उसकी कमान तेज है । अगर कहीं शस्त्रों को उसने अपना प्रिय बनाया होता तो वह बहुत

बड़ा योद्धा साबित होता।"

सर ओलीवर ने एक मुहरबन्द लिफ़ाफ़ा उसे दे दिया। इस पत्र के ऊपर लिखा हुआ था : 'मेरे अत्यन्त पूजनीय स्वामी सर डेनियल ब्रैकले नाइट की सेवा में अत्यन्त शीघ्रता से प्रेषित।'

और डिक ने अन्तिम विदा-शब्द कहे। और वह पत्र अपनी जाकेट की जेब में रख लिया। और पश्चिम की तरफ़ गाँव की ओर उसने अपना घोड़ा बढ़ा दिया।

१

सर डेनियल और उनके सैनिक उस दिन कैटले पर मोर्चा जमाए हुए थे, चारों ओर सतर्क पहरा था और गश्त लग रहा था। लेकिन टन्सट्राल का यह योद्धा ऐसा था कि ऐसे कठिन समय में भी उसकी वसूली बराबर जारी थी। और अब जब कि वह अपने जीवन के निर्णायक क्षणों से गुज़र रहा था—जिनकी सफलता अथवा असफलता पर उसका विध्वंस अथवा निर्माण पूर्ण रूप से निर्भर था—वह आधी रात के समय उठ गया था और ग़रीब पड़ोसियों से पैसा ऐंठ रहा था। वह उन लोगों में से था जो विवादास्पद विरासत पर बड़ी होशियारी से हाथ साफ़ करते हैं। उसका तरीका यह था कि जिसके सम्पत्ति के मालिक होने की लेशमात्र भी सम्भावना न होती उसी को कुछ रुपये देकर वह उस विरासत को ख़रीद लेता और तब उन लार्डों के सम्बन्धों के बल पर, जो राजा के चारों ओर रहते थे, उस माल को अपने लिए प्राप्त कर लेता। लेकिन अगर यह रास्ता भी बहुत पेचीदा समझा जाता तो वह अपने शस्त्र के बल पर कब्ज़ा कर लेता और तब अपने प्रभाव और सर ओलीवर के कानूनी पाण्डित्य से सारे मामले को सुलझा लेता। कैटले एक ऐसा ही स्थान था जो अभी-अभी उसके हाथ में आया था। अभी काश्तकारों की ओर से उसका विरोध हो रहा था, और इस असन्तोष को दबाने के लिए ही उसने अपनी सेनाओं का कूच उस ओर कर दिया था।

दो बजे के लगभग वह एक सराय में बैठा हुआ था। आतिशदान में आँच धधक रही थी। कैटले के दलदली प्रदेश में सर्दी बहुत थी। उसकी कोहनी के पास ही मसालेदार पेय की एक बड़ी सुराही रखी हुई थी। उसने अपना शिर-स्त्राण उतार कर रख दिया था और उसका गंजा सिर चमचम चमक रहा था। उसने अपना पतला नक़ाब पास के लाल रंग के लबादे में लपेटकर रख दिया

था। कमरे के नीचे वाले भाग पर उसके दस-बारह आदमी संतरी के रूप में खड़े थे अथवा बैंचों पर बैठे ऊँघ रहे थे। उसके निकट ही एक छोकरा फर्श पर सोया पड़ा था—जो अधिक से अधिक तेरह-चौदह वर्ष का होगा। उस दिन की वसूली का पात्र उसके सामने खड़ा था।

"अब ठीक-ठीक बोल दो, मेरे मेजबान !" सर डेनियल ने कहा, "मेरी आज्ञा का पालन करो और मैं सदैव तुम्हारे साथ अच्छा सलूक करूँगा। मुझे गाँवों का मुखिया बनाने के लिए भी अभी आदमी चुनने हैं और एक कान्स्टेबिल भी हर गाँव में नियुक्त करना है। अच्छी तरह से सोच-समझ लो। अगर दूसरे आदमी इन स्थानों पर नियुक्त हो गये तो तुम्हें केवल पछताना ही नहीं पड़ेगा, वरन् बड़ी हानि भी तुम्हें हो सकती है। क्योंकि जिन्होंने वालसिंघम को लगान दे दिया है, मैं उनसे भी दो-दो हाथ बाद में करूँगा और आप भी उन्हीं में से एक बन जाएँगे—मेरे मेजबान।"

"हे भद्र योद्धा" मेजबान ने कहा, "मैं हालीवुड के क्रास पर कसम खाकर कह सकता हूँ कि वालसिंघम ने जबर्दस्ती ही लगान मुझसे वसूल किया है। नहीं, मेरे बलवान योद्धा, मैं गुण्डे वालसिंघमों को प्रेम नहीं करता। वह तो चोरों की तरह विपन्न थे, मेरे बहादुर योद्धा ! मुझे तो आप जैसा ही महान स्वामी चाहिए। मुझे मेरे पड़ोसियों के बीच में जाकर पूछें, मैं तो हमेशा ही ब्रैकले का पक्ष लेता रहा हूँ।"

"हो सकता है ! तो तुम दोबारा लगान दे देना।" सर डेनियल ने खुश्क-से स्वर में कहा।

सराय के मालिक के चेहरे पर घबराहट थी और वह खीसे निपोरने लगा था, लेकिन उन अनिश्चित दिनों में किसी भी किसान पर कैसी भी मुसीबत का टूट पड़ना बहुत सम्भव था और शायद इतने सस्ते में समझौता करके ही वह काफ़ी प्रसन्न था।

"अब तुम सैल्डन ! जल्दी सामने लाओ दूसरा आदमी।" नाइट चिल्लाया। और उसके सेवकों में से एक किसी ग़रीब और मोमबत्ती के समान पीले आदमी को सामने ले आया। वह आदमी दलदली बुखार से मृत बना हुआ था।

"हुज़ूरे अनवर।" सर डेनियल ने कहा, "आपका नाम ?"

"मेरा नाम जानकर आप क्या प्रसन्न होंगे मालिक ?" आदमी ने उत्तर

दिया, "मेरा नाम कोन्डाल है ! शोरबी का कोन्डाल । आपके ही रहम का मोहताज हूँ मालिक !"

"तुम्हारे बारे में तो रिपोर्ट बहुत खतरनाक है !" नाइट ने उत्तर दिया । "तुम्हारा पेशा ही दगाबाजी का है । तुम इलाके को गिरवी रखते हो और तुम्हारे सिर पर अनेक खूनों की सुर्खी है । तुम्हारी इतनी जुर्रत किस तरह हुई है । लेकिन मैं तुम्हें ज़मीन दिखा दूँगा ।"

"माननीय और मेरे श्रद्धास्पद मालिक !" आदमी गिड़गिड़ाया, "कुछ उलटा-सीधा आपके कानों में किसी ने डाल दिया है । मैं तो मामूली-सा आदमी हूँ और किसी को मेरी ज़ात से कभी भी कोई हानि नहीं पहुँची ।"

"छोटे पादरी ने तुम्हारे बारे में बहुत बुरी रिपोर्ट दी है ।" नाइट ने कहा, "उसने कहा है कि शोरबी के उस टिन्डाल को पकड़ कर मेरे पास लाना ।"

"कोन्डाल, मेरे अच्छे मालिक कोन्डाल ! मेरा नाम कोन्डाल है ।" उस अभागे ने कहा ।

"कोन्डाल या टिन्डाल, सब एक ही तो बात है ।" सर डेनियल ने थोड़ा ठण्डा पड़ते हुए उत्तर दिया । "क्योंकि तुम मेरे सामने मौजूद हो और मैं यह कह सकता हूँ कि तुम अवश्य ही बदमाश आदमी हो । अगर तुम्हें अपनी गर्दन बचानी है तो जल्दी से बीस पौण्ड का रुक्क़ा लिख डालो ।"

"बीस पौण्ड का रुक्क़ा मेरे मालिक ?" कोन्डाल चिल्लाया, "मैं तो पागल-पन से घिर गया हूँ, मेरी सारी पूँजी भी ७० शिलिंग से एक कौड़ी अधिक न होगी ।"

"कोन्डाल या टिन्डाल !" सर डेनियल ने बड़बड़ाते हुए कहा, "मैं अपनी हानि और लाभ का स्वयं जिम्मेदार हूँ । और जब मैं अपनी कौड़ी-कौड़ी वसूल कर लूँगा तो मुझे तुम एक कृपालु मालिक के रूप में पाओगे और तब मैं तुम्हारे सब गुनाह माफ़ कर दूँगा ।"

"मुझे दुःख है मेरे मालिक, यह नहीं हो सकता । मुझे लिखना-पढ़ना नहीं आता ।" कोन्डाल ने कहा ।

"बहुत बेहतर ! " नाइट ने उत्तर दिया, "इसका तो कोई इलाज ही नहीं है । मेरा इरादा यह है कि तुम्हें क्षमा कर दिया जाए । सैल्डन, इस झक्की टिन्डाल को ले जाओ, और जंगल में किसी पेड़ पर ज़रा कोमलता से इसकी गर्दन में

रस्सी बाँधकर इसे टाँग देना, ताकि मैं इसे लटकता हुआ देख सकूँ। अच्छा, अलविदा मास्टर कोन्डाल, मेरे प्यारे टिन्डाल ! अब आपका पैग़ाम स्वर्ग से आ गया है। यही तुम्हारा इलाज है।"

"नहीं-नहीं मेरे कृपालु प्रभु !" कोन्डाल ने बलपूर्वक अपने चेहरे पर हास्य लाते हुए कहा, "आप कितने शक्तिशाली हैं। न्याय आपको अच्छी तरह शोभा देता है। मैं किसी न किसी प्रकार आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।"

"मित्र !" सर डेनियल ने कहा, "अब तो तुम्हें चालीस लिखने पड़ेंगे, अब दफ़ा होओ। सत्तर शिलिंग की जिन्दगी बिताने वालों की अपेक्षा तुम अधिक चालाक हो। सैल्डन, इससे अच्छी तरह यह रुक्क़ा लिखवा लेना और गवाहों के हस्ताक्षर वग़ैरह भी करवा लेना।"

सर डेनियल एक बहुत ही खुशमिजाज नाइट था—इतना कि उसके मुकाबले इंगलैंड का एक भी नाइट इस गुण में ठहर नहीं सकता था। उसने मद्य का पात्र अपने मुँह में उड़ेल लिया और मुस्कराता हुआ पीठ के बल लेट गया।

इसी बीच फर्श पर पड़ा सोता हुआ लड़का हिला और तत्काल उठकर बैठ गया और घबराहट में इधर-उधर देखने लगा।

"इधर !" सर डेनियल ने कहा और वह ज्योंही उसके आदेश का पालन करता हुआ उठने लगा, वह फिर पीछे की ओर झुक गया और अट्टहास करने लगा। "ईसु के क्रास की कसम, कितना तगड़ा छोकरा है।"

छोकरा क्रोध से लाल हो गया और अपनी काली आँखों से उसने घृणा की एक नज़र उसकी ओर फेंकी। छोकरे के उठ खड़ा होने पर, उसकी आयु का अनुमान लगाना और भी दुष्कर हो गया था। उसके मुख की भावनाएँ आयु से कुछ अधिक परिपक्व प्रतीत होती थीं लेकिन उसका गात शिशु के समान कोमल था। शरीर और हड्डियों में वह इकहरा था और बनावट भी उसकी कुछ भद्दी-सी थी।

"आपने मुझे बुलाया है, सर डेनियल" उसने कहा, "क्या मेरे दुर्भाग्य पर हँसने के लिए ?"

"नहीं, तुम भी हँसो !" नाइट ने कहा, "मैं तुमसे विनती करता हूँ मेरे दोस्त, कि तुम भी हँसो। और तुम अपने आप ही देख लोगे कि तुम सबसे

अधिक हँस सकते हो।"

"अच्छी बात है," लड़के ने तड़कते हुए कहा, "तुम इसका जवाब भी दोगे, जब और दूसरी चीजों का जवाब तुम्हें देना होगा। हँसो, कम से कम जब तक तुम्हें सुविधा है तब तक हँसो!"

"नहीं, मेरे भाई।" सर डेनियल ने इस बार हार्दिकतापूर्वक कहा, "यह न सोचो कि मैं तुम्हारा मजाक उड़ाता हूँ। जैसे अपने रक्त-सम्बन्धियों से लोग हँसते-बोलते हैं, बस वैसा ही मैं तुमसे करता हूँ। मैं कम से कम एक हजार पौण्ड से तुम्हारी शादी करूँगा, और तुम्हारी प्रतिष्ठा करूँगा। इसमें सन्देह नहीं कि आरम्भ में मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। परन्तु अब से आगे मैं तुम्हारा आदर करूँगा और तुम्हारी सेवा करूँगा। तुम श्रीमती शैल्टन बनोगी, नहीं, लेडी शैल्टन। ईमान से कहता हूँ कि लड़का बड़ा बहादुर है, टट्, कहो कि तुम हँसी का बुरा नहीं मानोगी। निश्छल हास्य से मन की उदासी दूर भागती है। वे लोग जो फेफड़ा भर कर हँसते हैं, गुण्डे नहीं होते, मेरे चाचा जॉन। मेरे अच्छे मेजबान, मेरे चाचाजॉन मास्टर जॉन के लिए भोजन परोस दो; बैठ जाओ, मेरे प्यारे, और खाओ।"

"नहीं," मास्टर जॉन ने कहा, "मैं रोटी का टुकड़ा भी न तोड़ूँगा। क्योंकि तुम मुझसे इस पाप को करने की बात कहते हो। मैं अपनी आत्मा के हित में उपवास रखूँगा, लेकिन मेरे अच्छे मेजबान, मैं तुम्हारी शिष्टता के लिए कृतज्ञ हूँ, मुझे केवल पानी का प्याला दे दो।"

"तुम्हें अपनी मर्जी से सब कुछ करने का अधिकार होगा।" नाइट ने ऊँची आवाज़ में कहा, "मैं कसम खाता हूँ कि मैं अपने इस पाप का प्रायश्चित करूँगा, अब तो तुम संतुष्ट होकर खा लो।"

लेकिन छोकरा जिद्द पकड़ गया था। उसने पानी का प्याला पिया और अपना लबादा अच्छी तरह ढाँपकर वह एक कोने में जाकर बैठ गया और मुँह लटका लिया।

एक-दो घण्टे बाद सारा गाँव आन्दोलित हो उठा। सन्तरियों की चुनौतियाँ सुन पड़ने लगीं और शस्त्रों तथा घोड़ों के टापों के बजने की आवाज़ चारों ओर छा गई। और तब एक टुकड़ी सराय के दरवाजे की ओर बढ़ आई। और रिचर्ड शैल्टन, जो कीचड़ से बुरी तरह सना था, ड्योढ़ी पर पहुँच गया था।

"आपका मंगल हो, सर डेनियल," उसने कहा।

"ओह, डिक शैल्टन !" नाइट चिल्लाया और डिक के नाम का उच्चारण होते ही दूसरा छोकरा अकस्मात् उत्सुकता से उधर देखने लगा, "बैनेट हैच को क्या हुआ ?"

"आप कृपा करके सर डेनियल, इस पैकेट को अंगीकार करें जो सर ओलीवर ने दिया है। इसमें उन्होंने सब कुछ लिख दिया है।" रिचर्ड ने उत्तर दिया। "और आगे निवेदन है कि अब राईसिंघम की ओर कूच बोल दें। इधर आते हुए रास्ते में हमें एक हलकारा मिला था, जो बड़ी तेज़ी से पत्र लिए जा रहा था—उसकी ख़बर के मुताबिक राईसिंघम के लार्ड की हालत आजकल ख़राब है और उन्हें आपकी सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है।"

"क्या कहा तुमने, हालत ख़राब है ?" नाइट ने उत्तर दिया, "नहीं, तो हम बैठकर तेज़ी से विचार करेंगे, प्यारे रिचर्ड। इस अभागे इंगलैंड में जिन्दगी का जो दस्तूर है, उसके मुताबिक जो विचारपूर्वक क़दम रखता है, उसका क़दम ही कामयाबी की ओर बढ़ता है। विलम्ब से, लोगों का कहना है, कि संकट सिर पर आता है लेकिन विलम्ब ही आदमी को मुक्ति देता है; यह याद रखना डिक। लेकिन मुझे देखने तो दो, तुम कैसे जानवर हाँक लाए हो। सैल्डन, यहाँ द्वार पर सतर्क रहना।"

और सर डेनियल गाँव की ओर चल खड़े हुए। लाल मशाल की रोशनी में उन्होंने अपनी सेना का निरीक्षण किया। वह एक बदनाम पड़ोसी और अप्रिय मालिक था, लेकिन एक सेनानायक के रूप में वह उन सबका चहेता था, जो उसकी कमान में लड़ते थे। उसका आक्रमण, दुर्दमनीय साहस, सैनिकों की सुविधाओं की पूरी तरह चिंता करना—कुछ ऐसे गुण थे कि वह एक अत्यन्त लोकप्रिय सेनानायक था।

"नहीं, मैं ईसु के क्रास की कसम खाकर कहता हूँ" वह चिल्लाया, "यह कुत्ते पकड़ लाए हो तुम ! कुछ तो इतने कुबड़े हैं कि जैसे कमान हो और कुछ इतने दुबले कि भाला भी इनसे अधिक मोटा है। दोस्तो ! तुम्हें युद्ध के सबसे अगले मोर्चे पर लड़ना है। मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ दोस्तो ! ज़रा उस चितकबरे घोड़े पर चढ़े हुए खलनायक को तो देखो। दो साल का मेमना अगर सूअर पर चढ़ बैठे तो उसका ठाठ इससे अधिक सिपाहियाना मालूम देगा। आह, क्लिप्सबी, तुम भी हो, पुराने चूहे। तुम ऐसे आदमी हो, जिसे खोने में भी मेरा हृदय

आनन्दित होगा। तुम्हारी वर्दी पर बुल्स-आई (निशाना साधने का निशाना) बनाकर सबसे अगले मोर्चे पर भेजा जाएगा। ताकि तीरंदाजी के अभ्यास के लिए तुम काम आ सको। महापुरुष, तुम मुझे रास्ता दिखाओगे ?"

"मैं आपको कोई रास्ता दिखाऊँगा सर डेनियल, केवल पक्ष-परिवर्तन के रास्ते को छोड़कर।" क्लिप्सबी ने दृढ़ता से कहा।

सर डेनियल ने ज़ोर का अट्टहास किया।

"वाह, क्या खूब कहा !" वह चिल्लाया, "तुम्हारी ज़बान में बड़ी चतुराई है। मैं तुम्हें इस उक्ति के लिए क्षमा करता हूँ। सैल्डन, इनके खाने-पीने का प्रबन्ध करो, आदमी और जानवर सबके लिए।"

नाइट पुनः सराय में वापस आ गया।

"अब दोस्त डिक," उसने कहा, "बहुत अच्छी शराब है और सूअर का नमकीन गोश्त। तुम खाओ, इतने में मैं पढ़ता हूँ।"

सर डेनियल ने पैकेट खोला और उसकी पेशानी पर स्याही बढ़ती गई। जब वह पढ़ चुका तो विचारमग्न-सा बैठ गया। तब उसने उत्सुकतापूर्वक अपने (पालित पुत्र) की ओर देखा।

"डिक, तुमने यह दो कौड़ी की कविता देखी है ?" उसने कहा।

छोकरे ने 'हाँ' में उत्तर दिया।

"इसमें तुम्हारे पिता का नाम आता है।" नाइट ने अपना कथन जारी रखा, "और उस ग़रीब पादरी को किसी ने तुम्हारे पिता का हत्यारा ठहराया है।"

"उसने बड़ी तत्परता के साथ इस आरोप का विरोध किया था," डिक ने उत्तर दिया।

"अच्छा उसने वैसा किया ?" नाइट ज़ोर से चिल्लाया, "उसकी बात पर मत जाना। वह बहुत-सी व्यर्थ की बातें करता है। वह गौरय्या की तरह चटर-चटर करता रहता है। किसी दिन, जब मुझे अवकाश होगा, तो मैं तुम्हें अच्छी तरह से सारा मामला समझा दूँगा। डकवर्थ नाम का एक आदमी था जिसे इस क़त्ल का अपराधी बताया जाता है। लेकिन उस समय संकट के दिन थे और किसी का भी इस तरह नाम लेना सरासर अन्याय की बात है।"

"लेकिन यह क़त्ल इस मोट हाउस में ही हुआ था ?" डिक ने साहस करके पूछा। उसका हृदय धड़कने लगा था।

"मोट हाउस और हालीवुड के बीच में हुआ था।" सर डेनियल ने शान्ति के साथ उत्तर दिया किन्तु उसने कनखियों से डिक की ओर देखा। स्वयं उसके मन में संदेह उभर आया था। "और अब", सर डेनियल ने फिर कहा, "जल्दी से खाना समाप्त कर डालो। तुम्हें मेरा एक संवाद लेकर अभी टन्सटाल लौटना है।"

डिक का चेहरा उदास होकर लटक गया।

"मैं आपसे विनती करता हूँ सर डेनियल!" वह चिल्लाया, "इन खल-नायकों में से किसी को भेज दें और मुझे समरक्षेत्र में जाने दें, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अब प्रहार करने में पूर्ण समर्थ हो चुका हूँ।"

"मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है", सर डेनियल ने लिखने बैठते हुए कहा, "लेकिन, इस युद्ध में कोई नामवरी नहीं मिल सकती डिक! मैं यहाँ कैटले में पड़ा हूँ और युद्ध के अन्तिम संवाद की प्रतीक्षा में हूँ और जो विजेता होगा उसी के साथ सवार होकर चल दूँगा। डिक, इसे कापुरुषता कहकर धिक्कारो मत। यह बुद्धिमत्ता है। इस छिन्न-भिन्न राज्य में विद्रोह सिर उठा रहा है और राजा का नाम और सुरक्षा इतनी जल्दी-जल्दी बदलते हैं कि कोई यह नहीं कह सकता कि कल क्या होने वाला है। लोग तकली की तरह इधर से उधर घूम रहे हैं लेकिन मैं अपने विवेक के आसरे हाथ पर हाथ रखे शान से बैठा रहूँगा।"

जिस समय तरुण शैल्टन अपना भोजन करने में पूरी तरह तल्लीन था, उसने अपनी बाँह पर एक स्पर्श अनुभव किया और एक बहुत ही कोमल स्वर में फुसफुसाहट भी सुनी।

"किसी प्रकार का इशारा न करना, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ।" उस आवाज़ ने कहा, "कृपा करके मुझे सीधा हालीवुड का रास्ता बता दो। मैं विनती करता हूँ, अच्छे युवक, तुम एक विपत्तिग्रस्त आत्मा का उद्धार करोगे और इस तरह मुझे मेरे गन्तव्य तक पहुँचा दोगे। मुझे ठीक-ठीक रास्ता बता दो।"

"हवा से चलने वाली चक्की की डगर पकड़ लेना," डिक ने उत्तर दिया, "इस प्रकार तुम टिल-फैरी में पहुँच जाओगे। वहाँ पहुँचकर आगे पूछ लेना।"

और अपना सिर घुमाए बिना ही वह फिर खाने पर टूट पड़ा। लेकिन

कनखियों से उसने उस छोकरे को आहिस्ते से बाहर खिसकते हुए देख लिया —जिसे लोग मास्टर जॉन पुकार रहे थे।

"वाह !" डिक ने सोचा, "वह तो मेरी ही तरह तरुण है। वह मुझे, अच्छा युवक किस तरह पुकारता था, और अगर मुझे पता चल जाता तो उसे कुछ भी बताने से पहिले, मैं उसे सूली पर लटकते देखना अधिक पसन्द करता। अच्छी बात है, अगर वह दलदल के रास्ते से गया तो मेरी पकड़ में आ ही जाएगा। तब मैं उसके कान खींचूँगा।"

लगभग आध घण्टे बाद सर डेनियल ने डिक को चिट्ठी दे दी और उसे मोट हाउस के लिए विदा कर दिया। डिक के जाने के बाद लार्ड राईसिंघम की ओर से एक और हलकारा खबर लेकर बड़ी तेज़ी से आ पहुँचा।

"सर डेनियल !" हलकारे ने कहा, "आपके सम्मान को भयानक आघात पहुंचा है। आज पौ फटने से पूर्व ही फिर से लड़ाई छिड़ गई। हमने उनके दायें बाजू को उखाड़ दिया था। केवल मुख्य मोर्चे पर तुमुल संग्राम छिड़ा हुआ है। अगर हमें आपकी ताज़ा कुमुक मिले तो हम उन्हें नदी में घुसेड़ सकते हैं। अब अधिक देर न करें, सर नाइट ! अब और विलम्ब आपके सम्मान को शोभा नहीं देता।"

"नहीं," नाइट ने गर्जना की, "मैं इसी समय कूच बोलता हूँ। सैल्डन, जल्दी से रणभेरी बजाओ। जनाब, मैं तुम्हारे साथ ही, क़दम उठाता हूँ। अभी दो घण्टे हुए होंगे, मेरी और ताजी कुमुक आ गई है। तुम क्या लोगे ? एक सिपाही के लिए एड़ लगाना ही काफी अच्छा भोजन है, लेकिन इससे घोड़े का दम निकल जाता है। जवानो ! फौरन धूमधाम से तैयार हो जाओ।"

अब तक प्रातःकाल के सुहावने समय में रणभेरी बज रही थी और सर डेनियल के आदमी चारों ओर से निकलकर सराय के बाहर जमा हो रहे थे। वह अपनी बाहों का तकिया बनाकर सोये थे और उनके घोड़े कसे खड़े थे। पाँच मिनट में लगभग सौ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सुभट और तीरंदाज अनुशासनबद्ध कतार में खड़े हुए थे। मुख्य सेनानी सर डेनियल की नीली वर्दी में थे जो सबमें अलग चमक रहे थे। जो सबसे अधिक सुसज्जित थे, उन्होंने सर्वप्रथम कूच किया। और जब वह दृष्टि से ओझल हो गए तो कल-चालक जर्जर दस्ता सम्मुख आया। सर डेनियल गर्व से अपनी सेना को देख रहे थे।

"आपके संकट के समय में ये छोकरे काम आ सकते हैं।" उसने कहा, "ये बहुत सुन्दर जवान हैं, वास्तव में।" हलकारे ने उत्तर दिया। "बस मुझे केवल यही खेद है कि आप लोगों ने कुछ समय पहिले कूच क्यों नहीं कर दिया।"

"जनाव," नाइट ने कहा, "आप क्या चाहते हैं। एक दावत का आरम्भ और युद्ध का अन्त ही अधिक शानदार होते हैं; जनाब हलकारे महोदय!" और उसने रकाब में पैर डाल दिया, "अब क्या देखते हो," वह चिल्लाया, "ए, जोना, ईमान की कसम जोना किधर गई? अरे मेजबान! वह छोकरी किधर गई?"

"छोकरी, सर डेनियल!" सराय वाले ने आश्चर्य प्रकट किया, "नहीं तो साहब, यहाँ तो किसी लड़की को नहीं देखा।"

"तो लड़का ही सही बूढ़े डोकरे!" नाइट चिल्लाया, "क्या तुम्हें दीखा नहीं कि वह लड़की थी। उसने पानी में अपना उपवास तोड़ा था। बदमाश, कहाँ है वह?"

"ओह, सन्त हम पर कृपा करें! मास्टर जॉन जिसे आप पुकारते थे।" सराय वाले ने कहा, "मैंने तो कुछ भी समझा नहीं। वह तो जा चुका है। मैंने उसे घण्टा भर हुआ, अस्तबल में जाते हुए देखा था। वह एक भूरे घोड़े को कस रहा था।"

"आह, मैं ईसु के क्रास की कसम खाता हूँ, उस लड़की की कीमत मेरे लिए पाँच सौ पौण्ड थी। इससे भी ज्यादा थी।" सर डेनियल फिर चिल्लाया।

"सर नाइट," हलकारे ने कहा, "आप यहाँ जब कि केवल पाँच सौ पौण्ड के लिए गर्जना कर रहे हैं, दूसरी ओर इंगलैण्ड का सिंहासन खोया और प्राप्त किया जा रहा है।"

"बहुत सुन्दर उक्ति है।" सर डेनियल ने उत्तर दिया, "सैल्डन, मेरे जवानों में से छै तीरंदाज ले लो और किसी भी तरह उस छोकरी को पकड़कर मेरे पास लाओ। जिस समय मैं लौटकर आऊँ, मुझे वह मोट हाउस में प्राप्त होनी चाहिए, इसे अपनी खोपड़ी में अच्छी तरह समझ रखना। और अब हलकारे महोदय, बस, हम कूच बोलते हैं।"

तब टुकड़ी बड़े अन्दाज से उछलने लगा और सैल्डन और छै धनुषधारी पीछे रह गए। कैटले की सड़क पर ग्रामीण लोग उनकी ओर आँख फाड़कर देखने रह गए।

२

मई मास की प्रातःकाल। लगभग छै बजे होंगे। इसी समय डिक ने अपने घर लौटने के लिए दलदल की ओर प्रस्थान किया। आकाश नीला था; खुश-गवार वायु तेजी के साथ बह रही थी और हवा से चलने वाली मस्तूल वायु में लहरा रही थी; सारी दलदल के ऊपर सरपत, हल्की लहरियों के मध्य इस तरह सफ़ेद मालूम देते थे, जैसे कि कोई शानदार फ़सल का खेत खड़ा हो। उसका पैर रातभर हालाँकि रकाब में ही रहा था, तो भी उसके हृदय और शरीर दोनों पूर्ण रूप से स्वस्थ थे और बड़ी प्रसन्नता से सवार हुआ जा रहा था।

पगडंडी दलदल की ओर नीचे ही नीचे मुड़ती जा रही थी। यहाँ तक कि पीछे, पहाड़ी की चोटी पर चलने वाली चक्की और सामने दूर टन्सटाल जंगल का अन्तिम छोर दिखाई पड़ता था। रास्ते के दोनों किनारों पर मोथे और सरपत की घास लहरा रही थी, पोखरों में पानी हवा से कुलाँचें मार रहा था और दलदल के हीरों के समान चमकदार क्षेत्र यात्री को अपनी ओर आकर्षित करते दीख पड़ रहे थे। रास्ता इस लम्बे दलदली क्षेत्र के ठीक बीच से जाता था। यह रास्ता बहुत प्राचीन था। रोमन सेना ने इसकी नींव डाली थी। सदियों के प्रयोग से यह सड़क बहुत नीचे खिसक गई थी और कहीं-कहीं पर सैकड़ों गज़ ज़मीन दलदल के शान्त जल के नीचे डूब गई थी।

कैटले से लगभग एक मील चलने के बाद, डिक ने देखा कि मुख्य रास्ता इस तरह समाप्त हो गया है और सरपत और दूसरी दलदली घास दूर-दूर पर द्वीपों के समान इस तरह उगी हुई है कि दृष्टि को एकबारगी भी धोखा

लग जाना सम्भव था। यह व्यवधान साधारण व्यवधानों से कुछ बड़ा था और यह ऐसा स्थान था जहाँ कोई भी अजनबी आपत्ति में फँस सकता था। डिक ने कुछ ऐसी छाया देखी जिसकी समानता उस छोकरे की आकृति से की जा सकती थी जिसे उसने कुछ देर पहिले उड़ता-उड़ता देखा था। उसने एक नज़र पीछे चक्की पर डाली और एक नज़र सामने टन्सटाल जंगल पर। पानी घोड़े के घुटनों से भी ऊपर था और वह पानी में उतने ही विश्वास से पुनः चलने लगा जैसे मुख्य सड़क पर चल रहा हो।

जब वह आधा रास्ता पार कर चुका और खुश्क रास्ता थोड़ी ही दूर पर ऊपर चढ़ता हुआ दिखाई देने लगा तो उसने अपने दाहिने बाजू पर छप-छप की आवाज़ सुनी और देखा कि एक भूरा घोड़ा पेट तक दलदल में फँसा पड़ा है और अभी तक प्राणपण से मुक्ति के लिए छटपटा रहा है। ज्योंही घोड़े ने देखा कि उसके पड़ोस में भगवान ने कोई मदद भेजी है, तो वह बड़े दर्दनाक स्वर से हिनहिनाया; उसने अपनी पुतलियाँ, जो मौत के भय से संत्रस्त थीं— इधर घुमाईं और एक बार फिर दलदल के पंजे से छुटकारा पाने के लिए पैर फेंकने लगा। इस शक्तिशाली आन्दोलन से दलदल में काटने वाले जन्तु ऊपर हवा में उछल गए और हवा में मँडराने लगे।

"आह दुर्भाग्य! क्या वह बेचारा छोकरा समाप्त हो गया?" डिक ने सोचा, "घोड़ा तो है, बेशक कितना बहादुर भूरा जानवर है! नहीं कामरेड, अगर तुम इतनी आर्त पुकार करते हो तो मैं अवश्य ही तुम्हारे लिए वह सब कुछ करूँगा, जो सम्भव है। तुम इंच-इंच कर के डूबने की दारुण यन्त्रणा अब और नहीं पाओगे!"

उसने अपनी कमान सँभाली और एक बाण उसके सिर पर साध लिया।

डिक इस दया-कर्म के बाद अपने अन्तर में एक सन्तोष की भावना लिए अपने उस विपत्ति ग्रस्त पूर्व यात्री का विचार मन में करता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

"मुझे चाहिए था कि मैं उसे रास्ते के बारे में और भी बता देता।" डिक ने सोचा, "वह बेचारा डर के मारे दलदल में भटक गया।"

और ज्योंही वह ऐसा सोच रहा था, उसे रास्ते के एक किनारे से अपने नाम की आवाज़ आई और अपने कन्धे से घूमकर उसने देखा कि वही छोकरा

घास में से अपना मुँह चमका रहा है ।

"क्या तुम वहाँ हो" उसने घोड़े की बाग थामते हुए कहा, "तुम मेरे इतने निकट ही छिपे पड़े हो कि मैं तुम्हें बिना देखे ही छोड़कर चला जाता । तुम्हारा घोड़ा जो दलदल में डूबा पड़ा था—मैंने पार लगा दिया है । तुम भी वैसा ही करते अगर तुम एक दयालु सवार होते । अच्छा, अब अपने स्थान से बाहर निकल आओ । यहाँ अब तुम्हारे लिए कोई संकट नहीं है ।"

"नहीं, अच्छे लड़के, मेरे पास शस्त्र नहीं हैं और अगर होते भी तो मुझमें उनके चलाने की सामर्थ्य कहाँ है ।" उसने बटिया पर खड़े होते हुए उत्तर दिया ।

"तुम मुझे लड़का क्यों पुकारते हो ?" डिक चिल्लाया, "तुम निश्चय ही मुझसे उम्र में बड़े नहीं हो ।"

"गुड मास्टर शैल्टन," दूसरे ने कहा, "मैं तुमसे क्षमा के लिए प्रार्थना करता हूँ । मेरा विचार तुम्हारे चित्त को दुखाने का नहीं है । वरन् मैं तो उल्टे आपकी कृपा का पात्र हूँ क्योंकि मेरा रास्ता, मेरे कपड़े और मेरा घोड़ा सभी खो गए हैं । अब मेरे पास चढ़ने के लिए घोड़ा कहाँ से आएगा और मैं इस प्रकार मैले-कुचैले कपड़ों में सबके सामने कैसे जाऊँगा ।"

"ट ट् !" डिक चिल्लाया, "क्या तुम एक गोता खाकर ही घबरा उठे हो ? घाव का रक्त अथवा रास्ते की धूल ये तो आदमी के अलंकार होते हैं ।"

"तब तो मैं उससे अधिक मामूली आदमी होना ही अधिक पसंद करता हूँ ।" उस लड़के ने कहा, "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि अब मुझे परामर्श दो कि मैं क्या करूँ । अगर मैं हालीवुड नहीं पहुँच सका तो मेरा सर्वनाश हो जाएगा ।"

"क्यों नहीं, मैं परामर्श से अधिक कुछ तुम्हें दूँगा । मेरा घोड़ा ले लो । मैं भागता हुआ चलूँगा, अगर मैं थक गया तो फिर बदल लेंगे । लेकिन इस प्रकार हम अधिक तेज़ी के साथ अपनी मंजिल तै कर सकेंगे ।"

इस प्रकार दोनों तरुणों ने आपस में सद्भावना प्रदर्शित की । उस ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर वह जितना तेज़ चल सकते थे, चलने लगे । डिक का हाथ दूसरे के घुटने पर था और वह उसका सहारा लेकर दौड़ रहा था ।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" डिक ने पूछा ।

"मुझे जॉन मैचम कह सकते हो।" दूसरे ने उत्तर दिया।

"तुम हालीवुड किस लिए जा रहे हो ?" डिक ने प्रश्न करना जारी रखा।

"मैं उस आदमी से सुरक्षा पाने के लिए दूर भाग रहा हूँ।" दूसरे ने उत्तर दिया, "हालीवुड का अच्छा सरदार ग़रीब लोगों का बहुत बड़ा मित्र है न ?"

"लेकिन तुम सर डेनियल के हाथों में किस तरह पड़ गए मास्टर मैचम।"

"और किस तरह ?" दूसरा चिल्लाया, "शक्ति के दुरुपयोग से। उसने बलपूर्वक मुझे मेरे घर से पकड़ा। मुझे ये घास-फूस जैसे वस्त्र पहिनने को मजबूर किया। आह, और मुझे इस कदर घोड़े पर चढ़ाया है कि थकान से मेरा दम निकल गया है। इतना चिढ़ाया है कि अपमान से मेरे आँसू निकल-निकल पड़े हैं। जब मेरे कुछ अभिभावक उसके पीछे दौड़े कि छुड़ा लें, तो उसने मुझे अपनी पीठ पीछे कसकर बैठा लिया ताकि सब निशाने मुझी पर बैठें। मेरा दाहिना पैर पूरी तरह रगस खा गया था। उसके बाद कई दिन तक मैं लंगड़ा कर ही चलता रहा। लेकिन कोई बात नहीं। एक न एक दिन आएगा जब हम एक दूसरे को अच्छी तरह समझेंगे !"

"क्या तुम दस्ती बन्दूक लेकर चन्द्रमा पर निशाना लगाने की ख्वाहिश रखते हो ?" डिक ने कहा, "वह एक महान योद्धा है और उसका प्रहार लोहे के समान कठोर होता है। अगर उसे यह अनुमान हो गया कि मेरी सहायता से तुम भागे हो, तो मुझे उसके कोप का भाजन होना पड़ेगा !"

"आह, बेचारे लड़के," दूसरे ने उत्तर दिया, "तुम उसके पालित पुत्र हो, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इसी तरह एक पालित पुत्र मुझे समझ लो। वह ऐसा ही कहता है। अन्यथा उसने मुझे विवाह के लिए खरीद लिया है। मैं ठीक-ठीक तो नहीं कह सकता, परन्तु कोई ऐसा ही तरीका वह मुझे तंग करने का सोचता होगा।"

"फिर तुमने मुझे लड़का कहा।" डिक ने टोका।

"तो फिर, मैं तुम्हें लड़की पुकारूँ, अच्छे रिचर्ड ?" मैचम ने पूछा।

"लड़की, हर्गिज़ नहीं।" डिक ने उत्तर दिया, "लड़कियों से मैं नफ़रत करता हूँ।"

"तुम छोकरों की-सी बातें करते हो। जितना तुम बनते हो, उससे अधिक लड़कियों के बारे में तुम सोचते हो।" मैचम ने कहा।

"मैं लड़कियों के बारे में कभी नहीं सोचता," डिक ने कहा, "वही यूँ ही मेरे दिमाग़ में आ जाती है। कहना चाहिए कि प्लेग की तरह ! मुझे तो शिकार, युद्ध और आमोद-प्रमोद चाहिए और खुशमिजाज जंगली आदमियों का साथ ! मैंने ऐसी किसी औरत के बारे में नहीं सुना, जिसने कभी कोई बड़ा काम किया हो। बस, एक औरत ने किया था लेकिन लोगों ने उसे जादूगरनी समझकर, और पुरुषों के कपड़े पहिनने के अपराध में जला दिया।"

मास्टर मैचम ने बड़ी भावनापूर्वक अपनी छाती पर हाथ रख लिए और प्रार्थना करने लगा।

"क्या करते हो ?" डिक ने पूछा।

"मैं उसकी आत्मा के लिए प्रार्थना करता हूँ।" मैचम ने कुछ भरी हुई आवाज़ में कहा।

"एक जादूगरनी की आत्मा के लिए," डिक ने कहा, "लेकिन तुम ज़रूर उसके लिए प्रार्थना करो। सुनते हैं, वह यूरोप की महानतम युवती थी—जोन आव आर्क। वह बूढ़ा तीरंदाज़ एपिलयार्ड उसके सम्मुख ठहर नहीं सका था। कहता था कि वह उसे देवी के समान तेजस्वी प्रतीत होती थी। इसमें संदेह नहीं कि वह एक बहादुर लड़की थी।"

"अच्छा तो गुड मास्टर रिचर्ड !" मैचम ने वार्ता जारी रखी, "चूँकि तुम औरतों को पसंद नहीं करते—हालाँकि ईश्वर ने स्त्री और पुरुष को बनाया ही एक दूसरे के लिए है—इसलिए तुम सम्पूर्ण पुरुष नहीं हो। भगवान ने औरत को पुरुष की आशा और पुरुष को स्त्री के सुख-साधन के रूप में बनाया है।"

"यह बकवास है !" डिक ने कहा, "तुम तो अभी दूध पीते बालक हो बेटा ! जो इस तरह औरतों का गुणगान करते हो। और मेरे लिए तुम सोचते हो मैं संपूर्ण पुरुष नहीं हूँ। ज़रा घोड़े से नीचे उतर कर देखो। चाहे घूसेबाजी, चाहे तलवार से और चाहे तीर-कमान लेकर दो-दो हाथ कर लो, तब तुम्हें पता चलेगा कि मैं पूर्ण पुरुष हूँ कि नहीं।"

"छोड़िए, मैं कोई योद्धा नहीं हूँ।" मैचम ने उत्सुकता से कहा, "मैं तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहता। यह तो तफ़रीह की बातें थीं, मैं तो औरतों के

बारे में यूँही बातें करने लगा था क्योंकि मैंने सुना है कि तुम्हारी शादी होने वाली है।"

"मेरी शादी ?" डिक ने आश्चर्य प्रकट किया, "मैं तो आज पहली बार यह खबर सुन रहा हूँ। आख़िर किसके साथ मेरी शादी होने वाली है ?"

"कोई जोन सैंडले है।" मैचम ने किंचित् आरक्त होते हुए कहा, "यह सब सर डेनियल की करतूत है। वह दोनों तरफ़ से चाँदी बनाना चाहता है। मैंने सुना है कि वह बेचारी लड़की इस संयोग के विरुद्ध सिर पटक रही है। मालूम होता है वह भी तुम्हारे जैसे ही विचारों की है अथवा वह वर महोदय को नापसन्द करती होगी।"

"ख़ैर, विवाह तो मौत की तरह अपरिहार्य है। सबको एक दिन करना ही पड़ता है।" डिक ने अन्यमनस्क भाव से कहा, "और वह अब दुःखी हो रही होगी। अब मैं तुमसे कहता हूँ कि ये लड़कियाँ कितनी बद दिमाग़ होती हैं। मुझे बिना देखे ही अपने दुर्भाग्य पर विलाप करने लगी है। क्या मैं यह ख़बर सुनकर दुःखी होने के लक्षण प्रकट कर रहा हूँ ? अगर मुझे शादी करनी पड़े, तो मैं एक भी आँसू आँखों में न आने दूँगा। अगर तुम उसे जानते हो, तो बताओ वह कैसी है, सुन्दर है कि भद्दी है ? झक्की है या खुश-मिजाज़ है ?"

"नहीं जी, इन बातों में क्या रखा है ?" मैचम ने कहा, "जब तुम्हें शादी करनी ही है तो बस करनी है। इससे क्या अन्तर पड़ता है कि लड़की रूपवती है या कुरूप ? लड़कियाँ तो पुरुषों के लिए खिलौनामात्र होती हैं। और फिर तुम दूध पीते बालक तो हो नहीं मास्टर रिचर्ड ! तुम किसी न किसी तरह आँखों में आँसू लाये बिना ही यह शादी करने की सामर्थ्य रखते ही हो !"

"वाह, क्या कहा है !" शैल्टन ने कहा, "ठीक बात है। मुझे उससे क्या मतलब है ?"

"तुम्हारी लेडी पत्नी एक खुशमिजाज़ पति की चाह रखती है।" मैचम ने कहा।

"अरे उसे वही लार्ड मिलेगा, जो भगवान् ने उसके लिए पैदा किया होगा।" डिक ने उत्तर दिया, "यह बात मैं कह सकता हूँ कि वह मुझसे बेहतर ही होगा यह निश्चित नहीं। वह मुझसे बुरा भी हो सकता है।"

"आह, बेचारी लड़की !" दूसरा चिल्लाया।

"किसलिए उसकी बेचारगी पर दुःखी हो रहे हो ?" डिक ने पूछा।

"इसलिए कि उसे एक लकड़ी के आदमी से शादी करनी पड़ेगी।" उसके साथी ने उत्तर दिया, "आह, भगवान् ! तुमने मेरे लिए एक लकड़ी का पति बनाया।"

"मैं सोचता हूँ कि मैं एक लकडी का इन्सान हो सकता," डिक ने कहा, "तुम मेरे घोड़े पर चढ़े हुए हो और मैं ज़मीन पर घिसट रहा हूँ। लेकिन यह लकड़ी है बहुत अच्छी, मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ।"

"अच्छे डिक, मुझे क्षमा करो" दूसरे ने कहा, "नहीं तुम्हारे समान उदार हृदय व्यक्ति सारे इंगलैंड में भी खोजे न पाएगा। मैं तो केवल मज़ाक करता था। अच्छा, अब क्षमा कर दो मुझे प्रिय डिक !"

"नहीं जनाब ! इस शब्द-चातुरी से मुझे मूर्ख नहीं बना सकोगे अब," डिक ने अपने साथी की भावुकता से किंचित् चकित होते हुए कहा, "तुम्हारे खिजाने से मुझे कुछ भी दुःख नहीं हुआ है। मैं धीरे से खीजने वाला नहीं हूँ।"

और उसी क्षण हवा, जो उनकी पीठ पीछे से आ रही थी, अपने साथ सर डेनियल के नक्कारची की आवाज़ भी लेती आई।

"सुनो !" डिक ने कहा, "पीछे बिगुल बज रहा है ?'

"हाँ, हाँ," मैचम ने कहा, "शायद मेरे भागने का उन्हें पता लग गया है, और अब तो मेरे पास घोड़ा भी नहीं है।" वह मृतक के समान पीला पड़ गया।

"क्या चिन्ता है, तुम्हें इतना बित्ता जो मिल गया है। और हम अब नौका के निकट ही आ गए हैं। और जहाँ तक मेरा ख्याल है—बिना घोड़े के तो इस समय मैं हूँ।"

"अफसोस, मैं पुनः पकड़ लिया जाऊँगा।" वह भगोड़ा चिल्लाया, "डिक, दयालु डिक, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम इस समय मेरी थोड़ी सहायता करो !"

"अरे, अब तुम घबरा क्यों रहे हो ? मैं सोचता हूँ कि मैं बड़ी मुस्तैदी के साथ तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ। और इधर देखो दोस्त, जॉन मैचम—जॉन मैचम ही तो तुम्हारा नाम है न ? मैं—रिचर्ड शैल्टन, बड़ी से बड़ी आपत्ति का मुकाबला करने का साहस रखता हूँ। चाहे कोई परिणाम क्यों न हो, मैं तुम्हें

हालीवुड तक सुरक्षित पहुँचा दूँगा। अगर मैं तुम्हें धोखा दूँ तो देवता मुझसे उसका बदला लें। थोड़ी हिम्मत से काम लो। अब रास्ता अच्छा आ गया है। घोड़े को एड़ लगाओ! और तेज़ चलो। नहीं, मेरा ख़्याल मत करो, मैं हिरन की तरह दौड़ सकता हूँ।''

सो, इस प्रकार घोड़ा तेज़ी के साथ दुलकी पड़ गया और डिक अनायास ही साथ-साथ दौड़ता गया। उन्होंने दलदल का शेष भाग भी पूरा कर लिया और नदी किनारे आकर मल्लाह की झोंपड़ी पर पहुँच गए।

३

टिल नदी इस स्थान पर बहुत चौड़ी थी, उसका पानी बहुत सुस्त और गदला था और वह दलदल से होकर बहती थी। इस स्थल पर उसमें बहुत-सा घास-फूँस उगा हुआ था और स्थान-स्थान पर घनघोर दलदल थी। हालाँकि यह बहुत ही मैली नदी थी, लेकिन प्रातःकाल की सुन्दर वेला में सब कुछ बहुत सुहावना लग रहा था। हवा और जल-मुर्गाबियों की हलचल से नदी में हल्की-हल्की लहरें उठ रही थीं। और स्वच्छ आकाश की नीली परछाईं नदी की सतह पर प्रतिबिम्बित हो रही थी।

नदी का कछार बहुत दूर तक चलता हुआ आगे सड़क से मिल गया था। किनारे के अत्यन्त निकट ही मल्लाह की झोंपड़ी बनी हुई थी। वह झोंपड़ी बल्लियों पर मिट्टी थोपकर बनाई गई थी और उसकी छत पर भी घास उगी हुई थी।

डिक ने झोंपड़ी का दरवाजा खोला। अन्दर एक पुराने-फटे और गन्दे बिछावन पर मल्लाह लम्बा लेटा हुआ था और दलदली प्रदेश के बुखार से काँप रहा था। वह आदमी अच्छा लम्बा-तडंगा था लेकिन बुखार ने उसे खोखला कर दिया था।

"अच्छा, मास्टर शैल्टन हैं," उसने कहा, "तुम शायद किश्ती चाहते होगे? उधर एक अपना ही जहाज आया हुआ है। अच्छा है कि तुम तत्काल पीछे लौट जाओ और पुल पर से कोशिश करो।"

"नहीं, हमें बहुत जल्दी है," डिक ने उत्तर दिया, "समय बहुत हो गया है; मल्लाह ह्यूग, मैं बहुत जल्दी में हूँ।"

"बड़ा हठीला आदमी है," मल्लाह ने उठते हुए कहा, "और अगर तुम सुरक्षित मोट हाउस पहुँच गए, तो अपना सौभाग्य समझना।" और फिर मैचम

को देखते हुए बोला, "यह कौन है ?" वह अपनी झोंपड़ी के द्वार पर आकर आँखें मल रहा था।

"यह मेरे मित्र हैं, मास्टर मैचम," डिक ने उत्तर दिया।

"अच्छे मल्लाह," मैचम ने कहा—जो घोड़े से उतर चुका था और अब घोड़े की लगाम पकड़कर आगे आ चुका था। "कृपा करके किश्ती जल्दी उतार दो। हम लोग बड़ी जल्दी में हैं।"

उस गँवार मल्लाह ने अपना घूरना फिर भी जारी रखा।

"भगवान् तुम्हारा भला करे !" आखिरकार वह बोला और गला फाड़-फाड़कर हँसने लगा।

मैचम गर्दन तक लज्जा से सिहर उठा। और डिक ने क्रुद्ध मुद्रा से अपने साथी के कन्धे पर हाथ रख लिया।

"यह क्या गुस्ताखी है !" वह चिल्लाया, "अपना काम करो और अपने से श्रेष्ठों का मखौल बनाने से बाज आओ !"

ह्यूग मल्लाह ने भिनभिनाते हुए किश्ती खोल दी। और उसे धकेलकर गहरे पानी में ले गया। तब डिक ने घोड़े को नाव पर चढ़ाया और उसके पीछे मैचम भी नाव पर चढ़ गया।

"भगवान आपकी उम्र लम्बी करे, मालिक," ह्यूग ने एक गहरी मुसकराहट को गम्भीरता में बदलते हुए कहा, "नमूना मुझे कुछ ग़लत-सा दीख पड़ा। जैसा कभी नहीं देखा। नहीं मास्टर शैल्टन, मैं तो आपका ताबेदार हूँ," उसने कहा, "क्या कभी बिल्ली राजा की ओर देखने की ताब ला सकती है ? मैंने तो मास्टर मैचम को बस एक निगाह भर देखा ही था।"

"जनाब, बस अब अधिक बातचीत नहीं।" डिक ने कहा, "ज़रा कमर झुकाकर पतवार चलाओ।"

वे उस समय तक खाड़ी के मुहाने पर पहुँच चुके थे। और यहाँ से नदी का उतार-चढ़ाव अच्छी तरह अनुभव किया जा सकता था। हर जगह वह द्वीपों से घिरी थी। पिंडोल मिट्टी के किनारे छपाक से पानी में गिर पड़ते थे। फटेरे झूम रहे थे और पन्नी घास लहरें ले रही थी, जल-मुर्गाबियाँ पानी में डुबकियाँ मार रही थीं और चीख-पुकार मचा रही थीं। कहीं दूर-दूर तक भी आदमी का नाम-निशान नहीं दीख पड़ता था।

"मेरे मालिक !" मल्लाह ने किश्ती को एक ही पतवार से चलाते हुए कहा, "जॉन फेनी आजकल उस द्वीप पर आया हुआ है। उसने मुझे बताया है कि वह सर डेनियल के लोगों का कट्टर शत्रु है। कैसा रहे अगर मैं चढ़ाव की ओर एक तीर की मार पर तुम्हें खेकर ले जाऊँ और तब पार उतारूँ ? बेहतर यही है कि आपकी फेनी से टक्कर न हो।"

"तब फिर वह इस इलाके में रहता कैसे है ?" डिक ने कहा।

"अब खामोश ही रहें तो अच्छा," ह्यूग ने कहा, "लेकिन मैं नाव चढ़ाव की ओर ही ले जाऊँगा डिक। कैसा रहे अगर मास्टर मैंचम एक तीर चढ़ा लें।" वह फिर हँसने लगा।

"यह हो सकता है ह्यूग," डिक ने उत्तर दिया।

"तब यह समझ लीजिए।" ह्यग ने कहा, "अब अपनी कमान कमर से खोल लो, और उसे मेरी ओर तान लो। हाँ, अब तैयार हो जाओ और मेरे साथ थोड़ा झगड़ा करो। हाँ, कमान को मेरी तरफ खींच लो और गम्भीरता से मेरी ओर देखो।"

"इस सबका मतलब क्या है ?" डिक ने पूछा।

"क्यों मेरे मालिक, अगर मैं चोरी से तुम्हें दूसरी ओर ले जाता हूँ तो मुझे भय से या बलपूर्वक ही वैसा करना चाहिए," मल्लाह ने उत्तर दिया, "अन्यथा अगर जॉन फेनी को इसकी हवा भी मिल गई तो मेरा हाड़ तोड़ देगा।"

"क्या ये बदमाश इतना अत्याचार करते हैं ?" डिक ने पूछा, "क्या ये सर डेनियल की अपनी किश्ती पर भी इतना अधिकार जताते हैं ?"

"नहीं जी, मेरी ओर निशाना लगाए रहो। अब सर डेनियल का पतन नजदीक आ गया है। उसका समय खत्म हो चुका। वह जरूर गिरेगा। अब खामोश रहो।" और वह अपनी पतवारों पर झुक गया।

वह धार के ऊपर की ओर बहुत दूर चढ़ गए और एक द्वीप की ओट में आ गए। इसके बाद आहिस्ते से दूसरे तट के निकट बड़ी धार में पहुँच गए। ह्यूग ने किश्ती को मझधार में थामते हुए कहा, "मैं यहाँ फटेरों में तुम्हें उतार देता हूँ।"

"यहाँ तो कोई रास्ता ही नहीं है। घास-फूँस उगा है और दलदल है।" डिक बोला।

"मास्टर शैल्टन," नाविक ने कहा, "तुम्हारे ही हित में मैं तुम्हें और नीचे नहीं ले जाना चाहता। वह ज़मीन पर लेटा रहता है और अपनी तीर-कमान सँभाले रहता है। मेरी नाव और मुझ पर ही निगाह रखता है। जो कोई सर डेनियल का आदमी इधर से गुज़रता है, उसे खरगोश की तरह वह मार गिराता है। ईसु के क्रास की कसम खाकर वह बार-बार अपने इस निश्चय को दोहराता है। हालाँकि तुमसे मेरी इतनी आत्मीयता नहीं, लेकिन अतीत की स्मृतियाँ तुम्हें देखकर ताजा हो जाती हैं। मैं तुम्हें नीचे की ओर नहीं जाने दूँगा। और चूँकि यह खिलौना भी तुम्हारे साथ है और उसे युद्ध या घाव कोई भी सहन नहीं होंगे, इसलिए मैंने अपने आपको संकट में डाला है। तुम विश्वास करो, इससे अधिक मैं तुम्हें और कुछ भी नहीं बताऊँगा।"

ह्यूग अपनी पतवार पर पड़ा हुआ अब भी बोल रहा था, जबकि द्वीप पर से एक ऊँची आवाज़ आई और किसी के जंगल में से निकलते हुए आगे बढ़ने का खटका हुआ। पैरों की चाप से ही मालूम होता था कि कोई शक्तिशाली आदमी उधर बढ़ता आ रहा है।

"ओह, मारे गए!" ह्यूग चिल्लाया, "वह इतनी देर से ऊपर वाले द्वीप पर ही था।" उसने सीधा किनारे की ओर किश्ती दौड़ाई। "अच्छे डिक, मुझे अपनी कमान का भय दिखाओ।" उसने कहा, "अब तक मैंने तुम्हारा कहना किया, अब तुम मेरी जान बचाओ!"

नौका खड़खड़ करती हुई फटेरों के समूह से टकरा गई। मैचम हालाँकि भय से पीला पड़ गया था लेकिन वह चुस्त था और डिक का इशारा पाकर वह नौका के किनारे पर चलता हुआ, किनारे पर कूद गया। डिक घोड़े की लगाम पकड़े हुए था और उसे आगे खींचता हुआ किनारे पर कूद जाना चाहता था। लेकिन जानवर वज़नी था और हालाँकि झाड़ी नज़दीक ही थी लेकिन दोनों ही फँस गए। नाव पीछे भँवर में चक्कर खा रही थी और बार-बार आकर झाड़ी से टकराती थी। घोड़ा हाथ-पैर फेंक रहा था और हिनहिना रहा था लेकिन सब व्यर्थ!

"यह नहीं हो सकता; ह्यूग, यह घाट है ही नहीं।" डिक चिल्लाया। लेकिन

वह अब भी जिद्दी जानवर और उस झाड़ी के बीच संघर्ष कर रहा था।

वह लम्बा आदमी द्वीप के किनारे पर दिखाई देने लगा। उसके हाथ में एक कमान थी। डिक ने एक क्षण के लिए उसे देखा और बड़ी कठिनाई से अपनी कमान को झुकाने लगा। जल्दी से उसका चेहरा लाल हो गया था।

"कौन जा रहा है ?" वह चिल्लाया, "ह्यू ग, कौन जा रहा है ?"

"मास्टर शैल्टन है जॉन !" नाव वाले ने उत्तर दिया।

"खड़े रहो डिक शैल्टन", किनारे पर खड़े आदमी ने गर्जना की, "तुम्हें कोई भी कष्ट नहीं होगा। मैं ईसु के क्रास की कसम खाकर कहता हूँ, वापस आ जाओ। नाव वाले, वापस आ जाओ।"

डिक ने चीखकर उसे खिजाने वाला उत्तर दे दिया।

"लो तब तुम पैदल ही वापस जाओगे।" आदमी ने उत्तर दिया और साथ ही उसने तीर भी चला दिया।

घोड़े के जब तीर लगा तो वह भय और पीड़ा से जोर से उछला। किश्ती उलट गई और आन की आन में सभी लोग भँवर में डूबने लगे।

जब डिक ने उबाल खाया तो वह किनारे से कुछ ही गज की दूरी पर था। उसकी आँखें पानी से अभी साफ़ भी न हो पाई थीं कि उसने अपने हाथ में लट्ठे के समान कोई सख्त चीज़ अनुभव की जो कि उसे किनारे की तरफ़ खींच रही थी। वह घोड़ा हाँकने का डंडा था जो कि मैचम ने एक तटवर्ती झाड़ी पर लटक कर डिक के हाथ में समय से पकड़ा दिया था।

जिस समय वह किनारे पर चढ़ आया तो कहा, "भगवान् की कसम, तुमने तो आज मेरे प्राण ही बचा दिए। मैं तो भँवर में गेंद की तरह चक्कर काटता जा रहा था।"

मझधार में ह्यू ग नाविक अपनी उलझी हुई नाव को लेकर तैर रहा था। जब कि जॉन फेंगी अपने तीर द्वारा उत्पन्न इस विपत्ति पर स्वयं क्रुद्ध था और नाव वाले को चीखकर जल्दी करने का आदेश दे रहा था।

"आओ जैक"; शैल्टन ने कहा, "इससे पूर्व कि ह्यू ग अपनी किश्ती खींचकर उधर ले जाय हम भाग चलें। उस किनारे पर पहुँचकर वह दोनों मिकलकर उसे सीधा कर लेंगे, और तब हमारी चीख-पुकार भी सुनने वाला कोई न होगा।"

और उसने तत्काल दौड़ना भी प्रारम्भ कर दिया। वह झाड़ियों से छिपता

हुआ दौड़ रहा था और दलदली प्रदेश में वह एक छीलर से दूसरे छीलर पर छलांग मारता हुआ बढ़ रहा था। उसके पास दिशा-ज्ञान के लिए भी समय नहीं था। उसके मन में सबसे बड़ी बात यही थी कि वह किनारे से ज़ल्दी से ज़ल्दी दूर भाग जाये।

लेकिन शीघ्र ही धरती ऊपर उठनी शुरू हो गई। अब उन्हें यह स्पष्ट हो गया कि वे उचित दिशा में ही दौड़ रहे थे। दोनों युवक एक सुदृढ़ चट्टानी ढाल पर पहुँच गये थे।

लेकिन मैचम जो पहिले काफ़ी दूर पीछे घिसटता आ रहा था, अब लगभग ज़मीन पर गिर पड़ा था।

"मुझे यहीं छोड़ दो डिक," वह हाँफता हुआ बोला, "मैं अब एक क़दम भी आगे नहीं रख सकता।"

"तुम्हें छोड़ दूँ, यह कैसे हो सकता है?" वह चिल्लाया, "ऐसा कोई विश्वासघाती ही कर सकता है। मुझे याद है कि तुमने तीर खाने और नदी की धार में गोता खा जाने का संकट सिर पर ओढ़ कर ही मेरे प्राण बचाए हैं। वह क्षण मुझे अभी भी भूले नहीं हैं। धर्म की सौगन्ध, न जाने किस तरह झाड़ी पर लटककर तुमने मुझे डूबने से बचाया। केवल देवता ही इस रहस्य को समझ सकते हैं।"

"नहीं, अगर मैं गिर भी जाता तो मैं दोनों को बचा सकता था डिक, क्योंकि मैं तैरना जानता हूँ।" मैचम ने कहा।

"क्या तुम वाकई तैर सकते हो?" डिक आँख फाड़कर देखने लगा, क्योंकि यही वह हुनर था जिससे डिक भी वंचित था। किसी आदमी को द्वन्द्व युद्ध में मार गिराने से दूसरे दर्जे की बहादुरी वह तैरने में ही समझता था।

"अच्छा!" उसने कहा, "आज मुझे सबक मिल गया कि किसी भी आदमी को हक़ीर नहीं समझना चाहिए। मैंने तुम्हें वचन दिया था कि मैं तुम्हें हालीवुड तक सुरक्षित पहुँचा दूँगा और मैं क्रास की कसम खाकर कहता हूँ कि उलटे तुम ही मेरी सुरक्षा कर रहे हो।"

"अच्छा, डिक, अब हम दोनों मित्र हुए," मैचम ने कहा।

"लेकिन मैं तो अब तक भी अमित्र नहीं था", डिक ने कहा, "अपने तरीके से तुम एक बहादुर लड़के हो। हो सकता है थोड़े दुधमुँहे भी हो।

तुम्हारे जैसा तरुण आज तक मेरे देखने में नहीं आया। लेकिन मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम अपना साँस फिर से रोको और कूच करने के लिए तैयार हो जाओ। यह गपशप करने का समय नहीं है।"

"मेरे पैर में जोर की पीड़ा होती है।" मैचम ने कहा।

"ओह, मैं तुम्हारे पैर को तो भूल ही गया था।" डिक ने उत्तर दिया, "अच्छा, अब हम धीरे-धीरे चलेंगे। मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस समय हम कहाँ हैं। मैं रास्ता बिल्कुल भूल चुका हूँ, लेकिन चलो शायद अच्छा ही हुआ है। जो लोग नौका पर निगाह रखते हैं, वह रास्तों पर भी निगाह ज़रूर रखते होंगे। चाहता तो मैं यह था कि इसी समय सर डेनियल ४० आदमी लेकर उधर आ जायें और इन बदमाशों को इस तरह साफ़ कर दें जैसे हवा पत्तियों को साफ़ कर देती है। आओ जैक, मेरे कन्धे का सहारा लेकर चलो। ओहो, तुम तो काफ़ी लम्बे भी नहीं हो। शर्त लगाता हूँ, अगर तुम बारह से एक दिन भी ऊपर निकलो ?"

"नहीं तो, मैं तो सोलह वर्ष का हो चुका हूँ" मैचम ने उत्तर दिया।

"तब तो तुम्हारी लम्बाई कुछ भी हुई नहीं", डिक ने कहा, "ख़ैर, तो मेरा हाथ ही पकड़ लो। हम लोग धीरे-धीरे चलेंगे। डरने की बात नहीं। मेरा जीवन तुमने बचाया है जैक, और मैं बहुत अच्छा बदला देने वाला हूँ; अच्छाई का भी और बुराई का भी।'

वह ढलान पर ऊपर की ओर चढ़ने लगे।

"हमें देर-सबेर सड़क पर आ ही जाना चाहिए", डिक ने कहा, "और तब दोबारा चलना चाहिए। ओह, धर्म की कसम ! तुम्हारे हाथ कितने सूखे हुए हैं। अगर सचमुच मेरे हाथ इस तरह के होते तो इसे अपने लिए शर्म की बात समझता।" वह थोड़ा रुक-रुककर बोलता गया, "मुझे विश्वास है— ह्यूग मल्लाह ने तुम्हें औरत समझ लिया था।"

"नहीं तो, कभी नहीं !" दूसरा चिल्लाया।

"आह, उसने ऐसा ही समझा था, मैं शर्त लगाता हूँ।" डिक ने कहा, "और इसमें उसका दोष भी नहीं है। तुम आदमी से अधिक औरत लगते ही हो। अगर कोई तुम्हें लड़का कहे तो तुम कितने भौंडे लगते हो। लेकिन जैक,

छोकरी के रूप में तो तुम बहुत ही भले लग सकते हो। हाँ, एक औरत के रूप में—कितने सलोने!"

"लेकिन तुम जानते हो कि मैं औरत नहीं हूँ", मैचम ने कहा।

"नहीं जी, मैं जानता क्यों नहीं? लेकिन मैं तो मजाक करता था।" डिक ने कहा, "अपनी माँ के लिए तो आदमी ही हो। तुम तो बड़े प्यारे वार करने वाले हो। मुझे तो आश्चर्य होता है कि तुम-हममें से कौन पहिले नाइट बनेगा। क्योंकि नाइटहुड तो मुझे लेनी है अथवा उसके लिए प्राण खो दूँगा। 'सर रिचर्ड शैल्टन, नाइट' कितना बहादुराना मालूम पड़ता है। लेकिन 'सर जॉन मैचम' भी कुछ घटिया नहीं मालूम पड़ता!"

"मैं विनती करता हूँ कि तुम यह मखौल बन्द करो—मैं ज़रा पानी पी लूँ।" दूसरे ने कहा। वह एक स्थान पर जेब के बराबर सोते को बहता देखकर रुक गया था और उस साफ़ पानी को पीना चाहता था। "ओ डिक, अगर इस समय कुछ खाने को भी मिल जाता। भूख के मारे मेरा पेट दर्द करने लगा है।"

"क्यों, खाना किसलिए? क्या कैटले में तुमने खाना नहीं खाया था?" डिक ने पूछा।

"मैंने सिर्फ़ कसमें ही खाई थीं, क्योंकि मुझे पाप के रास्ते पर खींचा जा रहा था, लेकिन अब तो सूखी रोटियाँ भी हों तो मैं मजे से खा सकता हूँ।" मैचम ने कहा।

"तब फिर तुम बैठो और खाओ" डिक ने कहा, "इतने में मैं घूम-फिरकर सड़क को देखता हूँ।" और तभी उसने अपनी पेटी से रोटी और सूअर के गोश्त के भुने हुए टुकड़े निकाल लिये और जब कि मैचम उन पर टूट रहा था—वह घूमता हुआ काफ़ी आगे पहुँच गया था।

थोड़ी दूर आगे चलकर उसे एक गड्ढा दिखाई दिया। इस गड्ढे में एक तरफ़ कुछ गली हुई पत्तियों के बीच एक छोटा-सा चश्मा चमक रहा था। इस स्थल से आगे सुन्दर वृक्षों की पंक्तियाँ दूर-दूर तक फैली हुई थीं। पनैली झाड़ियों की बजाए अब देवदार और चीड़ के वृक्ष नज़र आने लगे थे। उसने आगे की ओर बढ़ना जारी रखा। हवा के चलने से पैदा होने वाली पत्तियों की खड़खड़ाहट में उसके पैरों की आहट डूबती जा रही थी। चाँदनी से हीन रात्रि में जैसे नज़र चलती है, कुछ इसी प्रकार इस सन्नाटे से भरे इलाके में वह चलता जाता

था। डिक एक ढलान से दूसरे ढलान पर सावधानी से पैर बढ़ाता हुआ नीचे उतर रहा था और अपने चारों ओर सतर्कतापूर्वक देखता भी जाता था। अकस्मात् एक हिरन उसके आगे से दौड़ता हुआ निकल गया। इस अवसर को हाथ से खो देने के लिए अपने आप पर खिन्न होता हुआ वह खड़ा रह गया। वह हिरन पास की झाल में से निकलकर परछाईं की तरह उसकी आँखों के आगे से ओझल हो गया था। लेकिन इससे यह स्पष्ट होता था कि वह जंगल निर्जन है और वह हिरन एक हलकारे के समान उसके आने की खबर जंगल में फैलाने के लिए जैसे गया है। अब वह आगे बढ़ने की बजाए वृक्षों के एक समूह की ओर बढ़ गया और तत्काल एक वृक्ष पर चढ़ने लगा।

भाग्य ने उसका अच्छी तरह साथ दिया था। जिस देवदार के वृक्ष पर वह चढ़ा था, वह जंगल के वृक्षों में से सबसे ऊँचा था और अपने पड़ोसियों से काफ़ी ऊँचा निकल गया था। जब डिक सबसे ऊँची चोटी पर पहुँच गया और शाख पर लटककर हवा में झूलने लगा, उसने पाया कि कैटले तक सारा दलदल प्रदेश उसे साफ़-साफ़ दिखाई दे रहा है। दूर पर पतली रेखा की तरह बड़ी सड़क बिछी पड़ी है। टिल नदी जंगली रास्तों में से होती हुई और जंगल में गुंजल्क लेती हुई प्रवेश कर रही है। उसने देखा कि किश्ती अब सीधी कर ली गई है और अभी तक मझधार में खड़ी है। उससे आगे दूर-दूर तक आदमी का नाम-निशान भी नहीं है, केवल हवा के झोंके सन्नाटा भरते दीख पड़ते हैं। वह उतरने वाला ही था कि अन्तिम बार देखते हुए उसकी दृष्टि एक हरकत करने वाली वस्तु पर टिक गई। नीचे वाली सड़क पर एक टुकड़ी काफ़ी तेज़ी से बढ़ती आ रही थी। यह देखकर उसे अपने साथी की चिन्ता हुई और वह जल्दी-जल्दी नीचे उतरा और जंगल पार करके अपने साथी के पास पहुँच गया।

४

मैचम ने अच्छी तरह से आराम कर लिया था और उसकी थकान उतर चुकी थी। डिक ने जो कुछ देखा था, उसे जानकर दोनों के पैरों में पंख लग गए थे। इन्होंने तेजी के साथ वह जंगल पार कर लिया। वह सड़क को सुरक्षा-पूर्वक पार कर गए और अब टन्सटाल वन के ऊँचे प्रदेश पर चढ़ने लगे। अब वृक्षों के कुंजों की संख्या बढ़ती नजर आती थी और कटीली कसौंदी से भरे बहुत-से स्वस्थ स्थल नज़र आने लगे थे। कहीं-कहीं पर पुराने कटे हुए वृक्षों के ठूँठ भी दीख पड़ते थे। भूमि अधिकाधिक ऊबड़-खाबड़ आती जाती थी। कहीं गहरे गड्ढे आ जाते और कहीं सहसा ऊँची चट्टान खड़ी हो जाती थी। चढ़ाई के हर क़दम पर हवा तेज़ हो जाती थी और पेड़ों के सिर मछली पकड़ने के काँटे की तरह लचकते हुए दिखाई देते थे।

वह कुछ ही दूर चलकर एक खुले मैदान में आए होंगे कि डिक अकस्मात् मुँह के बल ज़मीन पर लेट गया और उसी तरह पीछे हटने लगा। उसका साथी अभी तक आश्चर्यचकित था परन्तु उसीकी तरह रेंगता हुआ पीछे हट रहा था। वह दोनों जब तक झाड़ी की ओट में न आ गए तब तक एक शब्द भी मुँह से न बोले। मैचम ने—जिसकी समझ में इस पलायन का कारण बिल्कुल ही न आया था—झाड़ी की ओट में पहुँचकर अपने साथी से फुसफुसाते हुए पूछा, "क्या बात है?"

डिक ने उत्तर देने की अपेक्षा आगे की ओर उँगली से संकेत कर दिया। उस मैदान के दूसरे किनारे पर एक शाहबलूत का वृक्ष अपने आसपास के वृक्षों से बहुत ऊँचा उठा खड़ा था। और उसकी काली-काली शाखाएँ आकाश की

ओर उठी हुई थीं। पृथ्वी से लगभग पचास फीट तक तना सीधा चला गया था और इसके बाद दो मोटी शाखाओं में बँट गया था। उसी के निकट एक भटके हुए नौ-सैनिक की तरह एक आदमी हरी पोशाक में खड़ा था और चारों ओर सिर घुमा-घुमाकर जासूस की तरह देख रहा था। वह अपना सिर धीरे-धीरे इधर से उधर लगातार चारों तरफ़ घुमा रहा था और इतने व्यवस्थित रूप से जैसे कि कोई मशीन हो।

छोकरों ने आँखों ही आँखों में एक दूसरे से बातचीत की।

"हमें बायें बाजू पर कोशिश करनी चाहिए," डिक ने कहा, "हम तो करीब-करीब संकट के मुँह में फँस ही गए थे जैक!"

"यह जंगल का टुकड़ा ऐसा है जिससे मैं बिलकुल अपरिचित हूँ" डिक फिर बोला, "न जाने यह रास्ता किधर जाता है।"

"कम से कम हम थोड़ी दूर चलकर तो देखें।" मैचम ने कहा। कुछ गज़ चलने पर वह बटिया एक चट्टान के ऊपर पहुँच गई और फिर तत्काल ही प्याले की शक्ल के एक गड्ढे में उतरने लगी। गड्ढे में नीचे फूलदार कटीली झाड़ियों का वन खड़ा हुआ था और पास में ही किसी मकान की कुछ जली हुई दीवारें खड़ी थीं और बीच में ऊपर उठी हुई एकाकी चिमनी यह स्पष्ट करती थी कि वह कोई मकान था।

"यह क्या हो सकता है ?" मैचम फुसफुसाया।

"नहीं, धर्म की कसम, मैं नहीं जानता," डिक ने उत्तर दिया, "इस इलाके में तो मैं बिल्कुल अनजान हूँ। चलो हिम्मत करके आगे बढ़ें।"

धड़कते दिलों को लेकर दोनों कँटीली झाड़ियों से गुज़रने लगे। यहाँ-वहाँ पर कुछ बोये जाने का पता चलता था। फलों के वृक्ष और गमलों में उगने वाली बेलें झाड़ियों पर फैली पड़ी थीं। पास ही घास में एक सूर्य-घड़ी टूटी पड़ी थी। मालूम होता था जिस स्थान से वह गुज़र रहे थे, वहाँ पहिले कोई बगीचा था। इसके थोड़ी ही देर बाद वे एक मकान के ध्वंसावशेषों के निकट पहुँच गए।

यह हवेली किसी समय बड़ी सुन्दर और मजबूत रही होगी। इसके चारों ओर एक सूखी खाई खुदी हुई थी। इस खाई में इस समय मलबा भरा हुआ था और एक बहुत बड़ी बल्ली इसमें गिरी पड़ी थी। दो दीवारें अभी तक खड़ी

हुई थीं, उनकी खिड़कियों में से सूर्य की किरणें चमक रही थीं। शेष सारी इमारत विस्मार हो चुकी थी और अग्नि ने जलाकर उसे भयावना कर दिया था। अन्दर के सहन में अभी तक भी कुछ हरे पौधे उगे हुए थे।

"मेरा ख़्याल ऐसा है," डिक ने कहा, "यह पत्थर की हवेली है। यह हवेली माल्सबरी नाम के व्यक्ति के अधिकार में थी। सर डेनियल से उसकी पुरानी शत्रुता थी। आज से पाँच वर्ष पहिले बैनेट हैच ने उसका दहन किया था। मैं कसम से कहता हूँ कि यह बड़ी सुन्दर इमारत थी, इसकी वह अवस्था देखकर कितना अफसोस होता है?"

उस खड्ड में नीचे हवा नहीं थी, इसलिये वातावरण शान्त और गर्म था। मैचम ने एक हाथ डिक की बाँह पर टिकाते हुए अंगुली से संकेत करते हुए कहा, "हिश···।"

तब एक अजीब-सी आवाज़ उस खामोशी को भंग करती हुई बढ़ने लगी। इसके पूर्व कि वह उस आवाज को पहचानते, वह आवाज़ दो बार दोहराई जा चुकी थी। यह आवाज़ किसी ऐसे आदमी की थी जो अपना गला साफ़ कर रहा हो। और ऐसी खरखरी थी जो बेसुरी होकर किसी गाने में लिपट गई है :

"तब वह जंगल का सरदार उठा और बोला :
'मेरे आनन्दी मित्रो, यहाँ ग्रीनवुड में तुम्हें कौन-सी चीज खींच लाई है।'
और गेमलिन ने जवाब दिया, वह जैसे निगाहें नीची करना न जानता था।
'ओ, वह लोग जिन्हें शहरों में घूमने को नहीं मिलता, उन्हें जंगलों में विचरने की इच्छा होती है।'"

इसके बाद गायक रुक गया। तब लोहे की हल्की-सी झन्कार हुई और फिर चारों ओर खामोशी छा गई।

दोनों छोकरे एक दूसरे की ओर देखते हुए खड़े रह गए। वह कोई भी हो लेकिन उनका वह अदृश्य पड़ोसी उन खण्डहरों के थोड़ी दूर ही आगे था। अकस्मात मैचम के चेहरे पर चमक आ गई और अगले ही क्षण उसने गिरी हुई बल्ली को पार कर लिया था। और वह सतर्कता से अन्दर भरे हुए मलबे पर चढ़ता हुआ चला जा रहा था। समय रहते डिक को पता चल जाता तो वह उसे रोक लेता लेकिन अब उसके पीछे जाना नितान्त आवश्यक था।

खण्डहर के एक कोने में दो कड़ियाँ आर-पार गिर गई थीं और उनके नीचे गिर्जाघर में घिरे हुए बैठने के स्थान के समान ही वहाँ जगह बच गई थी। छोकरे आहिस्ते से उसी स्थान में प्रवेश कर गए। यहाँ पहुँच कर वह बिल्कुल छिप गए थे और एक बारीक सूराख से वे दूसरी तरफ़ का सारा व्यापार देख पा रहे थे।

इसी सूराख के अन्दर से झाँककर उन्होंने अनुभव किया कि वे घोर आपत्ति के मुँह में आ पड़े हैं। अब पीछे लौटना असम्भव था और उनके लिए साँस लेना भी मुश्किल हो रहा था। उस खाई के बिल्कुल पास ही—जिस स्थान पर वह छिपे हुए थे—वहाँ से केवल तीस फीट की दूरी पर ही एक लोहे का कढ़ाव खौल रहा था और उसके नीचे बहुत तेज़ आग दहक रही थी। और उसके निकट ही कुछ आहट लेने की-सी स्थिति में—जैसे कि उसने उन्हें वहाँ छिपते हुए देख लिया हो—एक लम्बा, लाल मुँह वाला जर्जर-सा आदमी हाथ में एक करछा सँभाले, एक हार्न और पेटी में एक जबर्दस्त छुरा लगाए हुए खड़ा था। साफ़ था कि यही आदमी कुछ देर पहिले गा रहा था। वह शायद कढ़ाव को चला रहा था, तभी शायद कोई असावधान क़दम पड़ने से वह चौंक उठा होगा। उससे कुछ ही दूर के फासले पर एक आदमी सोता हुआ खुर्राटे भर रहा था; वह एक भूरा लबादा ओढ़े हुए था और उसके सिर पर एक तितली उड़ रही थी। यह सब दृश्य सफ़ेद गुलबहार के फूलों से घिरा था। दूसरे किनारे पर कमान और तीरों से भरा एक तरकश रखा था, और पीले फूलों वाली कटीली झाड़ी पर एक मृगछाला टँगी हुई थी।

उसी क्षण उस व्यक्ति का भाव बदल गया, उसने 'अटेन्शन' की स्थिति को भंग करके करछा अपने मुँह की ओर बढ़ाया और उसमें से कुछ अंगुली पर लेकर चाखा और चटखारा लेकर सिर हिलाया और फिर से कढ़ाव को चलाने और गाने में मस्त हो गया :

"और जिन्हें शहर में घूमने की सुविधा नहीं होती,
वही जंगल में विचरण करने के लिए आते हैं—

उसने जहाँ अपना गीत समाप्त किया था वहीं से फिर उठाने का प्रयत्न किया :

"श्रो सर, हम यहाँ कुछ बुरा काम करने के लिए नहीं भटकते,
बस अगर हमें राजा का एक हिरन मिल जाय, जिसे हम बाण मारकर गिरा सकें।"

जैसे-जैसे वह गा रहा था, करछे में कुछ भरकर मुँह के निकट लाता जाता था और फूँक मारकर कुछ चखता भी जाता था। वह एक अच्छे पाचक की तरह मुद्राएँ बनाता था। आखिर उसने यह घोषित करने के लिये कि रसोई तैयार है, अपने फेंटे से तुरही निकाली और तीन बार उसे बजाया।

दूसरा व्यक्ति भी जाग उठा और लुढ़कता हुआ उठ बैठा। उसने उस तितली को उड़ा दिया और इधर-उधर देखने लगा।

"क्या हाल है भाई!" उसने पूछा, "खाना?"

"ए मतवाले," पाचक ने उत्तर दिया, "खाना तो है ही और खुश्क खाना है, न तो पीने के लिए शराब है और न रोटी, लेकिन ग्रीनवुड में यह मौसम कितना सुहावना है—जबकि आदमी यहाँ एक मठाधीश के समान शान से रह सकता है। न वर्षा है, न सफ़ेद कोहरा और वह जी भर कर जौ और अंगूर की शराब पी सकता है। लेकिन अब तो लोगों की आत्माएँ ही मर गई हैं। लेकिन यह जॉन एमेण्ड-आल वह हमारी रक्षा करे—बस जानवरों को डराने के लिए बनाया गया—एक उचका मात्र है।"

"नहीं", दूसरे ने उत्तर दिया, "तुम्हें शीघ्र ही मांस और जौ की शराब उड़ाने को मिलेंगे, ज़रा थोड़ा धैर्य रखो। अच्छा समय आने वाला है।"

"तुम देखो तो", पाचक ने कहा, "मैं तो काफ़ी मुद्दत से अच्छे वक्त की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, मैंने तो भगवा वस्त्र धारण करके महन्त बनकर भी देख लिया। मैं राजा की सेवा में तीरंदाज भी रह चुका हूँ, मैं नौ-सैनिक भी रह चुका हूँ और अनेक खारे सागरों को पार कर चुका हूँ, और मैं धर्म की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं इससे पहले भी—ग्रीनवुड में रह चुका हूँ और मैंने राजा के हिरनों का भी शिकार किया है। लेकिन इससे क्या बनता-बिगड़ता है। मैं इन सब स्थानों की अपेक्षा अपने मठ में ही अच्छा था। जॉन एवोट (महन्ती करके ठगने वाला) इस जान एमेण्ड-आल से अधिक पैसा बना लेता है। लो वे आ गए!"

एक के बाद एक लम्बे और तगड़े आदमी लॉन में आने लगे। प्रत्येक आदमी आकर एक छुरी, एक प्याला लेता था और कढ़ाव में से अपने लिए स्वयं खाद्य-पदार्थ निकालकर घास पर बैठकर खाना शुरू कर देता था। वह लोग अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थे। कुछ के पास घिसी हुई कमीज़ें थीं। उनके पास एक चाकू और पुरानी तीर-कमान के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। कुछ लोग जंगली शौर्य को चमकाने के लिए हरियाली लपेटे हुए थे, और पेटियों में खूबसूरत मोरपंखों के तीर लगाए हुए थे। उनकी बगलों में तलवार और खंजर लटके हुए थे। वे जैसे भूख से व्याकुल हो रहे थे क्योंकि एक दूसरे का अभिवादन किए बिना ही मांस पर टूट पड़े थे।

उनमें से लगभग बीस आदमी जमा हो चुके थे। उसी समय पीली कटीली झाड़ियों में से एक हर्ष ध्वनि सुन पड़ी। कुछ लोग एक स्ट्रेचर उठाए चले आ रहे थे। उनके आगे-आगे एक लम्बा तडंगा आदमी कुछ अधिकार-भावना से चल रहा था। उसके कन्धे पर धनुष लटक रहा था और हाथ में सूअर का शिकार खेलने वाला भाला चमक रहा था।

"जवानो !" वह चिल्लाया, "मेरे शानदार दोस्तो और त्रस्त आत्माओ ! तुमने आज तक सूखे शंख ही बजाए हैं। लेकिन मैंने तुमसे सदैव ही कहा है कि भाग्य पर भरोसा रखो, वह एक न एक दिन बदलेगा, अवश्य बदलेगा। और देखो भाग्य-परिवर्तन का यह पहला सबूत—यह जौ की शराब !"

जिस समय स्ट्रेचर थामने वाले लोगों ने एक पीपा उतारकर सामने रखा तो लोगों में प्रशंसात्मक रूप में कुछ कानाफूसी होने लगी।

"और अब ज़ल्दी करो, जवानो !" आदमी ने अपना कथन जारी रखा, "अभी सिर पर काम है। कुछ तीरंदाज दलदल में आए हैं। उनकी वर्दी नीले रंग की है। उन्हें हमारे तीरों का मज़ा चखना है। वह हमारे निशाने बनेंगे और उनमें से एक भी इस जंगल में से बचकर न निकल सकेगा। क्योंकि, जवानो, हममें से हर एक किसी न किसी जुल्म का शिकार बनाया गया है। किसीकी भूमि छीन ली गई है, किसीके मित्र और किसीको कानून की सुरक्षा से भी वंचित कर दिया गया है। आखिर यह गुनाह किसने किया है ? सर डेनियल ने ? ईसु के चक्र की सौगन्ध, तो क्या हम उसे यूँ ही साफ़ बच निकलने देंगे ? क्या वह हमारे मकानों में चैन से बैठ सकेगा ? क्या वह सदैव

ही हमारे खेत जोतता रहेगा ? क्या वह उस हड्डी को आराम से चिचोड़ता रहेगा जो उसने हमारे हाथ से छीन ली है ? मैं चुनौती देता हूँ कि नहीं ! वह कानून से शक्ति प्राप्त करता है, वह मुकदमे जीत लेता है। नहीं, एक मुकदमा ज़रूर है जिसे वह नहीं जीत सकेगा और उसीकी दस्तावेज़ यहाँ मेरी पेटी में बन्धी है जो कि—देवताओं की सौगन्ध—उसे अवश्य ही नीचा दिखाकर के छोड़ेगी।"

पाचक इस समय शराब का दूसरा पात्र भी ढाल चुका था। उसने अपना पात्र उठाया, वक्ता के साथ वचन-बद्धता प्रकट करते हुए।

"मास्टर एलिस" उसने कहा, "तुम प्रतिशोध लेना चाहते हो। अच्छा है, तुम्हें यही शोभा देता है। लेकिन तुम्हारा मित्र ग्रीनवुड का सरदार—उसके पास न खाने के लिए भूमि है, न ही मित्र, जिनके बारे में वह विचार करे—इस मुनाफे की चर्चा को कुछ बहुत आकर्षक नहीं समझता। वह तो दोजख़ के हर प्रतिशोध की अपेक्षा उस सोने से तुलने वाले सामन्त और एक पीपा शराब को प्राप्त करना पसन्द करता है।"

"सरदार," दूसरे ने उत्तर दिया, "मोट हाउस जाने के लिए सर डेनियल इधर से गुजरेगा तो हम इस पथ को उसके लिए अधिक कड़ुवा और खतरनाक बना देंगे—युद्ध से अधिक खतरनाक, और जब वह जमीन पर लुढकने लगेगा और उसके समस्त परम मित्र भू-लुण्ठित हो चुके होंगे अथवा भाग चुके होंगे, तो हम लोग चारों ओर से उसे घेर लेंगे। वह एक मोटा हिरन है—उससे हमारा शानदार भोजन बनेगा।"

"अरे," पाचक ने कहा, "मैंने ऐसे बहुत-से डिनर खाए हैं, लेकिन उनका पकाना एक बहुत टेढ़ा काम है, गुड मास्टर एलिस ! और इस बीच हम क्या करते हैं ? हम लोग काले तीर तैयार करते हैं और कविता लिखते हैं और स्वच्छ और ठण्डा पानी पीते हैं और वह बदजायका शराब ...।"

"तुम ग़लत बात कहते हो 'विल'। तुम्हें अभी तक भी उस भगवा महन्त की घी-मक्खन की सुगन्ध याद आती है। तुम अभी तक लालच नहीं छोड़ पाए हो।" एलिस ने उत्तर दिया, "हमने एपिलयार्ड से बीस पौण्ड लिए। हमने कल रात वाले यात्री से ७ मार्क लिए। एक दिन हुआ हमने एक सौदागर से पचास लिए थे।"

"और आज," उनमें से एक ने कहा, "आज मैंने एक मोटे आदमी को—

जो तेज़ी से हालीवुड की ओर जा रहा था—थाम लिया। यह देखो उसका बटुआ।"

एलिस ने बटुए के सिक्कों को गिना।

"केवल सौ शिलिंग!" वह बड़बड़ाया, "बेवकूफ, और कुछ उसकी सैण्डल में होगा या गुलूबन्द में सिला हुआ होगा। तुम तो अभी भोले बालक ही हो, टॉम कक्कू! तुमने मछली हाथ से खो दी।"

"लेकिन फिर भी एलिस ने वह बटुआ अपनी जेब में डाल लिया और अपने भाले पर ठोढ़ी टिकाकर दूसरों की तरफ़ देखने लगा। वह उस हिरन की खाल से बने पात्र को लालच से देख रहे थे और उसे शराब से धो रहे थे। यह दिन उनके लिए अच्छा था, उनका भाग्य सीधा पड़ रहा था। लेकिन काम का भार सिर पर था और वह खाने में जल्दी कर रहे थे। जो लोग कुछ पहिले ही आ गए थे, वह अबतक अपना भोजन प्रायः समाप्त कर चुके थे। कुछ घास पर लेट गए थे और तत्काल उन्हें नींद ने आ दबाया था। कुछ आपस में बातचीत कर रहे थे और कुछ अपने शस्त्रों को साफ़ कर रहे थे। और एक जो सबसे अधिक पुर-मज़ाक आदमी था, वह अभी तक शराब का पात्र हाथ में थामे हुए था और गाने लगा था :

"यहाँ ग्रीनवुड के कुंजों में कोई कानून नहीं है—
यहाँ मांस की भी क नहीं है।
यहाँ सब तरफ़ आनन्द और श '= और हमारे भोजन के लिए हिरन हैं—
गर्मियों में, सभी कुछ मधुर हो जाता है—

"ओ शीत ऋतु, तू फिर आना अपनी झंझा और वर्षा के साथ—
आना शीत ऋतु बर्फ़ और ओलों के साथ—
तब हम लोग अपने घरों को चले जाएँगे, अपने चेहरों पर नक़ाब डालकर,
और आतिशदान के पास बैठकर तपेंगे और खाएँगे।"

इस अवधि में दोनों छोकरे उस वार्ता को सुनते रहे थे और एक दूसरे के

निकट लेटे रहे थे। रिचर्ड ने अपनी कमान हाथ में ले रखी थी और लोहे की वह चुटकी जिससे वह अपनी कमान खींचता था, अपने हाथ में ही पकड़ रखी थी। अन्यथा उन्होंने हिलने-डुलने का भी साहस नहीं किया था और जंगली जीवन का यह दृश्य उनकी आँखों के सामने किसी थियेटर के पर्दे पर दिखाए गए दृश्य के समान दीख पड़ रहा था। लेकिन अब उस दृश्य में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन घटित हो रहा था। वह ऊँची चिमनी जो कि इस खण्डहर के ऊपर खड़ी थी, उनके छिपने के स्थान के बिलकुल ऊपर थी। उसी समय हवा में एक साँय-साँय हुई और टकराहट; और एक टूटे हुए तीर के कुछ टुकड़े उनके कान के पास ही आकर गिरे। किसी ने जंगल के ऊपरी हिस्से से—शायद उसी संतरी ने, जिसे उन्होंने देवदार के वृक्ष के पास देखा था—वह तीर चिमनी की चोटी पर चलाया था।

मैचम के मुह से हल्की-सी चीख निकल गई। लेकिन उसने तत्काल ही उसे दबा लिया। डिक भी आश्चर्य से उछल पड़ा और उसके हाथ से कमान छूट गई। लेकिन घास पर खड़े हुए लोगों के लिए वह जैसे सिगनल था—जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहे थे। वह तत्काल एक साथ खड़े हो गए। कोई अपनी पेटी कस रहा था, कोई धनुष की ताँत की परीक्षा कर रहा था और कोई अपनी तलवार और खञ्जर को म्यान से बाहर सूँत रहा था। एलिस ने अपना हाथ ऊँचा कर लिया था। उसके चेहरे पर एक पाशविक शक्ति का उदय हो चुका था। और धूप से लाल पड़े हुए उसके चेहरे पर उसकी सफेद आँखें चमकने लगी थीं।

"जवानो", उसने कहा,"तुम अपने स्थानों को जानते हो। एक भी आदमी बचकर जाने न पाए। एपिलयार्ड हमारी भूख को तेज करने वाला उपहार था और अब हम भोजन की मेज़ पर ही बैठने वाले हैं। मेरे मन में तीन आदमी हैं जिनका मैं आज भरपूर बदला चुकाऊँगा—हैरी शैल्टन, साइमन माल्सबरी और—"उसने अपनी छाती पर हाथ मारते हुए कहा, "एलिस डकवर्थ। धर्म की सौगन्ध खाता हूँ!"

उसी समय एक आदमी हाँफता हुआ दौड़ा आया और उसने कहा, "वह सर डेनियल नहीं है। वे लोग केवल सात हैं। क्या तीर छूट चुका है?"

"हाँ-हाँ, अभी-अभी तो आकर टकराया है।" एलिस ने उत्तर दिया।

"ग़जब हो गया", सम्वादवाहक चिल्लाया, "मैंने सोचा यह सीटी बजी है। और बिना भोजन के ही रह गया।"

केवल एक मिनट की ही अवधि में कोई भागता हुआ, कोई झपटता हुआ—क्योंकि किसी का स्थान दूर था और किसी का निकट था—अपने स्थान की ओर बढ़ने लगा। वे काले तीर वाले लोग धीरे-धीरे उस खण्डहर के निकट से दूर जा चुके थे और वह बड़ा कढ़ाव, वह धीमी-धीमी जलती हुई आग और पीले फूलों वाली कँटीली झाड़ी पर पड़ी हुई वह मृगछाला एक ही यथार्थ की सूचना देते रह गये थे कि कुछ देर पहले वहाँ इन्सान रह चुके हैं।

५

छोकरे उस समय तक चुपचाप लेटे रहे जब तक कि जंगली योद्धाओं के पदचाप बिल्कुल ही हवा में न खो गये। तब वे उठे। चूर-चूर कर देने वाली यात्रा के कारण उनकी देह बहुत दुखने लगी थी। वह खण्डहर पर चढ़कर बाहर आए और उस शहतीर पर चढ़कर फिर से खाई को पार कर गए। मैचम ने चुटकी उठा ली थी और पहिले चला गया था। और डिक अपने धनुष को सम्भालता हुआ उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

"और अब" मैचम ने कहा, "हम लोग हालीवुड की ओर बढ़ें।"

"हालीवुड की ओर ?" डिक चिल्लाया, "जब उन लोगों के सीनों में तीर बिंध चुके हों, मैं नहीं जाऊँगा ! जैक, मैं पहिले तुम्हें फाँसी पर लटकता देखना पसन्द करूँगा।"

"तुम मुझे छोड़ जाओगे। क्या सचमुच ?" मैचम ने पूछा।

"मैं धर्म की कसम खाकर कहता हूँ" डिक ने उत्तर दिया, "अगर मैं उन जवानों को समय पर सचेत न कर सका तो मैं भी उनके साथ लड़ता-लड़ता मर जाऊँगा। क्या ? तुम चाहते हो कि जिन लोगों के बीच मैं आज तक रहा उन्हें इस तरह छोड़ दूँ ? मैं ऐसा कभी न कर सकूँगा। लाओ मेरी चुटकी दो।"

लेकिन मैचम की ओर से कुछ भी उत्तर नहीं आया।

"डिक, तुमने देवताओं की सौगन्ध खाई थी कि तुम मुझे हालीवुड तक सुरक्षित पहुँचा दोगे" मैचम ने कहा, "क्या तुम अपनी सौगन्ध वापस लेते हो ? क्या तुम मुझे इस तरह छोड़ जाओगे ?"

"नहीं, मैंने भरसक चेष्टा करने की सौगन्ध खाई थी" डिक ने उत्तर दिया, "मैं अब भी उस पर दृढ़ हूँ। लेकिन देखो जैक, मुझे इन जवानों को चेतावनी दे देने दो। तुम अभी मेरे साथ आओ। और अगर आवश्यकता पड़ी तो उनके कन्धे से कन्धा मिलाकर तीर भी खा लेने दो। तब सब साफ़ हो जायेगा और मैं तुम्हें हालीवुड पहुंचाकर अपनी सौगन्ध का पालन करूँगा।"

"लेकिन तुम मुझे गुमराह क्यों करते हो ?" मैचम ने उत्तर दिया, "जिन लोगों के उद्धार के लिए तुम जा रहे हो यही तो मुझे मेरे सर्वनाश के लिए पकड़ने के लिए दौड़ रहे हैं।"

डिक ने असहमति प्रकट करते हुए अपना सिर अजीब अन्दाज़ से हिलाया और कहा, "मैं अब कुछ नहीं कर सकता जैक, अब इसका मेरे पास कोई इलाज नहीं है। तुम ऐसा क्यों कहते हो ? तुम्हारे सिर पर इस समय तो कोई सङ्कट नहीं है। उनकी तरफ़ नहीं देखते जो मौत के मुँह में जा रहे हैं। मुझे छुट्टी दो। क्या तुम उन सबको मरवा देने पर तुले हुए हो ?"

"रिचर्ड शैल्टन" मैचम ने उसके चेहरे पर देखते हुए कहा, "तो क्या तुम फिर से सर डेनियल के साथ हमसफ़र होना चाहते हो ? क्या तुमने अपने कानों से नहीं सुना है ? क्या तुमने उस एलिस को नहीं सुना कि वह क्या कहता था ? क्या तुम्हारे हृदय में अपने रक्त के प्रति ममता नहीं है, और जिन्होंने उन्हें कत्ल किया उनके प्रतिशोध के लिए तुम्हें कुछ नहीं करना है ? 'हैरी शैल्टन' उसने कहा था और हैरी शैल्टन ही तुम्हारे पिता थे। यह बात तो सूर्य के प्रकाश के समान साफ़ हो चुकी है।"

"तुम क्या चाहते हो ?" डिक चिल्लाया, "क्या तुम चाहते हो कि मैं इन डाकुओं पर विश्वास कर लूँ ?"

"नहीं, मैंने इनसे भी पहिले सुना है," मैचम ने कहा, "यह बात दूर-दूर तक फैल चुकी है कि सर डेनियल ने ही उन्हें कत्ल किया था। उसने एक सौगन्ध खाकर उनका कत्ल किया था और अपने ही घर में एक बेगुनाह का खून किया था। आज स्वर्गस्थ आत्मा तुमसे अपना प्रतिशोध लेने की हसरत रखती है। और तुम हो कि कातिल की मदद करने जा रहे हो !"

"जैक," डिक चिल्लाया, "मैं यह सब नहीं जानता ! ऐसा हो भी सकता है, लेकिन मैं कैसे जानूँ ! लेकिन देखो तो। उस आदमी ने मुझे पाला है, बड़ा

किया है। और उन आदमियों को जिनके साथ मैंने शिकार खेलना सीखा, क्या उन्हें मैं मौत के मुँह में छोड़ दूँ? ओ, मेरे साथी, अगर मैं वैसा करता हूँ तो मेरे इस कृत्य से मनुष्यता की मर्यादा भंग होगी। नहीं जैक, अब तुम मुझसे वैसा करने को मत कहना, अब तुम मुझे यह कुत्सित कार्य करने की प्रेरणा फिर न देना।"

"लेकिन तुम्हारे पिता का प्रतिशोध डिक!" मैचम ने अपने अन्तर में कुछ अविश्वास-सा करते हुए कहा, "तुम्हारे पिता का प्रतिशोध और मेरे लिए तुम्हारी सौगन्ध, जो कि तुमने देवताओं को साक्षी करके खाई थी, उसका क्या होगा?"

"मेरे पिता का प्रतिशोध?" शैल्टन चिल्लाया, "नहीं, उनके प्रति मेरा कर्तव्य मुझे जाने से नहीं रोकता। अगर सर डेनियल ने उन्हें कत्ल किया है, तो जब अवसर आएगा, यही हाथ उन्हें तलवार के घाट उतारेगा। लेकिन विपत्ति के समय मैं अपने साथियों के साथ विश्वासघात नहीं करूँगा। और तुम्हें दी हुई मेरी सौगन्ध? मैं तुमसे विनती करता हूँ जैक, कि तुम मुझे उसका पालन करने के लिए मजबूर न करो। इतने लोगों का जीवन संकट में है। मेरी प्रतिष्ठा के लिए तुम मुझे उस सौगन्ध के बन्धन से मुक्त कर दो, मैं तुम-से यही उम्मीद करता हूँ।"

"मैं डिक, ऐसा कभी नहीं करूँगा," मैचम ने कहा, "तुम मुझे छोड़कर जा रहे हो। तुम अपने वचन से विमुख हो रहे हो। मैं बार-बार यह कहूँगा।"

"मेरा रक्त खौलता है," डिक ने कहा, "मेरी चुटकी मुझे दो। लाओ, दो जल्दी।"

"मैं नहीं दूँगा," मैचम चिल्लाया, "मैं तुम्हें अपना सर्वनाश नहीं करने दूँगा।"

डिक चिल्लाया, "मैं तुमसे लेकर दिखा दूँगा।"

"तो फिर कोशिश कर देखो।" मैचम ने कहा।

वे दोनों एक दूसरे की तरफ़ घूरते हुए खड़े रहे। और दोनों ही जैसे एक दूसरे पर झपटने के लिए तैयार थे। डिक आगे बढ़ा। मैचम घूमकर भाग खड़ा हुआ, लेकिन दो छलाँगों में ही वह पकड़ लिया गया था। चुटकी उसके हाथ से मरोड़कर छीन ली गई और उसे जमीन पर गिरा दिया गया। और डिक क्रोध

से लाल घूँसा ताने अभी भी उसकी ओर ताक रहा था। मैचम घूँसा खाकर घास में मुँह छिपाए वहीं गिरा पड़ा था, वह परास्त हो चुका था।

डिक ने अपना धनुष झुकाया।

"मैं तुम्हें सबक सिखा दूँगा," वह रौद्र भाव से चिल्लाया, "सौगन्ध या चाहे जो कुछ हो, फिर तुम चाहे मेरा कुछ भी बिगाड़ लेना।"

और वह पीछे घूमा और दौड़ने लगा। मैचम फिर उठ खड़ा हुआ था और वह भी उसके पीछे दौड़ने लगा था।

"तुम क्या चाहते हो?" डिक ने खड़े होकर पूछा, "तुम मेरे साथ क्यों दौड़े आते हो? दूर खड़े रहो!"

"मैं जहाँ चाहूँगा, जाऊँगा," मैचम ने कहा, "यह जंगल मेरे लिए खुला पड़ा है।"

"पीछे खड़े रहो, मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ," उसने अपना धनुष मैचम की ओर सीधा करते हुए कहा।

"ओह, हम जानते हैं तुम बड़े बहादुर हो'" मैचम ने व्यंग किया, "लो मारो।"

डिक ने उलझन में पड़ते हुए अपना धनुष नीचा कर लिया।

"देखो!" उसने कहा, "तुमने मेरा काफ़ी नुक़सान अब तक करवा दिया है। अब मेरा पीछा छोड़ो। बुद्धिमानी यही है कि तुम अपना रास्ता चुन लो, वरना मुझे मजबूर होकर तुम्हें तुम्हारा रास्ता दिखाना पड़ेगा।"

"अच्छी बात है," मैचम ने दृढ़तापूर्वक कहा, "तुम अधिक शक्तिशाली हो। तुम जितना चाहो मुझे अपमानित कर लो। मैं तुम्हारा पीछा तब तक नहीं छोड़ूँगा डिक, जब तक तुम मुझे बाँधकर ही न डाल दो।" उसने कहा।

डिक अब अपने आपे में आ चुका था। इस रक्षाहीन जीव को मारने में उसका हृदय दुखने लगा था। और उसकी रक्षा के लिए उसके मस्तिष्क में और कोई उपाय आता न था सिवाय इसके कि वह उसे छोड़कर चला जाए। उस साथी को वह बिन बुलाया मेहमान और सम्भवतः अब तो अविश्वसनीय भी समझने लगा था।

"तुम पागल हो गए हो, मैं सोचता हूँ।" वह चिल्लाया, "बेवक़ूफ आदमी, मैं तुम्हारे शत्रुओं के पास ही जा रहा हूँ। जितनी जल्दी मेरे लिए सम्भव हो

सकता है उतनी ही जल्दी।"

"मुझे इसकी चिंता नहीं है डिक," छोकरे ने उत्तर दिया, "अगर तुम मरना चाहते हो डिक, तो मैं भी तुम्हारे साथ मरूँगा। मैं तो कारावास में भी तुम्हारे साथ ही जाना पसंद करूँगा, अकेले जाने की अपेक्षा।"

"अच्छी बात है," दूसरे ने उत्तर दिया, "मेरे पास और अधिक बकवास सुनने के लिए तो समय नहीं है। अगर तुम्हें मेरे साथ आना ही है तो आओ! लेकिन अगर तुमने मेरे साथ धोखा किया तो मैं तुम्हारी चिन्ता नहीं करूँगा। यह सोच लो, तुम्हारे मन में कोई दुविधा तो नहीं है?"

इतना कहकर डिक फिर भागने लगा। वह एक झाड़ी के बित्ते से भाग रहा था और अपने चारों ओर चौकन्ना होकर देखता जाता था। एक ही दौड़ में वह इस खड्ड से बाहर आ गया था और अब अपेक्षाकृत अधिक खुले जंगल में दौड़ रहा था। बाईं ओर कुछ ऊँचाई दिखाई देती थी और वह ऊँचाई सुनहरी कमौंदी और छतरीदार सनोवर के वृक्षों से ढकी हुई थी।

"मैं वहाँ से स्थिति को देखूँगा," उसने सोचा, और एक साफ़-से रास्ते से होकर उधर की ओर लपक चला।

वह कुछ ही गज़ चला होगा कि मैचम ने उसके बाज़ू पर स्पर्श किया और एक ओर संकेत किया। इस ऊँचाई के पूर्व की ओर एक खड्ड था और एक घाटी वहाँ से दूसरी ओर जाती थी। अभी झाड़खण्ड समाप्त नहीं हुआ था और भूमि ऊबड़-खाबड़ थी। वहीं पर एक के बाद दूसरे हरी पोशाक वाले लोगों को डिक ने ऊपर चढ़ते हुए देखा। उस दल की अगली पंक्ति में अपना भाला हाथ में लिए एलिस डिकवर्थ स्वयं चल रहा था। वे कुल दस आदमी थे। एक के बाद एक करके वह ऊपर चढ़े और खुले आकाश में साफ़ दिखाई पड़ने लगे। फिर उसके दूसरी ओर उतर गए।

डिक ने मैचम की ओर स्नेहार्द्र दृष्टि से देखा।

"तो तुम मेरे विश्वासपात्र हो जैक?" डिक ने कहा, "मैंने सोचा था कि तुम दूसरे पक्ष के हो।"

मैचम ने सिसकना शुरू कर दिया।

"नहीं-नहीं," डिक बोला, "क्या तुम दो शब्द कहने के लिए इस तरह रोओगे?"

"तुमने मुझ पर प्रहार किया।" मैचम ने सिसकते हुए कहा, "जब तुमने मुझे नीचे गिराया तो मुझे चोट लगी। तुम अपनी शक्ति का दुरुपयोग करने वाले कापुरुष हो।"

"नहीं, यह बेवकूफ़ी की बातें हैं," उसने कठोरता से कहा, "तुम्हारा मेरी चीज़ पर कोई अधिकार नहीं था, मास्टर जॉन! मुझे अधिकार था कि मैं तुम्हें दण्ड देता। अगर तुम्हें मेरे साथ चलना है तो मेरी आज्ञा माननी पड़ेगी। बस, अब चले आओ।"

मैचम के मस्तिष्क में पीछे ठहरने का थोड़ा-सा विचार आया था अवश्य। लेकिन जब उसने देखा कि डिक यह सब कुछ देखकर भी, उस पर किंचितमात्र भी ध्यान न देकर ऊँचाई की ओर बढ़ने के लिए पूर्णरूप से कृत संकल्प है, तो उसने भी उसका साथ निभाना उचित समझा और तत्काल उसके पीछे भाग खड़ा हुआ। लेकिन रास्ता बड़ा दुर्गम और ढालू था। डिक को पहिले ही काफ़ी बित्ता मिल चुका था और वह अपेक्षाकृत उससे भागने में भी अधिक समर्थ था इसलिए शीघ्र ही ऊँचाई पर पहुँच गया। वह सनोबर के कुंजों में से गुजरते हुए कसौंदी के झुण्डों में सरक गया। तब कहीं मैचम हिरन की तरह हाँफता हुआ, उसके पास पहुँचा और चुपचाप उसकी बगल में लेट गया।

नीचे सतह में एक विशाल घाटी थी और उसके अन्दर से होता हुआ एक रास्ता चक्कर खाकर टन्सटाल की ओर जाता था। यह रास्ता दलदल से होकर जाता था और अपेक्षाकृत छोटा था। रास्ता काफ़ी चालू था और स्थान-स्थान साफ नज़र आता था। इस स्थान पर आकर चारों ओर खुली वादी थी। जंगल उसके निकट सरक आया था और जगह-जगह पर छिपने के उपयुक्त स्थान बने हुए थे। रास्ते पर बहुत नीचे अभी भी सात इस्पाती हस्तत्राण दीख पड़ते थे और सूर्य की रोशनी उन पर कौंध उठती थी। सैल्डन और उसके साथी सर डेनियल का मिशन पूरा करने के लिए तेज़ी से बढ़ते आ रहे थे। वायु थोड़ी मद्धम पड़ गई थी किन्तु अभी भी वृक्षों के सिर कभी-कभी झुक जाते थे। और अगर एपिलयार्ड वहाँ होता तो चिड़ियों की घबराई हुई उड़ान को देखकर वह कोई चेतावनी प्राप्त कर सकता था।

"अब देखो", डिक फुसफुसाया "वह अब जंगल में काफ़ी दूर बढ़ आए हैं। उनकी सुरक्षा इसी में है कि वह तेज़ी से आगे बढ़ जायें। लेकिन उधर देखो

जहाँ यह विस्तृत घाटी हमारे सामने खुली हुई है, वहाँ चालीस-पचास वृक्षों का एक झुण्ड है, और एक द्वीप-सा बना हुआ है। वहाँ आकर वे सुरक्षित हो सकते हैं। जिस समय वह यहाँ पहुँच जायेंगे, मैं आगे बढ़कर उन्हें चेतावनी दे दूँगा। लेकिन मेरा हृदय आशंका से भर उठा है। वह इतने लोगों के सम्मुख केवल सात हैं। और उनके पास बस केवल धनुष हैं। लम्बा धनुष, जैक, सदैव ही सफल सिद्ध होता है।"

इसी बीच सैल्डन और उसके आदमी, मोड़ को पार करके आगे बढ़ आए थे। उन्हें किसी भी संकट का भय नहीं था। वह काफ़ी निकट आ पहुँचे थे। एक बार, वे रुकते दिखाई पड़े। उन्होंने अपने को एक दल में संगठित कर लिया, और कान देकर आहट लेने लगे। लेकिन यह आवाज़ दूर युद्ध के मैदान में से आ रही थी जिसने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। यह एक तोप के चलने की गूँजती हुई आवाज़ थी जो कि हवा के साथ कभी-कभी मुखर हो उठती थी और उस महान युद्ध की सूचना देती थी। इससे यह स्पष्ट था कि अगर तोप की आवाज़ इधर टन्सटाल वन में भी सुन पड़ने लगी है तो लड़ाई पूर्व की ओर खिसक आई है और सर डेनियल का पक्ष निश्चय से पराजित हो रहा है।

तभी वह दल फिर आगे रवाना हो गया और इसके बाद वह एक बहुत ही खुले और छोटी-छोटी झाड़ियों से घिरे प्रदेश में आ पहुँचा था। यहाँ जंगल की केवल एक टुकड़ी सड़क से आकर मिलती थी। वह इस टुकड़ी के निकट आने ही वाले थे कि एक तीर वायु में उड़ता दिखाई पड़ा। उन आदमियों में से एक ने अपने हथियार डाल दिए, घोड़ा पिछले पाँवों पर खड़ा हो गया और बाद में दोनों नीचे गिर गए और ढेर के रूप में गिरकर तड़पने लगे। जिस स्थान पर ये छोकरे लेटे हुए थे, वहाँ से उनकी चीख-पुकार, घोड़ों की घबराहट और उछल-कूद स्पष्ट दीख पड़ती थी, लेकिन शीघ्र ही वह टुकड़ी इस आश्चर्य से मुक्त होने लगी थी और वह फिर आगे बढ़ने लगी थी। एक आदमी घोड़े से उतरने लगा था। एक तीर, जो कुछ अधिक दूरी से चलाया गया प्रतीत होता था, एक दूसरे सवार को लगा और वह भी धूल चाटने लगा। जो जवान घोड़े से उतर रहा था, उसका हाथ लगाम पर से चूक गया था और उसका घोड़ा सड़क पर सरपट दौड़ने लगा था। सवार का एक पैर

जमीन से टकराता जा रहा था और घोड़ा ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर उछलता बढ़ रहा था। चार आदमी जो अभी तक घोड़ों पर सवार थे, घबराकर इधर-उधर बिखरने लगे। एक घबराकर सरपट दलदल की ओर भाग खड़ा हुआ था। तीन आदमी घोड़ों की रासें ढीली करके टन्सटाल की ओर लपके। हर एक कुंज के पास से जब वे गुजरते थे, तो उन्हें लक्ष्य करके एक तीर छूटता था। शीघ्र ही एक घोड़ा और गिर गया। सवार पैदल ही दौड़ने लगा और अपने दूसरे साथियों का पीछा करने लगा, लेकिन एक दूसरे तीर ने उसे भी किनारे लगा दिया। उन बचे हुओं में से भी एक दूसरा आदमी और गिर गया, और फिर एक घोड़ा और। अब इस सारी टुकड़ी में से केवल एक आदमी शेष बच गया था, वह भी पैदल था। और सवार हीन भागते हुए घोड़ों की टापों की आवाज—जो विभिन्न दिशाओं से आ रही थी—अब हल्की पड़ती जा रही थी।

इस सारे समय में एक भी आक्रमणकर्ता ने अपने आपको प्रकट नहीं किया था। रास्ते पर यहाँ-वहाँ मृतक सैनिक या उनके घोड़े लुढ़क रहे थे और प्राणान्तक पीड़ा से कराह रहे थे, किन्तु किसी भी आक्रमणकर्ता ने इतनी दया नहीं दिखाई थी कि वह उन्हें सामने आकर उस पीड़ा से शीघ्र ही मुक्त कर देता।

वह एकाकी सवार अपने गिरे हुए घोड़े के निकट विमूढ़ावस्था में खड़ा रह गया था। वह सारा रास्ता पार करके उस स्थान पर आ गया था जिस ओर डिक ने संकेत किया था। जिस स्थान पर छोकरे लेटे हुए थे, वह वहाँ से पाँच सौ गज़ से अधिक दूर नहीं था। सैनिक मौत के साये में इधर-उधर ताक रहा था। लेकिन जब उसने देखा कि कोई भी दुर्घटना घटित नहीं हुई है तो उस आदमी में साहस का संचार होने लगा और उसने अपनी कमान हाथ में ले ली और फिर से तान ली थी। उसकी चाल-ढाल से डिक ने तत्काल पहचान लिया कि वह सैल्डन है।

उसके इस प्रतिरोध को देखकर उसके चारों ओर घिरे वन के हर कोने से एक अट्टहास गूँज उठा। लगभग बीस आदमियों के कंठों से जो कि इन घनी झाड़ियों में छिपे हुए थे—यह असमय का क्रूर हास्य मुखर हो रहा था; तभी एक तीर सैल्डन के कन्धे पर से चमक गया। वह उछला और कूदकर दो कदम

पीछे हट गया। एक और तीर चक्कर काटता हुआ उसकी एड़ियों पर आकर लगा। अब वह छिपने के लिए आगे लपका। एक तीसरा तीर ठीक उसके मुँह के सामने सन्नाया और कुछ क़दम सामने आकर गिरा। और तभी वह अट्टहास पुनः चारों तरफ़ की झाड़ियों में से प्रतिध्वनित होता हुआ सुनाई पड़ा।

यह स्पष्ट था कि वह आक्रमणकारी उसे खेल खिला रहे थे। उसी प्रकार जैसे कि उन दिनों शिकारी साँडों को खेल खिलाते थे और आज भी बिल्ली चूहे को मौत के घाट उतारने से पहले खेल खिलाती है। यह झड़प अब जैसे समाप्त हो चुकी थी और एक आदमी हरी पोशाक में तीर उठाता हुआ देखा जा सकता था। अब वे अपने हृदयों में उस अभागे को मौत का खेल खेलते हुए देखकर आनन्द ले रहे थे।

सैल्डन अब कुछ-कुछ समझ चुका था। वह क्रोध में बड़े ज़ोर से गर्जा। उसने अपनी कमान कंधे पर लगाई और एक तीर जंगल में छोड़ दिया। संयोग से उसका तीर ठीक निशाने पर बैठा क्योंकि उधर से एक हल्की-सी चीख़ सुनाई पड़ी। तब अपने हथियार फेंककर सैल्डन ने घाटी के ऊपर की ओर दौड़ना शुरू कर दिया। वह डिक और मैचम की ठीक सीध में दौड़ रहा था।

काले तीर वाले दल ने अब गंभीरतापूर्वक निशाना लगाना आरम्भ कर दिया था। लेकिन जैसे उनके हाथ से अब अवसर निकल चुका था। उनका निशाना बार-बार चूक जाता था क्योंकि उनकी आँखों पर सूर्य की चकाचौंध पड़ रही थी और सैल्डन उनके निशानों को उकाता हुआ आड़ा-तिरछा होकर भाग रहा था। उसने सबसे अच्छा यही किया था कि वह घाटी में ऊपर की ओर दौड़ने लगा था। उधर कोई आदमी अब नहीं रह गया था। जो एक था उसे सैल्डन ने समाप्त कर दिया था। अब आक्रमणकारियों में खलबली मच गई थी। एक सीटी तीन बार बजी और फिर दो बार और बजी। एक और दूसरी दिशा से वैसा ही संकेत दोहराया गया। दोनों तरफ़ जंगल में लोगों के भागने की खड़खड़ाहट स्पष्ट सुन पड़ने लगी। उस घबराहट में एक हिरन भी दौड़कर खुले मैदान में आ गया। वह एक सैकिण्ड के लिए अपने तीन पाँवों पर खड़ा रहा और तीर की तरह जंगल में फिर से गायब हो गया।

सैल्डन अभी तक दौड़ रहा था लेकिन अभी भी उसके पीछे तीर सनसना

रहे थे। उसके सौभाग्य से वे किसी तरह चूकते जा रहे थे। ऐसा प्रतीत होने लगा था कि जैसे वह अब बचकर निकल जाएगा। डिक ने अपना कमान चढ़ा ली थी और उसकी सहायता के लिए सन्नद्ध हो गया था। मैचम भी अपने स्वार्थों को भूलकर उस भगोड़े के लिए दयार्द्र हो उठा था। दोनों छोकरों के हृदय उमंग और उत्साह से अन्दर ही अन्दर काँपने लगे थे।

वह उनसे केवल पचास ही गज़ होगा कि एक तीर उसको आकर लगा और वह गिर गया। वह तत्काल फिर उठ खड़ा हुआ था लेकिन अब की बार वह लड़खड़ाने लगा था और एक अन्धे आदमी की तरह अपनी दिशा से भटक-कर दौड़ने लगा था।

डिक कूदकर खड़ा हो गया और उसकी ओर हाथ हिलाने लगा। "इधर," डिक चिल्लाया, "इस तरफ़ भागो। यहाँ मदद है। नहीं, भागो भाई और भागो।"

लेकिन अभी सैल्डन को एक तीर और कन्धे में आकर लगा और वह उसकी जाकेट को बींधता हुआ दूसरी तरफ़ बाहर निकल आया और सैल्डन पत्थर की तरह भूमि पर लुढ़क गया।

"आह, बेचारा!" मैचम दोनों हाथ मीड़ते हुए चिल्लाया।

और डिक पथराया-सा पहाड़ी पर खड़ा रहा, जैसे तीरंदाजी के लिए कोई निशान खड़ा कर दिया गया हो।

एक साथ लगभग दस तीर उस पर छोड़े गए क्योंकि जंगल के सरदारों को उसे अकस्मात उस स्थिति के पृष्ठभाग में देखकर भयानक क्रोध चढ़ आया था, क्योंकि उसने उन्हें अप्रत्याशित रूप से धोखे में डाल दिया था। लेकिन तभी एक झाड़ी में से डकवर्थ उठ खड़ा हुआ और उसने ऊँची आवाज़ में आर्डर दिया कि 'तीर चलाना बन्द कर दो और उसे जिन्दा पकड़ लो। वह शैल्टन है— हैरी शैल्टन का पुत्र।'

और तभी चीख़ भरती हुई एक सीटी कई बार हवा में गूँजी उठी। कुछ दूरी पर भी उसी तरह की आवाज दोहराई गई। यह सीटी शायद जॉन एमेण्ड-आल का युद्ध-घोष था जोकि वह आदेश देने के लिए प्रयोग करता था।

"आह, बुरा हुआ," डिक चिल्लाया, "हम घेर लिए गए। जल्दी करो जैक, जल्दी भागो।"

और वह जोड़ा लौट पड़ा और झाड़ियों की ओट लेता हुआ पहाड़ी की ओट हो गया।

६

यह वास्तव में उनके लिए भाग खड़े होने का महत्वपूर्ण अवसर था। काले तीर वालों का दल पहाड़ी के चारों ओर से घिरता आ रहा था। उनमें से कुछ बहुत तेज़ दौड़ने वाले थे, क्योंकि बहुधा दौड़ने पर मजबूर होने के कारण उन्हें उस पहाड़ी प्रदेश में दौड़ने का अभ्यास हो गया था।

वह लोग अपने उद्देश्य के अत्यन्त निकट पहुँच गए थे, कुछ घाटियों से गुजरते हुए दाएँ और बाएँ फैल गए थे और दोनों तरफ़ से छोकरों को घेरते ला रहे थे।

डिक पास वाली झाड़ी में एकदम भीतर ही घुसता चला गया। यह सनोवर के वृक्षों का एक ऊँचा-सा कुंज था। यहाँ जमीन पर पैर अच्छी तरह पड़ता था और छोटी-छोटी झाड़ियों का पैरों में उलझना बन्द हो गया था। इससे उनकी रफ़्तार में काफ़ी तेजी आ गई थी। इसके आगे फिर एक खुला मैदान पड़ा, जिसे डिक ने छोड़ दिया और वह बाईं दिशा में सीधा हो लिया। दो मिनट बाद उसी तरह की अड़चन फिर आई और लड़कों ने फिर वैसा ही उपाय किया। परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे यह लड़के बाईं ओर भागते-भागते बड़ी सड़क के निकट आते जा रहे थे और उसी नदी के निकट पहुँच गये थे, जिसे उन्होंने आज ही पार किया था। उनका पीछा करने वाले दाएँ हाथ को बढ़ रहे थे और उनसे ठीक दूसरी दिशा में टन्सटाल की ओर बढ़ गए थे।

लड़के साँस लेने के लिए रुक गये। पीछा किये जाने की आवाज बिल्कुल मन्द पड़ गई थी। डिक ने जमीन पर कान लगाकर पूरी तरह जाँच कर लेना चाहा, परन्तु किसी तरह की आवाज का सुनाई देना बन्द हो गया था, केवल

हवा के खड़कने की आवाज़ आ रही थी। इस हवा ने कन्हेर लेना और भी मुश्किल कर दिया था।

"और आगे बढ़ो" डिक ने कहा, और चूँकि वह दोनों थक चुके थे और मैचम पैर की चोट के कारण लड़खड़ाने लगा था—इसलिए फिर एक बार एक दूसरे के कन्धे के सहारे वे पहाड़ी के नीचे की ओर लपकने लगे।

तीन मिनट बाद वह एक सदाबहार की नीची झाड़ियों में आ गये। सिर से ऊँचे वृक्षों के कारण लगातार सिर पर छाया बनी हुई थी। समूचा दृश्य ऐसा प्रतीत होता था जैसे ऊँचे स्तम्भों पर टिका हुआ एक गिर्जाघर का गुम्बद हो। बस, केवल पवित्र वस्तुओं के वहाँ उपस्थित होने की ही कमी थी। जिस प्रदेश से वह छोकरे गुज़र रहे थे—वहाँ बहुत सुन्दर घास उगी हुई थी।

दूसरी ओर वह सदाबहार के अन्तिम छोर पर पहुँचकर पुनः गुम्बद की छाया से हटकर खुले हुए प्रकाश में आ पहुँचे थे।

"ठहरो!" एक आवाज़ गूँज उठी।

पचास क़दम की भी दूरी नहीं होगी कि वृक्षों के बड़े-बड़े तनों के निकट हरी पोशाक में एक तगड़ा आदमी खड़ा था, जो भागने की थकान से चूर-चूर हो चुका था और उसने लड़कों को घेरने के लिए फौरन ही धनुष सँभाल लिया था। मैचम एक चीख मारकर सन्न हो गया, किन्तु डिक सीधा उस बनवासी की ओर लपका और जाते-जाते उसने अपना खंजर भी निकाल लिया। दूसरा आदमी, न जाने वह इस आकस्मिक आक्रमण से स्तम्भित रह गया था अथवा अपने आदेशों का पालन कर रहा था, परन्तु उसने तीर नहीं चलाया। वह अनिश्चित-सा खड़ा रह गया और इतने में ही डिक ने उसको गले से पकड़कर इस तरह झटका दिया कि वह झाड़ी में जा गिरा। उसका तीर एक तरफ़ जा पड़ा और कमान झन-झनाती हुई दूसरी ओर। अब वह निरस्त्र बनवासी अपने आक्रान्ता से गुत्थम-गुत्था हो गया था लेकिन खंजर दो बार चमका और नीचे गिरा। तब एक-दो कराहट आईं। अब डिक पुनः उठ खड़ा हुआ था। वह आदमी निश्चेष्ट हो चुका था। खंजर के ज़ख्म उसके सीने में लगे थे।

"आगे बढ़ो!" डिक ने कहा और एक बार और आगे दौड़ने लगा। मैचम उसके पीछे लड़खड़ाता आ रहा था। सच तो यह था कि वे दोनों इतने थक चुके थे कि भागना उनके लिए असम्भव था और वह मछलियों की तरह साँस लेकर फिर

से क़दम बढ़ाने के लिए भरसक, परन्तु असफल प्रयत्न करते अवश्य जा रहे थे। मैचम के सख्त चोट लगी थी और उसका सिर जैसे हवा में तैर रहा था। जहाँ तक डिक का सम्बन्ध था—वह तो जैसे शीशे का बना हुआ हो। लेकिन फिर भी वे साँस रोककर दौड़ लगाने की चेष्टा कर रहे थे।

थोड़ी ही देर में वह कुंज के अन्त में आ पहुँचे थे। उनसे कुछ ही गज की दूरी पर राईसिंघम से शोरबी को जाने वाली बड़ी सड़क दिखाई देती थी। सड़क के दोनों ओर जंगल की दो दीवारें चली गई थीं।

इस दृश्य को देखकर डिक रुक गया लेकिन जैसे ही उनका दौड़ना रुका, उन्होंने एक खड़खड़ाहट सुनी और वह आवाज तेजी के साथ ऊँची होने लगी। यह आवाज़ पहिले आंधी के एक प्रचण्ड झोंके के समान सुन पड़ती थी, लेकिन शीघ्र ही साफ़ हो गई और अब यह स्पष्ट हो गया था कि वह घोड़े के सरपट दौड़ने की आवाज़ है। और तभी एक झपक में कुछ सशस्त्र सैनिकों की एक टुकड़ी उन लड़कों के सामने प्रकट हो गई और तत्काल दूसरी दिशा में ओझल भी हो गई। वे लोग अपने प्राणों के भय से तितर-बितर होकर दौड़ रहे थे। कुछ जख्मी थे। सवार-विहीन घोड़े उनके साथ-साथ दौड़ रहे थे। उनके चारजामे खून से सने हुए थे। यह जाहिर था कि वे सब लड़ाई के मैदान से भागे हुए सैनिक थे।

एक आवाज अभी मरने भी न पाई थी कि एक और खट-खट स्पष्ट सुन पड़ने लगी। इस बार जो सवार प्रकट हुआ वह अकेला ही था। वह शानदार रणसज्जा धारण किए हुए था और उच्च वंशीय योद्धा दिखाई देता था। उसके ठीक पीछे माल-असबाब की गाड़ियाँ घनघनाती आ रही थीं। घोड़ों को हाँकने वाले अपनी जिन्दगी की हिफ़ाजत के लिए बेचैन-से नजर आते थे। उनके घोड़े भी लम्बे क़दम नहीं फेंक पा रहे थे, ऐसा प्रतीत होता था कि ये लोग दिन में ही भाग खड़े हुए हैं। किन्तु इस कापुरुषता के बावजूद भी उनका उद्धार नहीं हो पाया था। जिस स्थल पर दोनों लड़के खड़े थे, उसके निकट ही एक सशस्त्र सैनिक इन भगोड़ों का पीछा करता हुआ आ पहुँचा। यह सैनिक क्रोध से आग-बबूला हो रहा था और आते ही उसने गाड़ीवानों को गाजर की तरह काटना शुरू कर दिया। कुछ लोग अपने स्थानों से कूदकर जंगल में घुस गये। और जो बैठे रह गए उन्हें उसने तलवार के घाट उतार दिया। यह निर्मम हत्याकाण्ड करते हुए वह सैनिक लगातार नफ़रत से उन्हें गालियाँ देता जाता था। उसकी

आवाज़ मुश्किल से ही आदमी की आवाज़ मालूम पड़ती थी।

सारे समय सड़क के दूसरी ओर आवाज़ आती सुनाई देती रही थी। गाड़ियों की खड़खड़ाहट, घोड़ों की टापें, आदमियों की चीखें और घबड़ाई हुई चीत्कारें वायु पर तैरती हुई आ रही थीं और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दूर नीचे सड़क पर एक सम्पूर्ण सेना का निर्ममतापूर्वक वध किया जा रहा है।

डिक उदास-सा खड़ा था। पहिले उसने तै किया था कि हालीवुड की ओर मुड़ने वाली सड़क के प्राप्त होने तक वह इस बड़ी सड़क से ही बढ़ेगा, लेकिन अब उसे अपनी योजना बदलनी पड़ी। उसने राईसिन्घम की वर्दी को पहचान लिया था और युद्ध का निर्णय लंकास्टरों के विपरीत हुआ है, यह स्पष्ट हो गया था। वह सोच रहा था कि क्या सर डेनियल सहायता लेकर युद्ध-क्षेत्र में पहुँच चुके थे? क्या वह भी इन्हीं अभागे भगोड़ों में से है? क्या यह भी मुमकिन है कि वह यार्क-पक्ष में चले गये हों? सैनिक मर्यादा का भंग करना उनके लिए असम्भव नहीं।

"आओ!" उसने अपने साथी के प्रति किंचित कठोरता के स्वर में कहा और अपनी एड़ियों पर घूमकर वह फिर से कुंज में प्रवेश करने लगा। मैचम उसके पीछे ढिलकता आने लगा था।

कुछ समय तक वह चुपचाप ही जंगल को पार करते रहे। साँझ घिरती आ रही थी और कैटले की ओर मैदान में दिन डूबता नज़र आने लगा था। वृक्षों की छत्रियाँ चोटी पर सुनहरी पड़ती जा रही थीं, लेकिन भूमि पर उनकी छाया काली पड़ने लगी थी और सर्दी बढ़नी शुरू हो गई थी।

"काश! अगर इस समय कुछ खाने को होता" डिक ने रुकते हुए कहा। मैचम नीचे बैठ गया और रोने लगा।

"अब तुम अपने खाने के लिए विलाप करने बैठ गये हो, लेकिन उन सात आदमियों की जान बचाने का जब अवसर था, तब तुम वज्र के समान कठोर हो गए थे।" डिक ने घृणापूर्वक कहा, "तुम्हारी आत्मा पर सात आदमियों का खून है, मास्टर जॉन। मैं तुम्हें उसके लिए कभी क्षमा नहीं कर सकता!"

"आत्मा!" मैचम खूँखारी से ऊपर देखता हुआ चिल्लाया, "मेरी आत्मा पर! और तुम्हारे खंजर पर तो स्वयं एक आदमी का लाल खून लगा हुआ है। आखिर किसलिए तुमने उस ग़रीब आदमी को कत्ल किया। उसने अपना तीर उठा लिया था लेकिन उसने तुम पर वार नहीं किया। उसने तुम्हें अपने

हाथों में थाम लिया था और तुम्हें छोड़ दिया था। किसी ऐसे आदमी को मारना—जो दूसरे के विरुद्ध अपनी रक्षा नहीं करता—उतनी ही बहादुरी का काम है, जितना किसी बिलौटे को मारना।"

डिक एकदम सन्न रह गया।

"मैंने उसे ठीक ही खंजर भोंका। मैंने अपने को उसकी कमान पर फेंक दिया था!" डिक चिल्लाया।

"यह एक बहुत ही बुज़दिलों का-सा आघात था" मैचम ने कहा, "तुम एक कमीने और झगड़ा मोल लेने वाले आदमी हो, मास्टर डिक! तुम सुविधा का दुरुपयोग करते हो। अभी अगर तुमसे तगड़ा आदमी तुम्हारे सामने आ खड़ा हो, तो तुम उसके जूते चाटने लगोगे। तुम्हें प्रतिशोध लेने का भी होश नहीं है। और अपने पिता की मौत का प्रतिशोध! जबकि उनकी आत्मा भटकती घूम रही है। लेकिन अगर तुम्हारे हाथ में कोई ग़रीब लड़की पड़ जाए, जिसमें चतुराई और शक्ति कुछ भी न हो, और तुमसे मित्रता करना चाहे तो तुम उसको कुचल डालने में कमी न रखोगे।"

डिक को इतना गुस्सा चढ़ आया था कि वह लड़की शब्द पर ध्यान ही न दे सका।

"बन्द करो बकवास!" डिक चिल्लाया। "सुन रखो! जब दो आदमी आपस में लड़ते हैं, तो उनमें से एक अवश्य गिरता है। शक्तिवान दुर्बल को पटक देता है। दुनिया का यही नियम है। श्रेष्ठ आदमी अपने से हीन को परास्त कर देता है और जो हीन है उसे इससे अधिक उचित और क्या पुरस्कार मिल सकता है? तुमने मुझे ग़लत परामर्श दिया है और तुमने मेरे प्रति कृतघ्नता प्रदर्शित की है, इसलिए तुम पर पेटी की मार पड़नी चाहिए। तुम इसी पुरस्कार के मुस्तहक हो। वही तुम्हें मिलेगा।"

डिक, जिसकी खोपड़ी में बहुत तेज़ क्रोध चढ़ा हुआ था, अभी तक अपने को भली भाँति सँभाले हुए था और वह अपनी पेटी खोलने लगा था।

"अब तुम्हें तुम्हारा खाना भेंट किया जाएगा", उसने कठोरतापूर्वक कहा।

मैचम के आँसू रुक गए थे। वह सफेद कपड़े की तरह सफेद पड़ गया था और बिना नजर हटाए डिक के चेहरे की ओर देख रहा था। डिक ने पेटी घुमाते हुए एक क़दम बढ़ाया, लेकिन वह अपने साथी की बड़ी-बड़ी आँखों और पलटते चेहरे

को देखकर झिझका। उसका साहस छूटने लगा।

"तब मानो कि तुम ग़लती पर थे।" उसने स्वयं ही परास्त होते हुए कहा।

"नहीं" मैचम ने कहा, "मैं सही था। बढ़ो आगे, बेदर्द! मैं लंगड़ा हूँ, थका हूँ, मैं प्रतिरोध भी नहीं करूँगा, लेकिन मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हें कभी भी चोट नहीं पहुँचाई। आओ मुझे मारो, कायर!"

डिक ने इस अन्तिम उत्तेजना पर पेटी ऊपर उठाई लेकिन मैचम एकदम चौंककर इस तरह सिमट गया कि डिक का साहस फिर खता खा गया। उसकी पेटी उसकी बगल में गिर पड़ी और वह एक बेवकूफ़ की तरह खड़ा रह गया।

"तुम झक्की को प्लेग मारे," वह चिल्लाया, "अगर तुम्हारे हाथों में बिलकुल ही ताक़त नहीं है तो तुम अपनी जबान पर ताला क्यों नहीं डालते? लेकिन अब तुम पर हाथ नहीं उठाऊँगा।" और उसने अपनी पेटी पुनः कमर में बाँध ली, "तुम्हें मारूँगा तो नहीं," उसने कहना जारी रखा, "लेकिन तुम्हें कभी माफ़ भी नहीं करूँगा। मैं जानता नहीं था कि तुम मेरे ही मालिक के शत्रु हो। मैंने तुम्हें अपना घोड़ा दिया, तुम मेरा खाना भी हड़प कर गए, तुमने मुझे काठ का आदमी कहकर धिक्कारा, मुझे कायर और झगड़ालू कहा। मैं धर्म की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे अपराधों का पात्र भर चुका है और वह छलकने लगा है। दुनिया में दुर्बल होना भी बड़ी मज़ेदार बात है! मैं यकीन से कहता हूँ कि तुम ग़लत से ग़लत काम कर डालो, तुम्हें कोई भी दण्ड न दे सकेगा। तुम अपनी ज़रूरत के समय किसी के हथियार भी चुरा सकते हो, लेकिन फिर भी वह आदमी तुमसे वह हथियार वापस नहीं ले सकता। तुम शक्तिहीन हो, धर्म की सौगन्ध! अगर कोई आदमी भाला लेकर तुम पर आक्रमण करे और यह कहता जाए कि वह शक्तिहीन है तो तुम खुशी से उसे अपने सीने में वह भाला उतारने दोगे? टट, मैं क्या बकवास कर रहा हूँ?"

"और फिर भी तुमने मुझे मारा नहीं," मैचम ने उत्तर दिया।

"चलो, छोड़ो," डिक ने कहा, "चलो, छोड़ो! तुम्हें थोड़े उपदेश की ज़रूरत है। मुझे लगता है कि तुम्हारा पालन-पोषण ठीक नहीं हुआ है, लेकिन फिर भी तुम्हारे अन्दर मुझे कुछ गुण अवश्य दिखाई देते हैं। निस्संदेह तुमने नदी में मेरी जान बचाई थी। नहीं, मैं भी तुम्हारी ही तरह अकृतज्ञ हूँ। लेकिन आओ, अब आगे चलें। आज रात हम हालीवुड में ही ठहर जाएँगे और

कल सुबह तेजी के साथ हम आगे बढ़ जाएँगे।''

लेकिन हालाँकि डिक ने यह स्वगत-भाषण करके अपनी स्वाभाविक मनःस्थिति प्राप्त कर ली थी, लेकिन मैचम ने उसे एक क्षण के लिए भी क्षमा नहीं किया था। उसकी हिंसात्मकता और उस वनवासी को कत्ल करना और सबसे अधिक ऊँची उठी हुई पेटी वाला दृश्य—कुछ ऐसे दृश्य थे, जिन्हें आसानी से भुलाया नहीं जा सकता था।

''मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ,'' मैचम ने कहा, ''लेकिन इसे मेरा शिष्टाचार ही समझें मास्टर शैल्टन, मैं भविष्य में अपना रास्ता स्वयं देखना पसंद करूँगा। यहाँ बहुत बड़ा जंगल पड़ा है। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि हम अपना-अपना रास्ता निश्चय कर लें। तुम्हारा एक खाना और एक उपदेश मुझ पर चढ़ा है, अच्छा अलविदा !''

''अच्छा,'' डिक चिल्लाया, ''अगर यही तुम्हारी इच्छा है, तो फिर ऐसा ही हो और तुम्हें प्लेग मारे।''

वह दोनों विपरीत दिशाओं में चल खड़े हुए। लेकिन उनके मस्तिष्कों में दिशा-ज्ञान कतई नहीं था। बस, दोनों झगड़ा करने पर तुले हुए-से थे। लेकिन डिक दस क़दम ही चल पाया होगा कि उसे अपना नाम पुकारे जाने की आवाज आई और उसके साथ ही मैचम दौड़ता हुआ उसके पास आ पहुँचा था।

''डिक,'' उसने कहा, ''इस प्रकार अशिष्टतापूर्वक विदा होना कितनी बड़ी असभ्यता होगी। यह रहा मेरा हाथ और उसके साथ मेरा हृदय भी। उनके सबके लिए जो कुछ तुमने मेरे लिए किया—केवल शिष्टाचार के रूप में नहीं, बल्कि अपने हृदय से मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ। ईश्वर तुम्हारा मंगल करे !''

''वैल युवक,'' उसने अपनी ओर बढ़ाए गए हाथ को उत्साहपूर्वक अपने हाथ में लेते हुए कहा, ''तुम्हारी यात्रा भी मंगलमय हो। अगर वाक़ई तुम यात्रा कर भी सकते हो, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में क़तई भी आश्वस्त नहीं हूँ, क्योंकि तुम बड़े झगड़ालू हो, जरूर किसी से लड़ बैठोगे।''

इस प्रकार वह एक बार फिर विदा हो गए। और तभी डिक दौड़ता हुआ मैचम के पास जा पहुँचा।

''यह लो,'' डिक ने कहा, ''मेरी कमान ले जाओ। बिना हथियार लिए

जंगल में नहीं जाना चाहिए।"

"कमान !" मैचम ने कहा, "नहीं युवक! मुझमें इसे खींचने की शक्ति नहीं है। और न ही मैं निशाना लगाना जानता हूँ। इससे मेरी कुछ भी सहायता नहीं हो सकेगी, लेकिन फिर भी मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ।"

रात्रि का अंधकार घिर चुका था और वृक्षों की छाया में वे एक दूसरे के मनोभावों को पढ़ नहीं सकते थे।

"मैं कुछ दूर तक तुम्हारे साथ चलूँगा," डिक ने कहा, "रात्रि अँधियारी है। मैं कम से कम किसी रास्ते पर तो तुम्हें डाल दूँ। मेरा मन कहता है कि मेरे बिना तुम अवश्य ही भटक जाओगे।"

एक भी शब्द कहे बिना उसने आगे-आगे चलना शुरू कर दिया और दूसरा उसके पीछे चलने लगा। अंधकार गहनतर होता जाता था। केवल यहाँ-वहाँ, खुले स्थानों में आकाश उन्हें दीख पड़ता था—जो चमकते हुए तारों से भरा हुआ था। बहुत दूरी पर लंकास्टर सेना के विध्वंस होने की ध्वनि अब भी सुन पड़ती थी, लेकिन उनके बढ़ते हुए क़दमों के साथ वह पीछे छूटती जा रही थी।

लगभग आधे घण्टे तक चुपचाप चलने के बाद वे एक झाऊ से भरे विस्तृत मैदान में आ गए। इस मैदान में उगी झाड़ियों की फूलन पर तारों का प्रकाश कौंध रहा था और कहीं-कहीं पर सदाबहार की झाड़ियाँ आ जाती थीं। और एक सदाबहार की झाड़ी के निकट वे रुके और उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा।

"तुम बहुत थके मालूम पड़ते हो," डिक ने कहा।

"ठीक कहते हो, मैं इतना थका हूँ," मैचम ने कहा, "कि जी चाहता है कि मैं यहीं गिर पड़ूँ और मर जाऊँ।"

"मुझे नदी की कलकल सुन पड़ रही है," डिक ने कहा, "चलो उधर चलो, ज़ोर की प्यास लगी है।"

जमीन धीरे-धीरे नीची होती चली गई थी। नीचे उतरकर तरेटी में उन्होंने देखा कि जंगली घास के मध्य से एक छोटा-सा चश्मा बह रहा है। अब वे दोनों कगार पर लेट गए और पानी से मुँह लगाकर उन्होंने पेट भरकर पानी पिया।

"डिक," मैचम ने कहा, "अब कुछ नहीं हो सकता। मैं बिल्कुल भी हिल नहीं सकता।"

"इधर आते हुए मैंने एक खोला देखा था," डिक ने कहा, "चलो उसके अन्दर पड़कर सो रहें।"

"ठीक है, मैं तैयार हूँ।" मैचम ने कहा।

वह खोला सूखा और रेतीला था। ऊपर से कँटीली झाड़ियाँ झुक आई थीं और उनकी सुरक्षा कर रही थीं और वहीं पर दोनों छोकरे एक दूसरे से सटकर सो गए थे, ताकि गर्मी रहे। वे झगड़े को बिलकुल भूल चुके थे। नींद एक गहरे बादल की तरह उन पर छा गई थी, और तारों की छाँह और ओस की बूँदों में वह शान्तिपूर्वक सो गए थे।

दोनों लड़के बहुत तड़के ही उठ बैठे। चिड़ियों ने अभी तक पूरी तरह चह-चहाना शुरू भी नहीं किया था। लेकिन वह जंगल में इधर-उधर चहकती और फुदकती फिर रही थीं। सूर्य अभी तक निकला नहीं था हालाँकि पूर्व में आकाश रंगीन हो उठा था। चूँकि वह भूखे और थके थे इसलिए बिना हिल-डुले ही पड़े रहे और इस मनोरम दृश्य का आनन्द लेने लगे। वे लेटे हुए ही थे कि एक घण्टी की घनघनाहट उनके कानों पर बज उठी।

"घण्टी," डिक ने बैठते हुए कहा, "तो क्या हम हालीवुड़ के इतने निकट आ गए हैं ?"

थोड़ी देर बाद घण्टी फिर बज उठी, लेकिन इस बार बहुत ही निकट। और उसके बाद वह घण्टी की ध्वनि, प्रातःकाल की खामोशी को भंग करती हुई, उनके अधिकाधिक निकट बढ़ती आती थी।

"अरे, यह क्या चीज हो सकती है ?" डिक ने साश्चर्य कहा। वह अब पूरी तरह जाग उठा था।

"कोई आदमी आ रहा है।" मैंचम ने कहा, "और चलता हुआ वह एक घण्टी भी बजाता जाता है।"

"मैं अब अच्छी तरह उसे देख सकता हूँ," डिक ने कहा, "लेकिन वह किधर जा रहा है ? वह टन्सटाल के जंगलों में क्या करता फिर रहा है ? जैक," उसने और आगे कहा, "तुम मेरे ऊपर हँसोगे तो, लेकिन यह खाली आवाज़ मुझे बड़ी अशुभ मालूम पड़ती है।"

"अरे इसका स्वर तो बड़ा भयावना है। हाय ! दिन अभी निकला भी

नहीं है," मैचम ने भय से काँपते हुए कहा ।

लेकिन तभी घण्टी की आवाज़ तेज हो उठी और चलने वाले की गति भी तेज पड़ गई। और तब वह एक बार बड़े जोर से घनघनाई और खामोश हो गई ।

"ऐसा मालूम पड़ता है कि वह आदमी प्रार्थना करने निकला है । और अब नदी को कूदकर पार कर रहा है ।" डिक ने देखा ।

"और अब वह फिर गम्भीरता से आगे बढ़ने लगा है," मैचम ने कहा । "नहीं, उतनी गम्भीरता से नहीं," डिक ने कहा, "वह आदमी बड़ी घबराहट में आगे बढ़ रहा है, जैसे अपने प्राणों को छिपाने के लिए चिन्तित हो । तुम देखते नहीं हो, घण्टी कितनी तेजी से निकट आती जा रही है ।"

"अब तो बहुत ही निकट आ गई है," मैचम ने कहा ।

वह अब खोले के किनारे आ गए थे । और चूँकि खोला स्वयं कुछ ऊँचाई पर स्थित था, इसलिए वह उस तमाम मैदान को जंगल की सीमा तक अच्छी तरह देख सकते थे ।

दिन की रोशनी बहुत साफ़ और भूरी थी और उसमें कसौंदियों के बीच एक पतली-सी बटिया उन्हें दीख पड़ रही थी । यह बटिया खोले से केवल सौ गज़ दूर थी और मैदान में पूर्व से पश्चिम तक चली गई थी । उसकी सीध लगाकर डिक ने देखा कि हो न हो यह बटिया सीधी मोट हाउस तक जाती है ।

इसी बटिया पर एक सफ़ेद आकृति अब उभर आई थी । यह आकृति थोड़ी रुकी और इधर-उधर सिर घुमाकर देखने लगी और तब बहुत ही धीरे-धीरे झुककर उस झाड़खंड को पार करके नीचे की ओर बढ़ने लगी । हर क़दम पर घण्टी घनघनाती थी । उसका चेहरा बिल्कुल दिखाई नहीं देता था । मुँह पर एक सफ़ेद बनावटी चेहरा था और उसमें आँखों के सूराख भी खुदे हुए नहीं थे । सिर पर पर्दा पड़ा हुआ था और लगता था कि वह जन्तु लकड़ी की टिक-टिक के सहारे अपना रास्ता टोहता बढ़ रहा था । लड़के भय से इस कदर अभिभूत हुए कि जैसे उनके प्राण निकल जाएंगे ।

"कोई कोढ़ी है ?" डिक चिल्लाया ।

"उसके स्पर्श में ही मृत्यु है," मैचम चिल्लाया, "चलो भाग चलें ।"

"इस तरह नहीं," डिक ने कहा, "तुम देखते नहीं हो उसकी आँखें पत्थर

की तरह अन्धी हैं। वह लकड़ी टेक कर चलता है। हमें चुपचाप लेटे रहना चाहिए। हवा बटिया की ओर बह रही है। और वह अपने रास्ते पर चला जाएगा, हमें कुछ भी कहेगा नहीं। आह, अभागा आदमी ! हमें उस पर रहम आना चाहिए।"

"वह जब निकट आएगा तब मैं उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करूँगा।" मैचम ने कहा।

वह अन्धा कोढ़ी अब आधा रास्ता चलकर उनकी ओर आ चुका था। सूर्य चमकने लगा था और उसके नक़ाब को भी चमका रहा था। उसके कद को देखने से लगता था कि इस घृणित बीमारी से पीड़ित होने के पूर्व वह अवश्य ही लम्बा-तड़ंगा आदमी रहा होगा। अब वह शक्तिशाली क़दम रखकर चलने लगा था। उसकी घण्टी की वह भोंडी आवाज़, लकड़ी की खट-खट, उसके चेहरे का नेत्रविहीन नक़ाब और यह भावना कि जीते जी वह नार-कीय यातना भोगेगा और फिर मर जाएगा और अगर जीवित रहेगा तो मानव प्राणी को स्पर्श न कर सकेगा यह बातें इतनी करुणाजनक थीं कि लड़कों के हृदय करुणा से भर उठे थे। ज्यों-ज्यों उसके क़दम उनकी ओर बढ़ रहे थे, त्यों-त्यों उनका साहस उनका साथ छोड़ता जा रहा था।

वह ज्योंही खोले के बराबर में आया, तो लड़कों की ओर मुड़ा।

"मेरी हमारी रक्षा करे ! वह हमें देख रहा है।" मैचम बेहोश होते हुए बोला।

"हिश !" डिक फुसफुसाया, "वह देख नहीं सकता, वह अन्धा है।"

वह कोढ़ी या तो देख रहा था, या सुन रहा था, लेकिन दोनों कामों में से कुछ भी चाहे कर रहा हो, कुछ सेकिण्ड के लिए वह खड़ा अवश्य रहा था। तब उसने आगे बढ़ना आरम्भ कर दिया, लेकिन वह तुरन्त ही फिर रुका और लड़कों की ओर फिर देखने लगा। डिक बिलकुल सफ़ेद पड़ गया और भय से उसने आँखें बन्द कर लीं। लगता था जैसे देखने मात्र से ही कोई भयानक रोग उनसे चिपट गया है। लेकिन तत्काल उसने घण्टी बजाना आरम्भ कर दी और वह एक झाड़ी के पीछे गायब हो गया।

"उसने हमें देख लिया है," मैचम ने कहा, "मैं सौगन्ध खा सकता हूँ !"

"टट्," डिक ने अपने साहस की कुछ चिनगारियाँ पुनः प्राप्त करते हुए

कहा, "उसने केवल हमें बातें करते सुना। अभागा इन्सान! तुम अन्धे हो और निबिड़ रात्रि में चलते रहे हो! पास में अगर कोई झाड़ी खड़खड़ा उठती होगी और कोई पक्षी चिहुक उठता होगा, तो तुम चौंक-चौंक पड़ते होगे!"

"डिक, अच्छे डिक, उसने हमें देख लिया है," मैचम ने फिर दोहराया, "जिस समय कोई सुनता है तो वह ऐसी चेष्टाएँ नहीं करता। वह हमें देख रहा था, सुन नहीं रहा था। उसकी नीयत कुछ अच्छी नहीं मालूम पड़ती। सुनो, कहीं घण्टी बजना तो बन्द नहीं हो गई है।"

लेकिन मामला वैसा ही निकला। घण्टी बजना बन्द हो गई थी।"

"नहीं," डिक ने कहा, "मुझे उससे भय लगता है।" वह फिर चिल्लाया, "मैं उसे सहन नहीं कर सकता। आख़िर इसका मतलब क्या है? धर्म की सौगन्ध, हमें भाग निकलना चाहिए।"

"वह पूर्व की ओर गया है," मैचम ने कहा, "अच्छे डिक, हम लोगों को सीधा पश्चिम की ओर भाग चलना चाहिए। मैं तबतक साँस भी न लूँगा, जबतक हमारी पीठ उसकी ओर न मुड़ जाए।"

"जैक, तुम कितने कायर हो," डिक ने उत्तर दिया, "हम शीघ्र ही हालीवुड की ओर रवाना हो जाएंगे, और न सही तो उत्तर की ओर चलेंगे।"

वह फौरन उठकर खड़े हो गए। पत्थरों पर पैर रखकर वह चश्मे से पार चले गए। और दूसरी तरफ़ ढलान पर उतरते हुए जंगल की तरेटी की ओर मुड़ गए। रास्ता बहुत ही विषम हो गया। वृक्षों का या तो झुण्ड आ जाता था, अथवा इक्के-दुक्के रह जाते थे। रास्ता चुनना कठिन हो गया था और वे दोनों इधर से उधर भटकने लगे थे। कल दिन से ही भाग-दौड़ और भूख-प्यास से उनके पैर भारी पड़ गए थे और वे रेत पर लगभग अपने पैरों को घसीट रहे थे।

उसी समय चट्टान की ओर बढ़ते हुए उन्होंने कोढ़ी को देखा जो लगभग सौ फीट की दूरी पर खोले के पास से गुज़र रहा था। उसकी घण्टी अब बजना बन्द हो गई थी, उसकी लकड़ी अब ज़मीन पर खट-खट नहीं बोलती थी, और वह किसी आँखों वाले आदमी की तरह लम्बे कदम रखकर चल रहा था। अगले ही क्षण वह एक झाड़ी के पीछे ग़ायब हो गया।

दोनों लड़के पहिली ही दृष्टि पर कसौंदी की झाड़ी के पीछे भय से बेहाल होकर गिर पड़े।

"निश्चय ही वह हमारा पीछा कर रहा है," डिक ने कहा, "निश्चय ! वह अपने एक हाथ में घण्टी पकड़े हुए था। ताकि वह बज न उठे। अब देवता हमारी सहायता करें; इस महामारी से लड़ने की मुझमें शक्ति नहीं है।"

"वह क्या चाहता है," डिक ने कहा, "वह किसे खोज रहा है ? आज तक कभी भी यह नहीं सुना गया कि किसी कोढ़ी ने दुर्भावनावश किन्हीं अभागों का पीछा किया हो। क्या वह घण्टी इसीलिए नहीं बजा रहा है कि जो कोई उनके रास्ते में आए, सुनकर रास्ते से हट जाए ? डिक, इसके पीछे कुछ गम्भीर रहस्य दिखाई पड़ता है।"

"तो फिर मैं किस तरह जुस्तजू करूँ," डिक कराहा, "मेरे शरीर में से शक्ति निकल गई है। मेरे पैर पानी की तरह भीग उठे हैं। अब तो देवता ही हमारा उद्धार करें !"

"तो क्या तुम काहिल की तरह लेट रहोगे," मैचम ने कहा, "चलो पीछे लौटकर मैदान में चलो, ताकि वह हमें अनजाने में न पकड़ सके।"

"नहीं, अब मेरा वक्त आ गया है," डिक ने कहा, "हो सकता है संयोग से हमारे पास से ही निकल जाए और हमें न देख पाए।"

"तो फिर अपनी कमान झुकाकर मुझे दे दो," मैचम ने कहा, "क्या, तुम आदमी बनोगे ?"

डिक ने कहा, "क्या तुम एक कोढ़ी पर मुझसे तीर चलवाओगे," वह चिल्लाया, "मेरा हाथ मुझे दग़ा दे जाएगा। नहीं, अब रहने दो ! जाने दो ! अब मैं भूतों और कोढ़ियों से नहीं लड़ूँगा। मैं स्वस्थ आदमियों से ही लड़ सकता हूँ। यह इनमें से कौन है—मैं नहीं कह सकता। ख़ैर, कोई भी हो, अब तो स्वर्ग के देवता ही हमारी सहायता कर सकते हैं।"

"अब, अगर यहीं तक आदमी का साहस है तो आदमी कितना असमर्थ जीव है," मैचम ने कहा, "तुम कुछ भी नहीं करोगे, इसलिए लेट रहो।"

तभी घण्टी की एक क्षीण-सी घनघनाहट हुई।

"हत्थे से उसका हाथ छूट गया है," मैचम फुसफुसाया, "देखो, तो कितना निकट आ गया है !"

लेकिन डिक ने उत्तर नहीं दिया, भय से उसके दाँत कटकटाने-से लगे थे। कुछ झाड़ियों के पीछे उन्होंने सफेद पोशाक का एक हिस्सा देखा, तब एक तने के पीछे से कोढ़ी का सिर दिखाई दिया और पीछे हटने से पहिले वह इधर-उधर झाँकने लगा। उनकी विस्फारित आँखों को सारी की सारी झाड़ी जीती-जागती प्रतीत होने लगी और झाड़ियों की खड़खड़ में भी वे अपने दिलों की धड़कन साफ-साफ सुन पा रहे थे।

तब अकस्मात् एक चीख मारकर वह सीधा लड़कों की ओर दौड़ा। वह भी चीख उठे और एक दूसरी दिशा में भाग खड़े हुए। लेकिन वह भयानक शत्रु मैचम के पीछे भागा और तेज़ी से दौड़कर उसने उसे पकड़ लिया और तत्काल बन्दी बना लिया। छोकरे ने एक चीख मारी जो कि बड़े जोर से प्रतिध्वनित हुई और जंगल पर गूंजती चली गई। वह एक बार तड़पा और फिर उसका अंग-अंग शिथिल पड़ गया। और वह अपने शिकारी के हाथों में ढेर हो गया।

डिक ने वह चीख सुनी और वह मुड़ा। उसने मैचम को गिरते हुए देखा और तभी उसकी शक्ति और साहस लौट आए। क्रोध से चीखकर उसने अपनी कमान कन्धे से उतार ली और निशाना लगाने लगा। लेकिन इसके पूर्व कि वह तीर छोड़ पाता कोढ़ी ने अपना हाथ उठाया।

"अपना निशाना हटा दो डिक", एक परिचित आवाज़ आई, "अपना तीर उतार लो पागल मसखरे! क्या तुम दोस्त और दुश्मन को भी नहीं पहचानते?" और तब मैचम को झाड़ी पर लिटाते हुए उसने अपने चेहरे पर से वह कृत्रिम चेहरा उतार दिया और तब सर डेनियल ब्रैकले की मुखाकृति प्रकट हो गई।

"सर डेनियल?" डिक चिल्लाया।

"धर्म की सौगन्ध, सर डेनियल!" नाइट ने उत्तर दिया, "क्या तुम अपने संरक्षक को ही तीर मार दोगे, बदमाश, लेकिन यहाँ यह—" और आगे वह चुप हो गया और डिक से पूछने लगा, "अरे तुम इसे क्या कहकर पुकारते हो?"

"मैं तो उसे मास्टर मैचम पुकारता हूँ," डिक ने कहा, "क्या आप उसे जानते नहीं हैं? वह कहता था कि आप उसे जानते हैं।"

"हाँ-हाँ" सर डेनियल ने उत्तर दिया, "मैं छोकरे को जानता हूँ," और वह मुसकराया, "लेकिन वह मूर्च्छित हो गया है। धर्म की सौगन्ध, उसके मूर्च्छित

होने का कोई कारण ही नहीं था। अरे डिक, क्या मुझे देखकर तुम पर मृत्यु का भय सवार हो गया था?"

"वाकई, सर डेनियल, आपने मौत का भय हम पर सवार कर दिया था," डिक ने कहा और उस स्थिति को याद करके उसकी एक दीर्घ निश्वास निकल गई। "नहीं सर, प्रतिष्ठापूर्वक मैं अपना विचार प्रकट करूँ तो हम लोगों ने यही समझा था कि आज हमें शैतान ने घेर लिया है। सर, मैं भगोड़ा नहीं हूँ, लेकिन आख़िर आपने यह छद्मवेश बनाया किस लिए?"

सर डेनियल की भौंहें क्रोध से काली पड़ गई।

"मैंने ऐसा क्यों किया?" उसने कहा, "तुमने ठीक ही कहा कि मैंने यह वेश किस लिए बनवाया! आज मैं अपने ही टन्सटाल जंगल में अपने प्राणों के लिए छिपता फिरता हूँ। युद्ध में दुर्भाग्य ने हमारा साथ दिया। हम लोग वहाँ जिस समय पहुँचे थे तो पराजित सेनाओं की मारकाट हो रही थी। न जाने मेरे सैनिक कहाँ होंगे। डिक, मैं धर्म की कसम खाकर कहता हूँ कि उनका मुझे कुछ भी पता नहीं है। हमारे ऊपर भारी आक्रमण हुआ। मैंने अपने तीन आदमियों को गिरते देखा था, उसके बाद से एक भी सैनिक मुझे दीख नहीं पड़ा है। मैं तो सुरक्षित शोरबी पहुँच गया था लेकिन उस काले तीर के भय से यह गाउन और घण्टी साथ लेकर मोट हाउस के लिए बटिया पकड़कर चल पड़ा। इस छद्मवेश के मुकाबले में छिप सकने का और कोई भी दूसरा उपाय इतना कारगर नहीं हो सकता था। इस घण्टी की घनघनाहट सुनकर तगड़ा से तगड़ा वनचारी भी भाग खड़ा होगा! और भय के मारे पीला पड़ जाएगा। आख़िरकार मैंने तुम्हें और मैचम को देखा। मैं इस चेहरे में से ठीक प्रकार नहीं देख सकता था। मुझे आश्चर्य भी होता था कि आख़िर तुम दोनों का साथ किस प्रकार हो गया। खासतौर से खुले मैदान में, जहाँ मुझे अपनी लाठी खटकाकर चलना होता था, धीरे-धीरे चलता, ताकि कोई मुझे पहिचान न सके। लेकिन देखो," उसने कहा, "यह ग़रीब झक्की कुछ हिल-डुल रहा है। अगर इसे थोड़ी-सी कनारी शराब मिल जाए, तो इसका दिल ठिकाने आ जाए?"

नाइट ने अपनी गाउन के नीचे से एक बोतल निकाली और लड़के की कनपटियाँ मलनी शुरू कर दीं और होठ भिगो दिए। धीरे-धीरे बीमार होश में आ गया था और वह अपनी पुतलियाँ इधर-उधर घुमा रहा था।

"अरे हौसला करो जैक," डिक ने कहा, "यह कोई कोढ़ी नहीं हैं। ये तो सर डेनियल हैं ! ज़रा देखो तो !"

"लो एक घूंट पी डालो," नाइट ने कहा, "इससे तुम्हारे होश दुरुस्त हो जायेंगे। इसके बाद मैं तुम दोनों को खाना दूँगा और तब हम तीनों साथ-साथ टन्सटाल की ओर चलेंगे। क्योंकि डिक" उसने घास पर रोटी और गोश्त बिछाते हुए कहा, "मैं तुम्हें पूरी सचाई के साथ कहता हूँ डिक, मुझे चारदीवारी के अन्दर सुरक्षित बैठना हमेशा ही नापसंद रहा है। जिस समय से मैंने घोड़े की पीठ पर बैठना शुरू किया है, आज तक मैं कभी इतना तंग नहीं हुआ हूँ। मेरी ज़िन्दगी के लिए ख़तरे, ज़मीन और जीविका का संकट भी और संक्षेप में कहा जाए तो जंगलों में मेरे प्राणों को लेने के लिए घूमने वाले ये जंगली बदमाश भी कभी इतनी संख्या में नहीं सुने गए। लेकिन अभी भी निश्शक्त नहीं हुआ हूँ। मेरे कुछ जवान अवश्य ही घर लौटकर आ जायेंगे। हैच के पास दस आदमी हैं, सैल्डन के पास छै जवान हैं। नही, मैं शीघ्र ही पुनः शक्ति का संचय कर लूँगा। काश कि मैं उस अयोग्य लार्ड आव यार्क के साथ कुछ दे-लेकर शान्ति-सम्बन्ध स्थापित कर सकता ! तुम्हारा क्या विचार है डिक, अगर ऐसा हो जाए तो हम फिर शान के साथ घोड़े की पीठ पर चढ़ सकेंगे !"

और इतना कहते हुए नाइट ने केनरी का एक भाण्ड अपने लिए भर लिया और ख़ामोश मुद्रा में अपने पालित पुत्र के समक्ष प्रतिज्ञा करने लगा।

"सैल्डन" डिक लड़खड़ाया—"सैल्डन—" और वह फिर रुक गया।

सर डेनियल ने शराब को बिना छुए ही रख दिया।

"क्या हुआ", वह चिल्लाया, "सैल्डन का क्या हुआ ?" उसकी आवाज बदल गई थी। डिक ने हिचकते-हिचकते उस नरमेध की कहानी कह दी।

नाइट ने चुपचाप वह कहानी सुनी और क्रोध और दुःख से उसका चेहरा लाल पड़ गया।

"आज इस स्थान पर" वह चिल्लाया, "अपने दाहिने हाथ की सौगन्ध खाकर मैं कहता हूँ कि मैं इसका बदला लूँगा। अगर मैं अपनी प्रतिज्ञा को पूरा न करूँ और एक आदमी के बदले दस आदमियों का रक्त न बहा दूँ, तो यह हाथ गल-कर मेरे शरीर से गिर जाए। मैंने एक तूफ़ान की तरह इस डकवर्थ को उखाड़ दिया है और उसके दरवाज़े तक उसे रौंदता गया हूँ। मैंने उसकी झोंपड़ी को जला-

कर राख कर दिया था और उसे इस इलाके से खदेड़ दिया था, लेकिन अब वह फिर मुझसे टक्कर लेने आया है। लेकिन डकवर्थ, अबकी बार तुम्हें अधिक भयानक परिणाम भुगतना होगा !"

नाइट कुछ समय के लिए चुप हो गया, लेकिन उसकी मुखाकृति पर विकराल भावनाएँ अब भी खेल रही थीं।

"खाओ," वह अकस्मात् चिल्लाया, "और देखो तुम," उसने मैचम से कहा, "तुम शपथ खाओ कि तुम शान्तिपूर्वक मोट हाउस तक मेरे पीछे चलते जाओगे !"

"मैं शपथ ग्रहण करता हूँ।" मैचम ने कहा।

"अपनी माँ की सौगन्ध खाकर कहो।" नाइट ने कहा।

मैचम ने विधिपूर्वक कसम खा ली और सर डेनियल ने अपना कृत्रिम चेहरा मुँह पर चढ़ा लिया, घण्टी और लाठी उठा ली। उसको इस भयानक वेश-भूषा में देखकर उसके साथियों पर फिर से आतंक छा गया, किन्तु सर डेनियल ने चलना शुरू कर दिया था।

"जल्दी से खाना खत्म कर डालना," उसने कहा, "और सीधे मेरे पीछे घर पहुँच जाओ।"

उसके चलने के साथ ही उसके प्रत्येक क़दम पर घण्टी बजने लगी। दोनों लड़के अपने अन-स्पर्शित भोजन के पास चकित-से बैठे थे और वह आवाज़ पहाड़ी की चढ़ाई पर दूर होती हुई धीमी पड़ती जा रही थी।

"तो तुम अब टन्सटाल में चलोगे ?" डिक ने पूछा।

"हाँ, निश्चय ही," मैचम ने कहा, "मैं सर डेनियल की पीठ पीछे ही बहादुर हो सकता हूँ !"

उन्होंने जल्दी-जल्दी खाना खाया और वन के ऊपरी प्रदेश के हवादार पथ से वह रवाना हो गए। बड़े-बड़े घास के मैदानों में वृक्ष खड़े थे। चिड़ियाँ और झींगुर शाखों पर बैठे बोल रहे थे। दो घण्टे बाद उन्होंने दूसरी ओर उतरना शुरू कर दिया और उन्होंने देखा कि टन्सटाल हाउस की लाल दीवारें उनके सामने दीख पड़ने लगी हैं।

"यहाँ," मैचम ने रुकते हुए कहा, "तुम अपने मित्र मैचम से विदा लोगे, जिसे जीवन में शायद तुम कभी भी फिर न देख सको। आओ डिक, जो दोष

और अपराध उसने तुम्हारे प्रति किये हैं उसके लिए उसे क्षमा कर दो और वह भी सम्पूर्ण हार्दिकता के साथ तुम्हारी सभी चीजों को अपने हृदय से निकाल देता है।"

"क्यों अभी से क्यों," डिक ने पूछा, "तुम तो मोट हाउस में चल ही रहे हो तो मैं तुमसे अकसर मिला करूँगा। हम दोनों उधर ही तो चल रहे हैं।"

"नहीं, तुम अपने ग़रीब जैक मैचम को कभी भी न देख सकोगे," दूसरे ने उत्तर दिया, "जो कि इतना भीरु है और तुम्हारे लिए भारस्वरूप रहा है। लेकिन फिर भी जिसने तुम्हें नदी से खींच लिया। डिक, मैं अपनी प्रतिष्ठा की सौगन्ध खाता हूँ कि उससे तुम अब कभी न मिल सकोगे," उसने अपने दोनों हाथ फैला दिए और तब उन छोकरों ने एक दूसरे का आलिंगन और चुम्बन किया। "और डिक," मैचम ने कहना जारी रखा, "लेकिन डिक, मेरा अन्तर मुझे कहता है कि अब तुम्हें सर डेनियल के रूप में एक नये आदमी के दर्शन होंगे। जब तक उसका सितारा बुलन्दी पर था सभी आनन्द से थे, लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि उसके दिन गर्दिश के हैं तो वह हम दोनों के साथ अच्छा सलूक नहीं करेगा। वह समर-क्षेत्र में बहादुर सिपाही हो सकता है, लेकिन उसकी आँखों से झूठ टपकता है; उसकी आँखों में भय है और भय डिक, भेड़िये के समान बेरहम होता है। हम लोग उसी के दुर्ग में जा रहे हैं। भगवान् हमें रास्ता दिखाएँ।"

इस प्रकार वह चुपचाप पहाड़ी के ढलाव पर उतरने लगे, और आखिरकार सर डेनियल के जंगली अड्डे पर आ गए। वह क़िला छायादार वृक्षों से घिरा था और ठिगना-सा दीखता था। उसके चारों ओर मीनारें बनी हुई थीं। उसकी दीवारों पर हरी-हरी पनैली घास उगी हुई थी और जल से भरी हुई खाई में कमल के फूल खिले हुए थे।

जिस समय वह दुर्ग के सामने आए तो द्वार खुले हुए थे, पुल नीचे उतार दिया गया था और सर डेनियल हैच और पादरी के साथ स्वयं उनका स्वागत करने के लिए खड़ा हुआ था।

८

मोट हाउस जंगल की इस ऊबड़-खाबड़ सड़क से बहुत दूर नहीं था। यह लाल पत्थर का बना हुआ एक आयताकार दुर्ग था, जिसके हर छोर पर एक गोल बुर्जी बनी हुई थी—जिसमें तीर छोड़ने के लिए सूराख बने हुए थे और चोटी पर तोपें चढ़ी हुई थीं। अन्दर उसमें एक छोटा-सा सहन था। खाई कम से कम बारह फीट चौड़ी थी और एक टूट सकने वाले पुल के द्वारा ही उसमें प्रवेश सुलभ था। एक भूमिगत खाई द्वारा उसमें पानी भरा गया था जो एक जंगली पोखर से मिली हुई थी और यह पोखर दक्षिणी बुर्जों के युद्ध-मोर्चों के ठीक सामने था।

तीर की मार की आधी दूरी पर दो ऊँचे और घने वृक्ष इस दुर्ग के निकट थे। यह स्थान सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त सुदृढ़ था।

सहन में पहुँचकर डिक ने देखा कि एक छोटी-सी टुकड़ी सुरक्षात्मक युद्ध के लिए अभ्यास करने में व्यस्त है। वह लोग बड़ी चिन्तापूर्वक घेरा डाले जाने की संभावना प्रकट कर रहे थे। कुछ लोग तीर तैयार कर रहे थे, कुछ लोग पुरानी तलवारों पर शान रख रहे थे। मुद्दत से प्रयोग न की जाने के कारण इन तलवारों में जंग लग गया था। ये काम करते-करते भी अविश्वाससूचक सिर हिलाते जाते थे।

सर डेनियल की पार्टी के दस आदमी युद्ध से भागकर जंगल में छिपते हुए यहाँ पहुँचने में सफल हो गए थे। लेकिन इन आदमियों में से तीन बुरी तरह घायल कर दिए गए थे। दो राईसिंघम के कत्ले-आम में और एक आदमी जंगल को पार करता हुआ, जॉन एमेण्ड-आल के तीरंदाजों द्वारा। इस

प्रकार दुर्ग की रक्षा-सेना की संख्या हैच, सर डेनियल और युवक शैल्टन को गिनते हुए बाईस थी। कुछ और आदमियों के आने की बराबर उम्मीद बनी हुई थी, इसलिए सैनिकों के अभाव का खतरा तो बिलकुल ही न था।

लेकिन काले तीर का खतरा सैनिकों के लिए अत्यन्त शोचनीय प्रश्न बना हुआ था। क्योंकि यार्क-दल के उधर आ निकलने की संभावना तो लेशमात्र भी नहीं थी। "दुनिया", जैसा कि लोग उस समय कहते थे, "शायद दोबारा पलटा खायेगी।" लेकिन अपने पड़ोसी वनचारियों के भय से वह काँप उठते थे। सर डेनियल ही एकमात्र अत्याचारी हों और घृणा के पात्र हों, यह बात न थी। उनके आदमी भी इस अँधेरगर्दी में दूर-दूर तक जनता को सताते रहते थे। सख्त आज्ञाओं का सख्ती के साथ पालन किया जाता था और उस दल के लोगों में, जो सहन में बैठे बातचीत कर रहे थे, एक भी ऐसा नहीं था जिसके सिर पर बर्बरता करने का अपराध नहीं था। इस बार युद्ध में पराजय प्राप्त हुई थी, और आज तो सर डेनियल में इतनी सामर्थ्य भी नहीं थी कि वह अपने हितों की रक्षा कर पाता। अब मुट्ठी भर सैनिकों द्वारा रक्षित यह गढ़ी चारों ओर से शत्रुओं के आक्रमण के लिए खुली रह गई थी। और उनके सम्मुख कौन-सी दुर्घटनाएँ उपस्थित हो सकती हैं, इनका ढिंढोरा भी चारों तरफ़ अच्छी तरह पीटा जा रहा था।

रात्रि के विभिन्न समयों में कम से कम सात घोड़े, सवार-विहीन होकर गढ़ी के दरवाज़े पर आकर हिनहिनाए थे। उनमें से दो सैल्डन की टुकड़ी में से थे और पाँच उन सवारों के थे जो सर डेनियल के साथ मोर्चे पर गए थे। अन्त में पौ फटने के निकट एक आदमी खाई के निकट आया था, जो बुरी तरह घायल था और तीन तीरों के घाव उसको लगे हुए थे। जिस समय उसे अन्दर लाया जा रहा था, वह अपनी हिम्मत खो चुका था। जो दास्तान उसने सुनाई थी उससे पता चलता था कि वह एक बड़ी टुकड़ी में से अन्तिम आदमी था, जो यहाँ तक बचकर निकल आया था।

हैच के धूप से सिंके चेहरे पर बेचैनी के काफ़ी लक्षण प्रकट होते थे और जिस समय उसने डिक शैल्टन से एकान्त में ले जाकर सैल्डन की दास्तान सुनी तो वह पत्थर की एक बैंच पर गिर पड़ा और फूट-फूटकर रोने लगा। दूसरे लोग जो धूप से भरे सहन में स्टूलों पर या दरवाज़ों की चौखटों पर बैठे थे उसे

बराबर देख रहे थे किन्तु उनका साहस न होता था कि वह उससे इस मार्मिक भावोद्रेक का कारण पूछ लें। सारे दुर्ग में कुछ ऐसा ही आश्चर्य और भय का वातावरण पैदा हो गया था।

"नहीं मास्टर शैल्टन," हैच ने आखिरकार कहा, "देखो, मैंने क्या कहा था ? हम सब लोग खत्म हो जाएँगे। सैल्डन एक शक्तिशाली आदमी था और मेरे लिए तो भाई के समान था। वह दूसरे नम्बर पर हमसे जुदा हुआ और हम सभी को एक दिन उसका अनुगमन करना होगा। क्योंकि उनकी वह भद्दी तुकबन्दी क्या कहती थी, 'एक काला तीर हरएक काले हृदय में' क्या सब इसी प्रकार नहीं घटित हुआ है ? एपिलयार्ड, सैल्डन, स्मिथ, तथा बूढ़ा हम्फ्रे सभी नहीं चले गए ? और उधर बेचारा कार्टर ! पादरी की प्रतीक्षा में पापी का अन्तिम साँस गले में अटका हुआ है।"

डिक ग़ौर से यह सब सुन रहा था। जिस खिड़की के पास वह बैठे बातें कर रहे थे, वहाँ कराहने और फुसफुसाने की आवाज़ आ रही थी।

"क्या वह वहाँ पड़ा हुआ है ?" डिक ने पूछा।

"हाँ, दूसरे पोर्टर के कमरे में," हैच ने उत्तर दिया, "हम उसको देख नहीं सकते थे, उसकी आत्मा और शरीर इतनी बुरी तरह जर्जर हो चुके हैं। जब हम उसे उठा रहे थे, हर क़दम पर मालूम होता था कि उसका प्राणान्त हो जाएगा। अब मैं सोचता हूँ कि उसकी काया खत्म हुई, अब तो आत्मा ही कष्ट पा रही है। वह लगातार पादरी के लिए पुकार रहा है और मैं नहीं समझता कि सर ओलीवर आते क्यों नहीं हैं। खैर, वह बेचारा तो पादरी के सम्मुख अपने पापों को स्वीकार भी कर सकेगा लेकिन अफसोस कि ग़रीब एपिलयार्ड और सैल्डन वैसे ही चले गए !"

डिक खिड़की की ओर झुका और उसने अन्दर झाँका। वह छोटा-सा तहखाना बहुत नीचा और अंधकारयुक्त था लेकिन फिर भी वह उस घायल और कराहते हुए सैनिक को अपनी खटिया पर बेचैनी से तड़पते हुए देख सकता था।

"कार्टर, मेरे अभागे मित्र, क्या हाल है ?" उसने पूछा।

"मास्टर शैल्टन," सैनिक किञ्चित उत्तेजित स्वर में बुदबुदाया, "मुझे स्वर्ग का प्रकाश देने के लिए कृपा करके पादरी को बुला दो। अफसोस, यह मेरा

अन्तिम समय है। मैं बहुत गिर चुका हूँ और मेरा दिल अब मृत्यु की गोद में है। अब तुम्हें इस अन्तिम सेवा के अतिरिक्त और कोई सेवा करने का कष्ट मैं नहीं दे सकूँगा। अब अपनी आत्मा के उद्धार के लिए मैं तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ। मेरे अन्तःकरण पर पापों का इतना भार है कि वह मुझे घोर नर्क में ले जाएँगे।" वह कराहा और डिक ने उसके दाँतों के कटकटाने की आवाज़ सुनी, लेकिन यह निश्चय न कर सका कि वह पीड़ा के कारण बज रहे थे या भय के।

उसी समय सर डेनियल हाल की ड्योढ़ी पर आते दिखाई दिए। उसके हाथ में एक पत्र था।

"जवानो," उसने कहा, "हम लोगों पर आफतें आई, हमने ठोकरें खाईं ? क्यों और किस लिए हम उनसे मुँह मोड़ें ! इन विपत्तियों से तो हमें और भी प्रेरणा मिलनी चाहिए ताकि हम हरदम रकाब में पैर डालने के लिए तत्पर रहें। यह छठा हैनरी रसातल को पहुँच गया है, इसलिए इससे हम अपने हाथ क्यों न धो डालें। मेरा एक मित्र है—लार्ड आव वेन्स्लीडेल ! मैंने अपने उस मित्र को पत्र लिखा है और उससे प्रार्थना की है कि अगर उन्होंने हमारी सुलह करा दी तो हम अपने आचरण के लिए उचित आश्वासन देने और भविष्य के लिए भी विश्वास दिलाने के लिए तैयार हैं। मुझे विश्वास है कि लार्ड वेन्स्लीडेल हमारी प्रार्थना पर उचित ध्यान देंगे। वैसे बिना पारितोषिक के प्रार्थना उसी तरह होती है जैसे बिना स्वर के गायन। जवानो, हालाँकि इस पत्र में मैंने उनसे अनेक वायदे किए हैं—लेकिन एक भी वायदे को पूरा करने का मैं कायल नहीं हूँ, अब केवल एक बात की कमी है कि कोई इस पत्र को उन तक ले जाए। काम मुश्किल जरूर है, सारे जंगली इलाके की हक़ीक़त आप लोगों को भली भाँति विदित है। चारों तरफ़ हमारे शत्रु भरे पड़े हैं, जल्दी होना बहुत आवश्यक है, लेकिन इससे भी अधिक आवश्यकता सावधान और चौकन्ना रहकर काम करने की है। तुममें कौन-सा जवान यह पत्र लार्ड विन्स्लीडेल के पास ले जाएगा और उसका उत्तर मुझे लाकर देगा।"

एक आदमी तत्परता के साथ उठकर खड़ा हो गया।

"मैं करूँगा, जैसा आप चाहते हैं" उसने कहा, "मैं अपने सिर प्रत्येक संकट ओढ़ने के लिए तैयार हूँ।"

"नहीं, डिकी बोवर, यह नहीं होगा।" नाइट ने उत्तर दिया, "मुझे तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार नहीं है। तुम चतुर अवश्य हो इसमें सन्देह नहीं, लेकिन तुम्हारे क़दमों में रफ्तार नहीं है। तुम तो हमेशा के पीछे घिसटने वाले हो।"

"अगर वह नहीं तो मैं तैयार हूँ, सर डेनियल!" एक दूसरा चिल्लाया।

"देवता मङ्गल करें!" नाइट ने कहा, "तुम तेज़ तो हो, लेकिन चतुर नहीं हो। मुझे विश्वास है कि तुम सीधे जॉन एमेण्ड-आल के कैम्प में ही इस पत्र को पहुँचा दोगे। लेकिन इस साहसिकता के लिए मैं तुम दोनों का कृतज्ञ हूँ; लेकिन दोस्तो, तुम दोनों से काम होता नज़र नहीं आता।"

तब हैच ने अपने आपको प्रस्तुत किया, किन्तु नाइट ने उसे भी अस्वीकार कर दिया।

"मैं चाहता हूँ गुड बैनेट, कि तुम मेरे पास ही रहो। तुम मेरे दाहिने हाथ हो।" नाइट ने उत्तर दिया। और तब अनेक आदमी उठकर खड़े हो हुए और अपने को अर्पित करने लगे। आख़िरकार सर डेनियल ने एक को चुन लिया और उसे पत्र दे दिया।

"अब" उसने कहा, "तुम्हारी गति और विवेक पर हम सबका भविष्य निर्भर होगा। मुझे इसका उत्तर लाकर दे दो और मैं तीन हफ्ते के अन्दर-अन्दर उन गुंडों को, जो आज हमारे सामने खड़े होने का साहस करते हैं, इस समस्त वन्य प्रदेश से रौंदकर बाहर फेंक दूँगा। लेकिन हमेशा ध्यान रखना थ्रोगमोर्टन, काम इतना आसान नहीं है; तुम्हें रात्रि के अन्धकार में चलना है और एक लोमड़ी की तरह चालाक होना है। लेकिन टिल नदी को तुम कैसे पार करोगे? मुझे नहीं मालूम लेकिन तुम्हें न तो पुल से जाना है न नाव का सहारा लेना है। यह तो स्पष्ट समझ लेना है।"

"मैं तैरना जानता हूँ" थ्रोगमोर्टन ने कहा, "मैं सुरक्षित आ जाऊँगा, आप शङ्का न करें।"

"तब मेरे दोस्त, तुम सीधे मदिरालय में चले जाओ" सर डेनियल ने उत्तर दिया, "और तुम लाल शराब में जी भरकर रमण करो" और इतना कहकर वह हाल में चला गया।

"सर डेनियल की ज़बान में जादू है" बैनेट डिक को एक तरफ़ ले जाकर कहता है, "देखो तो, अगर कोई छोटा आदमी होता तो इस मामले को अपने

दिल में ही बन्द रखता लेकिन वह किस स्पष्टता से अपनी सेना के सामने वह सब कुछ बयान कर गया। वह कहता है कि खतरा है, मुश्किलें हैं, लेकिन फिर भी उसका रुख कितना पुर-मज़ाक है। सन्त बारबरी की सौगन्ध, वह एक शानदार सेनानायक है। उसने सभी आदमियों में प्राण फूंक दिए हैं। देखो, किस तरह वे सब फिर से काम करने के लिए खड़े हो गये हैं।"

सर डेनियल की प्रशंसा ने डिक के मस्तिष्क में एक विचार पैदा कर दिया।

"बैनेट" उसने कहा, "मेरे पिता का अन्त किस तरह हुआ था ?"

"मुझसे यह शब्द न पूछो" हैच ने उत्तर दिया, "मेरा इसमें कोई हाथ नहीं था। न मेरी जानकारी में कुछ हुआ। लेकिन फिर भी, मास्टर डिक, इस सम्बन्ध में मैं चुप ही रहना चाहूँगा। क्योंकि देखो डिक, अगर कोई मामला जानकारी तक सीमित हो, तो कहने-सुनने में कुछ भी झिझक नहीं हो सकती, किन्तु जिन चीज़ों के बारे में अफवाहें फैल गई हों, उनके बारे में कुछ भी कहना उचित नहीं होता। सर ओलीवर से यह पूछना; हाँ, अथवा कार्टर से, अगर तुम्हें पूछना ही हो तो, मुझसे नहीं।"

और हैच गश्त लगाने चला गया। डिक बैठा विचार करता रहा।

"आखिर वह किसलिए यह सब बातें मुझसे नहीं बताना चाहता" लड़के ने अपने मन में विचारा, "और उसने कार्टर का नाम किसलिए लिया ? फिर कार्टर का शायद उसमें हाथ रहा हो, संभव है !"

उसने मकान के अन्दर प्रवेश किया और एक गन्दे और सकरे रास्ते से चलता हुआ उस तहखाने के निकट पहुँचा जहाँ वह घायल आदमी पड़ा हुआ कराह रहा था। उसके प्रविष्ट होने पर कार्टर उत्सुकतापूर्वक चौंका।

"क्या तुम पादरी को ले आए हो !" कार्टर चिल्लाया।

"अभी नहीं" डिक ने उत्तर दिया, "तुम्हें इससे पहिले कुछ बताना है। बताओ तो मेरे पिता, हैरी शैल्टन, की मृत्यु किस प्रकार हुई थी ?"

उस आदमी का चेहरा तत्काल बदल गया।

"मैं कुछ भी नहीं जानता," कार्टर ने कहा।

"नहीं, तुम सब अच्छी तरह जानते हो" डिक ने कहा, "मुझे बहकाने की कोशिश मत करो।"

"मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता," कार्टर ने दोहराया।

"तो फिर" डिक ने कहा, "तुम बिना पवित्र वचन सुने ही मरोगे, मैं यहीं हूँ और यहीं पर ठहरूँगा। तुम्हारे पास कोई भी पादरी नहीं आने पाएगा, विश्वास रखो। क्योंकि जिन अपराधों में तुम्हारा हाथ रहा है, उन्हें तुम स्वीकार नहीं कर सकते तो फिर पादरी के सामने तुम्हारे इस प्रायश्चित्त का क्या लाभ? और बिना प्रायश्चित्त के अपराध को स्वीकार करना भी एक मज़ाक ही है।"

"तुम वह बातें कहते हो, जो नहीं कहनी चाहिएँ, मास्टर डिक" कार्टर ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "यह मरने वाले को धमकी देना है और यह आचरण तुम्हें शोभा नहीं देता। क्योंकि इस विषय की जानकारी भी तुम्हें बहुत अधिक लाभ नहीं पहुँचा सकेगी। खड़े रहो, अगर तुम्हारी यही मर्जी है। तुम मेरी आत्मा को नर्क में डालना चाहते हो। मेरा आख़िरी कहना यह है कि तुम इस बारे में कुछ भी मेरे द्वारा अब जान न सकोगे।" और वह घायल आदमी दूसरी ओर करवट बदलकर लेट रहा।

सच तो यह है कि डिक जल्दी में वह धमकी दे बैठा था और अब वह उसके लिए लज्जित हो रहा था। लेकिन उसने एक बार और प्रयत्न किया।

"कार्टर" उसने कहा, "मुझे ग़लत मत समझो। मैं जानता हूँ कि तुमने अपने मालिक के कहने पर वैसा किया। एक सेवक का धर्म अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करना ही होता है। मैं इसका बुरा नहीं मानता। लेकिन चारों ओर से मेरे कानों में यह पड़ना शुरू हो गया है कि मेरे कन्धों पर अपने पिता के प्रतिशोध लेने का कर्तव्य है। इसलिये मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, गुड मास्टर कार्टर, मेरी धमकियों को अपने दिमाग़ से निकाल दो—और सच्ची सद्-भावना और प्रायश्चित्त-भावना से मेरी सहायता करो।"

वह घायल आदमी खामोश लेटा रहा। डिक की मर्जी आए जो कहता चला जाय किन्तु क्या वह एक शब्द भी उससे कहलवा सकता था!

"अच्छा तो," डिक ने कहा, "मैं जाता हूँ और तुम्हारी इच्छानुसार पादरी को बुलाकर लाता हूँ। तुमने मेरे प्रति चाहे जो अपराध क्यों न किया हो, मैं किसी के प्रति कोई अपराध नहीं करूँगा, खासतौर से उसके प्रति जो अपनी जिन्दगी का अन्तिम साँस गिन रहा हो।"

फिर भी वह घायल सिपाही बिना कुछ बोले और हरकत किए उसकी बातें

सुनता रहा। उसने अपनी कराहट भी दबा ली थी और ज्योंही डिक बाहर निकला, उसका हृदय उसकी दयालुता के लिए प्रशंसा से भर उठा।

"और यह साहस भी," डिक ने सोचा, "बिना चतुराई के किसी काम का नहीं। अगर उसके हाथ निर्दोष होते, तो वह अवश्य बोल उठता, लेकिन उसकी खामोशी उसके शब्दों से भी ऊँची आवाज़ में हक़ीक़त को कह रही है, आज चारों ओर से मुझे प्रमाण मिलते जा रहे हैं। सर डेनियल या उसके आदमियों ने यह सब किया है।"

डिक उस पत्थर के बराण्डे में अपना भरा दिल लेकर कुछ देर ठिठक रहा। क्या उस समय जबकि सर डेनियल के सितारे गर्दिश में हैं, काले तीर उसकी ओर बढ़ते चले आ रहे हैं और विजेता यार्किस्ट उस पर आक्रमण करने के लिए तैयार हैं, क्या डिक भी उस आदमी के विरुद्ध उठ खड़ा होगा; उसी आदमी के विरुद्ध जिसने उसका पालन-पोषण किया और शिक्षा दी ? हालाँकि उसने उसे कठोर से कठोर दण्ड दिए, परन्तु फिर भी उसके जीवन को सुरक्षित तो रखा। आह, अगर उसे प्रतिशोध लेना पड़ा तो यह काम कितना बेरहम होगा !

"मैं स्वर्ग के देवताओं से प्रार्थना करता हूँ कि वह निर्दोष हो।" डिक ने कहा। तब बाहर से किसी के आने की आहट आई। सर ओलीवर उसकी ओर बढ़ते नजर आ रहे थे।

"वह आदमी आपको याद कर रहा है," डिक ने कहा।

"मैं तो उधर ही जा रहा हूँ, गुड रिचर्ड," पादरी ने कहा, "बेचारा कार्टर ही तो न ? अफसोस कि हम लोग अब उसे नहीं बचा सकते।"

"लेकिन उसकी आत्मा उसके शरीर से अधिक रुग्ण है।" डिक ने कहा।

"क्या तुम उससे मिले हो ?" सर ओलीवर ने चौंकते हुए कहा।

"मैं तो सीधा उसी के पास से आ रहा हूँ।" डिक ने उत्तर दिया।

"उसने क्या कहा, क्या कहा उसने ?" पादरी ने असाधारण उत्सुकता दिखाते हुए पूछा।

"वह बस आपका नाम लेकर और भी करुणाजनक स्वर से पुकारता था, सर ओलीवर," डिक ने कहा, "हम लोग तेजी से उसके पास पहुँचें। उसके बहुत गम्भीर जख्म आए हैं, इसीलिए आपका नाम पुकारता होगा।"

"मैं तो सीधा उधर ही जाता हूँ," पादरी ने उत्तर दिया, "हम सभी का

जीवन पापों से भरा है। हम सभी एक न एक दिन अन्त समय को प्राप्त होंगे, गुड रिचर्ड !"

"हाँ सर, लेकिन यह और भी अच्छा हो कि हम निर्दोष रहकर ही अपनी जिन्दगी का सफर तै करें।" डिक ने जवाब दिया।

पादरी ने अपनी आँखें नीची कर लीं और कुछ मंगल-वचन मन ही मन दोहराने लगा।

"वह भी," डिक ने सोचा, "जिसने मुझे धर्मशास्त्रों की शिक्षा दी, वह स्वयं भी······तो फिर मैं कैसी दुनिया के बीच फँस गया हूँ ! वह सभी आदमी जो मेरी परवरिश करते हैं, मेरे पिता के खून के अपराधी हैं। प्रतिशोध, मेरा कितना बड़ा दुर्भाग्य है, मुझे अपने ही मित्रों से प्रतिशोध लेने पर मजबूर होना पड़ेगा।"

इस विचार ने उसे मैचम की याद करा दी। वह अपने इस अजीब-से साथी की याद करके मुसकराने लगा। और फिर सोचने लगा कि वह उस समय कहाँ होगा। जिस समय से उसने मोट हाउस में प्रवेश किया था, तभी से वह साथी उससे बिछुड़ गया था। उससे एक बात कर लेने के लिए डिक का मन बेचैन होने लगा।

एक घण्टे के बाद, सर ओलीवर के धर्म-स्तोत्र शीघ्रता से समाप्त कर लेने के बाद, वह टुकड़ी हाल में खाने के लिए एकत्रित हुई। खाने का कमरा लम्बा था और उसकी छत नीची थी, उसमें जगह-जगह पर फटेरे के गमले रखे हुए थे और चित्रकारी युक्त वस्त्र स्थान-स्थान पर दीवारों पर लटके हुए थे, जिन पर बर्बर लोगों के और खूनी कुत्तों के चित्र बने हुए थे और जगह-जगह पर भाले और कमान टँगी हुई थीं। एक बड़ी चिमनी में नीचे आग धधक रही थी और दीवारों से सटकर ही उसी प्रकार के चित्रों से युक्त बैंचें पड़ी हुई थीं और उनके मध्य में पड़ी हुई एक मेज़ जैसे खाने वालों की प्रतीक्षा कर रही थी। सर डेनियल और लेडी डेनियल कोई भी उपस्थित नहीं थे। सर ओलीवर भी वहाँ नहीं थे और मैचम का भी कोई निशान नहीं था। डिक अपने अन्दर उद्विग्नता अनुभव करने लगा था। उसे भय था कि मोट हाउस में आकर कहीं मैचम संकट में तो नहीं फँस गया है।

भोजन के बाद उसे गुडी हैच मिली जो कि लेडी ब्रैंकले की ओर तेज़ी से जा रही थी।

"गुडी", उसने कहा, "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि बताओ मैचम कहाँ है। जब मैं इधर आया था तो मैंने उसे तुम्हारे साथ जाते देखा था।"

वह औरत ठठाकर हँसने लगी।

"आह मास्टर डिक", उसने कहा, "तुम्हारे माथे में प्रसिद्ध तीसरा नेत्र है, अब मैं विश्वास कर सकती हूँ?" और फिर हँसने लगी।

"नहीं, लेकिन मुझे बताओ, वह कहाँ है?" डिक ने ज़िद की।

"तुम उसे अब कभी भी देख नहीं सकोगे", उसने कहा, "नहीं, कभी नहीं, कम से कम इस ज़िन्दगी में!' औरत ने कहा।

"आखिर क्यों नहीं", लड़के ने कहा, "क्या मैं इसका कारण जान सकता हूँ कि मैं क्यों उसे नहीं देख सकूँगा? वह अपनी मर्ज़ी से इधर नहीं आया, जिस तरह मैं आया हूँ। मैं उसका संरक्षक हूँ और चाहता हूँ कि उसका समुचित उपयोग किया जाए। यहाँ पर न जाने कितने रहस्य हैं; मैं अब इस खेल से तंग आ गया हूँ।"

लेकिन ज्योंही डिक बोल रहा था, एक भारी हाथ उसके कन्धे पर पड़ा। वह हाथ बैनेट हैच का था जो कि उसके अनजाने में ही वहाँ तक बढ़ आया था। अपने अँगूठे के इशारे से उस वेतनभोगी योद्धा ने अपनी पत्नी को वहाँ से हटा दिया।

ज्योंही वह अकेले हुए तो उसने कहा, "मित्र डिक, तुम चन्द्रमा के समान प्यारे हो, लेकिन तुम किसी को भी शान्ति से नहीं रहने देते। अच्छा होता कि तुम मोट हाउस की बजाए किसी खारे सागर में रहते। तुमने मुझसे पूछा, तुमने कार्टर को लालच दिया, तुमने जैक-पादरी को संकेतों से भयभीत कर दिया। तुम अपने को सावधान रखो मूर्ख! और अब सर डेनियल तुम्हें बुलाते हैं। कृपा करके वहाँ अक्लमंदी से काम लेना। तुमसे बड़ी सख़्ती के साथ प्रश्न किए जाएँगे, तुम्हें उत्तर देते समय सँभलकर बातें करनी हैं!"

"हैच?" डिक ने कहा, "इस सबके अन्दर मुझे कहीं चोर दिखाई देता है।"

"और अगर तुमने समझदारी से काम नहीं लिया तो तुम्हें खून भी दिखाई देने लगेगा।" वैनेट ने उत्तर दिया, "देखो वह आदमी तुम्हें बुलाने आ रहा है।"

और वास्तव में तभी एक हलकारा सहन को पार करके उसे सर डेनियल के सामने हाज़िर होने के लिए बुलाने आ पहुँचा।

९

सर डेनियल उस समय हाल में थे, जहाँ वे क्रोध में भरे हुए डिक के आने की प्रतीक्षा में इधर से उधर आग के सामने तेज़ी से घूम रहे थे। सर ओलीवर के अतिरिक्त वहाँ कोई भी न था। वे अपनी धर्म-पुस्तक पर अँगूठा रखे हुए मन ही मन कुछ बोल रहे थे।

"आपने मुझे बुलाया है सर डेनियल ?" युवक शैल्टन ने कहा।

"मैंने बुलवाया है तुम्हें," नाइट ने उत्तर दिया, "जो कुछ मेरे कानों में पड़ा है, उसे सुनकर। क्या मैं तुम्हारे लिए इतना निर्मम संरक्षक सिद्ध हुआ हूँ कि तुम मेरे बारे में इतना बुरा सोचने लगे हो। तो क्या तुमने भी मेरे ऊपर आई हुई विपत्तियों को देखकर मेरा साथ छोड़ने का इरादा कर लिया है ? मैं धर्म की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे पिता ऐसे नहीं थे। जिनके निकट वह रहते थे, उन्हें किसी भी स्थिति में छोड़ते नहीं थे, चाहे जितने भारी संकटों के बादल उमड़कर आ जाते। लेकिन तुम डिक, तुम तो अच्छे दिनों के ही साथी हो, ऐसा प्रतीत होता है और अब अपना दामन हमसे छुड़ाकर भाग निकलना चाहते हो।"

"आप अप्रसन्न न हों सर डेनियल, बात ऐसी नहीं है," डिक ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "मैं कृतज्ञ और वफादार हूँ; जहाँ तक कृतज्ञता और वफादारी अपेक्षित है। इसके पूर्व मैं अधिक कुछ कहूँ, मैं आपका और सर ओलीवर का हृदय से धन्यवाद करना चाहता हूँ। आपका मुझ पर जितना अधिकार है, उतना इस दुनिया में किसी और का अधिकार मुझ पर नहीं है। और अगर इस ऋण के प्रति मैं वफादारी न निभाऊँ तो भगवान मुझे कुत्ते का जन्म दे।"

"यह ठीक है," सर डेनियल ने अपने क्रोध का पारा ऊपर चढ़ाते हुए कहा, "कृतज्ञता और वफादारी केवल शब्द हैं डिक शैल्टन", उसने कहना जारी रखा, "लेकिन मैं तो आचरण को देखता हूँ। मेरे संकट के क्षणों में, जब मेरा नाम अपमानित हो चुका है, जबकि मेरी जमीन छीन ली गई है, और जबकि ये जंगल ऐसे आदमियों से भरे पड़े हैं, जो कि मेरे सर्वनाश के भूखे और प्यासे हैं, तो फिर थोथी कृतज्ञता का क्या सबूत! वफादारी का अर्थ? आज जबकि मेरे पास सैनिकों की एक छोटी-सी टुकड़ी रह गई है, तुम उनके कानों और दिलों में मेरे ही विरुद्ध जहर भरते घूमते हो। मुझे ऐसी कृतज्ञता से दूर ही रखो तो अच्छा। लेकिन मेरे सामने साफ़-साफ़ कहो कि तुम्हारी इच्छा क्या है। बोलो, हम उसका जवाब देंगे। अगर तुम्हारे मन में मेरे विरुद्ध कुछ है तो सामने आकर साफ़-साफ़ कहो।"

"सर," डिक ने उत्तर दिया, "मैं जिस समय छोटा ही था, मेरे पिता का कत्ल हो गया। मैंने यह सुना है कि उन्हें दग़ा करके मारा गया। मैं छिपाना नहीं चाहता। मुझे संदेह है कि उनके खत्म किए जाने में आपका भी हाथ था। लेकिन जब तक मेरे सन्देह दूर नहीं कर दिए जाते, यह सन्देह मेरे मन में बने ही रहेंगे।"

सर डेनियल एक गम्भीर मुद्रा में बैठे थे। उन्होंने अपनी ठोड़ी अपने हाथ पर टिकाई हुई थी और एकटक डिक की ओर देख रहे थे।

"और तब भी तुम सोचते हो कि जिस आदमी को मैंने क़त्ल किया, उसी के बेटे की मैं परवरिश भी करूँगा?" उसने पूछा।

"नहीं," डिक ने कहा, "मुझे क्षमा करें, अगर मैं उद्दण्डतापूर्वक कुछ कह जाऊँ; लेकिन आप जानते हैं कि मुझे पालित पुत्र के समान रखना आपके लिए लाभ की बात थी। क्या इन वर्षों में आपने मेरी भूमि की मालगुजारी वसूल नहीं की और मेरे सैनिकों को अपना हित साधन करने के लिए प्रयोग नहीं किया? क्या अभी भी आप मेरे विवाह का लाभ उठाने का विचार नहीं रखते? मैं कह नहीं सकता उसका मूल्य आपके लिए कितना होगा, लेकिन उसका मूल्य कुछ होगा अवश्य। मुझे क्षमा करें, किसी आदमी को, 'जो हम पर विश्वास करता हो, कत्ल कर देना काफ़ी कमीना कार्य है और अब शायद कुछ कारण

ऐसे बन गए हैं कि आप अपेक्षाकृत थोड़ा कम कमीनापन करना बेहतर समझते हैं।"

"जब मैं तुम्हारी उम्र का छोकरा था," सर डेनियल ने कठोरता से कहा, "मेरा मस्तिष्क इस प्रकार के संदेहों के चक्कर में इतना नहीं पड़ा था। और सर ओलीवर यहाँ है," उसने आगे कहा, "एक पादरी होते हुए वह किसी अपराध में क्यों शामिल होने लगे हैं ?"

"नही, सर डेनियल," डिक ने कहा, "लेकिन सर डेनियल कुत्ता, वहीं जाएगा, जहाँ उसका मालिक उसे भेजेगा। यह तो अच्छी तरह प्रकट हो चुका है कि यह पादरी साहब आपके यन्त्र हैं। मैं सब कुछ साफ़-साफ़ कह रहा हूँ, यहाँ शिष्टाचार का अवसर नहीं है। और मुझे इसका कुछ भी उत्तर नहीं मिलता है। मैं यह जानता हूँ आप और भी अधिक प्रश्न मुझ-से करेंगे। मैं देख रहा हूँ कि सर डेनियल, आप सावधान हो रहे हैं, लेकिन इससे मेरे संदेहों की निवृत्ति नहीं हो सकेगी।"

"मैं तुम्हें अच्छी तरह उत्तर दूँगा मास्टर रिचर्ड", नाइट ने कहा, "अगर मैं इसे छिपाऊँ कि तुमने मेरे क्रोध को उत्तेजित नहीं किया है तो मैं इन्सानियत से गिर जाऊँगा। लेकिन मैं क्रोध में भी न्याय पर दृढ़ रहूँगा। यही शब्द लेकर तुम मेरे पास उस समय आना जब तुम बड़े हो जाओ, और अपनी भूमि-सम्पत्ति के स्वामी हो जाओ। और मैं तुम्हारा संरक्षक बनकर उनका प्रतिवाद करने में उतना असमर्थ न रहूँगा, तब मेरे पास आना। और तब मैं तुम्हें वह उत्तर दूँगा, जिसके तुम मुस्तहक़ हो। तब आना जब मैं तुम्हारे मुँह पर घूँसा मार सकूँ। तब तक तुम्हारे सामने केवल दो रास्ते हैं; या तो मैं तुम्हारे इन अपमानों को पी जाऊँ और तुम भविष्य में अपनी जबान पर लगाम रखो और उस आदमी के लिए लड़ो जिसने तुम्हारे बचपन की रक्षा की है या फिर तुम्हारे लिए दूसरा रास्ता भी खुला है, और बाहर जंगल मेरे शत्रुओं से भरा पड़ा है—तुम चले जाओ।"

जिस भावना से यह शब्द कहे गए थे, और जैसी मुखाकृति बनाकर कहे गए थे, उन्हें देखकर डिक सन्न रह गया था। लेकिन फिर भी उससे यह कहते न बन पड़ा कि उसके पास कोई उत्तर नहीं है।

"मैं इससे अधिक और किसी बात पर विश्वास नहीं करना चाहता सर

डेनियल", डिक ने कहा, "कि मैं आपमें विश्वास रखता हूँ, आप मुझे यह विश्वास दिला दीजिए कि आप इस पाप से नितान्त मुक्त हैं।"

"क्या तुम मेरे वचनों पर विश्वास करोगे डिक ?" नाइट ने कहा।

"वह मैं करूँगा", लड़के ने उत्तर दिया।

"मैं यह तुमसे कहता हूँ", सर डेनियल ने कहा, "अपनी प्रतिष्ठा और आत्मा की सौगन्ध और जैसा कि आज के बाद मैं अपने आचरण के लिए उत्तरदायी हूँगा, कि तुम्हारे पिता को न मैंने क़त्ल किया और न उसमें मेरा हाथ ही था।"

उसने अपना हाथ लड़के के सामने कर दिया, जिसने बड़ी हार्दिकता से उसे स्वीकार कर लिया। उनमें से किसी ने भी पादरी को नहीं देखा जो कि उस हार्दिक और झूठी सौगन्ध पर अपनी कुर्सी पर से उस बीभत्सता के भय और परिताप की ज्वाला में जलने के डर से लगभग आधा उछल गया था।

"आह", डिक चिल्लाया, "आपको अपने उदार हृदय में मेरे लिए कहीं न कहीं से क्षमा खोजनी ही होगी। मैंने आपके ऊपर अविश्वास करके, काफ़ी गम्भीर उद्दण्डता की है। मैं अपना हाथ आपके हाथ पर रखकर कहता हूँ कि मैं अब कभी आप पर संदेह नहीं करूँगा।"

"हाँ डिक", सर डेनियल ने उत्तर दिया, "तुम्हें क्षमा किया जाता है, तुम दुनिया को और उसके कमीने स्वभाव को अभी समझते नहीं हो।"

"मैं और भी बड़ा अपराधी हूँ", डिक ने कहा, "क्योंकि शैतानों ने आपके बारे में उतना कहा भी नहीं है, जितना सर ओलीवर के बारे में कहा है।"

जैसे ही वह बोला, वह पादरी की ओर उन्मुख हुआ और अन्तिम शब्द के आधे में ही थोड़ा रुक भी गया। उस लम्बे, तगड़े और स्थूलकाय और ऊँचे क़दम रखने वाला आदमी के जैसे परखचे-परखचे उड़ गए थे। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था और उसकी देह शिथिल पड़ गई थी। उसके होंठों से प्रार्थना के शब्द निकल रहे थे और अब जबकि डिक की निगाह उस पर जम गई थी, वह सहसा एक पशु की तरह ऊँचे स्वर में डकराया और उसने अपने हाथों में ही अपना मुँह छिपा लिया।

सर डेनियल दो ही क़दमों में उसके निकट पहुँच गए थे और उसके कन्धे पकड़कर जोर से उसे झकझोरने लगे थे। डिक का संदेह पुनः गहरा हो गया था।

"नहीं" उसने कहा, "सर ओलीवर भी शपथ खा सकते हैं, क्योंकि लोग उन्हीं को अधिक अपराधी बताते हैं।"

"वह भी शपथ लेंगे", सर डेनियल ने कहा।

सर ओलीवर गूंगों की तरह वायु में अपने हाथ घुमाते जा रहे थे।

"ओ, मैं धर्म की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि आपको शपथ लेनी पड़ेगी," सर डेनियल क्रोध से आग-बबूला होकर चिल्लाए, "यहाँ इस पुस्तक को हाथ में लेकर आप शपथ खाएंगे;" उसने धर्म-पुस्तक को, जो कि पृथ्वी पर गिर गई थी, उठाते हुए कहा, "क्या आप ऐसा आचरण करेंगे कि स्वयं मैं ही आप पर सन्देह करने लगूँ। आप कसम खाइए, कसम खानी पड़ेगी!"

लेकिन पादरी के मुँह से अभी तक भी शब्द नहीं निकल पा रहे थे। सर डेनियल का भय, और पाप की भावना दोनों बराबर ऊँचाई तक उठ गए थे, जिन्होंने उनका गला घोट दिया था।

और उसी समय एक काला तीर कमरे की ऊँची शीशे की खिड़की से आया और घूमकर मेज के बीचोबीच गड़ गया।

सर ओलीवर एक भारी चीख़ मारकर मूर्च्छित होता हुआ फर्शों पर गिर गया था। जबकि नाइट और उसके पीछे डिक तेज़ी के साथ सहन में चले गए थे और निकटतम घूमने वाले जीने से चढ़कर मोर्चे पर पहुँच गए थे। सब तरफ़ पहरेदार चौकन्ने हो गए थे। हरी घास पर, जिस पर कहीं-कहीं वृक्ष खड़े थे, सूर्य पूरी तरह चमक रहा था। किसी भी घेरा डालने वाले का कोई नाम-निशान नहीं दिखाई देता था।

"यह तीर किधर से आया?" नाइट ने पूछा।

"उस [illegible]नने वाले कुंज से सर डेनियल", एक सन्तरी ने कहा।

नाइट कुछ देर तक विचार मग्न खड़ा रहा। तब वह डिक की ओर मुड़ा और कहा, "डिक इन आदमियों पर निगाह रखना। मैं तुम पर यहाँ की सुरक्षा का भार सौंपता हूँ। रहा पादरी के बारे में, वह अपनी सफ़ाई अवश्य देगा। या मैं यह कारण जानकर कहूँगा कि उसके सामने कौन-सी अड़चन है। मैं तो लगभग तुम्हारे संदेह में शरीक होने की स्थिति में आ गया हूँ। मुझ पर विश्वास करो कि या तो वह शपथ खाकर सच कह देगा, वरना हम उसे आपराधी घोषित कर देंगे।"

डिक ने उत्साह हीन होकर सिर हिला दिया। नाइट उसकी ओर एक भेदने वाली दृष्टि से देखता हुआ जल्दी से हाल में आ गया। उसने पहली दृष्टि तीर पर डाली। वह पहली बार इस अस्त्र को देख रहा था और उसे इधर से उधर उलट रहा था। इसका काला रंग उसके हृदय में भय का संचार कर रहा था। इस तीर के साथ भी एक शब्द लिखा हुआ था, "दफनाया हुआ !"

"ओह, तो उन्हें पता चल गया कि मैं वापस आ गया हूँ", वह बड़बड़ाया, "लेकिन उनमें एक भी कुत्ता ऐसा नहीं है जो मुझे खोदकर निकाल सके।"

सर ओलीवर अब फिर सजग हो चुके थे और अपने पैरों की ओर झुकते हुए वह सर डेनियल से कह रहे थे, "अफसोस सर डेनियल, आपने इतनी भयानक शपथ खा ली है। अब आप अन्त समय के लिए पाप के भागी बन गए।"

"ठीक है", नाइट ने उत्तर दिया, "मैंने शपथ खाई है, लेकिन बददिमाग, तुम्हें उससे भी बड़ी शपथ खानी पड़ेगी। तुम्हें हालीवुड के पवित्र क्रास को हाथ में लेकर कसम खानी होगी। इतना याद रखो, शपथ के लिए शब्द तैयार कर लो। तुम्हें रात्रि में शपथ ग्रहण करनी होगी।"

"भगवान तुम्हारी बुद्धि में प्रकाश दें", पादरी ने उत्तर दिया, "भगवान इस अनाचार से तुम्हारा हृदय विमुख कर दें !"

"ज़रा विचार तो करो, मेरे सम्मानित पादरी", सर डेनियल ने कहा, "अगर आप केवल पवित्राचरण पर जोर देते हैं तो मुझे कुछ नहीं कहना है। बस तुमने यह काम ज़रा देर से शुरू किया है। यह छोकरा मुझे बर्र की तरह डंक मारने लगा है। मैं उसे अभी अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहता, क्योंकि मैं उसकी शादी पर रुपया प्राप्त करना चाहता हूँ। लेकिन मैं तुम्हें साफ़ बता देना चाहता हूँ कि अगर वह मुझे इसी तरह तंग करता रहा तो उसे भी अपने पिता का रास्ता देखना होगा। मैंने हुक्म दे दिया है कि उसे प्रार्थना-गृह के ऊपर वाले कमरे में पहुँचा दिया जाए। अगर तुम उचित और विश्वसनीय भाव से एक अच्छी शपथ लेकर अपनी निर्दोषिता सिद्ध कर सकते हो तो छोकरे का मस्तिष्क ठीक हो जायगा और वह मेरे साथ शान्ति से रहना शुरू कर देगा, लेकिन अगर तुमने शपथ ग्रहण करते हुए थोड़ी भी हिचकिचाहट या घबराहट दिखाई और हकलाये, तो उसे तुम पर विश्वास नहीं होगा और धर्म की सौगंध,

वह मर जाएगा। तुम इस बात पर अच्छी तरह विचार कर लो।"

"प्रार्थना-गृह के ऊपर वाला कमरा!" पादरी ने जोर से साँस लिया।

"हाँ-हाँ वहीं, इसलिए अगर तुम उसे बचाना चाहो तो बचाओ, वरना मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, कि मुझे शान्ति में अकेला छोड़ दो। क्योंकि अगर मैं जल्दबाज़ आदमी होता तो, इस कायरता और मूर्खतापूर्ण कार्य के लिए अब तक अपनी तलवार तुम्हारे धड़ से पार उतार चुका होता। क्या तुमने निश्चय कर लिया, बताओ?"

"मैंने निश्चय कर लिया है," पादरी ने कहा, "स्वर्ग के देवता मुझे क्षमा करें, मैं एक अच्छे काम के लिए यह बुराई करूँगा, मैं लड़के के जीवन के लिए शपथ ग्रहण करूँगा!"

"यही बेहतर होगा" सर डेनियल ने कहा, "तब उसे जल्दी से बुला भेजो! तुम उससे अकेले भेंट करोगे, लेकिन फिर भी मैं तुम पर निगाह रखूँगा। मैं यहाँ पास वाले कमरे में रहूँगा।"

नाइट ने वह कमरे के समक्ष लटकने वाला चित्तीकृत भारी पर्दा उठाया। एक स्प्रिंग के घूमने की आवाज़ आई और फिर लकड़ी के जीने की चरर-मरर।

सर ओलीवर अकेले रह गए, वह बेबसी की नज़रों से ऊपर के पैनेल रूम की ओर देख रहे थे। भय और आतंक से उनका दिल दबा हुआ था।

"आह, अगर वह प्रार्थना-कक्ष में चला गया है तो मैं अपनी आत्मा की बलि देकर भी उसे बचाऊँगा।" पादरी ने कहा।

तीन मिनट बाद डिक हाल में आया। उसने देखा कि सर ओलीवर हाल में मेज़ के निकट खड़े हैं। उनके मुँह पर दृढ़ निश्चय है लेकिन उस पर पीलापन छाया हुआ है।

"रिचर्ड शैल्टन," उसने कहा, "तुमने मुझसे भी, शपथ खाकर, अपनी सचाई प्रकट करने की माँग की है। मैं इस माँग से असहमत हो सकता हूँ और इन्कार भी कर सकता हूँ। लेकिन मेरा हृदय पिछले कुछ समय से तुम्हारे लिए अत्यन्त द्रवित हो उठा है और मैं तुम्हें किसी भी प्रकार संतुष्ट करने के लिए तैयार हूँ। मैं हालीवुड के सच्चे क्रास की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने तुम्हारे पिता का क़त्ल नहीं किया।"

"सर ओलीवर," डिक ने कहा, "जब पहिले हमने जॉन एमेण्ड-आल के वह

पत्र पढ़े तो मुझे इसका पूरा-पूरा विश्वास हो गया था, लेकिन मेरे केवल दो प्रश्नों का उत्तर देने का कष्ट कीजिए। आपने उन्हें क़त्ल नहीं किया, यह ठीक है, किन्तु क्या आपका किसी तरह उसमें हाथ भी नहीं था ?"

"नहीं, कोई नहीं," सर ओलीवर ने कहा। और साथ ही उसने अपना चेहरा भी बिचकाना शुरू कर दिया। उससे प्रकट होता था कि वह उसे कोई चेतावनी देना चाहते थे, लेकिन मुँह से एक भी शब्द निकालने का साहस उनमें नहीं था।

डिक आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगा। और उस ख़ाली हाल में अपने चारों ओर देखने लगा।

"आप चेहरा क्यों बना रहे हैं ?" डिक ने पूछा।

"क्यों, कैसे ?" पादरी ने जल्दी से अपने चेहरे की स्वाभाविक मुद्रा को वापस लाते हुए कहा, "मैं तो कुछ भी नहीं कर रहा हूँ। मुझे कष्ट है इसलिए मेरा चेहरा बिगड़ जाता है। मैं बीमार हूँ डिक, तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि अब मुझे जाने दो। मैं हालीवुड के सच्चे क्रास की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं क़त्ल अथवा किसी भी विश्वासघात के प्रति सर्वथा निर्दोष हूँ। तुम विश्वास रखो, मेरे अच्छे युवक, अच्छा अलविदा !"

और वह उस कमरे से असाधारण मुस्तैदी के साथ बाहर निकल गया।

डिक अपनी जगह जमा हुआ रह गया। उसकी आँखें कमरे में चारों ओर किसी की खोज में घूम रही थीं। उसके चेहरे पर आश्चर्य, संदेह, असम्भ्रम और प्रमोद की भावनाओं के मिश्रण से एक अच्छी-खासी तसवीर अंकित हो गई थी। शनैः-शनैः ज्योंही उसका मस्तिष्क साफ़ हुआ, उसमें संदेह फिर जड़ जमाकर बैठ गया। और उसे अत्यन्त भयानक स्थिति की आशंका होने लगी थी। उसने अपना सिर उठाया और ज्यों ही उसने ऐसा किया वह एकदम हक्का-बक्का रह गया। दीवार पर बहुत ऊँचाई पर बने चित्रों में एक तसवीर किसी वहशी शिकारी की थी। एक हाथ से वह अपने मुँह में बिगुल थामे हुआ था और दूसरे हाथ से एक जबर्दस्त भाला घुमा रहा था। उसका चेहरा काला था। एक अफ्रीकन को उसके साथ में चित्रित किया गया था।

जिस वस्तु को देखकर डिक भौंचक्का रह गया, वह यही थी कि हाल की खिड़कियों से सूर्य हट चुका था और आतिशदान में आग जलनी शुरू हो गई थी और छत तथा दीवार पर लटकने वाली वस्तुओं पर एक चमक पड़ रही थी।

इस प्रकाश में दीवार पर लगे शिकारी की आँख ने उसकी ओर पलक मारी और आँख की सफेद पुतली उसमें से चमकी।

उसने आँख पर घूरना जारी रखा। कमरे का प्रकाश उस पर मोती पर पड़ते हुए प्रकाश की भाँति चमक रहा था। उसमें तरलता थी, उसमें जीवन था। एक सैकिण्ड के बाद आँख ने एक झपकी ली और इसके बाद वह ग़ायब हो गई।

इस अज्ञात दर्शन में कोई भ्रान्ति हो ही नहीं सकती थी। जो आँख चित्रों के पीछे रहकर उस सूराख में से झाँक रही थी, वह जा चुकी थी। प्रतिबिम्बित होने वाली वस्तु पर अब प्रकाश पड़ना नितान्त बंद हो चुका था।

उसी समय डिक को अपनी स्थिति की भयावहता का भान हुआ। हैच की चेतावनी, पादरी की खामोश चेतावनी और यह आँख जो उस पर चौकसी करती रही थी, एक-एक करके उसके मस्तिष्क में दौड़ने लगी थीं। उसने देखा कि वह कसौटी पर कसा जा चुका है। उसके मस्तिष्क में संदेह फिर पूरी तरह से जग गया था और फिर एक चमत्कार की तरह उस पर यह प्रकट हो गया कि संदेह समाप्त हो गया है।

"अगर मैं इस घर से निकलकर भाग नहीं सकता," उसने कहा, "तो मैं बस मरा ही अपने को समझ लूँ। और यह बेचारा मैत्थम जिसे मैंने यहाँ पर ला पटका है, वह तो एक भीषण जाल में फँस गया है।"

वह यह सोच-विचार कर ही रहा था कि तत्काल किसी ने आकर कहा कि वह अपने अस्त्र-शस्त्र और वस्त्र इत्यादि दूसरे कमरे में ले चले।

"दूसरा कमरा?" उसने पूछा, "आखिर किसलिए, किधर है कमरा?"

"वह प्रार्थना-गृह के ऊपर का कमरा," संवादवाहक ने कहा।

"यह काफ़ी दिन से बिना प्रयोग में आया हुआ पड़ा है।" डिक ने विचार करते हुए कहा, "न जाने वह किस प्रकार का कमरा होगा?"

"नहीं, वह बहादुर लोगों का कमरा है," उस आदमी ने उत्तर दिया, "लेकिन फिर भी," उसने कहा, "लोग कहते हैं कि उसमें भूत-प्रेत लगते हैं।"

"भूत-प्रेत?" डिक ने भय से सर्द होते हुए कहा, "मैंने तो आजतक कभी भी उसकी चर्चा नहीं सुनी। आखिर उसमें कौन आता है?"

उस संवादवाहक ने अपने आसपास देखा और तब फुसफुसाते हुए कहा, "मैं

सेण्ट जॉन की सौगन्ध से कहता हूँ कि रात्रि को उन्होंने एक आदमी को वहाँ सुलाया और अगले सुबह वह समाप्त हो गया। शैतान ने उसे उठा लिया था। लोग कहते हैं कि गई रात उसने पी भी अधिक ली थी।"

अपने मन में अनेक दुश्चिन्ताओं में उलझा हुआ वह उस आदमी के पीछे चलने लगा।

१०

दुर्ग के ऊपर के बने मोर्चों से अब आगे कुछ और देखा नहीं जा सकता था। सूर्य पश्चिम की यात्रा पर आगे बढ़ गया था और आख़िर में वह नीचे उतर गया था, लेकिन क्षितिज पर सतर्कतापूर्वक पहरा देने वाले सन्तरियों की दृष्टि के सामने कोई भी वस्तु ऊपर उठती दिखाई नहीं दी।

जिस समय रात्रि का अन्धकार पूरी तरह घिर आया, थ्रोगमोर्टन को ऐसे कमरे में ले जाया गया, जो खाई की बग़ल में बना हुआ था। वहाँ से बड़ी सतर्कता के साथ उसे नीचे उतारा गया। थोड़ी देर तक उसके पानी में हाथ-पैर मारने की आवाज़ आई और फिर वह भी समाप्त हो गई। और तब एक काली आकृति अन्धकार में दिखाई पड़ी जो कि पनैली घास को पकड़कर कगार पर चढ़ रही थी और बाद में घास में पेट के बल रेंग रही थी। लगभग आधे घण्टे तक हैच और सर डेनियल चुपचाप खड़े देखते रहे। बाद में उन्हें निश्चय हो गया कि उनका हलकारा सुरक्षित रूप से आगे बढ़ गया है।

सर डेनियल की भौंह अपेक्षाकृत स्पष्ट हो गईं, वह हैच की ओर आमुख हुआ।

"बैनेट" उसने कहा, "यह जॉन एमेण्ड-आल भी आख़िर आदमी ही है न, तुम देखते तो हो। वह सो रहा है। अब उसका अन्त निकट आ गया है।"

दोपहर के बाद और शाम तक डिक को बराबर इधर से उधर स्थानांतरित होने की आज्ञाएँ मिलती रहीं। वह एक आज्ञा के बाद दूसरी आज्ञा का पालन कर रहा था। इसके बाद तो वह आज्ञाओं की संख्या और तेज़ी को देखकर एकदम भौंचक रह गया था। इस अवधि में वह सर ओलीवर और मैचम

को बिल्कुल ही न देख सका था। तथापि वह दोनों ही निरन्तर उसके मस्तिष्क में घूमते रहे थे। उस समय उसके मन में केवल एक ही विचार था कि किस प्रकार वह टन्सटाल मोट हाउस से निकलकर भाग जाए। लेकिन फिर भी उसकी अभिलाषा यह अवश्य थी कि काश जाने से पहिले वह उन दोनों से कुछ शब्दों का आदान-प्रदान करने की सुविधा पा सकता !

अन्त में वह एक लैम्प हाथ में लेकर अपने नए निवासस्थान की ओर चल खड़ा हुआ। यह स्थान विशाल, नीचा और अन्धकार युक्त था। खिड़की खाई की ओर खुलती थी और हालाँकि वह ऊँचे पर थी किन्तु उसमें बाधा के रूप में बहुत कुछ अटकाया हुआ था। उसमें एक बहुत बढ़िया पलङ्ग पड़ा हुआ था। उस पर बढ़िया और बेशकीमती पलङ्गपोश फैला हुआ था। दीवारों में स्थान-स्थान पर कप-बोर्ड बने हुए थे, जिनमें अच्छी प्रकार कुलफ पड़े हुए थे। और वह सब पर्दों के पीछे छिपे हुए थे। डिक इधर से उधर चक्कर लगा रहा था और उन पर्दों को हटाता हुआ, कप-बोर्डों को ठकठकाता हुआ और कुलफों को खोलने की व्यर्थ चेष्टा करता हुआ घूम रहा था। उसे यह विश्वास हो गया था कि दरवाजे मज़बूत और अच्छी तरह से बन्द किए हुए हैं। तब उसने एक ब्रैकेट पर लैम्प रख दिया और इधर-उधर देखने लगा।

आख़िर किस उद्देश्य से वह कमरा उसे दिया गया है। यह कमरा उसके अपने कमरे से बड़ा और अधिक सुन्दर था। उसमें कोई जाल बिछा हुआ है। क्या उसमें कोई गुप्त द्वार है, क्या वाकई उसमें भूत-पिशाचों का अड्डा है ? यह सब कुछ सोच-विचार करते हुए उसका रक्त उसकी नाड़ियों में जमता जा रहा था।

ठीक उसके सम्मुख एक भारी क़दम ऊपर बढ़ता हुआ सुन पड़ा। उसने अपने शस्त्र तैयार कर लिए और दरवाज़े के पीछे मोर्चा जमाकर खड़ा हो गया। अगर उसके जीवन पर ही वह कुत्सित प्रयत्न किया जाना है तो करने वाले के अपने जीवन के लिए भी वह महँगा बैठेगा।

ऊपर युद्ध-मोर्चे पर पैरों की आहट, आदमियों की चहल-पहल और आदेशों के जारी किए जाने से यह स्पष्ट था कि पहरा बदला जा रहा है।

और तभी दरवाज़े पर एक खरोंच-सी लगी। तब वह आवाज़ ऊँची उठती गई और तब एक फुसफुसाहट भी आई।

"डिक, डिक, मैं हूँ, मैं !"

डिक दौड़कर दरवाज़े पर गया, चिटखनी खोली और मैंचम को अन्दर प्रविष्ट करा लिया। वह बहुत पीला-सा पड़ रहा था, उसके एक हाथ में जला हुआ लैम्प था और दूसरे हाथ में खुला हुआ खंजर था।

"फौरन दरवाज़ा बन्द कर दो," वह फुसफुसाया, "जल्दी से डिक! यह घर भेदियों से भरा हुआ है। मैं बराण्डे में कुछ लोगों के क़दम अपना पीछा करते हुए अब भी सुन रहा हूँ। चित्रयुक्त पर्दों के पीछे भी मुझे तो वे छिपे नज़र आते हैं।"

"तुम धैर्य रखो," डिक ने उत्तर दिया, "द्वार अच्छी तरह बन्द है और इस समय के लिए हम सुरक्षित हैं, अगर इन दीवारों के पीछे भी कहीं कोई सुरक्षा किसी प्रकार सम्भव हो सकती है। लेकिन मेरा हृदय तुम्हें देखकर उत्साह से भर उठा है। धर्म की सौगन्ध, मैं तो सोचता था तुम कूच कर चुके। आखिर तुम किधर रहे ?"

"बस अब उस पर कोई शिकवा नहीं", उसने कहा, "अब जब कि हम मिल चुके हैं। लेकिन डिक क्या तुम्हारी आँखें खुली हुई हैं ? क्या किसी ने तुमसे कल की घटनाओं का वर्णन किया है ?"

"नहीं किसी ने कुछ भी नहीं कहा," उसने कहा, "क्यों क्या इरादा है उनका ?"

"कल या आज रात को, कौन कह सकता है", मैंचम ने कहा, "लेकिन आज या कल डिक, वह तुम्हारे जीवन पर प्रहार करने वाले हैं। मेरे पास इसके प्रमाण मौजूद हैं। वह आपस में कानाफूसी करते थे, या कह लो कि उन्होंने मुझे बताया ही।"

"हाँ", डिक ने कहा, "ऐसा है। मैंने भी यही अनुमान लगाया था।" और तब उसने दिन भर की कथा विस्तृत रूप से उसके सम्मुख वर्णन कर दी।

जिस समय यह कथा समाप्त हो गई तो डिक उठा और उसने इधर-उधर घूमकर पुनः उस विशाल कक्ष का निरीक्षण करना प्रारम्भ कर दिया।

"नहीं", उसने कहा, "जाहिर तौर पर तो कोई भी गुप्त द्वार किसी तरफ़ दिखाई नहीं देता, लेकिन फिर भी यह कठोर सत्य है कि कहीं न कहीं पर कोई द्वार है अवश्य ? डिक, मैं तुम्हारे साथ ही ठहरूँगा। अगर तुम्हें मृत्यु का ही

सामना करना है, तो मैं भी तुम्हारे साथ ही मृत्यु का आलिंगन करूँगा। मैं तुम्हारी सहायता भी कर सकता हूँ; देखो, मैं एक खञ्जर भी चुरा लाया हूँ। और अगर तुम्हें कोई गुप्त द्वार मिल जाए और उसे खोल सको जिससे हम नीचे उतर सकें, तो मैं तुम्हारे साथ भागने की जोखिम भी उठाने के लिए तैयार हूँ।"

"जैक", डिक ने कहा, "मैं धर्म की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि तुम बहुत ही दिव्य आत्मा हो और सच्चे और समस्त इंगलैण्ड भर में बहादुर। मुझे अपना हाथ दो जैक ?"

और उसने खामोशी के साथ दूसरे का हाथ अपनी जकड़ में बाँध लिया।

"मैं तुम्हें बताऊँगा," उसने अपनी बात फिर आगे चलाई। "मैं उस स्थान को जानता हूँ, जहाँ से वह संवादवाहक उतरा था। शायद रस्सी वहाँ पर अब भी उसी कमरे में पड़ी हुई हो। कुछ आशा की झलक मुझे अब भी दिखाई देती है।"

"हिश्", मैचम ने कहा।

दोनों लड़के कान लगाकर सुनने लगे। नीचे के फर्श पर कुछ आवाज़ पैदा हुई। वह आवाज़ रुक गई और फ़िर दोबारा आने लगी।

"कोई नीचे के कमरे में चल रहा है ?" मैचम फुसफुसाया।

"नहीं," डिक ने कहा, "नीचे कोई कमरा नहीं, नीचे तो केवल प्रार्थना-गृह है। यह तो मेरा क़ातिल है जो नीचे के बराण्डे में ऊपर आने के लिए घूम रहा है। अच्छा है, उसे आने दो। मामला इतना सरल नहीं है।" और उसने अपने दाँत किटकिटाए।

"फौरन रोशनी बुझा दो," दूसरे ने कहा, "हो सकता है कि वह अपने निर्दिष्ट उद्देश्य में सफल न हो।"

उन दोनों ने लैम्प बुझा दिए और साँस रोककर पड़ रहे। नीचे कोई बहुत ही फूँक-फूँक कर क़दम रख रहा था, किन्तु रात्रि के अंधकार में वह फिर भी स्पष्टत: सुन पड़ रहे थे। कई बार वह बढ़ आये और पीछे लौट गये। और तब अन्त में किसी ताले में चाबी के फँसने की आवाज़ आई और बाद में एक भयानक खामोशी।

तभी क़दमों के बढ़ने की फिर आवाज़ आई और दूरस्थ एक कमरे के तख्तों की दराजों से रोशनी की हलकी-सी चिनक बाहर छनती दिखाई पड़ी। वह

रोशनी घनी हो गई—एक गुप्त द्वार खोल लिया गया था और वह एक मज़बूत हाथ द्वारा उस द्वार को हटाया जाते देख रहे थे। डिक ने अपनी कमान चढ़ा ली थी और उस सिर के सामने आने की प्रतीक्षा करने लगा था।

लेकिन उसी समय एक विघ्न उपस्थित हो गया। मोट हाउस के एक दूर-वर्ती कोने से कुछ आवाजें आनी शुरू हो गई थीं। पहिले एक आवाज़ और फिर अनेक आवाज़ें और वह सभी एक नाम लेकर पुकार रही थीं। इन आवाज़ों ने क़ातिल को बौखला दिया था। वह गुप्त द्वार चुपचाप अपने स्थान पर नीचे खिसका दिया गया। और वह क़दम तेज़ी के साथ पीछे लौट गए। एक बार फिर नीचे के फर्श पर पहुंच गए और फिर अन्तर्धान हो गए।

इन कुछ क्षणों के लिए आराम मिला था; डिक ने गहरी साँस ली। और तब उसने उस आवाज की ओर ध्यान दिया जो कि घटने की बजाय बढ़ती ही जा रही थी और इसी कारण उस पूर्व आयोजित क़त्ल में विघ्न पड़ गया था। मोट हाउस में हर ओर इधर से उधर दौड़ने की आवाज आ रही थी। दरवाज़े खोले जा रहे थे और धड़धड़ाकर बंद किए जा रहे थे। उस शोरगुल में, सर डेनियल की आवाज़ अब भी सबसे ऊँची उठी हुई थी, और वह 'जोना' 'जोना' कहकर पुकार रहे थे।

"जोना ?" डिक ने दोहराया, "यह कौन आत्मा हो सकती है ? इस मकान में तो कोई भी जोना नहीं है और न कभी रही ही है। इस आवाज का मत-लब क्या है ?"

मैचम बिल्कुल चुप था। वह कुछ दूर हटकर बैठ गया था। केवल कुछ धुँधले तारों की रोशनी कमरे में पड़ती थी, किन्तु जिस स्थान पर दोनों लड़के छिपे बैठे थे, वहाँ बिल्कुल अंधकार था।

"जैक", डिक ने कहा, "मुझे पता नहीं कि तुम दिन भर कहाँ रहे हो। क्या तुमने इस जोना को देखा है ?"

"नहीं", मैचम ने उत्तर दिया, "मैंने उसे बिल्कुल नहीं देखा।"

"किसी से उसके बारे में कुछ बातचीत न सुनी?" डिक ने बात आगे बढ़ाई।

वह क़दम उनके निकट ही बढ़ते आ रहे थे। नीचे सहन में खड़े हुए सर डेनियल 'जोना' का नाम लेकर गर्ज रहे थे।

"क्या तुमने उसके बारे में कुछ सुना है ?" डिक ने दोहराया।

"हाँ, मैंने उसके बारे में सुना है।" मैचम ने कहा।

"लेकिन तुम्हारी आवाज़ लरज क्यों रही है? तुम्हें क्या कष्ट है?" डिक ने कहा, "ये जोना तो हमारे लिए एक बहुत बड़ा सौभाग्य बनकर आई है। इससे उनका ध्यान हम लोगों की ओर से हट जाएगा।"

"डिक", मैचम चिल्लाया, "मैं मारा गया। हम दोनों मारे गए। अगर अभी समय है तो हमें भाग चलना चाहिए। वह शान्ति से तब तक नहीं बैठ सकते जब तक मुझे खोज नहीं निकालेंगे। या देखो, मुझे जाने दो, जब वह *मुझे पकड़ लें तो तुम भाग जाना। मुझे जाने दो डिक, मैं तुमसे प्रार्थना करती* हूँ, मुझे जाने दो।"

वह चिटखनी को खोलने की चेष्टा कर रही थी, जब डिक के मस्तिष्क में सारा दृश्य स्पष्ट हो गया।

"धर्म की सौगन्ध", डिक चिल्लाया, "तुम जैक नहीं हो। तुम ही जोना सैडले हो। तुम ही वह लड़की हो, जो मुझसे विवाह करने के लिए तैयार नहीं है।"

लड़की रुक गई और शान्त और निश्चल होकर खड़ी रही। डिक भी कुछ समय के लिए नीरव हो गया, लेकिन वह तभी बोला "जोना, तुमने मेरा जीवन बचाया है और मैंने तुम्हारा। हमने रक्त बहते देखा है, और हम लोग मित्र और शत्रु दोनों रह चुके हैं। मैंने तुम्हें पीटने के लिए अपनी पेटी भी उठाई थी। उस समय तुम्हें एक लड़का ही समझता था। अब मेरे ऊपर मृत्यु मँडरा रही है और मेरा समय समाप्त हो चुका है। मरने से पहिले मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूँ कि तुम आज के इंगलैंड की सर्वश्रेष्ठ वीरांगना हो। और अगर मैं जीवित रह सकता तो तुमसे ही शादी करता। मैं जिन्दा रहूँ या मर जाऊँ लेकिन मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

उसने कोई भी उत्तर नहीं दिया।

"आओ", डिक ने कहा, "मुझे जवाब दो जैक! एक अच्छी लड़की की तरह मुझे कहो, 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।'"

"तो डिक", उसने कहा, "फिर मैं यहाँ और किसलिए हूँ।"

"जोना, मेरी बात सुनो", डिक ने कहा "अगर हम बचकर भाग निकलने में सफल हो गए तो हम शादी कर लेंगे। अगर हमें मरना ही है तो हम

मर जाएँगे। इन झंझटों का कोई अन्त नहीं है। लेकिन मेरे इस कमरे का तुम्हें पता कैसे चला ?"

"मैंने श्रीमती हैच से पूछा था," लड़की ने उत्तर दिया।

"तब तो समझो कि वह नहीं बताएगी", डिक ने कहा, "वह औरत बहुत पक्की है। अभी हमारे सामने समय है।"

और तभी जैसे कि उसके शब्दों का प्रतिवाद करने के लिए बराण्डे से चलकर कुछ क़दम उधर आए और द्वार पर ज़ोर-ज़ोर से एक घूँसा बजने लगा।

"सुनो", आवाज़ आई, "खोलो मास्टर डिक, खोलो !"

डिक न हिला-डुला और न उत्तर दिया।

"बस अब मामला खत्म हुआ।" लड़की ने कहा और उसने डिक के गले में बाहें डाल दीं।

एक के बाद दूसरा आदमी उधर आने लगा और दरवाज़े पर एक अच्छी-खासी टुकड़ी जमा हो गई। सर डेनियल फिर स्वयं उधर आए। उनके आते ही दूसरी आवाज़ें बन्द हो गईं।

"डिक", नाइट चिल्लाया, "गधे मत बनो। इतने शोर को सुनकर 'सात सोने वाले' भी जाग उठे होते। हमें मालूम है लड़की तुम्हारे पास है। दरवाज़ा खोल क्यों नहीं देते ?"

डिक फिर भी चुपचाप था।

"दरवाज़ा गिरा दो !" सर डेनियल ने कहा और तत्काल उनके अनुगामी उस द्वार पर टूट पड़े। द्वार हालाँकि पुख्ता था और चिटखनी मज़बूत लगी हुई थी, लेकिन वह शीघ्र ही गिरने वाला था, पर एक बार सौभाग्य ने फिर साथ दिया। इन प्रहारों के गम्भीर घोष से ऊपर उठकर एक सन्तरी की आवाज़ आई। इसके बाद फिर एक आवाज़ आई। इन आवाज़ों के प्रत्युत्तर में जंगल में से भी आवाज़ें आईं। कुछ समय के लिए तो लोगों में आतंक छा गया कि जंगल की ओर से मोट हाउस पर आक्रमण कर दिया गया। सर डेनियल और उनके आदमी जो कि डिक के कमरे पर टूट पड़े थे, अब वापस हट गए थे।

"अब हम बच गए", डिक ने कहा।

उसने वह पुराना और भारी पलंग कसकर पकड़ लिया और उसे हिलाने

की कोशिश करने लगा लेकिन पलंग ने बिल्कुल भी जुम्बिश न खाई।

"मेरी मदद करो जैक! अपनी ज़िन्दगी के लिए मुझे मजबूती के साथ सहयोग दो।" वह बोला।

उन दोनों ने मिलकर उस विशाल काष्ठ दैत्य को हटाया और कमरे के द्वार पर इधर से उधर तक फैला दिया।

"तुम मामले को और भी उलझा रहे हो।" जोना ने दुखी स्वर में कहा, "तब वह गुप्त द्वार से प्रवेश करेगा।"

"नहीं", डिक ने उत्तर दिया "वह अपना रहस्य इतने अधिक लोगों के सामने प्रकट नहीं कर सकता। बल्कि हम लोग उस गुप्त द्वार से ही भागेंगे। देखो, आक्रमण समाप्त हो गया। लगता है आक्रमण हुआ ही नहीं था।"

वास्तव में आक्रमण इत्यादि कुछ हुआ ही नहीं था। राईमिन्घम की पराजय से बचकर लौटकर आने वाले कुछ लोगों ने आकर सर डेनियल के काम में विघ्न डाल दिया था। वह लोग अंधकार में भागकर आए और बड़े द्वार से उन्हें दाखिल कराया गया था। और अब घोड़ों की टापों के मध्य और अस्त्र-शस्त्रों की झंकार करते हुए वह महल में उतर रहे थे।

"वह अब गुप्त द्वार की ओर कदापि नहीं जा सकता!" डिक ने कहा।

उन्होंने एक लैम्प जला लिया और वह कमरे के एक कोने में आकर देखने लगे। वह खुली दरार, जिसके मध्य से रोशनी आ रही थी, अब भी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। अपने हथियारों में से तलवार निकालकर उसने उस दरार में घुसेड़ दिया और एक कोने पर जोर से बल दिया। वह गुप्त द्वार कुछ हिला और थोड़ी-सी दरार खुल गई और अन्त में वह चौपट खुल गया। अपने हाथों से पकड़कर उन तरुणों ने उसे पीछे ढकेल दिया। उससे उन्हें कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरती दिखाई दीं। नीचे जाकर उन्हें एक लैम्प जलता दिखाई दिया जिसे कि उस सम्भावित क़ातिल ने जलता हुआ ही छोड़ दिया था।

"अब जाकर लैम्प को उठा लो। मैं अभी इस गुप्त द्वार को गिराकर आता हूँ।" डिक ने कहा।

इस प्रकार वह एक के बाद दूसरा नीचे उतर गए। डिक ने लैम्प की बत्ती कुछ धीमी कर दी। दरवाज़े के ऊपर प्रहार होने फिर से आरम्भ हो गए थे।

११

वह रास्ता जिसमें इस समय डिक और जोना ने प्रवेश कर लिया था, तंग, गन्दा और छोटा था। उसके दूसरी सीमा पर एक दरवाजा था। यह दरवाज़ा कुछ-कुछ खुला हुआ था। यह वही द्वार था जिसके खोले जाने की आवाज़ उन्होंने कुछ देर पहले सुनी थी। छत पर से बड़े-बड़े जाले लटके हुए थे, और फ़र्श इतना पोला था कि हलके से हलका क़दम पड़ने से भी आवाज पैदा होती थी।

इस दरवाज़े से आगे एक वृक्ष की दो शाखें समकोण बनाती हुई खड़ी थीं। डिक ने उसमें से एक को अपना दृष्टि-बिन्दु बना लिया और उसी के सहारे वह जोड़ी उस रास्ते में खटखट करते हुए आगे बढ़ने लगी। वह वृत्ताकार छत लैम्प की रोशनी में व्हेल मछली की कमर के समान मालूम होती थी। जगह-जगह पर झाँकने के लिए सूराख बने हुए थे, जिनको कार्निसों के द्वारा छिपा दिया गया था। इन्हीं एक सूराखों में से डिक ने देखा कि नीचे सर डेनियल हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे हैं।

वे दोनों दूसरी ओर कुछ क़दम नीचे उतर गए। यह रास्ता आगे चलकर और भी तंग हो गया। रास्ते में कुछ दूर पर दीवार लकड़ी की बनी हुई थी। लोगों के बातचीत करने की आवाज़ और टिमटिमाती हुई रोशनी सूराखों से छनकर उधर आ रही थी। और कुछ और आगे चलने पर उन्हें आदमी की आँख के बराबर एक सूराख मिला। डिक ने इसके अन्दर से हाल में झाँका। और देखा कि लगभग आधी दर्जन आदमी जोरों के साथ शराब पी रहे हैं और

सूअर का सूखा गोश्त खा रहे हैं। ये लोग निश्चय ही रात गए बाहर से आए होंगे।

"यहाँ मुक्ति का कोई साधन नहीं है, हमें पीछे हट चलना चाहिए।" डिक फुसफुसाया।

"देखो तो वह रास्ता शायद और आगे जाता हो।" जोना ने कहा।

और वह स्वयं आगे हो गई। लेकिन रास्ता कुछ सीढ़ियाँ उतरने के बाद बिल्कुल समाप्त हो गया। अब यह बात साफ़ हो गई कि जब तक वे सैनिक उस कमरे में हैं, तब तक भाग निकलना नितान्त असम्भव है।

पूरी तेज़ी के साथ वे दोनों उसी गुप्त मार्ग पर पीछे लौट आए और दूसरे रास्ते का अनुसन्धान करने लगे। वह रास्ता इतना कम चौड़ा था कि उसमें से एक आदमी भी मुश्किल से निकल सकता था। इस रास्ते में पड़कर वे इस तरह इधर-उधर भटकते रहे कि स्वयं डिक का दिशा-ज्ञान भी समाप्त हो गया।

अन्त में वह रास्ता बहुत ही सकरा हो गया और नीचे उतरने लगा। सीढ़ियाँ अब लगातार नीचे की ओर ही उतरती जाती थीं। दीवारें दोनों तरफ़ नमीदार और फिसलन युक्त होती जा रही थीं। ठीक सामने उन्हें चूहों की कुटर-कुटर और चूँ-चूँ सुनाई देने लगी।

"क्या हम इस समय ग़ार में आ गए हैं?" डिक ने कहा।

"लेकिन फिर भी तो कोई भाग निकलने का मार्ग नहीं है।" जोना ने कहा।

"लेकिन यहाँ कोई न कोई गुप्त द्वार होना अवश्य चाहिए", डिक ने उत्तर दिया।

तभी वह एक नुकीले सिरे पर आ पहुँचे। यह मार्ग कुछ सीढ़ियाँ पार करके समाप्त हो गया। उसके ऊपर की तरफ़ पत्थर का झण्डा था जो कि एक गुप्त मार्ग बनकर ही सामने खड़ा हुआ था।

डिक ने कहा, "यहाँ तो कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। ऐसा लगता है कि हमारे पैरों में बेड़ियाँ पड़ गई हैं और हम यहाँ एक कैदी के रूप में हैं। आओ जैक, हम कुछ देर बैठें और आपस में बातचीत कर लें। कुछ देर बाद हम लोग लौट चलेंगे। हो सकता है कि पहरेदार अपने-अपने स्थानों पर चले जाएँ और हम लोगों को अपने स्थानों पर जाने की सुविधा मिल जाए। लेकिन मेरी

समझ में अब यही आती है कि अब सब समाप्त हुआ !"

"डिक," वह बोली, "मुझे अफ़सोस है कि उस दिन मैं तुम्हारे सामने आई। मैं कितनी अभागी और अकृतज्ञ लड़की हूँ। आज मैंने तुम्हें इस स्थिति में ला पटका है।"

"फिर क्या बात है," डिक ने कहा, "यही सब हमारे भाग्य में लिखा था। जो लिखा होता है वह एक न एक दिन अवश्य ही घटित होता है। लेकिन मुझे इतना तो बताओ कि तुम हो कौन और सर डेनियल के हाथों में किस तरह फँस गई; और चाहे तुम्हारे कारण हो या मेरे, लेकिन अब इस अन्त के लिए दुःखी होने से भी क्या लाभ है?"

"मैं भी तुम्हारी ही तरह एक अनाथ हूँ, माँ और बाप दोनों का साया मेरे सिर पर से भी तुम्हारी ही तरह से उठ चुका है," जोना ने कहा, "और मेरा दुर्भाग्य—और मेरे साथ तुम्हारा दुर्भाग्य भी—यह है कि मेरा विवाह एक बहुत बहुमूल्य सौदा बन चुका है। लार्ड फॉक्सम मेरे संरक्षक थे। लगता है कि सर डेनियल ने मेरा विवाह करने का अधिकार एक बहुत बड़ी कीमत देकर ख़रीद लिया है और मैं अब दो बड़े और शक्तिशाली आदमियों के बीच फँस गई हूँ। यह तै नहीं हो पाता है कि कौन मेरी शादी करे। इसके बाद दुनिया बदली, दूसरा चान्सलर नियुक्त हुआ और सर डेनियल ने पैसा देकर लार्ड फॉक्सम के हक़ खुद हड़प लिए। उसने शादी करने का अधिकार नए चान्सलर से दोबारा खरीद लिया। इसके बाद दुनिया फिर बदली और अबकी बार लार्ड फॉक्सम ने सर डेनियल के देखते-देखते यह विवाह फिर ख़रीद लिया। तब से आज तक इन दोनों के बीच यही संघर्ष चल रहा है, लेकिन मैं तभी से लार्ड फॉक्सम के ही संरक्षण में थी और वे मेरे प्रति सदैव ही कृपालु रहे। और आख़िरकार मेरा विवाह तो हो जाना ही था। या तुम चाहो तो कह सकते हो कि मैं बेच दी जाती। लार्ड फॉक्सम ने मेरा मूल्य पाँच सौ पौण्ड रखा था। मेरा विवाह करने के लिए हेमले को चुन लिया गया था। और अगर मैं वहीं रही होती तो कल हेमले से मेरी सगाई भी हो जाती। अगर मैं सर डेनियल के हाथों में न पड़ती तो मेरी शादी भी हो ही जाती और मैं अपने डिक को कभी न देख सकती।"

भावुक होकर उसने डिक का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़ी कोमलता से उस पर एक चुम्बन अंकित कर दिया। डिक ने भी उसके हाथ को

अपने हाथ में लेकर चूम लिया।

"एक दिन सर डेनियल ने मुझे बाग़ में पकड़ लिया," जोना कहती गई, "और मुझे पुरुषों की पोशाक में रखना शुरू कर दिया। स्त्रियों के लिए मर्दों की पोशाक पहिनना कितना अशोभन है और ये कपड़े फिर मुझे अच्छे भी तो नहीं लगते। सर डेनियल मुझे घोड़े पर बैठाकर कैटले ले आए थे। तुमने सुना होगा कि तुमसे ही मेरी शादी होने की चर्चा हो रही थी और देखो, मैंने अपने दिल में यह निश्चय कर लिया था कि मैं सर डेनियल की आशाओं पर पानी फेरकर रहूँगी और हेमले से ही शादी करूँगी।"

"ओह, तो तुम हेमले से प्रेम करती हो ?" डिक ने कहा।

"नहीं," जोना ने उत्तर दिया, "मैं उससे प्रेम नहीं करती। मैं तो केवल सर डेनियल से नफ़रत करती हूँ और तब डिक, तुमने मुझे सहायता दी; तुम कितने निर्भीक और बहादुर हो। मेरा हृदय तुम्हारी ओर पहिले आकर्षित हो गया था। और आज अगर किसी प्रकार भी यह सम्भव हो सके, तो मैं तुमसे अपनी सम्पूर्ण हार्दिकता और निष्ठा के साथ विवाह करूँगी। और अगर भाग्य ने हमें एक दूसरे से अलग भी कर दिया तो भी जीवनभर तुम्हें मैं प्यार करती रहूँगी। मेरा दिल अपनी अन्तिम धड़कन तक तुम्हारे प्रति वफ़ादार रहेगा।"

"और मैं," डिक ने कहा, "आज तक किसी भी औरत की ओर लेशमात्र भी आकर्षित नहीं हुआ; मैं तुम्हारी ओर उसी समय आकर्षित हो गया था जबकि तुम लड़के के ही वेश में थीं। मुझे तुम पर बड़ी दया आती थी, मैं नहीं समझता कि ऐसा क्यों था ! मैं तुम्हें पेटी से मार सकता था, पर मेरे हाथों ने मेरा साथ नहीं दिया। और जब जैक—मैं तुम्हें जैक ही कहूँगा—तुमने यह स्वीकार कर लिया कि तुम एक लड़की हो, तो मैंने निश्चय कर लिया था, कि मेरे लिए केवल तुम ही हो जिसे मैं अपनी बना सकता हूँ।"

तब सहसा उसने बातचीत का सिलसिला तोड़ते हुए कहा, "सुनो, कोई आ रहा है।"

वास्तव में उस गुप्त मार्ग पर कोई भारी क़दम प्रतिध्वनित हो रहा था। चूहों की सेना इधर-उधर मार्ग की तलाश में दौड़ने लगी थी।

डिक अपनी स्थिति में सतर्क हो गया। उस सकरे मार्ग में होने के कारण उसकी स्थिति बहुत अच्छी पड़ती थी। वह दीवार की ओट लेकर निशाना

लगा सकता था। लेकिन रोशनी उसके बहुत निकट थी, इसलिए थोड़ा-सा आगे बढ़कर उसने लैम्प बुझा दिया और फिर अपनी जगह पर लौट आया।

उसी समय मार्ग के अन्तिम छोर पर बैनेट आता दिखाई दिया, वह अकेला दिखाई पड़ता था और अपने हाथ में एक जलती हुई मशाल लिए हुए था। इससे उस पर निशाना और भी अच्छा बैठता था।

"वहीं ठहर जाओ बैनेट," डिक चिल्लाया, "अगर तुमने अगला क़दम रखा तो तुम्हें अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।"

"तो तुम यहाँ छिपे हुए हो", हैच ने अंधेरे में आगे देखने की कोशिश करते हुए कहा, "मैं तुम्हें देख नहीं सकता हूँ। तुमने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया है डिक ! तुमने लैम्प भी बुझा दिया है। और हालाँकि यह सब तुमने मेरे अभागे शरीर को खत्म करने के लिए ही किया है, लेकिन मुझे प्रसन्नता है कि तुमने मेरी शिक्षा का सदुपयोग किया है। और तुम यहाँ किसलिए आए और मुझे क्यों खोजने आना पड़ा, क्या तुम्हें यह सब मालूम है ? लेकिन तुम मेरे जैसे पुराने दोस्त को क्यों मारने लगे हो। क्या वह युवती भी तुम्हारे साथ है ?"

"नहीं बैनेट, सवाल मुझे तुमसे पूछने हैं और तुम्हें उनका जवाब देना है।" डिक ने कहा, "मेरे प्राणों पर यह संकट क्यों रोप दिया गया है ? लोग छिप-छिपकर मेरे बिस्तर में मेरा कत्ल करने के लिए क्यों आते हैं ? मैं अपने ही शक्तिशाली संरक्षक के मकान में रहता हुआ भी अपनी जान बचाने के लिए क्यों भागता-फिरता हूँ। और उन मित्रों से दूर होकर, जिनमें रहकर मैं बड़ा हुआ और जिसे मैंने आज तक कोई हानि नहीं पहुँचाई।"

"मास्टर डिक, मास्टर डिक", बैनेट ने कहा, "मैंने तुमसे क्या कहा था ? तुम बहादुर हो लेकिन इतने नासमझ लड़के हो कि मैं उसका अनुमान भी नहीं लगा सकता।"

"मैं समझता हूँ कि तुम्हें सब कुछ मालूम है", डिक ने कहा, "मैं अब समाप्त हो चुका हूँ, इसमें संदेह नहीं। तब ठीक है, तुम सर डेनियल को यहाँ भेज दो और उससे कहो कि उससे बन सके तो यहाँ से मुझे निकालकर ले जाए !"

हैच कुछ समय के लिए चुप हो गया।

"अब तुम मेरी बात सुनो", उसने कहा, "मैं अब यहाँ से सर डेनियल के पास जा रहा हूँ और उन्हें बताना पड़ेगा कि तुम कहाँ हो। उन्होंने मुझे भेजा ही इसीलिए है। अगर तुम बेवक़ूफ़ नहीं हो तो समय रहते भाग जाओ लेकिन मेरे लौटकर आने से पहिले ही। अब मैं जाता हूँ।"

"भाग जाओ ?" डिक ने दोहराया, "मैं तो अब तक चला भी गया होता। और अब भी जाने का विचार रखता हूँ लेकिन मैं उस गुप्त द्वार को हिला नहीं सकता हूँ।"

"कोने में अपना हाथ लगाओ और देखो वहाँ क्या है ?" बैनेट ने कहा, "थ्रोगमोर्टन की रस्सी अब भी ब्राउन चैम्बर में रखी हुई है, भगवान् तुम्हारा मंगल करे।"

और हैच अपने क़दमों पर पीछे घूमकर उस घुमीरीदार मार्ग में से फिर अदृश्य हो गया। डिक तत्काल लैम्प की ओर बढ़ा और हैच द्वारा दिए गए उस संकेत के अनुसार काम करने लगा। उस गुप्त द्वार के एक बाजू में एक गहरा स्थान था। इस स्थल पर अपना हाथ अन्दर करके डिक ने देखा कि वहाँ एक लोहे की सलाख है, जिसको उसने ज़ोर लगाकर ऊपर की ओर सरकाया। एक घर्र-घर्र की-सी आवाज़ पैदा हुई और पत्थर का वह बड़ा टुकड़ा जड़ से हिलने लगा।

वे अब इस मार्ग की कारा से मुक्त हो गए थे। थोड़ी-सी ही ताक़त लगाने से वह गुप्त द्वार खुल गया। और वह एक सुरक्षित कमरे में आ गए। वह कमरा एक तरफ़ सहन की ओर खुलता था, जहाँ दो-एक आदमी देर से लौटे हुए घोड़ों की मालिश कर रहे थे। उनके पास हथियार नहीं थे। एक या दो मशाल मुश्किल से जल रही थीं और ये मशालें भी दीवार में जड़ी हुई लोहे की गोल छड़ों में धँसी हुई थीं। और सारे दृश्य में एक विचित्रता पैदा कर रही थीं।

१२

डिक ने अपना लैम्प बुझा दिया, ताकि उन लोगों का ध्यान उस ओर आकर्षित न हो और स्वयं बराण्डे के पास-पास ऊपर चढ़ने वाले जीने में होकर चढ़ने लगा। इस ब्राउन चैम्बर में एक रस्सी एक अत्यन्त पुराने और भारी पलङ्ग से बँधी हुई थी। यह रस्सी अभी तक खोली नहीं गई थी। डिक ने खिड़की को खोलकर वह रस्सी रात्रि के अन्धकार में नीचे सरकानी प्रारम्भ कर दी।

जोना पास खड़ी थी, लेकिन ज्योंही रस्सी खिसकने लगी और डिक उसे निरन्तर खिसकाता रहा तो वह एक भयानक भय से अभिभूत होने लगी।

"डिक" उसने कहा, "क्या उधर इतनी गहराई है ? मैं इसे पकड़कर उतर नहीं सकती। मैं निश्चय ही गिर पड़ूँगी अच्छे डिक !"

वह इस क्रिया के सम्पन्न होने के अत्यन्त नाजुक मौके पर बोली थी। डिक उसे सुनकर सहसा चौंक उठा और रस्सी का शेष हिस्सा एक साथ उसके हाथ से छूट गया और रस्सी—छपाक की आवाज़ पैदा करती हुई खाई में जा गिरी। उसी समय दुर्ग के ऊपर वाले मोर्चों पर सन्तरियों ने आवाज़ लगाई, "कौन जाता है ?"

"ओह, मारे गये !" डिक चिल्लाया, "जल्दी रस्सी पकड़ो, और नीचे उतरो।"

"मैं नहीं उतर सकती", उसने झिझकते हुए कहा।

"और अगर तुम नहीं, तो फिर मैं कैसे उतर सकता हूँ। तुम्हारे बिना मैं

खाई को किस तरह पार करना चाहूँगा ?" शैल्टन ने कहा, "क्या तुम मुझे छोड़ रही हो ?"

"डिक" उसने उसाँस ली, "मैं नहीं उतर सकती। मेरे शरीर में से शक्ति बिल्कुल समाप्त हो चुकी है।"

"धर्म की सौगन्ध !" वह चिल्लाया, "तब हम दोनों मारे गए।" वह अपने पैरों को बेचैनी से पटक रहा था। दूर कुछ क़दमों की आहट सुनकर वह द्वार बन्द करने के लिए लपका।

चिटखनी चढ़ाने से पहिले ही कुछ मज़बूत बाज़ू दरवाज़े को धक्का देने लगे थे। फाटकों को रोक रखने की चेष्टा को व्यर्थ समझकर उसने उसे छोड़ दिया और भागकर खिड़की की ओर चला गया। लड़की खिड़की के पास ही दीवार से सटी हुई गिरी पड़ी थी और इस समय वह अर्धचेतनावस्था में थी। उसने उसे उठाने की चेष्टा की लेकिन उसका शरीर बिल्कुल ढीला पड़ चुका था और वह किसी प्रकार की हरकत नहीं करता था।

उसी समय जिन आदमियों ने बलपूर्वक द्वार खोल लिया था, उन्होंने उसे दबोच लिया। पहिले को उसने घूँसा मारकर टट्टू बना दिया। उसे पिटता देख दूसरों में कुछ खलबली मच गई। इस अवसर से लाभ उठाकर वह खिड़की की ओर लपका और वहाँ से रस्सी पकड़कर नीचे खिसकने लगा।

रस्सी में गाँठें लगी हुई थीं। इसलिए नीचे उतरने में बहुत आसानी थी। लेकिन डिक के उतरने की तेज़ी इतनी भयानक थी और उस प्रकार की जिमनास्टिक का उसे इतना थोड़ा अनुभव था कि वह हवा में इस प्रकार झूल रहा था जैसे कि फाँसी की सूली पर लटक रहा हो। कभी उसका सिर और कभी उसके हाथ उस खुरदरी पथरीली दीवार से टकरा जाते और खरौंच खा जाते। हवा उसके कानों में गर्ज रही थी और वह अपने सिर पर और नीचे खाड़ी में प्रतिबिम्बित होते हुए तारक-मंडल को देख रहा था जो कि वृक्ष की शाख से झड़ी हुई पत्तियों के समान पानी में जोरों से हिल रहे थे। और तब उसका हाथ रस्सी से छूट गया और वह खाई के बर्फ़ीले पानी में गिरकर सिर तक डूब गया।

जब पुनः सतह पर आया तो रस्सी उसके हाथ में पड़ गई थी, जो कि उसके वज़न से मुक्त होकर इधर से उधर झूल रही थी। सिर के ऊपर एक

लाल प्रकाश-पुंज दीख रहा था और लगता था कि जलती हुई अँगीठियों और मशालों की रोशनी से मोर्चे की दीवारों पर अनेक लोग खड़े होकर उसकी तलाश कर रहे हैं। वह लोगों की आँखों को अपनी तलाश में इधर से उधर घूमते हुए देख रहा था, लेकिन वह इतना नीचे था कि रोशनी उस तक पहुँचती नहीं थी और उनकी दौड़-धूप व्यर्थ साबित हो रही थी।

उसने देखा कि रस्सी बहुत अधिक लम्बी है। और उसे पकड़कर वह खाई के दूसरी ओर पहुँचने के लिए संघर्ष करने लगा। वह अपना सिर अब भी पानी से ऊपर रखे हुए था। इस प्रकार वह लगभग आधे रास्ते से आगे आ गया था, दूसरा तट लगभग उसके हाथ में आ ही गया था कि रस्सी ने उसे अपने ही भार से पीछे खींचना आरम्भ कर दिया। उसने साहस करके रस्सी को छोड़ दिया और तट से झुकी हुई उस घास को पकड़ने के लिए लपका जिन्होंने गए दिन सर डेनियल के एलची को पार होने में सहायता दी थी। वह नीचे डूबा, फिर उबरा, दूसरी बार फिर नीचे गया और अब की बार उबरा तो एक टहनी उसकी पकड़ में आ गई। और विचार के समान गति से वह शाख पकड़कर वृक्ष पर चढ़ गया। उसका साँस धौंकनी की तरह चल रहा था। और उसे अपनी मुक्ति पर अब भी पूरा विश्वास नहीं हुआ था।

लेकिन इस सब आन्दोलन से पानी में छपाक की आवाज पैदा हुए बिना न रह सकती थी। इस आवाज से ऊपर मोर्चे वाले आदमियों को उसकी स्थिति का पता चल गया था। तीर और चीखुरनुमा हथियारों की इस प्रकार वर्षा हुई जैसे कि आकाश से ओलों की भीषण वर्षा हो रही हो। तभी अकस्मात् एक जलती हुई मशाल नीचे गिरी, जिसने दावानल की तरह सारे प्रदेश को आलोकित कर दिया लेकिन डिक के सौभाग्य से वह खाड़ी के किनारे पर इस प्रकार गिरी थी कि अगले ही क्षण पानी में गिर कर बुझ गई।

लेकिन उसने अपना काम तो कर दिया था। उन तीरंदाजों ने उस झाड़ी और उसके तने से चिपटे हुए डिक को देख लिया था और हालाँकि उसने वह स्थान छोड़कर तट से दूर भागना शुरू कर दिया था लेकिन फिर भी एक तीर उसके कन्धे में लगा था और दूसरा सिर को रगड़ता हुआ निकल गया था।

इन घावों के दर्द ने जैसे उसके पर लगा दिए हों। और जैसे ही वह सम-

तल भूमि पर आया, उसने बिना दिशा की सूझ-बूझ किए ही दौड़ना शुरू कर दिया।

कुछ दूर तक उन अस्त्रों ने उसका पीछा किया। परन्तु आखिरकार वह बन्द हो गए और जिस समय रुककर उसने पीछे देखा तो पाया कि वह मोट-हाउस से बहुत काफ़ी दूरी पर निकल आया है। दीवारों की बुर्जियों के आस-पास मशालें अब भी इधर-उधर हिलती दिखाई दे रही थीं।

वह एक वृक्ष के सहारे टिक गया। उसके शरीर से पानी और रक्त की धारा बह रही थी। उसके अनेक खराशें आई थीं, और घायल, एकाकी और निरस्त्र वह खड़ा था। लेकिन उस कठिन संघर्ष के बाद वह अपना जीवन बचाने में सफल हो गया था। और हालाँकि जोना सर डेनियल के हाथों में ही रह गई थी, किन्तु उसके न भाग सकने की स्थिति के लिए उसके मन में अपराध की भावना नहीं थी। न ही उसे यह आशंका थी कि लड़की के जीवन पर कोई भयानक संकट आ जाएगा। सर डेनियल बेरहम अवश्य था किन्तु एक जवान लड़की के प्रति वह इतना बेरहम नहीं हो सकता था। आखिर तो उससे भी शक्तिशाली लोग उसके संरक्षक थे जो उससे जवाब-तलबी कर सकते थे। लेकिन इसमें संदेह नहीं था कि अब वह अपने किसी मित्र से ही उसकी शादी करेगा और इस काम को जल्दी ही अंजाम देने की कोशिश करेगा।

"लेकिन देखा जाएगा," डिक सोचता रहा "उस समय तक मैं उस गद्दार को रसातल पहुँचा दूँगा। धर्म की सौगन्ध, अब मैं उसके प्रति किसी भी कृतज्ञता और दायित्व से बिल्कुल मुक्त हूँ और जिस समय युद्ध छिड़ जाता है तो सभी को अपने दिलों की हसरत निकालने की पूरी छुट्टी हो जाती है।"

लेकिन उसी समय उसे अपने शरीर में भयानक पीड़ा अनुभव हुई।

वन में कुछ दूर और आगे वह लड़खड़ाता हुआ बढ़ने लगा। लेकिन उसके शरीर में उठने वाले दर्द, रात्रि का घोर अंधकार, और उसके मस्तिष्क की भयानक बेचैनी और किंकर्तव्यविमूढ़ता ने उसे आगे बढ़ने में प्रायः असमर्थ कर दिया। नीचे की छोटी और घनी झाड़ियों ने हर क़दम पर उसके क़दमों को बाँधना शुरू कर दिया और वह एक वृक्ष के तने से लगकर बैठ गया।

जब वह अपनी मूर्च्छा अथवा नींद से जागा तो प्रातःकाल की रोशनी फूटनी आरम्भ हो गई थी। वृक्षों की शाखों में से एक ठिठुरा देने वाली हवा साँय-

साँय करके गुज़र रही थी। आँख खोलकर उसने देखा कि उससे लगभग सौ गज़ की दूरी पर कोई चीज़ वृक्ष पर लटकी हुई है। और वायु के वेग से इधर से उधर हिल रही है। सुबह की तेज़ी से बढ़ने वाली रोशनी और उसकी अपनी संज्ञा-चेतना के ठीक हो जाने के कारण उसने वह चीज़ फौरन पहिचान ली। एक आदमी की लाश उस ऊँचे सनोवर के वृक्ष की शाखा से लटकी हुई थी। उसका सिर आगे झुककर छाती पर लटक आया था और हवा के तेज झोंके से वह इधर से उधर घूम रहा था। और उसके हाथ-पैर किसी खिलौने के समान इधर-उधर उछल रहे थे, घुटनों पर।

डिक अपने हाथ टेककर उठा और वृक्ष की शाखा का सहारा लेता हुआ उस गम्भीर वस्तु तक पहुँचा।

वह शाखा पृथ्वी से लगभग बीस फीट की ऊँचाई पर थी और सूली लगाने वालों ने उसे इतना ऊँचा उठा दिया था कि उसके बूट डिक के सिर से भी थोड़े ऊपर ही झूल रहे थे। उसका कृत्रिम चेहरा उसके मुँह पर पड़ा हुआ था। उस आदमी को पहचानना कठिन हो गया था।

डिक ने अपने दाएँ और बाएँ देखा। आख़िरकार उसने पाया कि रस्सी का दूसरा हिस्सा सनोवर के वृक्ष के विशाल घेरे के नीचे उगी हुई एक कटीली झाड़ी की जड़ से बंधा हुआ था। इस झाड़ी पर फूल खिल रहे थे। हथियार के नाम पर युवक शैल्टन के पास केवल खुखरी ही रह गई थी। उसने खुखरी से उस रस्सी को काट डाला। रस्सी के कटते ही लाश भद्द से पृथ्वी पर आ गिरी।

डिक ने उसके मुँह पर से नकली चेहरा उठाकर देखा। वह थ्रोगमोर्टन ही था, सर डेनियल का एलची। वह सर डेनियल का संवाद लेकर बहुत अधिक आगे नहीं बढ़ सका था। एक काग़ज़ जो कि काले तीर वालों की दृष्टि से बच गया मालूम होता था, अब उसकी जाकेट से बाहर निकल आया था। डिक ने वह कागज़ निकाल लिया। यह वही पत्र था जो सर डेनियल ने लार्ड विन्स्लीडेल को लिखा था।

"चलो," उसने सोचा, "अगर दुनिया फिर से नया रंग बदलती है, तो मैं सर डेनियल को यह पत्र दिखाकर कुछ लज्जित कर सकूँगा और अगर सम्भव हो सका तो उसे नीचा भी दिखा सकूँगा।"

उसने वह काग़ज़ अपनी जेब में रख लिया। उसने मृतक के लिए प्रार्थना

की ओर जंगल के अन्दर फिर से बढ़ने लगा।

उसकी दुर्बलता और थकान बढ़ गई थी, उसके कान बज रहे थे और उसके क़दम लड़खड़ा रहे थे, और उसके शरीर से रक्त इतनी मात्रा में निकल चुका था कि कभी-कभी उसका मस्तिष्क भी बिल्कुल चेतनाहीन हो उठता था। उसने इस अनिश्चितावस्था में अपने सही रास्ते से बहुत-सी भूलें की थीं। आख़िरकार उसने बड़ी सड़क पकड़ ही ली थी। सड़क पर जब वह आया तो टन्सटाल ग्राम उससे बहुत अधिक दूर नहीं था।

एक आवाज़ ने उसे ठहर जाने का आदेश दिया।

"ठहरो ?" डिक ने भी दोहराया, "धर्म की सौगन्ध, मैं अब गिरने ही वाला हूँ।"

और उसने ज़मीन पर गिरते हुए अपने शब्दों को क्रिया रूप में सम्पन्न भी कर दिया।

दो आदमी पास वाली झाड़ी से निकलकर सामने आए। उनकी जर्सियाँ हरी थीं। उनमें प्रत्येक के पास एक लम्बी तीर-कमान, एक तरकश और एक छोटी तलवार थी।

"देखो तो लॉलेस !" उनमें से छोटे ने कहा, "यह तो युवक शैल्टन मालूम होता है।"

"हाँ, यह तो जॉन एमेण्ड-आल के लिए रोटी से भी अधिक महत्व की वस्तु होगी।" दूसरे ने उत्तर दिया, "मालूम पड़ता है वह अभी लड़ाई के मैदान से लौटा है, उसकी खोपड़ीमें ज़ख्म है, उससे न जाने कितना रक्त बह चुका होगा।"

"और यहाँ", ग्रीन शेव ने कहा, "यहाँ कन्धे में तो पूरा छेद ही हो गया है। ज़रा सोचो तो ऐसा किसने किया होगा, हममें से किसी ने ? अगर हममें से किसी ने किया है तो उसके लिए प्रार्थना करो, एलिस उसको मौत के घाट ही उतार-कर छोड़ेगा।"

"इसको उठा ले चलो" लॉलेस ने कहा, "उसे मेरी कमर पर लाद दो।"

डिक को जब उसने अपने कन्धे पर चढ़ा लिया और उसके हाथ अपनी गर्दन पर से मजबूती के साथ पकड़ लिए तो उस भूरे महन्त ने कहा,

"तुम यहाँ इस स्थल की रक्षा करो भाई ग्रीनशेव। मैं अकेला ही उसे ले जाऊँगा।"

इस प्रकार ग्रीनशेव अपनी झाड़ी में जाकर छिप गया और लॉलेस पहाड़ी पर से धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। डिक अभी तक मूर्च्छितावस्था में उसके कंधे पर जमा था और लॉलेस सीटी बजाता हुआ नीचे उतर रहा था।

जिस समय वह वन की सीमा से बाहर निकला तो सूरज काफ़ी ऊपर चढ़ आया था और इस पहाड़ी की विपरीत दिशा से दूसरी पहाड़ी पर टन्सटाल ग्राम साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा था। सब कुछ शान्त था लेकिन पुल के दोनों ओर के ज़बर्दस्त तीरंदाज़ों की आधी बीसी सड़क के अत्यन्त निकट मोर्चा जमाए हुए थी और जिस समय उन्होंने लॉलेस को अपने कन्धे पर किसी चीज़ को लाते हुए देखा तो उन्होंने अपने कमानों की प्रत्यंचा तत्काल चढ़ा ली।

"कौन जाता है?" टुकड़ी के नायक ने पूछा।

"विल लॉलेस, धर्म की सौगन्ध तुम मुझे उतनी ही अच्छी तरह जानते हो, जितनी अच्छी तरह अपने हाथ को।" लॉलेस ने तिरस्कारपूर्वक कहा।

"अपना अता-पता ठीक-ठीक बताओ लॉलेस," दूसरे ने पुकारा।

"देवता तुम्हें बुद्धि दे, तुम मूर्खों को," लॉलेस ने उत्तर दिया, "क्या मैंने तुम्हें ठीक-ठीक नहीं बताया है, लेकिन तुम तो सैनिकों के जीवन से खिलवाड़ करने के लिए पागल हो उठते हो; जब मैं ग्रीनवुड में हूँ तो मुझसे वाजिब तरीके से पेश आओ। और मेरा अता-पता ठीक-ठीक यह है कि मैं इस दो टके की सैनिकता को निकम्मी मानता हूँ।"

"लॉलेस तुम एक ग़लत आदर्श उपस्थित कर रहे हो, हमें अपने बारे में ठीक-ठीक बताओ मूर्ख मसखरे," टुकड़ी के नायक ने कहा।

"और अगर मैं भूल गया हूँ तो?" लॉलेस ने उत्तर दिया।

"और अगर तुम भूल चुके हो तो? मैं धर्म से कहता हूँ कि तुम भूल नहीं सकते और अब मैं तुम्हारी इस भीमदेह में ठक से तीर ठोकता हूँ!" दूसरे ने उत्तर दिया।

"नहीं तुम इतने बुरे मजाक नहीं करोगे मुझे विश्वास है।" लॉलेस ने कहा, " 'डकवर्थ और शैल्टन' मेरी सूचना है, और उसके सबूत में शैल्टन मेरे

कन्धे पर है और डकवर्थ के पास उसे ले जा रहा हूँ !"

"अच्छा, निकल जाओ लॉलेस," सन्तरी ने कहा।

"और जॉन कहाँ है ?" उस महन्त ने पूछा।

"वह इस समय इजलास कर रहा है और टैक्स वसूल कर रहा है।" एक दूसरे ने कहा।

वैसा ही सत्य हुआ। जब लॉलेस ग्राम के निकट पहुँचा और सराय में गया तो एलिस डकवर्थ, सर डेनियल के किसानों से घिरा हुआ बैठा था। अपने शानदार तीरंदाज़ों की शक्ति के बल पर शान्तिपूर्वक टैक्स वसूल कर रहा था और बदले में उन्हें लिखित रसीदें दे रहा था। किसानों के चेहरों से यह स्पष्ट था कि वे इस कार्य से कितने प्रसन्न हैं और वह ठीक ही कह रहे थे कि अगर उनसे टैक्स ले लिया गया तो उन्हें दोबारा टैक्स देने पर ही बाध्य किया जाएगा।

ज्यों ही उसे यह मालूम हुआ कि लॉलेस क्या लाया है, तो उसने शेष किसानों को उठा दिया और पूरी सतर्कता और दिलचस्पी के साथ वह उसे सराय के एक अन्दरूनी कमरे में ले गया। वहाँ लड़के का दिल देखा गया और साधारण-सी औषधियों द्वारा उसकी मूर्च्छा दूर की गई।

"मेरे प्यारे युवक", एलिस ने उसका स्नेह से हाथ दबाते हुए कहा, "तुम एक मित्र के हाथों में हो, जो तुम्हारे पिता को प्यार करता था और उन्हीं के कारण तुम्हें भी प्यार करता है। तुम थोड़ी देर शान्ति के साथ आराम करो, क्योंकि तुम्हारी स्थिति काफ़ी चिन्ताजनक हो चुकी है। तब तुम मुझसे अपनी कहानी कहना और हम दोनों मिलकर उसका कोई न कोई निराकरण अवश्य खोज निकालेंगे।"

जिस समय डिक एक आरामदेह नींद से अपेक्षाकृत ताज़ा होकर उठा तो एलिस ने उसके बिस्तर के पास बैठकर उससे अपनी कहानी कहने की प्रार्थना की। उसने कहा कि मोट हाउस से वह किन परिस्थितियों में भागकर आया है, यह भी बताए। डकवर्थ के व्यक्तित्व में और उसकी मुखाकृति पर खेलने वाली सचाई में, उसकी आँखों के उज्ज्वल प्रकाश और तीखेपन में कुछ ऐसी शक्ति थी कि डिक सहर्ष उसका आदेश पालन करने के लिए तैयार हो गया। और उसने आदि से अन्त तक अपने दो दिनों की कहानी बयान कर दी।

"अच्छा", एलिस ने पूरी कहानी सुन लेने के बाद कहा, "देखो भगवान् अब तुम्हारे लिए क्या करना चाहते हैं। इतने भयंकर संकटों में घिरे होने पर भी उन्होंने तुम्हें उस बन्दीगृह से सकुशल मुक्त कर दिया है। न केवल इतना ही, उन्होंने तुम्हें उन स्नेही व्यक्तियों के हाथों में भी पहुँचा दिया है जोकि तुम्हें उतना ही प्यार करते हैं जितना तुम्हारे पिता को।

"लेकिन मेरे प्रति वफ़ादार रहना। तुम्हारी सचाई मैं तुम्हारी आँखों में देख सकता हूँ। आज मैं तुम्हें यह वचन देता हूँ कि मैं उस झूठे-गद्दार को मौत के घाट उतारकर छोड़ूँगा।"

"क्या तुम मोट हाउस पर आक्रमण करोगे?" डिक ने पूछा।

"ऐसा करना तो मेरा पागलपन होगा", एलिस ने उत्तर दिया, "उसके पास इतनी शक्ति है क हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। उसके आदमी उसके पास लौट रहे हैं। वह आदमी जिन्होंने पिछली रात मुझे चकमा दे दिया। नहीं डिक, तुम और मैं और मेरे समस्त तीरंदाज यहाँ से चले जाएँगे और सर डेनियल को आजादी से घूमने के लिए छोड़ देंगे।"

"मेरा मस्तिष्क जैक के लिए सशंक हो रहा है।" लड़के ने कहा।

"जैक के लिए?" डकवर्थ ने दोहराया, "ओ, मैं समझा, उस लड़की के लिए। डिक, अगर किसी दूसरी जगह उसके विवाह की चर्चा उठी तो हम तत्काल आक्रमण करेंगे और ऐसा अवसर आने तक हम लोग दूर हट जाएँगे। प्रातःकाल के समय वृक्षों की छाया के समान सर डेनियल इधर-उधर देखेगा पर उसे शत्रु की गन्ध तक नहीं आने पाएगी। और वह यह सोचेगा कि वह अभी स्वप्न ही ले रहा है और बिस्तर में पूरी तरह जागा भी नहीं है; लेकिन चार आँखें डिक, सदैव उसका पीछा करती रहेंगी और हमारे चारों हाथ—देवता हमारी सहायता करें—उस गद्दार को भूमिसात् कर देंगे!"

दो दिन बाद सर डेनियल की सेना इतनी शक्तिशाली हो गई कि उसने एक परेड का आयोजन भी किया और दो बीसी आदमियों के साथ घोड़े पर सवार होकर वह टन्सटाल ग्राम तक गश्त भी लगा आया। एक भी तीर नहीं चला, एक भी आदमी किसी झाड़ी में नहीं हिला, पुल पर कोई भी पहरा अब

नहीं था और वह सभी आने-जाने वालों के लिए खुला पड़ा था और उस पर चढ़ कर जिस समय शान के साथ सर डेनियल चल रहा था तो ग्रामवासी घबराए-से अपनी खिड़कियों में से झाँक रहे थे।

उसी समय एक आदमी बढ़कर आगे आया और झुककर सलाम करते हुए उसने एक पत्र सर डेनियल को दिया।

ज्योंही उसने पत्र पढ़ा उसके चेहरे पर स्याही पुत गई। पत्र इस प्रकार था :

मर डेनियल ब्रैकले की सेवा में,
जोकि एक बहुत ही झूठे और बेरहम
आदमी हैं, ये शब्द निवेदित हैं :

मैं देखता हूँ कि तुम प्रारम्भ से ही मेरे प्रति झूठे और बेरहम सिद्ध हुए हो। तुम्हारे हाथ मेरे पिता के खून से रंगे हैं और कितना भी प्रयत्न करने पर तुम उसे धो न सकोगे। किसी दिन तुम मेरे हाथों से धराशायी होगे; उस दिन तक के लिए मैं तुम्हें खुला छोड़ता हूँ, लेकिन अगर तुमने मिस्ट्रेस जोन सैंडले का विवाह किसी और से किया, जिससे कि मैं विवाह करने की शपथ खा चुका हूँ, तो मेरा यह प्रहार बहुत ही शीघ्र होगा। इस दिशा में उठाया गया तुम्हारा पहला क़दम अपनी क़ब्र की ओर उठाया गया पहला क़दम होगा।

—रिचर्ड शैल्टन

१३

अपने संरक्षक के हाथों से मुक्ति पाए हुए आज रिचर्ड शैल्टन को महीनों व्यतीत हो चुके थे। ये महीने इंगलैण्ड के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुए थे। लंकास्टरों का पक्ष जोकि एक बार पूर्ण विनाश को प्राप्त हो चुका था, एक बार फिर अपना सिर उठाने लगा था। यॉर्किस्टों को पराजित किया जा चुका था और उनकी शक्ति छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। उनके नेताओं को समर-क्षेत्र में ही काट डाला गया था और इस शरद के बाद—जिसमें घटित घटनाओं का उल्लेख किया जा चुका है—कुछ ही महीनों की हलचलों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि लंकास्टर वंश अब अन्तिम रूपसे अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर चुका है।

टिल नदी पर बसे छोटे-से शोरबी नगर में लंकास्टर वंश के आसपास में रहने वाले सामन्त लोग इकट्ठे रहने लगे थे। राईसिन्धम का अर्ल, अपने तीन सौ सशस्त्र सैनिकों सहित, लार्ड शोरबी अपने दो सौ सशस्त्र सैनिकों सहित और सर डेनियल स्वयं, ज़ब्तियों और कुर्कियों के बल पर अपार सम्पत्ति बटोरता हुआ, नगर की मुख्य सड़क पर बने अपने मकान में रहने लगे थे। सर डेनियल की प्रतिष्ठा बढ़ रही थी और लगता था कि जैसे जमाना बिल्कुल बदल चुका है।

जनवरी का प्रथम सप्ताह था। शाम होते-होते अंधकार घना हो गया था। हाड़-मांस को कँपा देने वाली सर्दी पड़ने लगी थी।

कोहरा पड़ रहा था, तेज़ हवा चल रही थी और लगता था कि प्रातःकाल से पूर्व ही बर्फ़ गिरना शुरू हो जाएगा।

बंदरगाह के निकट ही एक मामूली-से मदिरालय में तीन या चार आदमी जल्दी-जल्दी अण्डे खाते हुए शराब पी रहे थे। वह सभी सीधे-सादे, मस्त और मौसम से पिटे हुए मेहनतकश-से मालूम होते थे; उनके हाथ इतने शक्तिशाली थे, और आँखें इतनी निर्भीक थीं कि हालाँकि वह देहाती किसानों की तरह के कपड़े पहिन रहे थे तथापि कोई शराब के नशे में झूमने वाला सैनिक भी उनसे फसाद मोल लेने से पहले दो बार सोच-विचार करता!

बड़े आतिशदान से कुछ दूर पर एक थोड़ी आयु का आदमी बिलकुल इसी फ़ैशन में बैठा हुआ था जो अभी कच्ची उम्र का मालूम देता था। तथापि उसके स्वरूप को देखकर यह भली भाँति अनुमान लगाया जा सकता था कि उसने किसी अच्छे कुल में जन्म लिया है और अगर समय अनुकूल होता तो शायद अब तक उसने तलवार धारण कर ली होती।

"नहीं", मेज पर बैठे हुए आदमियों में से एक ने कहा, "मैं इसे पसंद नहीं करता। इसका बुरा हो। यह स्थान मस्ती से विचरने वाले लोगों के लिए उपयुक्त नहीं है। एक स्वतंत्र आदमी खुले और सुरक्षित जंगल, और शत्रु हीन स्थान को ही पसंद कर सकता है; और यह नागरिक प्रदेश तिल-तिल करके चारों ओर शत्रुओं से भरा है। देखो अगर प्रातःकाल से पहले बर्फ़ पड़ना शुरू न हुआ तो।"

"यह सब मास्टर शैल्टन के ही कारण है", दूसरे ने शैल्टन की ओर सिर हिलाते हुए कहा जो कि आतिशदान के सामने आँच ताप रहा था।

"मैं मास्टर शैल्टन के लिए कुछ भी कर सकता हूँ", पहिले ने उत्तर दिया, "लेकिन व्यर्थ में किसी आदमी के लिए सूली पर किस प्रकार चढ़ा जा सकता है? नहीं, भाइयो, वैसा नहीं हो सकता।"

सराय का दरवाजा खुला और एक आदमी ने अन्दर प्रवेश किया और तेजी के साथ आतिशदान के सामने आँच तापते हुए शैल्टन के पास पहुँच गया।

"मास्टर शैल्टन", उसने कहा, "सर डेनियल दो सवारों और चार तीरंदाजों के साथ जा रहा है।"

डिक (यही वह युवक था!) तत्काल उठकर खड़ा हो गया।

"लॉलेस" उसने कहा, "तुम जॉन कैपर के स्थान पर चले जाओ और ग्रीनशेव, तुम मेरे पीछे-पीछे आ जाओ। कैपर, रास्ता दिखाओ। अबकी बार हम

उसका पीछा करेंगे और वह यार्क की ओर अवश्य जाएगा।"

अगले क्षण वह बाहर निकलकर सड़क पर आ गए थे। कैपर आगे-आगे चलता हुआ उनका पथ-प्रदर्शन करता जा रहा था। उसने उस तरफ़ संकेत किया जहाँ पर दो मशालों की रोशनी टिमटिमा रही थी।

नगरवासी प्रायः गहरी नींद में सोए पड़े थे, सड़क पर पत्ता भी नहीं खड़कता था। इसलिए इस दल का पीछा करना नितान्त ही सरल था। दो सवार आगे-आगे चले गए, इसके बाद एक आदमी आया जिसका बड़ा लबादा हवा से उड़ रहा था। और सबसे पीछे चार तीरंदाज जा रहे थे जिन्होंने अपने बाजू पर कमान रखी हुई थी। वे तेजी के साथ चल रहे थे, पेचीदा रास्तों से चल रहे थे और सागर तट की ओर बढ़ते जा रहे थे।

"क्या वह हर रात्रि को इसी दिशा में जाता है?" डिक ने फुसफुसाया।

"यह तीसरी रात्रि है, मास्टर शैल्टन", कैपर ने कहा, "ठीक इसी समय और इतने ही थोड़े आदमियों को लेकर। मालूम पड़ता है वहाँ कोई गुप्त स्थान उन्होंने बनाया हुआ है।"

सर डेनियल और उसके छै आदमी अब नगर के बिलकुल निकट आ गए थे। शोरबी एक खुला हुआ नगर था और लंकास्ट्रियन लार्ड हालाँकि शहर पर काफ़ी कड़ा पहरा रखते किन्तु फिर भी किसी कोने की सड़क से या नगर के पास के देहात से निकल भागना कुछ असम्भव काम नहीं था।

वह गली जिसका सर डेनियल अनुसरण कर रहा था, अकस्मात् समाप्त हो गई। उसके सामने एक ऊबड़-खाबड़ निचली जमीन थी और एक बाजू पर सागर के तट से टकराने की आवाज साफ़ सुनाई पड़ रही थी। उस इलाके में किसी भी प्रकार की गारद नहीं थी और नगर के उस प्रान्त में कहीं पर भी रोशनी नहीं थी।

डिक और उसके दो वनचारी थोड़ा आगे जाने वालों के निकट ही बढ़ आए। तत्काल वह दो मकानों के बीच आ गए और आगे दृष्टि दौड़ाकर देखा तो दूसरी ओर से एक और मशाल उसी ओर बढ़ती दिखाई दी।

"हो" डिक ने कहा, "कुछ दाल में काला नजर आता है।"

इसी बीच सर डेनियल बिलकुल रुककर खड़े हो गए थे। मशालें रेत में गाड़ दी गईं। और आदमियों ने अपने हथियार ढीले कर लिए जैसे कि वह

दूसरी पार्टी के आने की प्रतीक्षा करने लगे हों !

वह पार्टी तेज़ी के साथ निकट बढ़ती आ रही थी। उसमें चार तीरंदाज़ थे। एक पैदल सैनिक मशाल सँभाले चल रहा था और दो तीरंदाज़ थे। और एक लबादा पहिने हुए भद्र पुरुष उनके मध्य चल रहा था।

"आप आ गए हैं माई लार्ड," सर डेनियल चिल्लाया।

"यह मैं ही हूँ और अगर आजतक किसी नाइट ने इस बात का सच्चा सबूत दिया हो कि वह नाइट है तो वह आज आपको मिल ही जाना चाहिए। क्योंकि ऐसी काटने वाली सर्दी में बाहर निकलना भी शैतानों और जादूगरों से लोहा लेने से कम नहीं है।"

"माई लार्ड," सर डेनियल ने कहा, "इससे तो सौंदर्य के प्रति और भी चाव बढ़ जाएगा। क्या हम लोग चलें ? क्योंकि जितने ही शीघ्र आप मेरे सौदे को देख लेंगे, उतने ही शीघ्र आप और मैं अपने निवासस्थानों को लौट सकते हैं।"

"लेकिन उसे आप यहाँ क्यों रखते हैं ?" दूसरे ने पूछा, "और अगर वह इतनी नवयौवना, सुन्दर और समृद्ध है तो तुम उसे उसकी सखियों के साथ अपने घर में क्यों नहीं रखते ? उससे वह शीघ्र ही एक क़ीमती शादी बन जाएगी और इतने ठिठरा देने वाले शीत में इतनी दूर अंधकार में आकर अपने को ख़तरे का शिकार भी नहीं बनना पड़ेगा।"

"मैं आपसे कह चुका हूँ माई लार्ड," सर डेनियल ने उत्तर दिया, "इसका कारण केवल मेरे तक ही सम्बन्धित है। और इसे आगे स्पष्ट करने का मेरा इरादा भी नहीं है। बस इतना कह देता हूँ कि अगर आप इस चर्चा से तंग आ गए हैं तो इस सूचना को कहीं छपाकर देख लीजिए कि आप जोना सैडले से शादी कर रहे हैं। फिर आप हमेशा के लिए इस चर्चा से मुक्त हो जाएँगे। तत्काल ही आप उसी की पीठ में एक तीर घुसा देखेंगे और झगड़ा हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा।"

इसी बीच वह दोनों आदमी तेज़ी के साथ नीचे के रास्ते पर बढ़ गए। तीन मशाल वाले उनके सामने बढ़ रहे थे। वह झुकते हुए हवा का मुक़ाबला कर रहे थे और मशालों से लपटें और धुँआ निकलता जा रहा था।

इनके अत्यन्त निकट ही डिक पीछा कर रहा था। उसने हालाँकि उस

वार्तालाप का एक भी अंश नहीं सुना था लेकिन उसने उस बातचीत से शीघ्र ही यह अनुमान लगा लिया था कि दूसरा व्यक्ति स्वयं लार्ड शोरबी ही था। वह एक बहुत ही बदचलन आदमी था, जिसे स्वयं सर डेनियल भी सर्वसाधारण के सम्मुख सूली पर चढ़ाने योग्य व्यक्ति घोषित कर चुका था।

तत्काल वह सागर तट के अत्यन्त निकट आ गए। वायु से नमकीन गन्ध आना शुरू हो गई थी। यहाँ एक दो-मंजिला मकान था, जिसमें एक अस्तबल था और कुछ दफ़्तरनुमा कमरे भी बने हुए थे।

सबसे अगले मशालची ने दरवाज़े में लगे एक ताले को खोला और सारी की सारी पार्टी के बगीचे में उतर जाने के बाद उसने दूसरी ओर से दरवाज़े में फिर से ताला ठोंक दिया।

डिक और उसके आदमी अब उनका पीछा करने में असमर्थ थे। जबतक कि वह दीवार को ही न फाँद जाएँ और अपनी गर्दनें संकट में फँसाने के लिए तैयार न हो जाएँ।

वह सब झाड़ी में छिपकर बैठ गए और प्रतीक्षा करने लगे। वह मशालें उस घेरे में इधर से उधर घूमने लगीं। सवार चारदीवारी की गश्त लगा रहे थे।

बीस मिनट बीतने पर वह पार्टी फिर निकली और वह लोग निकलकर फिर उस घाटी में आ गए। तब सर डेनियल और उस सामन्त ने लम्बे-लम्बे अभिवादन के उपरान्त अपने-अपने अनुयायियों और मशालचियों के साथ अपने-अपने घरों की ओर कूच कर दिया।

ज्योंही उनके पैरों की आहट हवा के अंक में विलीन हुई त्योंही डिक उठ खड़ा हुआ क्योंकि सर्दी के मारे वह ठिठुरा जा रहा था।

"कैपर, तुम मेरे बिलकुल ही निकट रहोगे।" उसने कहा। वह तीनों के तीनों दीवार की ओर बढ़ने लगे। कैपर झुक गया और डिक उसके कन्धों पर चढ़ता हुआ ऊपर के पत्थर पर जा चढ़ा।

"अब ग्रीनशेव," डिक फुसफुसाया, "मेरे पीछे चढ़ आओ और अपने मुँह के बल लेट जाओ ताकि देखे जाने की कोई भी सम्भावना न रहे। और अगर दूसरी ओर मैं फँसता नज़र आऊँ तो मुझे तत्काल हाथ देना।"

और इतना कहता हुआ वह बग़ीचे में कूद गया।

चारों तरफ घोर अंधकार था। मकान में किसी भी तरफ़ रोशनी नहीं थी।

हवा छोटी-छोटी झाड़ियों से टकराकर चीखती हुई बह रही थी और झाऊ की झाड़ियाँ तट पर गर्दन पटक रही थीं। इसके अतिरिक्त कहीं भी कोई आवाज नहीं थी। बड़ी सतर्कता से डिक ने आगे क़दम बढ़ाया। वह झाड़ियों में उलझता जा रहा था, हाथों से रास्ता टटोल रहा था और पैरों के नीचे की खसखसाती आवाज़ ने बताया कि वह किन्हीं दो मकानों के मध्यवर्ती मार्ग पर आ पहुँचा है।

यहाँ वह कुछ रुका और अपनी कमान को साधकर उसने उसे सहसा काम में लाने योग्य बना लिया। अब की बार वह अधिक निश्चय और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा था। इस मार्ग से वह सीधा इमारतों की ओर अग्रसर हो रहा था।

उसे विश्वास होने लगा कि उसने जान-बूझकर अपने को विनाश के मुँह में धकेल दिया है। मकान के चारों तरफ़ काँटेदार जालियाँ चढ़ी हुई थीं। अस्तबल में घोड़े नहीं थे, नाँदो में घास नहीं थी और दाने के पात्र में एक भी दाना नहीं था। कोई भी आदमी उसे एक परित्यक्त स्थान समझकर छोड़ सकता था। लेकिन डिक के पास उसे वैसा न समझने के प्रमाण मौजूद थे। उसने अपना निरीक्षण जारी रखा। वह हर अस्तबल को देखता था और हर खिड़की को धक्का मारकर देखता था। आखिरकार वह सागर की तरफ़ वाले भाग में जा निकला। यहाँ ऊपर की खिड़की में से एक पीली रोशनी झिलमिलाती नज़र आई।

वह थोड़ा पीछे हट गया और उसके बाद उसने देखा कि दीवार पर किसी की छाया हिलती-जुलती नज़र आ रही है। उसे याद आया कि अस्तबल में टोहते हुए उसका हाथ एक सीढ़ी पर टकराया था। वह उसे यथाशीघ्र वहाँ से ले आने के लिए तेज़ी से लपका। वह सीढ़ी बहुत छोटी थी। उसके सबसे ऊपर वाली डंडी पर खड़ा होकर, वह खिड़की की लोहे वाली सलाखों तक ही पहुँच पाता था। और उस पर टँगकर उसने हाथों के बल अपने को ऊपर उठाते हुए ऐसे स्थान पर टिका दिया जहाँ से वह कमरे का सारा दृश्य देख सकता था।

दो व्यक्ति अन्दर थे। पहिले को उसने शीघ्र ही पहचान लिया। एक तो श्रीमती हैच थी और दूसरी आकृति एक लम्बी, सुडौल देह-यष्टि वाली आकृति

थी। क्या वही उसकी जोना सैडले थी जो किसी समय जंगल में उसकी साथी रह चुकी है और जिसे आज भी वह जैक के रूप में स्मरण रखता है; और जिसे वह अपनी पेटी से मारने के लिए तैयार हो गया था !

एक आश्चर्य की मुद्रा में वह फिर सीढ़ी के सबसे ऊपर के डण्डे पर लटक आया था। उसने अपनी प्रेयसी के इतने ऊँचे व्यक्तित्व की कभी कल्पना भी नहीं की थी। आज उसे अपने ऊपर अविश्वास हो चला था। लेकिन उसके पास विचार करने के लिए समय बिलकुल नहीं था। उसके निकट से 'हिश्' की आवाज़ आई और उसने सीढ़ी पर से उतरना प्रारम्भ कर दिया।

"कौन है ?" उसने फुसफुसाया।

"ग्रीनशेव," उतनी ही चौकन्नी आवाज़ में उत्तर आया।

"क्या चाहिए ?" डिक ने पूछा।

"हाउस पर पहरा पड़ा हुआ है मास्टर शैल्टन," उसने उत्तर दिया, "केवल हम ही हाउस के चारों ओर पहरा डाले हुए नहीं हैं। कुछ और लोग भी मालूम पड़ते हैं, जो कि धीरे-धीरे सीटी बजाते सुन पड़ते हैं।"

"धर्म की सौगन्ध !" डिक ने कहा, "लेकिन यह तो बहुत ही आश्चर्य-जनक मामला चल रहा है। क्या वह आदमी सर डेनियल के आदमी नहीं हैं ?"

"नहीं सर, वे डेनियल के नहीं हैं," ग्रीनशेव ने कहा, "क्योंकि अगर मेरे सिर में आँखें हैं और मैं उनसे देख सकता हूँ तो उनकी कलगी में सफेद बैज लगा हुआ है और उस सफेद बैज पर कुछ काला कशीदा कढ़ा हुआ है।"

"सफेद बैज पर कशीदा कढ़ा हुआ," डिक ने दोहराया, "यह बैज की चर्चा तो मैंने आज तक कभी नहीं सुनी। यह हमारे देश का बैज तो नहीं प्रतीत होता। अच्छा, अगर ऐसा है तो मैं चुपचाप इस बाग़ से खिसक चलने को ही उचित समझता हूँ क्योंकि यहाँ हम लोग सुरक्षा की दृष्टि से एक बहुत-ही बुरी स्थिति में फँस गए हैं। यह भी स्पष्ट है कि इस मकान में सर डेनियल के भी आदमी हैं और दो आक्रमणों के बीच में फँसना एक लाचार फ़कीर की स्थिति में फँसना है। लेकिन यह सीढ़ी मैं वहीं रख देना चाहता हूँ, जहाँ से इसे उठाकर लाया था।"

उन्होंने सीढ़ी अस्तबल में पहुँचा दी। और अंधेरे में टटोलते हुए वह उसी स्थान की ओर बढ़ गए जहाँ से उन्होंने बाग़ में प्रवेश किया था।

कैपर ने दीवार पर ग्रीनशेव का स्थान ग्रहण कर लिया था। और अपना हाथ नीचे झुकाकर उसने पहले एक को और फिर दूसरे को ऊपर चढ़ा लिया।

अत्यन्त सतर्कता और सावधानीपूर्वक वे उसी स्थान पर पहुँच गए जहाँ से चढ़े थे। और वह उस समय तक नहीं बोले जब तक कि पीली कँटीली झाड़ी में अपने छिपने के स्थान पर वापस न पहुँच गए।

"तो जान कैपर", डिक ने कहा, "तुम इस समय तत्काल शोरबी वापस दौड़ जाओ और जितने आदमी इकट्ठे कर सको फौरन ले आओ। अगर अपने जीवन को संकट में डालकर भी कर सको तो करो। यही भेंट करने का स्थान होगा और अगर आदमी यहाँ-वहाँ तितर-बितर हो गए हों और उनके इधर बढ़ने के पहिले ही दिन निकल आए तो यहाँ से पीछे कुछ दूर पर और नगर के मोड़ पर ही सब मिल जाएँ। ग्रीनशेव और मैं यहीं पर रहकर प्रतीक्षा करेंगे। अब तुम जल्दी करो जॉन कैपर।" और ज्योंही कैपर चला गया, उसने ग्रीनशेव से कहा, "और तुम ग्रीनशेव, मेरे साथ आओ, हम बगीचे के चारों ओर घूमकर देखेंगे। मुझे आशा है कि तुम्हारी आँखें तुम्हें धोखा नहीं देंगी।"

दीवार के बाहर की तरफ़ प्रत्येक ऊँचाई और खड्ड का सदुपयोग करते हुए वह दो तरफ़ घूम आए लेकिन कुछ भी देख नहीं सके। तीसरी सीमा पर बाग की दीवार सागर तट की ओर थी। हालाँकि ज्वार अभी काफ़ी दूर था किन्तु सागर हिलोरे ले रहा था और झाग इतनी तेज़ी से आगे छलक रहे थे कि पूरा हिस्सा देखते-देखते वह टखनों तक भीग चुके थे। पानी इस तेज़ी से बढ़ता था कि कभी-कभी डिक और ग्रीनशेव घुटनों तक भी उस जर्मन सागर के नमकीन पानी में भीग उठते थे।

अकस्मात् एक दीवार की सफेदी और एक आदमी की आकृति एक चीनी छाया-चित्र की तरह दिखाई पड़ी। वह दोनों हाथों को हिलाकर ज़ोर-ज़ोर से कुछ इशारा कर रहा था। ज्योंही वह नीचे गिरा, कुछ दूर आगे जाकर एक और आदमी दीवार पर चढ़ा हुआ दिखाई दिया। वह भी इसी प्रकार का इशारा कर रहा था। और इस प्रकार चुपचाप इशारों द्वारा मकान के चारों तरफ़ पहरा दिया जा रहा था।

"वह बड़ी सतर्कता से पहरा देते हैं।" डिक ने फुसफुसाया।

"हमें वापस खुश्की पर चलना चाहिए मास्टर", ग्रीनशेव ने उत्तर दिया, "हम यहाँ पर संकट के लिए बहुत ही खुले हैं। क्योंकि जब सागर की पेटी पानी से लबरेज हो जाएगी और चन्द्रमा पीठ पीछे चमकने लगेगा तो हम उन्हें स्पष्ट दिखलाई पड़ने लगेंगे।"

"तुम ठीक कहते हो", डिक ने कहा, "मेरे साथ फौरन किनारे पर चलो।"

१४

जिस समय वह झाड़ी के अन्दर अपने स्थान पर आए, तो दोनों आदमी पूरी तरह से भीग चुके थे और सर्दी से काँप रहे थे।

"मैं कामना करता हूँ कि कैंपर जल्दी से आ पहुँचे !" डिक ने कहा, "अगर वह एक घण्टे से पहले लौट आता है तो मैं शोरबी की सेण्ट मेरी को एक कण्डील भेंट करूँगा।"

"आपको बहुत जल्दी है मास्टर डिक ?" ग्रीनशेव ने पूछा।

"हाँ दोस्त", डिक ने उत्तर दिया, "उस मकान में मेरी प्रियतमा है और कुछ पता नहीं चलता कि ये जो रात में मकान का घेरा डाले हुए हैं, कौन हैं ? ये मित्र तो नहीं हो सकते, यह तो निश्चित बात है।"

"अच्छा", ग्रीनशेव ने उत्तर दिया, "अगर जॉन जल्दी से आ जाए, तो हम उन्हें अच्छी कैफ़ियत दे सकते हैं। संतरियों की पारस्परिक दूरी से मैं यह अनुमान लगा सकता हूँ कि बाहर वह दो-बीसी आदमियों से अधिक नहीं हैं। और आकस्मिक तौर पर आक्रमण करके एक बीसी भी उन्हें चिड़ियों की तरह उड़ा देगी। और मास्टर डिक, शुक्र है कि इस समय तो वह सर डेनियल के हाथों में है लेकिन अगर इन आदमियों के हाथों में चली गई तो न जाने कहाँ पहुँच जाए ? ये लोग न जाने कौन हों ?"

"मैं समझता हूँ कि वह लार्ड शोरबी के आदमी हैं", डिक ने उत्तर दिया, "लेकिन वह इधर आए किस समय ?"

"उन्होंने उस समय आना शुरू किया था, मास्टर डिक", ग्रीनशेव ने कहा, "जिस समय तुमने दीवार को लाँघा था। मुझे दीवार पर लेटे एक मिनट भी

नहीं हुआ था कि मैंने पहले मरदूद को सरकते हुए देखा था।"

उस छोटे-से मकान की अन्तिम बत्ती भी बुझ चुकी थी और यह अनुमान लगाना कठिन था कि वह लोग रात के किस प्रहर में मकान पर आक्रमण करने का इरादा रखते हैं। वह यह बेहतर समझता था कि लार्ड शोरबी के हाथों में पड़ने से बेहतर यही है कि जोना सर डेनियल के अधिकार में ही रहे और उसने यह इरादा कर लिया था कि अगर हाउस पर आक्रमण किया गया तो वह तत्काल घिरे हुए लोगों की सहायता करेगा।

लेकिन समय गुजरता जा रहा था और अभी तक किसी प्रकार की कोई प्रगति नहीं हुई थी। प्रत्येक पन्द्रह मिनटों के बाद एक ही प्रकार का संकेत दोहराया जाता था। मालूम पड़ता था कि उस टुकड़ी का नेता आक्रमण प्रारम्भ करने से पूर्व यह निश्चित कर लेना चाहता था कि उसके आदमी पूरी तरह सचेत हैं कि नहीं। लेकिन प्रत्येक बार ही मकान का चौतरफ़ा वातावरण बिल्कुल शान्त रहता था।

उसी समय डिक की कुमुक आनी प्रारम्भ हो गई। रात का अन्तिम पहर नहीं हुआ था। ठीक समय से बीस आदमी उस झाल में उसके निकट आकर उपस्थित हो गए थे।

इन दोनों दलों को अलग-अलग करते हुए उसने छोटी टुकड़ी का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया और बड़ी टुकड़ी को ग्रीनशेव के नेतृत्व में छोड़ दिया।

"अब दोस्त," उसने अपने अन्तिम सिपाही से कहा, "अपने आदमियों को सागर तट की दीवार के सहारे ले जाकर तैनात कर दो। और उस समय तक प्रतीक्षा करो जब तक मैं इधर से आक्रमण शुरू न कर दूँ। यह निश्चित है कि इस युद्ध का निर्णय सागर तट पर ही होगा क्योंकि मेरा दृढ़ निश्चय है कि उनका नायक उधर ही होगा। और बाकी भाग खड़े होंगे और उन्हें भागने दिया जा सकता है और दोस्तो! कोई भी आदमी कमान से निशाना न लगाए क्योंकि वैसा करके तुम केवल मित्रों को ही भूमिसात करोगे। केवल लोहे से वार करो और लोहे से ही अपनी रक्षा करो, और आज का मोर्चा अगर तुमने सर कर लिया तो मैं प्रण करता हूँ कि जिस समय मुझे अपनी सम्पत्ति वापस मिल जाएगी, तो मैं तुममें से प्रत्येक को सोने का एक सिक्का दूँगा।"

इन चन्द आदमियों में से जो अपनी समाजी ज़िन्दगी से टूटे हुए थे—चोर,

क़ातिल और बर्बादशुदा किसान जिन्हें डकवर्थ ने अपने झण्डे के नीचे इकट्ठा कर लिया था, जो सबसे बहादुर थे—उन्होंने शैल्टन के साथ जाना स्वीकार किया था। शोरबी नगर में सर डेनियल की गतिविधियों की जाँच करना उनके लिए अत्यन्त संकटासम्पन्न कार्य था और वह इस प्रकार के कार्य से प्रायः असंतुष्ट हो चले थे और कभी-कभी विघटित होने की धमकियाँ भी देते थे। लेकिन इस तगड़ी झड़प और विजय प्राप्त होने के बाद की माल-दौलत के हाथ लगने की सम्भावना से उनका हृदय अब प्रसन्न हो गया था और अब वे प्रसन्नतापूर्वक युद्ध करने के लिए तैयार थे।

उन्होंने अपने लम्बे लबादे एक ओर फेंक दिए थे। उनमें से कुछ हरी जर्सियों में थे और कुछ चमड़े की जाकेट पहिने हुए थे। उनके हुडों के नीचे इस्पात की बनी प्लेटें थीं और उनके पास आक्रामक शस्त्रों में तलवार, खञ्जर और कुछ तगड़े बरछे और कुछ चमकीली गदाएँ थीं और वह इस समय एक शानदार सामन्ती सेना के समान शानदार मालूम होते थे। कमान, तरकश और लबादे झाड़ी में छिपा दिए गए थे। और दोनों दल तब दृढ़ निष्ठा के साथ अपने-अपने स्थानों की ओर बढ़ गए थे।

डिक ने हाउस के दूसरी ओर पहुँचकर अपने छै आदमियों को एक पंक्ति में तैनात कर दिया। यह स्थान बाग़ की दीवार से बीस गज़ की दूरी पर था। उसने कुछ क़दम आगे बढ़कर अपने आप मोर्चा लगा लिया था। वह तब एक ललकार के साथ शत्रु पर टूट पड़े।

वह लोग, जो दूर-दूर मोर्चे जमाए पड़े थे और सर्दी से ठिठुरे हुए थे, इस प्रकार आकस्मिक आक्रमण से बौखला उठे। वह फौरन कूदकर खड़े हो गए और किंकर्तव्यविमूढ़ावस्था में खड़े रह गए। इससे पूर्व कि उनमें साहस का संचार हो और वह हमला करने वालों की शक्ति और संख्या का अनुमान लगा सकें, इसी प्रकार की दूसरी आवाज़ बाड़े के दूसरे कोने पर हुई और वह अपने को घिरा समझकर भाग खड़े हुए।

इस प्रकार काले तीर वाली दो छोटी-सी टुकड़ियों ने बाग़ की सागर तट वाली दीवार के पास के घेरा डालने वालों पर आक्रमण किया और वह अजनबी जैसे दो अग्नियों के बीच फँस गए थे। बाक़ी आदमी इधर-उधर बिखर गए और अंधेरे में ग़ायब हो गए।

लेकिन अभी भी युद्ध शुरू होना बाक़ी था। डिक के बनचारी, यद्यपि उन्होंने शत्रुओं पर आकस्मिक आक्रमण किया था, अब भी शत्रुओं की अपेक्षा संख्या में बहुत कम थे। इसी बीच ज्वार चढ़ चुका था और वह सागर तट एक रेखा के समान बारीक पड़ गया था और इस गीले समर-क्षेत्र में एक सन्दिग्ध, खौफ़नाक और बीहड़ युद्ध प्रारम्भ हो गया।

ये अजनबी लोग अस्त्र-शस्त्रों से भली प्रकार सुसज्जित थे और वह ख़ामोशी के साथ अपने विरोधियों पर झपटे। और इस प्रकार एक से एक सैनिक गुत्थम-गुत्था होगया। डिक को, जो कि सबसे पहिले समर-क्षेत्र में उतरा था, तीन आदमियों ने घेर लिया था। पहिले को उसने एक ही प्रहार में काट डाला था। शेष दो सैनिक खौफ़नाक होकर उस पर टूट पड़े थे किन्तु वह एक क़दम जमीन भी पीछे छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। उनमें से एक बहुत ही विशालकाय आदमी था। उसके पास दोहत्ती तलवार थी और वह उसे स्विच के समान तेज़ी से घुमा रहा था। इस शत्रु के सम्मुख डिक की लम्बाई जिसके बाजू तक पहुँचती थी और वजन जिसके शस्त्रों के बराबर था, डिक को पार पाना थोड़ा असम्भव-सा प्रतीत होने लगा। डिक और उसकी गदा वस्तुतः उसके सामने व्यर्थ सिद्ध हो चुके थे और अगर इस आक्रमण में दूसरा आदमी भी उसी तत्परता से योग देता तो लड़का समाप्त हो जाता, इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं था। यह दूसरा आदमी, जो क़द और काया में छोटा था और शस्त्र-संचालन में उतनी तेज़ी नहीं दिखा रहा था, अँधेरे में इधर-उधर चलने वाली लड़ाई की टोह लेने की कोशिश करने लगा था।

यह राक्षस डिक को दबाता आ रहा था और डिक अपना अवसर हाथ में लेने के लिए इधर-उधर भाग रहा था। तब एक विशाल खंजर हवा में चमका और नीचे गिरा। और लड़का एक ओर कूदकर दाँव बचा गया और तत्काल वह अपनी गदा से चारों ओर प्रहार करने लगा। उसका वार सफल हो चुका था। सामने से हाय की आवाज़ निकली थी और इसके पूर्व कि भीमकाय सैनिक अपना दुर्धर्ष शस्त्र उठा सकता, डिक ने दो बार प्रहार कर दिया और शत्रु को धराशायी कर दिया।

दूसरे ही क्षण उसके सम्मुख दूसरा लड़का आ गया। यह अपेक्षाकृत समान धर्मा युद्ध था। हालाँकि अबकी बार आकार-प्रकार में कोई अन्तर नहीं

था लेकिन दूसरा योद्धा डिक की गदा के मुकाबले में तलवार और खंजर लेकर लड़ रहा था। उस शस्त्र संचालन में वेग था और शस्त्रों में भी श्रेष्ठता थी। डिक ने अपनी चपलता से इस श्रेष्ठता को लगभग समान स्तर पर उतार लिया था। यह सामना करने वाला योद्धा अभी तक निर्णायक युद्ध नहीं कर रहा था और सामने वाले योद्धा ने डिक के पीछे-पीछे चलने का जैसे निश्चय कर लिया था। डिक भी पीछे की ओर हटता जा रहा था और वे दोनों इस समय लगभग घुटनों तक पानी में पहुँच चुके थे। यहाँ पहुँचकर डिक के शस्त्र-संचालन का वेग निरर्थक होता जा रहा था। और वह अपने को अपने शत्रु के आसरे पर ही पाता जा रहा था। उसकी पीठ अपने आदमियों की ओर मुड़ती जा रही थी, और वह अनुभव कर रहा था कि यह चतुर दुश्मन उसे आगे ही आगे धकेल देना चाहता है।

डिक ने अपने दाँत किटकिटाए। उसने तत्क्षण ही युद्ध का निर्णय करने का फैसला कर लिया। और जब कि ज्वार की अगली लहर उनके पैरों को धोकर लौट गई और वह सूखे पर खड़े रह गए, वह सम्मुख झपटा; उसने अपनी गदा से वार किया और वह सीधा उसके सीने पह उछला। वह आदमी आघात खाकर पीछे पृथ्वी पर गिर पड़ा। डिक अभी तक उसके ऊपर था। इतने ज्वार की एक और लहर आई और उसे पूर्णरूप से पानी के नीचे ढक लिया।

जबकि वह पानी में डूबा ही हुआ था, डिक ने अपना खञ्जर निकाल लिया और विजय-मुद्रा में खड़े होते हुए बोला :

"हथियार रख दो," उसने कहा, "मैं तुम्हें जीवन-दान देता हूँ।"

"मैं समर्पण करता हूँ।" दूसरे ने अपने को घुटनों तक उठाते हुए कहा, "तुम एक जवान आदमी की तरह लड़ते हो; अज्ञानता और मूर्खतापूर्वक लेकिन बहादुरी के साथ लड़ते हो!"

डिक तट की ओर मुड़ा। वह संघर्ष भी रात्रि के अन्धकार में संदिग्धावस्था में लड़ा जा रहा था। ज्वार की चढ़ने वाली साँय-साँय के ऊपर शस्त्रों की झंकार प्रतिध्वनित हो रही थी। बीच-बीच में युद्ध की आर्त पुकार और नारे भी सुनाई पड़ जाते थे।

"मुझे अपने कप्तान की तरफ़ ले चलो, युवक," पराजित नाइट ने कहा, "यह उचित है कि यह मारकाट बंद कर दी जाए।"

"सर," डिक ने उत्तर दिया, "जहाँ तक इन बहादुर जवानों के कप्तान का प्रश्न है, यह व्यक्ति—जो इस समय आपसे सम्भाषण कर रहा है—वही उनका कप्तान है।"

"तो फिर तुम अपने कुत्तों को बुला भेजो और मैं अपने गधों को रोकता हूँ।" दूसरे ने उत्तर दिया।

इस वक्ता के स्वर और व्यवहार में कुछ भद्रता का भाव था। और डिक ने तत्काल विश्वासघात की भावना को अपने हृदय से निकाल फेंका।

"अपने हथियार डाल दो जवानो," वह अजनबी नाइट चिल्लाया, "मैंने अपना जीवनदान पाकर समर्पण कर दिया है।"

इस अजनबी की आवाज़ में तत्काल पालन किए जाने वाले आदेश की ध्वनि थी और युद्ध की आवाज़ और चीख-पुकार तत्काल बन्द हो गए।

"लॉलेस," डिक चिल्लाया, "क्या तुम सकुशल हो ?"

"पूरी तरह," लॉलेस चिल्लाया, "सकुशल और सानन्द।"

"लालटेन जलाकर मेरे पास लाओ" डिक ने कहा।

"क्या सर डेनियल यहाँ नहीं हैं ?" नाइट ने पूछा।

"सर डेनियल," डिक ने प्रतिध्वनि की, "धर्म की सौगन्ध, सर डेनियल यहाँ नहीं है।"

"अगर वह होते तो इससे बुरा मेरे लिए कुछ नहीं हो सकता था।" नाइट ने कहा।

"आपके लिए बुरा होता महानुभाव, क्यों ?" दूसरे ने पूछा।

"अगर तुम सर डेनियल के दल के नहीं हो तो अब मुझे कोई आपत्ति नहीं है। तब फिर तुम मेरे दस्ते पर किस उद्देश्य से टूट पड़े। आखिर किस लिए मेरे युवक और श्रद्धेय मित्र, वह कौन-सा लौकिक उद्देश्य था, जिसकी पूर्ति के लिए तुमने यह युद्ध किया। संक्षेप में मेरे पूछने का मतलब है कि मैं किस भद्र योद्धा के सम्मुख समर्पण कर रहा हूँ।"

लेकिन इसके पूर्व कि डिक उत्तर दे सकता, अन्धेरे में से एक आवाज़ उठी और फिर एक काले और सफेद बिल्ले वाले सैनिक ने सैल्यूट दिया।

"माई लार्ड", उसने कहा, "अगर ये भद्र लोग सर डेनियल के शत्रु हैं, तो यह दुःख की बात है कि हमने इन पर प्रहार किया; लेकिन इससे भी दसगुनी

हक़ीक़त यह है कि अगर उस हाउस के पहरेदार बिल्कुल गूँगे ही नहीं या मर ही नहीं चुके हैं, तो उनके कानों में इस संघर्ष की आवाज़ पड़ गई होगी। लड़ाई पन्द्रह मिनट से चल रही है और उन्होंने नगर को संकट का संकेत कर दिया होगा। इसलिए अगर हम लोग यहाँ से तत्काल नहीं चल पड़ते तो कुछ ही देर में हमें एक नए शत्रु से मोर्चा लेने पर बाध्य होना पड़ेगा।"

"हक्स्ले ठीक कहता है", लार्ड ने कहा, "आपकी क्या मर्जी है महोदय, हम किधर मार्च करेंगे?"

"नहीं माई लार्ड", डिक ने कहा, "जहाँ आपकी इच्छा हो उधर प्रस्थान करें। मुझे सन्देह होने लगा है कि कुछ आधार ऐसे अवश्य हैं जिनके कारण हम परस्पर मित्र हो सकते हैं। मगर उसका सूत्रपात अत्यन्त भौंडे तरीके से हुआ है परन्तु मैं अशिष्टतापूर्वक उसे आगे न बढ़ाऊँगा। अब हमें विदा होना चाहिए माई लार्ड, और आप अपना दायाँ हाथ मेरे हाथ पर रखकर कहेंगे कि किस स्थल पर हम मिलें और मिलकर सहमत हो जाएँ।"

"तुम आवश्यकता से अधिक विश्वासी हो, युवक", दूसरे ने कहा, "लेकिन इस बार तुम्हारा विश्वास कुपात्र में नहीं है। मैं तुमसे कल सेण्ट ब्रिज के क्रास पर मिलूँगा। अच्छा अब कूच बोलो जवानो!"

वह अजनबी लोग बड़ी तेजी के साथ उस स्थान से अदृश्य हो गए। डिक को वह बात कुछ संदिग्ध-सी जान पड़ी और जबकि उसके वनचारी लाशों को हटाने में लग गए, डिक घूमकर हाउस के मुख्य द्वार पर पहुँच गया और सामने की स्थिति का अनुमान करने के लिए इधर-उधर देखता रहा। हाउस की छत में एक सूराख था और उसमें एक बत्ती लगी हुई थी, यह बत्ती निश्चयपूर्वक सर डेनियल की हवेली से दिखाई देती थी, जिसकी ओर हक्स्ले ने इशारा किया था। और उसे विश्वास हो गया कि सर डेनियल के घुड़-सवार अविलम्ब ही उस स्थल को आकर घेर लेंगे।

उसने अपना कान ज़मीन पर रखा और उसे लगा कि जैसे नगर की तरफ़ से कोई घहराई-सी आवाज़ उभरती आ रही थी। वह तेजी के साथ सागर-तट की ओर बढ़ गया। लेकिन काम किया जा चुका था। अन्तिम लाश को निशस्त्र किया जा रहा था और खाल तक उसकी सभी चीजें उतार ली गई थीं। और चार आदमी उन्हें सागर के अङ्क में भगवान् वरुण की सेवा में

समर्पित करने के कार्य में संलग्न थे।

कुछ ही मिनट बाद जब कि वह शोरबी की गलियों को पार कर चुके थे, लगभग दो बीसी घुड़सवार शीघ्रतापूर्वक पंक्तिबद्ध हो रहे थे और सरपट दौड़ रहे थे। सागर तट की दिशा में सब कुछ शान्त हो चुका था।

इसी बीच डिक और उसके आदमी गोट के मदिरालय में आ पहुँचे थे और वह कुछ घण्टों के लिए नींद लेने के लिए लेट गए थे।

१५

सेण्ट ब्रिज का क्रास टन्सटाल जंगल के बिलकुल ही निकट और शोरबी नगर से कुछ दूर पीछे था। यहाँ पर दो रास्ते आकर मिलते थे। एक रास्ता हालीवुड से आता था जो कि पूरा जंगल पार करके आता था और दूसरा राईसिंघम से, जिस पर हमने लंकास्ट्रियन सेना का विध्वंस होते हुए देखा था। यहाँ पर ये दोनों सड़कें मिलती थीं और मिलकर शोरबी की ओर जाती थीं और इस जंकशन से कुछ दूरी पर एक छोटी-सी पहाड़ी पर यह प्राचीन क्रास खड़ा हुआ था।

यहाँ लगभग सात बजे प्रातःकाल डिक आ पहुँचा था। मौसम बहुत ही ठण्डा था और रात्रि के कोहरे से पृथ्वी पर हल्के-हल्के बर्फ की चाँदनी-सी बिछी हुई थी। और पूर्व में प्राची अपने अनेक रंगों का प्रदर्शन करके सूर्योदय की सूचना दे चुकी थी।

डिक क्रास की सबसे नीचे वाली सीढ़ी पर बैठ गया। उसने अपने शरीर पर एक अंगरखा डाल रखा था और वह बहुत ही चौकन्ना होकर इधर-उधर देख रहा था। उसे बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। उसने देखा कि हालीवुड से आने वाली सड़क पर एक बहुत ही कीमती और चमकदार जरबख्तर धारण किए और अत्यन्त असामान्य समूर से सजा हुआ कोट पहिने एक भद्र पुरुष एक बहुत ही शानदार घोड़े पर चढ़ा हुआ आ रहा है; उसके बीस क़दम की दूरी पर घुड़सवारों की टुकड़ी बढ़ती आ रही थी। घुड़सवार उस मिलन-स्थान को निकट आया देखकर रुक गए थे, लेकिन वह भद्र पुरुष फिर भी बढ़ता चला आ रहा था।

उसका तुर्रा उठा हुआ था और उसकी आकृति से उसकी प्रभुता और शान का

आभास मिलता था। यह शान उसके जरेंबख्तर और पोशाक के बिल्कुल अनुरूप थी। और डिक जिस समय अपने बन्दी का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ा तो उसके मन में कुछ ऊहापोह पैदा हो गई थी।

"आपके समय पालन के लिए, माई लार्ड, मैं आपको साधुवाद निवेदन करता हूँ।" उसने बड़े विनम्र स्वर में कहा।

"तुम यहाँ अकेले ही हो युवक ?" दूसरे ने पूछा।

"मैं इतना भोला नहीं हूँ", डिक ने कहा, "और आपसे साफ़-साफ़ निवेदन यह है कि क्रास के चारों तरफ़ का जंगल मेरे स्वामिभक्त साथियों से भरा हुआ है और वह अपने हाथियारों पर हाथ रखे लेटे हुए हैं।"

"तुमने काफ़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया", लार्ड ने कहा, "इससे मैं प्रसन्न हूँ, क्योंकि पिछली रात तुम एक वहशी मुसलमान की तरह लड़ रहे थे; एक ईसाई योद्धा की तरह नहीं। लेकिन मेरे लिए वैसी बातें करना शोभा नहीं देता जो कि स्वयं नीचा देख चुका है।"

"आपका पक्ष कमजोर तो अवश्य था माई लार्ड, क्योंकि आप गिर चुके थे", डिक ने कहा, "लेकिन अगर लहरें मेरी सहायता न करतीं तो सम्भवतः मेरा ही अन्त निकट आ गया होता। आपने अपने खंजर से कई स्थानों पर मुझे जख्मी करके मेरे मन पर विजय प्राप्त कर ली थी। ये खरोंचें अब भी मेरे लगी हुई हैं। और सच तो यह है माई लार्ड, कि रात का घना अंधकार मुझे अन्धा कर रहा था।"

"लेकिन तुमने चतुराईपूर्वक उसे प्रकाश का रूप दे दिया। मैं देखता हूँ।" उस अजनबी ने कहा।

"नहीं माई लार्ड, चतुराई से नहीं," डिक ने उत्तर दिया, "उसे मैं अपने लिए बड़प्पन नहीं स्वीकार करता। लेकिन आज जब कि दिन के इस प्रकाश में मैं यह देख रहा हूँ कि एक बलवान योद्धा ने मेरे शस्त्रों के सामने नहीं वरन् कदाचित मेरे भाग्य के सामने, उस अंधकार और लहरों के समक्ष समर्पण किया है; और किस प्रकार युद्ध का पासा मेरे जैसे अनुभव हीन, गँवार सैनिक के पक्ष में पलट गया अगर यह सब देखकर मैं अपनी विजय पर स्तम्भित रह जाऊँ तो आपके लिए आश्चर्य करने की बात नहीं होनी चाहिए।"

"तुम बहुत अच्छा बोलते हो," अजनबी ने कहा, "तुम्हारा नाम ?"

"मेरा नाम, आपको पसन्द नहीं आएगा, शैल्टन है," डिक ने कहा।

"मुझे लोग लार्ड फॉक्सम कहते हैं," दूसरे ने उत्तर दिया।

"तब, माई लार्ड, आपकी सद्भावना और संरक्षण इंगलैण्ड की सुन्दरतम रमणी को प्राप्त है," डिक ने उत्तर दिया, "तब युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में जो सागर तट पर आप अपने साथ ले गए थे, अब निश्चयात्मक रूप से निर्णय होना मुझे सरल दिखाई देता है। माई लार्ड, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप सद्भावना और उदारतापूर्वक मेरी प्रेयसी जोन सैंडले को मुझे दे दें और आप स्वयं मुक्ति प्राप्त करें और अपने अनुगतों की मुक्ति प्राप्त करें और (अगर आप प्राप्त करना स्वीकार करें, तो) मेरी कृतज्ञता और सेवाएँ जीवनपर्यन्त अंगीकार करें।"

"लेकिन क्या तुम सर डेनियल के पालित पुत्र नहीं हो, मेरा विचार है कि तुम हैरी शैल्टन के पुत्र हो; मैंने ऐसा ही सुना है।" लार्ड फॉक्सम ने कहा।

"क्या आप कुछ देर के लिए उतरने का कष्ट करेंगे माई लार्ड! मैं आपसे पूरी तरह निवेदन करना चाहता हूँ कि मैं कौन हूँ। मेरी क्या हैसियत है और मैं किस प्रकार इतनी दुस्साहसपूर्ण माँग आपके सम्मुख रख रहा हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इन सीढ़ियों पर बैठकर आप मेरी पूरी कहानी सुनें और उदारतापूर्वक निश्चय करें।"

और इतना कहते हुए डिक ने उसे घोड़े से उतरने में सहायता करने के लिए हाथ बढ़ाया। वह उसे पहाड़ी पर बने क्रास तक ले गया; उसे उस स्थान पर बैठाया, जहाँ वह स्वयं बैठा हुआ था और अपने भद्र बन्दी के सम्मुख खड़े होकर उसने पिछली रात की घटना तक की सारी कहानी कह दी।

लार्ड फॉक्सम ने गम्भीरतापूर्वक उसकी वार्ता को सुना और जब वह कहानी समाप्त हो गई त उसने कहा, "मास्टर शैल्टन, तुम एक अजीब भाग्य-वान् अभागे भद्र पुरुष हो। लेकिन जो कुछ सम्पत्ति तुम्हारे पास है उसके तुम पूर्णरूप अधिकारी हो। जो कुछ दुर्भाग्य तुम्हारे साथ कर रहा है उसको भी तुम ही जैसा आदमी अंगीकार कर सकता है। तुम हौसला रखो, तुमने ऐसा मित्र पाया है जो शक्ति और उदारता किसी में भी अकिंचन नहीं है। तुम्हारे

लिए, एक कुलीन वंश में जन्म लेने वाले युवक के लिए इन अपराधी वनचारियों में रहना शोभा नहीं देता; लेकिन मैं यह स्वीकार करता हूँ कि तुम एक बहादुर और प्रतिष्ठावान, समर-क्षेत्र में बहुत ही खतरनाक, शान्तिकाल में अत्यन्त विनम्र और शालीनवृत्ति तथा वीरोचित व्यक्तित्व वाले युवक हो। जहाँ तक तुम्हारी जागीर का प्रश्न है, जब तक दुनिया नहीं बदलती तुम उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते। जब तक लंकास्टरों का हाथ शक्तिशाली है, सर डेनियल उसे अपनी ही घोषित करके प्रयोग करता रहेगा। मेरी पालित पुत्री के लिए—बात यह है कि मैंने अपने ही परिवार के एक सदस्य के साथ जिसका नाम हेमले है—उसका विवाह तै कर दिया था और यह वचन बहुत पुराना......।"

"और माई लार्ड, अब सर डेनियल ने लार्ड शोरबी के साथ उसकी शादी करने का वचन दे दिया है," उसने टोकते हुए कहा, "और उसका वचन यद्यपि बहुत ही थोड़े समय का है परन्तु उसके ही पूरा होने की सम्भावना अधिक दिखाई देती है।"

"यह तो स्पष्ट सचाई है," लार्ड ने उत्तर दिया, "और यह सोचते हुए कि मैं तुम्हारा बन्दी हूँ, और अपने जीवन के लिए तुम्हारा कृतज्ञ हूँ और उससे अधिक यह कि लड़की एक दूसरे के हाथों में पड़कर दुख भोग रही है, मैं तुम्हें अपनी स्वीकृति देता हूँ। तुम अपने साथियों से मेरी सहायता करना।"

"माई लार्ड," डिक चिल्लाया, "वे तो यही कानून की रक्षा से वञ्चित वनचारी लोग हैं जिनके मध्य रहने का दोषी आप मुझे ठहराते हैं।"

"वह जो कुछ भी हों रहने दो, लेकिन वह लड़ सकते हैं," लार्ड फॉक्सम ने उत्तर दिया, "तब मेरी सहायता करो और आज मैं एक योद्धा की प्रतिष्ठा की साक्षी रखकर तुम्हें वचन देता हूँ कि अगर हम उसे मुक्त करने में सफल हो गए, तो उसकी शादी तुमसे ही होगी।"

डिक ने अपने बन्दी के सम्मुख झुकना शुरू कर दिया किन्तु वह योद्धा शीघ्रतापूर्वक अपने स्थान से उठा और लड़के को उसने अपने पुत्र के समान अपनी छाती से लगा लिया।

"आओ," उसने कहा, "जोन से तुम्हारी शादी होनी ही है। हम यथाशीघ्र मैत्री के सूत्र में एक दूसरे को बाँध लें।"

१६

इस मिलन के एक घण्टा बाद डिक दो वार गोट और बैगपाइप मदिरालय में वापस पहुँच गया था। वह वहाँ पहुँचकर नाश्ता करने लगा था और अपने संवादवाहकों और सन्तरियों की रिपोर्ट ले रहा था। डकवर्थ अब भी शोरबी से अनुपस्थित था और अक्सर ऐसा हो जाता था, क्योंकि वह दुनिया के अनेक हिस्सों में खेल खेलता था; उसके कार्य अनेक प्रकार के थे और वह अनेक मामलों का संचालन करता था। उसने उस काले तीर के दल का संगठन किया था, जिसकी सहायता से वह प्रतिशोध और सम्पत्ति लेता था। लेकिन जो लोग उसे अच्छी तरह जानते थे, वे उसे महान् किंग-मेकर (राजाओं का निर्माण करने वाला) अर्ल आव बारविक के एजेण्ट और एलची के रूप में भी जानते थे।

उसकी अनुपस्थिति में शोरबी के मामलों के संचालन करने का भार रिचर्ड शैल्टन के कन्धों पर आ पड़ा था। और वह जिस समय खाने पर बैठा था उसका मस्तिष्क चिन्ताओं से लदा था और उसके चेहरे पर विचारों की गहराई झलक रही थी। उसके और लार्ड फॉक्सम के मध्य यह तै हुआ था कि उस शाम को एक प्रचण्ड युद्ध करके उस युवती को मुक्त कर लेंगे।

लेकिन अड़चनें अनेक थीं क्योंकि उसके चर एक के बाद दूसरी बेचैनीपूर्ण खबरें देते जा रहे थे।

विगत रात्रि के युद्ध से सर डेनियल चौकन्ना हो गया था। बाग़ में तैनात दस्ते की संख्या बढ़ा दी गई थी और केवल उतने से सन्तुष्ट न होकर उसने पास वाली तरेटियों में घुड़सवार तैनात कर दिए थे। ताकि वे किसी भी हलचल

की गतिविधि उस तक पहुँचा सकें। अपनी हवेली में उसने घोड़ों को कसकर तैयार कर रखा था और सैनिकों को हर समय अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रहने का आदेश दे दिया था, जो कि इशारा पाते ही हवा हो सकते थे।

रात्रि का वह दुस्साहस अत्यन्त असम्भव प्रतीत होता था। तभी अकस्मात् डिक का चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा।

"लॉलेस", वह चिल्लाया, "तुम तो नौ-सैनिक रह चुके हो, क्या तुम मुझे एक जहाज चुराकर ला दे सकते हो?"

"मास्टर डिक", लॉलेस ने कहा, "अगर तुम मेरी पीठ पर रहोगे तो मैं यार्क मिन्स्टर चुराने के लिए भी तैयार हूँ।"

उसके तत्काल बाद वह दोनों बंदरगाह की ओर चल पड़े। नगर के पास ही बहुत बड़ा दोआबा था जिसके चारों ओर रेत की चट्टानें खड़ी थीं। कहीं पर काफ़ी गहरी निचली भूमि थी और कहीं पर प्राचीन स्मृतियों को ताजा करने वाले खण्डहर खड़े थे। शहर की नालियाँ और ग़रीबों की बस्तियाँ भी इधर ही थीं। कई जहाज़ और खुली हुई किश्तियाँ भी चारों ओर दिखाई देती थीं, जिन्होंने या तो अपने लंगर खोल रखे थे या वह तट पर खींच ली गई थीं। निरन्तर चलने वाली प्रतिकूल वायु ने उन्हें विशाल सागर के अंक से निकलकर बंदरगाह की शरण में आने पर मजबूर कर दिया था। काले बादलों की टुकड़ियाँ मार्च करती हुई बढ़ रही थीं और हवा के झोंके कभी बर्फ़ की बौछारें और कभी हाड़-मांस को कँपा देने वाली शीत की बाढ़ अपने साथ ले आते थे। इस सबको देखकर यह निश्चित था कि मौसम के सुधरने की कोई आशा नहीं थी, वरन् एक विशाल तूफ़ान के आने की सम्भावना बढ़ती जा रही थी।

इस तूफ़ानी वायु और शीत के कारण, अधिकांश नौ-सैनिक किनारों पर उतर आए थे और तटवर्ती विश्राम-स्थानों में पहुँचकर ऊँची आवाज़ में चम्बोले उड़ा रहे थे। अनेक जहाज अपने लंगरों पर खड़े झकोरे ले रहे थे और ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता जा रहा था, और मौसम के सुधरने की सम्भावना दूर पड़ती जा रही थी, शराब पीने और आनन्द करने वालों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती थी। खास तौर से उन जहाज़ों की ओर, जो कि अपेक्षाकृत अधिक दूरी पर खड़े हुए थे, लॉलेस ने डिक का ध्यान आकर्षित किया। और डिक, जोकि एक रेत में गड़े हुए लंगर पर बैठकर कभी झंझावात की ध्वनियों

को सुनने लगता और कभी विश्राम-स्थानों में बैठे नौ-सैनिकों के चम्बोलों को, लार्ड फॉक्सम को दिए गए अपने वचन को भी प्रायः भूल चुका था।

कन्धे पर होने वाले एक स्पर्श ने उसका ध्यान भंग कर दिया। लॉलेस उसके कन्धे झकझोर कर उसे दूर पर खड़े एक छोटे-से जहाज़ की ओर संकेत कर रहा था, जोकि हवा के झोकों से मुहाने की ओर खिसकता आ रहा था। जाड़ों की पीली रोशनी उसके डेक पर पड़ रही थी और किश्ती की ओर लपकते हुए बादलों के नीचे दो आदमी एक किश्ती को किनारे की ओर खेते ला रहे थे।

"वह जहाज है", लॉलेस ने कहा, "पहिचान लो, आज रात के लिए वही जहाज़ हम लोग प्रयोग करेंगे।"

तभी जहाज़ के किनारे से एक किश्ती दूर होती हुई दिखाई दी और दोनों आदमी किश्ती का सिर हवा की ओर रखकर तेज़ी के साथ किनारे की ओर बढ़ते दिखाई दिए। लॉलेस एक घूमते हुए आदमी की ओर मुड़ा।

उसने उस जहाज़ की ओर संकेत करते हुए पूछा, "उसका क्या नाम लेकर पुकारते हो भाई, उस छोटे जहाज़ का ?"

"उसका नाम डर्टमाउथ की गुडहोप है।" उस डोलने वाले आदमी ने कहा, "उसके कप्तान का नाम अल्बास्टर है। वह जो बल्ली से किश्ती को चला रहा है।"

लॉलेस बस इतना ही चाहता था। शीघ्रता से उस आदमी को धन्यवाद देते हुए वह उस रेतीली चट्टान की ओर बढ़ गया जिधर वह किश्ती बढ़ रही थी। वहाँ उसने अपना मोर्चा जमा लिया और जिस समय वह आवाज़ के निशाने की परिधि में आ गए उसने गुडहोप के नौ-सैनिकों पर अपना वार कर दिया।

"क्या हाल-चाल है अल्बास्टर", वह चिल्लाया, "बहुत अच्छा हुआ आप मिल गए। धर्म की सौगन्ध, बहुत ही अच्छा हुआ तुम ऐसे समय में मिल गए और वह उधर क्या गुडहोप खड़ी है ? अरे मैं हज़ारों में गुडहोप को पहचान लूँ; वाह, वाह क्या खुशनुमा किश्ती है ! आओ, मेरे बातूनी दोस्त, कुछ गपशप करें और पीएँ। तुम्हें मालूम नहीं अब मुझे मेरी जायदाद मिल गई है और अब मैंने जहाज़ों पर भटकना छोड़ दिया है। अब तो मसालों से तैयार की हुई शराबों

में ही अपना तैरना होता है। आओ दोस्त, एक पुराने नौ-सैनिक साथी के साथ बैठकर पीयो।"

कप्तान अल्बास्टर का मुँह लम्बोतरा था, आयु पकी हुई और पेशानी मौसमों की तपी हुई थी। वह अपने समय की आधुनिकतम विधि से एक बड़ा चाकू गर्दन में लटकाया हुआ था। उसके व्यक्तित्व में एक नौ-सैनिक की पूरी शान थी। और पहिले तो अल्बास्टर लॉलेस की भावुकता में अविश्वास करता हुआ पीछे हट गया, लेकिन जायदाद वापस मिलने की बात और लॉलेस की बातों से प्रकट होने वाली सादगी और भलमनसाहत की भावना को देखकर उसके चेहरे की अविश्वासी शिकनें शीघ्र ही मिट गईं और उसने अपना हाथ लॉलेस की ओर बढ़ाया। और उस वनचारी के हाथ को अपने दुर्धर्ष पंजों में इस तरह दबाया कि जैसे कोई चीज़ निचोड़ रहा हो।

"नहीं तो", उसने कहा, "मैं तुम्हें पहिचान नहीं सका दोस्त! लेकिन उससे क्या बनता-बिगड़ता है। हम तो किसी भी आदमी के साथ पीने और दो बातें कर लेने में कोई संकोच नहीं करते। यही बात हमारे टाम की है, टाम-मैन!" उसने अपने अनुगामी की ओर आमुख होते हुए कहा, "यह मेरा पुराना साथी मालूम पड़ता है। नाम तो इसका मुझे याद नहीं पड़ता। आओ चलो उसके साथ और उसके उस तट वाले साथी के साथ कुछ पीएँ-खाएँ।"

लॉलेस रास्ता दिखाता आगे-आगे चलने लगा और वह शीघ्र ही एक मदिरालय में पहुँच गया। यह स्थान नया था और एकान्त में था, इसलिए बंदरगाह के अधिक निकट पड़ने वाले मदिरालयों की अपेक्षा बहुत कम भीड़ उसमें थी। मदिरालय क्या था—एक लकड़ी का ढाँचा मात्र था और जंगल में बने लकड़ी के घरों की तरह दिखाई देता था। इसमें फर्नीचर भी बहुत थोड़ा और भद्दे क़िस्म का था। कई तख्तों की बैंचें थीं और पीपों पर बोर्ड रखकर मेजों का काम लिया जा रहा था। बीचोबीच में तत्काल काटकर लाई गई लकड़ी से जलाया गया आतिशदान सुलग रहा था, जिसमें से काले धुएँ का भभका उठ रहा था।

"हाँ, अब", लॉलेस ने कहा, "यही एक नौ-सैनिक का वास्तविक आनन्द युक्त जीवन है कि एक शानदार आतिशदान हो, सागर तट पर बने मदिरालय की तगड़ी शराब हो, बाहर बीहड़ मौसम हो, और बेगवान समुद्री झंझा बहती

हुई हो। अब 'गुडहोप' के लिए, उसकी कुशलपूर्वक यात्रा के लिए हम पीते हैं!"

"ठीक है," कप्तान अल्बास्टर ने कहा, "किनारे पर लगने के लिए यह मौसम बहुत ही मुनासिब है। तुम बोलते अच्छा हो हालाँकि मैं तुम्हारा नाम कभी भी याद नहीं कर सकता, लेकिन तुम बोलते बहुत ही अच्छा हो। भगवान 'गुडहोप' को कुशलपूर्वक यात्रा प्रदान करें। आमीन!"

"दोस्त डिकन," उसने अपने नेता को सम्बोधित करते हुए कहा, "अगर मैं भूलता नहीं हूँ तो तुम्हें कोई ज़रूरी काम करना था। कृपा करके उनसे फ़ारिग़ हो लो। मैं तो इन दोस्तों के साथ कुछ देर और बैठूंगा। हम लोग तटवासियों की तरह नहीं होते। मैं इन दोनों मित्रों को विदा करके ही लौटूँगा, लेकिन अभी तो न जाने कितनी देर और चलना है। सागर के अंक में रहने वाले हम लोग तगड़े पीने वाले होते हैं।"

"इनका इरादा नेक है," कप्तान ने उत्तर दिया, "तुम जा सकते हो, जवान, क्योंकि मैं इस विनोदी दोस्त और अपने बातूनी टाम को लेकर यहाँ कर्फ्यू (रात पड़े) तक रुकूंगा। सेण्ट मेरी की सौगन्ध, जब तक सूरज एक बार डूबकर फिर न निकल आए तब तक। क्योंकि यह समझने की बात है, जब कोई आदमी लम्बी समुद्र-यात्रा से लौटकर आता है, तो उसकी हड्डी और मज्जा तक पर नमक चढ़ जाता है; अगर वह एक कूआँ भरी शराब भी पी जाए, तो भी उसकी प्यास नहीं बुझ सकती।"

इस प्रकार सभी पीने वालों से प्रोत्साहन पाकर डिक उठ खड़ा हुआ। उसने इस गोष्ठी के मित्रों को नमस्कार किया और उस अपराह्न कालीन झंझा को चीरता हुआ वह 'गोट' और 'बैग पाइप' की ओर बढ़ गया। वहीं से उसने लार्ड फॉक्सम को ख़बर भिजवा दी कि सन्ध्याकाल में उनके हाथ में एक मजबूत किश्ती आ जाएगी और उसी से सागर के रास्ते वे बढ़ जाएँगे और अपने साथ कुछ वनचारियों को लेकर, जिन्हें थोड़ा-बहुत सागर का अनुभव था वह बन्दरगाह की ओर चल दिया और रेत की चट्टान के निकट पहुँच गया।

'गुडहोप' किश्ती अनेक दूसरी किश्तियों के बीच खड़ी हुई थी, लेकिन अपनी लघुता और जीर्णता के कारण अलग पहिचानी जा सकती थी। डिक और उसके दो आदमी जिस समय उस स्थान से निकलकर लंगर डालने के स्थान की ओर बढ़ने के लिए किश्ती पर खड़े हो गए, तो वह घोंघानुमा किश्ती

लहरों में घुसकर, हर हवा के झोंके के सम्मुख लड़खड़ाती हुई ऐसे चलने लगी, जैसे कि बस अब डूबी कि अब डूबी !

'गुडहोप' जैसा कि हम कह चुके हैं, उस स्थान पर लंगर डाले खड़ी थी जहाँ लहरों का सबसे अधिक वेग था। उस जहाज़ के निकट उस समय कोई भी जहाज नहीं था और जो कोई थे भी वे भी बिलकुल निर्जन थे। जिस समय यह किश्ती जहाज़ के निकट पहुँची, तो वर्फ़ की एक मोटी बौछार आई और मौसम अकस्मात् अन्धकार युक्त हो गया, जिसके कारण इन वनचारियों का जहाज पर चढ़ना किसी प्रकार की जासूसी के भय से बिलकुल मुक्त हो गया। वह त्रिगुट बनाकर डेक पर कूद गए और वह छोटी किश्ती पानी में खड़ी घन्नाती रही। 'गुडहोप' पर कब्ज़ा कर लिया गया था।

'गुडहोप' एक बहुत ही मजबूत किश्ती थी और पतवार तथा मस्तूलों से चलने वाली फेलुका (दो मस्तूलों तथा पतवारों से युक्त) और लंगर (तीन मस्तूलों से चलने वाली) के बीच की चीज़ थी। मालूम यह होता था कि कप्तान अल्बास्टर ने कोई शानदार यात्रा की थी, क्योंकि फ्रांसीसी शराब के पीपे और छोटी-सी केबिन में 'वर्जिन मेरी' रखी हुई थी। जिससे कप्तान की धर्मप्रियता की सूचना मिलती थी। बहुत-से बड़े-बड़े सन्दूक भी रखे थे जिनमें ताले ठुके हुए थे और कपबोर्ड लगे हुए थे। मालूम होता था कि अल्बास्टर एक बहुत ही सतर्क और मालदार आदमी था।

एक कुत्ता, जो कि इस समय जहाज़ पर बिलकुल अकेला था, इन चढ़ने वालों पर क्रुद्ध होकर भौंक रहा था। उनकी एड़ियाँ काट रहा था किन्तु उसे शीघ्र ही ठोकर मार-मारकर केबिन में घुसेड़ दिया गया। एक लैम्प जला लिया गया और उसे मस्तूल की बल्ली में टाँग दिया गया ताकि जहाज़ किनारे से स्पष्ट दिखाई पड़ सके। शराब का एक पीपा खोल लिया गया और एक-एक प्याला गैस्कोनी शराब का पी लिया गया। इस प्रकार तरो-ताजा होकर एक वनचारी तीर-कमान लेकर आने वालों को रोकने के लिए खड़ा हो गया और दूसरा छोटी किश्ती में बैठकर डिक के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा।

"अच्छा, जैक बहुत चौकस होकर पहरा देना," इस तरुण नायक ने अपने सेवक का अनुकरण करते हुए कहा, "मुझे उम्मीद है तुम सब ठीक-ठाक कर लोगे।"

"क्यों नहीं," जैक ने उत्तर दिया, "जिस समय तक हम यहाँ बंदर में लंगर डाले पड़े हैं, तब तक हम बिलकुल सुरक्षित हैं, लेकिन एक बार इस ग़रीब किश्ती ने समुद्र में अपनी नाक बढ़ाई तो बस ! देखो वह किस तरह काँप रही है। देखो वह ग़रीब हमारी बातें सुन रही है और उसका हृदय काँप रहा है। लेकिन देखो तो मास्टर डिक, मौसम कितना भयावह होता जा रहा है !"

इसमें सन्देह नहीं कि अन्धकार अत्यन्त गहन होता जा रहा था। उस अन्धकार में एक के बाद एक लहर उठकर आती थी और 'गुडहोप' उन्हें चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। बर्फ़ की एक हल्की-सी बौछार और सागर के झाग उड़कर डेक पर आए और वहाँ बर्फ़ की चादर-सी बिछ गई। झंझावात मस्तूलों की रस्सियों में चीखने लगी थी।

"धर्म की सौगन्ध", डिक ने कहा, "मौसम बड़ा तूफ़ानी होता जाता है पर हौसला रखो; यह झोंका आया है, जो बस, पलक-मारते उतर जायगा।" लेकिन अपने इन उत्साह भरे शब्दों के बावजूद भी आकाश में उस हलचल और हवा की चीख-पुकार से वह बुरी तरह आतंकित हो उठा था और जिस समय पतवारों की तीव्र गति से नौका किनारे की ओर बढ़ रही थी, तो डिक मन ही मन उन समस्त यात्रियों के जीवन के लिए प्रार्थना कर रहा था।

किनारे पर इस समय तक एक दर्जन के लगभग वनचारी इकट्ठे हो चुके थे। इनके लिए किश्ती उतार दी गई और उन्हें तत्काल ऊपर चढ़ आने का हुक्म हुआ।

सागर तट के कुछ दूरी पर लार्ड फॉक्सम डिक की तलाश में घूम रहे थे। उनका मुँह एक काले हुड से ढका हुआ था। और उनके चमकदार अस्त्र-शस्त्र एक घटिया-से अंगरखे से ढके हुए थे।

"तरुण शैल्टन", उन्होंने कहा, "तो क्या सचमुच तुमने समुद्र-मार्ग से चलने की पूरी तैयारी कर ली है?"

"माई लार्ड", रिचर्ड ने कहा, "वे लोग घुड़सवार लेकर हाउस के चारों ओर पड़े हुए हैं। बिना संकट के हम खुश्की के मार्ग से आगे नहीं बढ़ सकते और सर डेनियल ने एक बार हमारे बारे में चारों ओर ख़बर फैला दी है तो हवा पर चढ़कर इस मुहिम पर हम क़ामयाब हो सकते हैं। समुद्र के रास्ते से जाकर हम लोग थोड़ा इस प्राकृतिक अवरोध का सामना तो अवश्य करने पर

बाध्य होंगे परन्तु इस प्रकार हम अपने उद्देश्य की पूर्ति अधिक आसानी से कर सकेंगे और उस वीरांगना को मुक्त कर सकने में अवश्य सफल हो जाएँगे।"

"बहुत अच्छा", लार्ड फॉक्सम ने कहा, "आगे बढ़ो, हालाँकि मैं अपमान से मुक्त होने के लिए तुम्हारा अनुगमन करूँगा किन्तु मैं चाहता हूँ कि मैं इस समय विस्तर में होता तो अच्छा होता।"

"तब हम", डिक ने कहा, "अपने पायलट को लेने चलते हैं।"

और तब वह उस टूटे-फूटे मदिरालय की ओर चल पड़ा जहाँ उसने अपने कुछ आदमियों को इकट्ठा होने का समय दे दिया था। उनमें से कुछ लोग दरवाज़े के बाहर ही इधर-उधर घूम रहे थे और कुछ साहस करके अन्दर चले गये थे और अपने कामरेड के अत्यन्त निकट पहुँच गये थे, जो कि उन दोनों नौ-सैनिकों से घिरा हुआ बैठा था। उनकी अस्वाभाविक मुद्रा और बादलों जैसी आँखों को देखकर यह भली भाँति कहा जा सकता था कि वह सामान्य से बहुत अधिक पी चुके हैं। और जिस समय लार्ड फॉक्सम के साथ डिक उनके पास पहुँचा तो उस खड़खड़ करके चलने वाली झंझावात के ताल पर वे कोई पुराना सामुद्रिक गीत गुनगुना रहे थे।

इस युवक नेता ने एक तेज़ निगाह उस शेड पर डाली। आग अभी-अभी सुलगाई गई थी और ढेर-सा काला धुआँ छोड़ रही थी। जिसके कारण दूर के कोनों में कुछ भी देखना असम्भव हो गया था। लेकिन यह स्पष्ट था कि वनचारी लोग दूसरे मेहमानों से संख्या में बहुत अधिक थे। इसलिए एक आत्मविश्वास की भावना लेकर डिक अपने स्थान पर जाकर बैठ गया।

"हे", कप्तान ने मदमाती आवाज़ में कहा, "तुम कौन हो, हे?"

"मैं तुमसे दो बातें एकान्त में करना चाहता हूँ मास्टर अर्ल्बास्टर", डिक ने कहा, "और इस चीज़ के बारे में हम बातें करेंगे", उसने आतिशदान में जलने वाली रोशनी में एक अँगूठी दिखाते हुए कहा।

उस नौ-सैनिक की आँखें चल उठी थीं, हालाँकि उसने अभी तक भी हमारे नायक को पहिचाना नहीं था।

"छोकरा", उसने कहा, "मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ, गौसिप (टाम मैन का उपनाम) मैं अभी लौटता हूँ। अच्छी तरह पीओ गौसिप।" और अपने

लड़खड़ाते पैरों को सम्भालने के लिए वह डिक का बाज़ू सम्भालकर चलने लगा।

ज्योंही उसने ड्यौढ़ी से बाहर क़दम रखा, दस मज़बूत हाथों ने उसे जकड़ लिया और दो मिनट में ही उसके अंग-प्रत्यंग रस्सी से जकड़ लिए गए और मुँह में कपड़ा ठूँसकर उसे एक सूखी घास के ढेर में फेंक दिया गया। इसी प्रकार टाम भी हस्तगत कर लिया गया और उसे भी उसी के निकट लेटा दिया गया। और वह दोनों आदमी रात्रि में स्वप्न लेने के लिए वहीं पड़े रहने दिए गए।

और अब क्योंकि छिपकर काम करने का समय व्यतीत हो चुका था, लार्ड फॉक्सम ने अपने अनुगामियों को पूर्व निश्चित संकेत देकर बुलवा लिया और आवश्यकतानुसार किनारे पर खड़ी किश्तियों पर कब्ज़ा करते हुए वे अपने जहाज़ की ओर चल पड़े। जिस समय इस दल का अन्तिम आदमी भी जहाज़ पर चढ़ गया, तो किनारे पर से कुछ आदमियों के शोर मचाने की आवाज़ आई, जिन्हें अपनी किश्तियों के उड़ा लिए जाने का संदेह हो चुका था।

लेकिन अब इनकी प्राप्ति या प्रतिशोध के लिए समय निकल चुका था। इस समय जो लगभग चालीस आदमी जहाज़ पर चढ़े हुए थे उनमें आठ समुद्रों पर रह चुके थे, और वह भली भाँति मल्लाही का कार्य कर सकते थे। इनकी सहायता से जहाज़ के मस्तूल उठा दिए गए। केबिल काट डाले गए। लॉलेस अपने क़दमों पर जमकर खड़ा हो गया और एक प्राचीन गीत गाते हुए उसने सबसे बड़ी बल्ली अपने हाथ में ले ली और 'गुडहोप' अंधकार में बन्दरगाह के बाहर वाली विशाल लहरों से टकराती हुई बढ़ने लगी।

रिचर्ड ने अपना स्थान मौसम को रोकने वाली रस्सियों में बनाया। इस जहाज़ की अपनी लालटैन और शोरबी में चमकने वाली कुछ बत्तियों को छोड़कर चारों तरफ़ अंधकार ही अंधकार था और ये बत्तियाँ भी अब टिम-टिमाती दिखाई पड़ती जा रही थीं। केवल थोड़ी-थोड़ी देर बाद, 'गुडहोप' जैसे ही बड़ी-बड़ी लहरों के अन्दर पहुँचती जाती थी, कुछ बर्फ़ के टुकड़े टूटकर गिरते और कुछ देर बाद पीछे छूटते जाते।

कई आदमी अपने स्थानों परकुछ न कुछ पकड़े हुए पड़े थे और ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना उच्चारण कर रहे थे। बहुत-से आदमी और भी दुखी अनुभव कर

रहे थे और वह तलहटी में पहुँचकर सामान के साथ चिपक गए थे। लेकिन जहाज़ की तीव्रगति और लॉलेस के उन्मादयुक्त साहस के बावजूद भी—जो कि अब भी ऊँची आवाज़ में चिल्ला रहा था और गाता जा रहा था—साहसी से साहसी नौ-सैनिक भी उस मुहिम के दुष्परिणाम से भयभीत हो सकता था।

लेकिन लॉलेस जैसे अपनी अन्तःचेतना से प्रेरित होकर उस बर्फ़ीले सागर को चीरता ही जा रहा था और एक रेतीले किनारे के निकट पहुँच गया था। यहाँ पहुँचकर थोड़े समय के लिए जहाज़ को खेने में सुगमता अनुभव होने लगी थी। शीघ्र वे एक पथरीली चट्टान के निकट पहुँच गए जहाँ कि जहाज़ को बहुत तेज़ी के साथ आगे बढ़ाया गया। जहाज़ गोते खाता और हवा के वेग के कारण चक्कर काटता हुआ आगे बढ़ रहा था।

१७

यह घाट, उस मकान से जहाँ जोना बन्दी थी, बहुत दूर न था। बस केवल आदमियों के किनारे पर उतरने की देर थी। एक मजबूत दल द्वारा मकान को घेर लेने की और द्वारों को तोड़कर बन्दी को मुक्त करने भर की देर थी।

उस समय 'गुडहोप' की सार्थकता उनके लिए समाप्त हो चुकी थी। इसने उन्हें शत्रुओं की पीठ पर स्थापित कर दिया था और अब अपने प्रमुख मुहिम पर वह सफल हों अथवा असफल लेकिन अब उन्हें लौटना जंगल के रास्ते से होगा और लौटकर लार्ड फॉक्सम के प्रदेश में चले जाना होगा।

लेकिन लोगों को किनारे पर उतारना सरल कार्य न था। उनमें बहुत-से बीमार पड़ गए थे, बहुत-से ठण्ड के मारे हुए पड़े थे और जहाजी सफर की अनुशासनहीनता और उथल-पुथल ने उनके साहस को भंग कर दिया था। जहाज की हलचलों और रात्रि के बीहड़ अंधकार ने उनके रक्त को बिलकुल ठण्डा कर दिया था। उस समय लार्ड फॉक्सम स्वयं अपनी ही सेनाओं पर तल-वार खींचकर उन्हें किनारे की ओर हाँकने लगे और वह स्वयं नीचे कूद गए।

जब यह अशान्ति थोड़ी कम हुई तो डिक अपने चुने हुए आदमियों को लेकर आगे बढ़ा। किनारे का अंधकार लहरों की चमक के मुकाबले में एक काले दैत्य-सा मालूम पड़ता था। और झंझा का वेग इतना प्रचण्ड था कि उससे हल्के सभी स्वर उसमें डूब जाते थे।

वह मुश्किल से घाट के बाहर पहुँचा होगा कि वहाँ वायु का वेग कुछ कम हो गया और इस खामोशी के वातावरण में उसने देखा कि किनारे पर घोड़ों के सुमों की खटखट और शस्त्रों की झंकार हो रही है। उसने अपने पीछे आने

वालों को इशारे से रोक दिया और आप दो क़दम आगे बढ़कर यह देखने लगा कि घोड़े आखिर किस दिशा में बढ़ रहे हैं। लेकिन तत्काल उसका साहस उसे धोखा देने लगा। अगर उनके शत्रुओं को इस आक्रमण का पता लग गया है और उन्होंने घाट को घेर रखा है, तो वह और लार्ड फॉक्सम सुरक्षा की दृष्टि से बहुत ही बुरी स्थिति में फँस जाएँगे। उसने एक चेतावनी की सीटी बजाई।

लेकिन इस संकेत का दुष्परिणाम उसकी अपनी आशा से बहुत अधिक निकला। तत्काल अंधकार में से तीरों की बौछार उनके ऊपर पड़ी और घाट पर आदमी इतने निकट थे कि बहुत-से आदमी घायल हो गए। इन तीरों का प्रत्युत्तर भय और पीड़ा से निकलने वाली चीखों ने दिया। इस पहिले ही आक्रमण में लार्ड फॉक्सम घायल हो चुके थे और हक्स्ले उन्हें तत्काल जहाज़ पर ले गया था। इस संघर्ष के कुछ ही क्षण वे लोग लड़े (अगर उसे लड़ना स्वीकार किया जाए) लेकिन बिना किसी के नेतृत्व स्वीकार किए। यही सम्भवतः इस विध्वंस का प्रमुख कारण था।

घाट के एक कोने में डिक अपने मुट्ठी भर आदमियों को लेकर मोर्चा लगाए हुए था। उधर आमने-सामने युद्ध हो रहा था और दोनों ओर से कुछ लोग घायल हुए। तभी जहाज़ पर से हवा इस पार्टी के विपक्ष में बदल गई। जहाज़ पर से किसी ने कहा कि सारा खेल खत्म हो चुका है। इस आवाज़ को बड़ी उत्सुकता से स्वीकार किया गया। "अपनी जिन्दगी के लिए, जवानो! जहाज़ पर चढ़ आओ", और एक तीसरी आवाज़—जो कि एक पूरे कायर की आवाज़ थी—उठी कि "हमारे साथ विश्वासघात किया गया है।" और उसी क्षण वह भीड़ आपस में एक दूसरे को धकेलती हुई जहाज़ की ओर भागने लगी। सैनिक अपना पीछा करने वालों के सम्मुख रक्षाहीन विभिन्न प्रकार की चीखें मारते भाग रहे थे। एक कायर जहाज़ के पृष्ठभाग को धकेल रहा था और दूसरा पतवारों से भिड़ रहा था। भगोड़े चीख मारकर उछले और आकर जहाज़ पर लटक गए, कुछ घबराकर समुद्र में गिर गए और डूबकर मर गए। कुछ को घाट पर पीछा करने वालों ने मार डाला। कई लोग डेक पर आकर भी जख्मी हो गए क्योंकि वे एक दूसरे के ऊपर कूदने से गिर गए थे।

तभी योजनापूर्वक अथवा संयोग से 'गुडहोप' के मस्तूल फिर हवा में

लहराने लगे और जहाज़ चल पड़ा। और सदा समुद्यत लॉलेस जिसने इस समस्त भदगड़ में अपनी शक्ति और शस्त्रबल पर ही अपनी जगह बनाए रखी थी, तत्काल अपनी जगह पर पहुँच गया। जहाज़ एक बार फिर उस तूफ़ानी सागर की छाती पर तैरने लगा। उसकी मोरियों में से रक्त बह रहा था और उसके डेक पर आदमी दम फुलाए पड़े थे और रेंग रहे थे।

तभी लॉलेस ने अपना खञ्जर म्यान में बन्द कर लिया और अपने पड़ोसी से बोला, "मैंने अपने निशान उन पर छोड़ दिए हैं, दोस्त," उसने कहा, "उन भौंकते हुए कायर कुत्तों पर।"

अब तब क्योंकि लोग अपनी ज़िन्दगी के लिए संघर्ष कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उन जख़्मों और कटावों पर ग़ौर नहीं किया था, जो कि लॉलेस ने अपनी जगह पर क़ायम रहने के लिए उनके जिस्मों पर बना दिए थे। लेकिन अब उनकी समझ में अच्छी तरह आ गया था और शायद एक आदमी इस पायलट की वक्तृता को सुन चुका था।

भगदड़ में फँसी फौजें अपने साहस को ज़रा देर से प्राप्त करती हैं किन्तु जब करती हैं तो बिल्कुल विरोधी धारा में बह उठती हैं। और इस समय वही लोग जो एक क्षण पहिले अपने हथियार फेंक चुके थे और सिर पर पैर रखकर भागे थे, 'गुडहोप' में आकर छिपे थे, अब अपने नायकों पर गुर्राने लगे। उनकी माँग थी कि किसी को दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

यह बढ़ती हुई दुर्भावना लॉलेस के विरुद्ध पड़ने लगी।

लोगों को रास्ते पर लाने के लिए लॉलेस ने जहाज़ को समुद्र की ओर खोल दिया था।

"क्या ?" किसी एक गुर्राने वाले ने कहा, "क्या वह हमें फिर समुद्र के बीच ले जा रहा है ?"

"हमारे साथ विश्वासघात किया गया है !" एक दूसरे ने कहा।

वह सभी एक स्वर से पुकारने लगे कि उनके साथ विश्वासघात किया गया है। और चीख़ती हुई आवाज़ों से बुरी-बुरी कसमें देकर वह लॉलेस से कह रहे थे कि वह उन्हें किनारे की ओर ले चले। लॉलेस क्रोध से दाँत पीसता हुआ, उत्ताल सागर तरंगों को चीरता हुआ जहाज़ को ठीक रास्ते पर ले जा रहा था। उनकी थोथी धमकियों और अपमानजनक भयों का उत्तर देने से भी

वह नफ़रत करता। ये बुरे लोग मस्तूल के निकट जमा होने लगे थे और दाने की तलाश में निकले मुर्गों की तरह वह साहस संचय कर रहे थे। उनकी स्थिति ऐसी हो गई थी कि वह बड़ी से बड़ी अकृतज्ञता और अन्याय कर सकते थे। डिक फैसला करने के लिए सीढ़ी से ऊपर चढ़ने लगा था लेकिन एक दूसरा आदमी जो कि थोड़ा नौ-सैनिक भी था, उससे पहिले ऊपर चढ़ आया था।

"जवानो," उसने कहा, "तुम्हारे दिमाग़ ख़राब हो गए हैं। वापस जाने के लिए हमें गहराई की ओर बढ़ना चाहिए और यह बेचारा लॉलिस······"

किसी ने वक्ता के मुँह पर प्रहार किया और अगले ही क्षण जैसे सूखे तिनके को आग निमिष मात्र में भस्म कर देती है, वह डेक पर गिर गया। पैरों द्वारा कुचल दिया गया और उसके शरीर में खंजर घुसेड़ दिया गया। इस पर लॉलिस के क्रोध का बाँध टूट गया और वह ऊपर चढ़ गया।

"अपने आप जहाज़ चलाओ," वह गालियाँ देते हुए गर्जा और मस्तूल को छोड़कर एक तरफ़ हट गया, परिणाम की उसे चिन्ता न थी।

'गुडहोप' उस समय गहनतम सागर पर हिलोरें ले रही थी। वह शिथिल गति से दूसरी ओर बढ़ने लगी। एक लहर दुर्धर्ष शत्रु की तरह उसके सम्मुख खड़ी हो गई और एक लड़खड़ाने वाले प्रहार को सहती हुई वह इस तरह चट्टान के अन्दर सिर करके बढ़ गई। वह लहर 'गुडहोप' के तल से लेकर मस्तूल तक उतर गई और वह थोड़ी देर बाद दूसरी ओर जा निकली। और वह इस तरह चक्कर काट रही थी जैसे भयानक घाव से पीड़ित कोई पशु हो।

छै या सात कायर सैनिक लहर के साथ ही बह गए थे। और शेष जब उनके मुँह में जबान आई तो देवताओं से प्रार्थना करने लगे थे और लॉलिस के सामने जहाज़ की पतवार सँभाल लेने के लिए गिड़गिड़ा रहे थे।

लॉलिस ने भी दोबारा कहे जाने की प्रतीक्षा नहीं की। उसके उस न्याय-प्रिय प्रतिरोध का जो भयंकर परिणाम हुआ था, उससे उसका गुस्सा समाप्त हो गया था। औरों से अधिक वही स्वयं जानता था कि उसके पैरों के नीचे 'गुडहोप' किस प्रकार पानी की सतह के बिलकुल नीचे आ गई थी और जिस सुस्त रफ़्तार से उसने चलना आरम्भ कर दिया था; उससे यह प्रकट होता था कि संकट अभी समाप्त नहीं हुआ है।

और डिक, जो कि इस भयंकर वेग से गिर गया था और प्राय: डूब चुका था, अपने घुटने पकड़कर उठा और जहाज़ के पेंदे में पानी को खूँदता हुआ लॉलेस की ओर बढ़ा।

"लॉलेस", उसने कहा, "हम सब लोगों का जीवन तुम पर ही निर्भर है, तुम एक बहादुर और सशक्त आदमी हो, और जहाज के संचालन में निष्णात हो; अब मैं तीन आदमी तुम्हारी हिफ़ाजत के लिए खड़ा कर देता हूँ।"

"व्यर्थ है मेरे मालिक, व्यर्थ है", नाविक ने अंधकार में झाँकते हुए कहा, "हम प्रत्येक क्षण इन रेतीले किनारों से दूर होते जाते हैं। और तब हम गहन सागर में प्रवेश कर जाएँगे और जहाँ तक इन रिरियाने वालों का सम्बन्ध है, ये सभी अपनी कमर के बल डूबते-उछलते हुए होंगे। क्योंकि मेरे मालिक, यह एक आश्चर्यजनक रहस्य है परन्तु सच है कि आज तक कोई भी बुरा आदमी अच्छा खेवट कभी नहीं हो सका। केवल एक ईमानदार आदमी ही इस जहाज़ को उलटने से बचा सकता है।"

"नहीं लॉलेस", डिक ने हँसते हुए कहा, "वह तो तुम्हारा तकिया-कलाम है और इसमें वायु के द्वारा बजने वाली सीटी से अधिक कोई सार्थकता नहीं है। लेकिन मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे बताओ कि अब हम किस स्थिति में हैं? क्या हम सकुशल हैं?"

"मास्टर शैल्टन", लॉलेस ने उत्तर दिया, "मैं एक महन्त रह चुका हूँ—मुझे भाग्य पर अटल भरोसा है—एक तीरंदाज, चोर और एक नौ-सैनिक भी रह चुका हूँ। इन तमाम पेशों में एक महन्त के रूप में अपनी इहलोक-यात्रा समाप्त करने की मेरी आकांक्षा है, और नौ-सैनिक के जाकेट को पहिनकर मरने के लिए तो मैं बिलकुल ही तैयार नहीं हूँ। इसके दो कारण हैं। पहिला कि मौत आदमी को यहाँ अकस्मात दबा लेती है और दूसरा कि मेरे पैरों के नीचे यह नाव जो है।" और उसने अपने पैर पटकते हुए कहा, "इसके हाल-चाल खराब हो गए हैं। और अगर मैं एक जहाज़ी की मौत नहीं मरता हूँ तो मैं एक बड़ी मोमबत्ती देवी पर चढ़ाऊँगा।"

"क्या सच?" डिक ने पूछा।

"यह बिलकुल ठीक है", वनचारी ने उत्तर दिया, "आप देखते हैं यह कितनी सुस्त चाल से खिसक रही है। क्या आप उसकी तलहटी में पानी

झकोले मारता नहीं सुन रहे हैं ? और अगर यह थोड़ी और पानी में डूब गई तो या तो एक प्रस्तर मूर्ति के समान पानी की सतह में ग़र्क़ हो जाएगी या फिर हम किनारे पर जाकर टकरा जाएँगे और रस्सी के बटाव की तरह टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।"

"तुम अब भी साहस के साथ बोल रहे हो", डिक ने कहा, "तो फिर तुम भयभीत नहीं हो न ?"

"क्यों मालिक", लॉलेस ने उत्तर दिया, "अगर किसी गुनहगार यात्री ने कभी जहाज़ से यात्रा की है, तो मुझसे अधिक—नास्तिक महन्त, चोर और न जाने क्या-क्या गुनाह जिसके सिर पर हैं—गुनहगार कौन होगा ? आप आश्चर्य कर सकते हैं, लेकिन मुझे अपने आप पर विश्वास है और अगर आज मैं डूबने भी लगा तो मुझे अफसोस नहीं होगा और मैं हाथ-पैरों से मजबूत ही मरूँगा।"

डिक ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि वह पुराना गुण्डा कितना दृढ़ निष्ठा का आदमी है। और वह नए विश्वास-घात और हिंसा का सामना करने के लिए तीन संरक्षकों की तलाश में चला गया। बहुत-से लोगों ने डेक को छोड़ दिया था। डेक पर ठण्डे पानी की बौछारें लगातार पड़कर उसे गीला कर रही थीं और सर्दी की कठोरता को उत्तरोत्तर बढ़ा रही थीं। अधिकांश लोग सामान लादने के हिस्से में चले गए थे और वहाँ अल्बस्टिर की शराब पीने में मस्त हो गए थे। दो धीमी लालटेनें रस्सियों से बंधी इधर-उधर डोलती हुई लटक रही थीं।

यहाँ पहुँचकर कुछ लोगों में फिर से मस्ती आ गई थी। धुएँ की तरह गहरी लहरों को चीरती हुई 'गुडहोप' बढ़ रही थी। उसका पृष्ठभाग कभी ऊँचा उछलकर हवा में लहरा जाता था और तत्काल बाद सफेद झागों में खो जाता था। बहुत-से लोग अलग-अलग बैठे अपने घावों पर पट्टियाँ बांध रहे थे। लेकिन ज्यादा लोग अभी भी बीमारी से परिक्लांत नीचे की पेटी में पड़े कराहें भर रहे थे।

ग्रीनशेव, कक्कू और लार्ड फॉक्सम के लोगों में से एक जवान—पहिले ही डिक ने जिसकी समझदारी और उत्साह के लिए प्रशंसा की थी—अब भी

अच्छे थे और आदेश पालन के लिए उत्सुक और समर्थ थे। इन्हें डिक ने मल्लाह की रक्षा करने के लिए नियुक्त कर दिया। और तब काले आसमान और सागर की ओर एक निगाह फेंककर वह केबिन में चला गया जिधर लार्ड फॉक्सम के आदमी उसे उठाकर ले गए थे।

१८

उस आहत सामन्त की कराह जहाज़ के कुत्ते के रुदन-स्वर में विलीन हो गई थी। वह ग़रीब कुत्ता या तो अपने अन्तरंग मित्रों के वियोग से दुखी था या फिर जहाज़ की गतिविधि से किसी संकट की सम्भावना करके वह चीख़-पुकार मचा रहा था—कहा नहीं जा सकता था किन्तु वह 'मिनट गन' की तरह भौंकता था; लहरों और मौसम की गड़गड़ाहट से भी ऊपर उसका भौंकना सुन पड़ता था। और अधिक अंधविश्वासी लोग इन आवाजों में 'गुड होप' के सर्व-नाश की सूचना पा रहे थे।

लार्ड फॉक्सम को समूर के लबादे से ढककर एक बर्थ पर लेटा दिया गया था। सामने मरियम के सम्मुख एक दीपदान में एक चिराग़ जल रहा था। उसकी धीमी रोशनी में डिक उस घायल सामन्त की पीली मुख-मुद्रा को भली भाँति देख सकता था।

"मैं बहुत बुरी तरह घायल हुआ हूँ," उसने कहा, "मेरे निकट आओ शैल्टन! कम से कम मेरे निकट एक आदमी तो ऐसा रहे जिसकी उत्पत्ति कुलीन वंश में हुई हो। भद्रता और वैभव का जीवन व्यतीत करने के बाद आज इस छोटी-सी लड़ाई में घायल होकर, इस टूटे-फूटे जहाज में ऐसे वकवासी और कायर सैनिकों के मध्य मैं पड़ा हूँ—इससे बड़ी विडम्बना मेरे लिए और क्या हो सकती है।"

"धीरज रखिए माई लार्ड," डिक ने कहा, "मैं भगवान से यह प्रार्थना करता हूँ कि आपका घाव शीघ्र ठीक हो जाए और आप एक स्वस्थ आदमी के रूप में तट पर क़दम रखें।"

"किस प्रकार," सामन्त ने पूछा, "स्वस्थ रूप में तट पर मैं क़दम रख सकता हूँ ? यह प्रश्न भी तो है ?"

"जहाज़ किसी तरह लुढ़क रहा है—आकाश में संकट के बादल छाए हैं और वायु प्रतिकूल है—" युवक ने उत्तर दिया, "तथापि जहाज़ के चालक ने बताया है कि अगर वर्षा न हुई तो हम लोग कुशलतापूर्वक किनारे पर लग जाएंगे।"

"हा !" सामन्त ने चिन्तित होते हुए कहा, "इस प्रकार प्रत्येक प्रकार का भय मेरे सीने पर सवार रहेगा। ऐसे समय में उचित यही है कि इस कठोर जीवन के स्थान पर हम लोगों को सरलतापूर्वक मृत्यु का ही सहारा मिल जाए। जीवन पर्यन्त निर्धनों और मूर्खों का जीवन बिताते हुए भटकना क्या शोभा देता है ! खैर कुछ भी हो, मेरे मस्तिष्क में यही अशुभ बसा हुआ है। यहाँ हमारे पास कोई पादरी नहीं है ?"

"कोई नहीं," डिक ने उत्तर दिया।

"तब मेरे लौकिक हितों की दृष्टि से सुनो," लार्ड फॉक्सम ने कहना जारी रखा, "मुझ मृतक के प्रति तुम मैत्री का दायित्व निभाओगे; मुझे विश्वास है, उसी प्रकार जैसे मैंने तुम्हें एक बहादुर शत्रु के रूप में पाया। आज मैं बुरी घड़ी में जा रहा हूँ। कितने लोगों की आशा और विश्वास मेरे निधन से टूट जाएंगे। हेमले—जो कि तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी है—सेना को हालीवुड में एक स्थान पर लाकर खड़ा करने वाला है—तुम मेरी अंगूठी लेकर जाओ और मेरे आदेश-वाहक बनो, इसके अतिरिक्त मैं कुछ लिखकर भी दूँगा—इस काग़ज पर दो शब्द हेमले के लिए, कि वह उस लड़की को तुम्हें दे दे। वह मेरे आदेश का पालन करेगा—मैं नहीं जानता।"

"लेकिन, माई लार्ड, किस प्रकार के आदेश ?" डिक ने पूछा।

"ऐ," सामन्त कहता है, "ऐ—आदेश," और उसने डिक की ओर एक झिझक के साथ देखा, "तुम लंकास्टर हो अथवा यार्क ?" आखिरकार उसे पूछना पड़ा।

"मुझे यह कहते हुए लज्जा आती है," डिक ने उत्तर दिया, "मैं मुश्किल से इसका स्पष्ट उत्तर दे सकता हूँ। लेकिन इतना तो—मैं सोचता हूँ—निश्चित है कि चूँकि मैं एलिस डिकवर्थ के साथ काम करता हूँ, मैं यार्क वंश की ही सेवा

करता हूँ और अगर उसे स्वीकार कर लिया जाए, तो मैं यार्क हूँ।"

"यह बहुत अच्छा है," दूसरे ने उत्तर दिया, "यह बहुत ही अच्छा है। क्योंकि सचाई यह है कि अगर तुम लंकास्टर होते तो मैंने जो कुछ किया है उसके लिए मैं दुनिया के सामने मुँह लेकर खड़ा नहीं हो सकता। लेकिन बैठो, तुम तो यार्कवंश के पक्ष वाले हो। जैसा मैं कहूँ वैसा करो। मैं इधर शोरबी के लार्डों की सैनिक गतिविधि जानने आया था, जब कि मेरा शानदार छोटा लार्ड रिचर्ड आव ग्लौसेस्टर एक विशाल शक्ति का संगठन कर रहा है ताकि इन पर आक्रमण करके इन्हें तितर-बितर किया जा सके। मैं उनकी शक्ति का कोई अन्दाज़ नहीं लगा सका हूँ; उनके पास कितनी सेना है, कितनी गारद रखते हैं और यही चीजें मुझे अपने युवक लार्ड को आज दोपहर से पहिले वन के निकट सेण्ट ब्रिज के पास बतानी थीं। मैं यह संवाद वहाँ पहुँचाने की स्थिति में नहीं हूँ किन्तु मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरे स्थान पर यह सूचना वहाँ पहुँचाओ। याद रखना कि किसी प्रकार के आनन्द का लोभ, दुःख, तूफ़ान, जख़्म अथवा महामारी भी तुम्हारी इस यात्रा का व्यवधान न बनने पाएँ। इस सूचना पर ही इंगलैंड की भलाई निर्भर करती है।"

"मैं गम्भीरतापूर्वक इस कार्य को स्वीकार करता हूँ," डिक ने कहा, "जहाँ तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे, आपका यह आदेश पूरा होगा।"

"बहुत अच्छा," घायल आदमी ने कहा, "माई लार्ड ड्यूक अब आगे तुम्हें आदेश देंगे और अगर तुमने उत्साह और सद्भावनापूर्वक उनका पालन किया, तो तुम्हारा भविष्य बन जाएगा। ये लैम्प ज़रा मेरी आँखों के निकट करो, ताकि मैं तुम्हारे लिए पत्र लिख सकूँ।"

उसने एक पुर्जे पर 'आदरणीय बन्धु सर जॉन हेमले' लिखा और दूसरे पर कोई सम्बोधन नहीं लिखा।

"यह ड्यूक के लिए है।" उसने कहा, "एक शब्द है, 'इंगलैंड और एडवर्ड' और उसका प्रतिद्वन्द्वी है 'इंगलैंड और यार्क।'"

"और जोना माई लार्ड?" डिक ने कहा।

"हाँ, जोना तुम्हें मिलनी ही चाहिए, चाहे जिस तरह से हो," बैरन ने उत्तर दिया "मैंने अपने दोनों पत्रों में अपना सुझाव लिख दिया है। लेकिन तुम्हें अपने आप ही उसे प्राप्त करना चाहिए। मैंने प्रयत्न किया, जैसा कि तुमने

देखा और अपनी ज़िन्दगी उसके लिए दे बैठा। इससे अधिक कोई आदमी कुछ नहीं कर सकता।"

इस समय वह घायल सामन्त बहुत ही थका हुआ मालूम पड़ने लगा था। डिक ने यह मूल्यवान पत्र अपनी जेब में रख लिए और उससे विदा लेकर आराम करने के लिए चला गया।

दिन निकलता आ रहा था। वातावरण में सर्दी थी और नीला प्रकाश उभरता आ रहा था। बर्फ़ के छोटे-छोटे कण हवा में उड़ते दिखाई पड़ते थे। 'गुड होप' के मस्तूलों के अत्यन्त निकट चट्टान युक्त पहाड़ियाँ और रेत की खाड़ियाँ थीं और उनके बहुत दूर पीछे घने वनों से आच्छादित टन्सटाल की पहाड़ी चोटियाँ दिखाई दे रही थीं। सागर और झंझावात ठण्डे पड़ गए थे। लेकिन जहाज़ बहुत अधिक पानी में डूब चुका था। और लहरों पर मुश्किल से उठता था।

लॉलेस अभी तक अपनी पतवारों पर डटा हुआ था। और इस समय तक सभी आदमी डेक पर सरक आए थे। और अब विस्फारित नेत्रों से उस निर्मम तट की ओर देख रहे थे।

"क्या हम किनारे की ओर जा रहे हैं?" डिक ने पूछा।

"हाँ," लॉलेस ने उत्तर दिया, "अगर उससे पहिले हम सागर के तल में समा नहीं जाते।" और तभी वह जहाज़ एक लहर का सामना करने के लिए इतनी निर्जीवता से उठा और उसकी पेंदी में भरा हुआ पानी इस तरह गड़-गड़ाया कि डिक ने घबराकर पतवारधारी की बाहें पकड़ लीं।

"धर्म की सौगन्ध," डिक ने 'गुडहोप' की पतवारों के दोबारा दीखने पर कहा, "मैंने तो सोचा था कि हम गए। मेरा दिल मेरे गले तक आ पहुँचा था।"

मध्य में ग्रीनशेव, हक्सले और दोनों टुकड़ियों के बेहतर आदमी मिलकर डेक को तोड़ने में लगे हुए थे ताकि छोटी-सी घन्नाई बना सकें। डिक स्वयं इन लोगों से जाकर मिल गया। और अपनी घबराहट को उस सख्त काम को करके भूलने की चेष्टा करने लगा। लेकिन यह सब होते हुए भी जैसे ही कोई बड़ी लहर आकर उससे टकराती और वह किश्ती डगमगाकर खड़ी रह

जाती तो उसे मौत का पंजा अपनी गर्दन पर पड़ता हुआ साफ़ नज़र आने लगता था।

उसने तभी देखा कि वह एक विध्वंसित चट्टान के निकट पहुँचते जा रहे हैं जिसके नीचे समुद्र टकराकर सफेद और जबर्दस्त बौछारें छोड़ रहा था। और उसके परे एक मकान चमक रहा था जो तरहटी के बीचोबीच खड़ा हुआ था।

इस खाड़ी के अन्दर तरंगें बहुत वेगवती थीं। उन्होंने अपने झागयुक्त कन्धों पर 'गुडहोप' को उठा लिया और निमिषमात्र में एक भयंकर आवाज के साथ तटवर्ती रेत में पटक दिया। और उसके अधूरे मस्तूलों को इधर-उधर पटकना और तोड़ना शुरू कर दिया। एक दूसरी लहर आई, उसने उसे दोबारा उठाया और उससे भी अधिक अन्दर खींचकर ले गई और तब एक तीसरी लहर आई और उसे किनारे के बहुत निकट ले जाकर छोड़ आई, जहाँ सागर चट्टानों पर सिर धुन रहा था।

"अब जवानो," लॉलेस चिल्लाया, "वास्तव में देवताओं ने हम पर कृपा की है। ज्वार चढ़ रहा है और अब हम थोड़ी-सी शराब पी लें। आधा घण्टे बाद आप लोग किनारे पर इतनी आसानी से उतर जाएंगे जैसे किसी पुल पर चल रहे हों।"

एक पीपा निकाल लिया गया और उड़ते हुए वर्फ़ और बौछारों से जिसे जहाँ त्राण मिला वह वहीं बैठकर पीने लगा। ये विध्वंसित जहाज की टुकड़ी के लोग एक दूसरे को शराब के जाम भेंट करने लगे और अपने खोये साहस को पुन: प्राप्त करने की चेष्टा करने लगे।

डिक इसी बीच लार्ड फॉक्सम के पास पहुँच गया था जो कि अत्यधिक उलझन और भय से आतंकित अपनी केबिन में लेटे हुए थे। केबिन में घुटनों-घुटनों ऊँचा पानी हिलकोरे ले रहा था और वह लैम्प जो कि रोशनी का केवल एक साधन था प्रहारों से गिरकर टूट चुका था।

"माई लार्ड", शैल्टन ने कहा, "अब घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। देवताओं ने स्पष्टतः हमारी रक्षा की है। लहरों ने हमें एक घाट पर ला छोड़ा है और ज्वार अगर थोड़ा भी उतर जाता है तो हम आराम से किनारे पर पहुँच सकते हैं।"

सागर को शान्त होने में लगभग एक घण्टा लगा। तब कहीं जाकर वह दल किनारे की ओर बढ़ सका। बर्फ़ की चादर इतनी गहरी थी कि खुश्की का भाग उन्हें एक पर्दे के समान दिखाई देता था।

एक पहाड़ी पर कुछ लोग आपस में मिले हुए इस दल की गतिविधि का प्रेक्षरण कर रहे थे।

"ये लोग हमारे निकट आ जाएँ तो शायद हमें कुछ आराम दें।" डिक ने कहा।

"और अगर वह हमारी ओर नहीं आते तो हमें उनकी तरफ़ चलना चाहिए क्योंकि लार्ड को गर्मी की सख्त आवश्यकता है।" हक्सले ने कहा।

लेकिन वह उस पहाड़ी की दिशा में थोड़ी दूर भी नहीं बढ़े थे कि तीरों की बाढ़ उनकी ओर आई।

"पीछे हटो, पीछे हटो, और ध्यान रहे कि उनके एक भी तीर का उत्तर कोई नही दे।"

"नहीं", ग्रीनशेव ने अपनी चमड़े की जाकेट से एक तीर खींचते हुए उत्तर दिया, "हमारी स्थिति लड़ने की नहीं हैं, यह ठीक है; क्योंकि हम लोग तरबतर हैं, भयानक रूप से थके हैं, और तीन हिस्से बर्फ़ में जम चुके हैं; लेकिन अपने प्यारे इंगलैंड के लिए, आखिर हमने उनका क्या बिगाड़ा है कि वह इस घोर विपत्ति में पड़े अपने देशवासियों पर इतनी बेरहमी के साथ तीरों की बौछार कर रहे हैं ?"

"वह हमें फ्रांसीसी सामुद्रिक डाकू समझ रहे हैं।" लार्ड फॉक्सम ने उत्तर दिया, "इन अत्यन्त अपमानजनक और उथल-पुथल के दिनों में, हम अपने प्यारे इंगलैंड के सागरतटों की भी रक्षा नहीं कर सकते। लेकिन हमारे पुराने शत्रु जिन्हें कभी हमने जल और थल दोनों पर खदेड़कर मारा था, अब मस्ती के साथ डाके और अग्निकांड करते और लोगों को तलवार के घाट उतारते हुए घूमते हैं, यह इस भूमि की बदनसीबी है।"

पहाड़ी पर अड्डा जमाने वाले वह लोग बड़ी बारीकी से तट वाली टुकड़ी की गतिविधि परख रहे थे। सागर तट से निकलकर जब तक वह घाटी में से होते हुए लगभग एक मील तक आगे न चले गए, ये पहाड़ी पर छिपे हुए लोग उनके पीछे लगे रहे, ताकि उनके इरादों के थोड़े भी संदिग्ध होने पर तीरों की दूसरी

बौछार भी कर सकें। और जब ये भगोड़े एक पुख्ता सड़क पर आ गए, डिक ने अपने आदमियों को सैनिक व्यवस्था में लाना आरम्भ कर दिया। तभी ये इंगलैंड के तट के रक्षक बर्फ़ के पीछे चुपचाप ग़ायब हो गए। जो उनका मन-चीता था वह कर चुके थे। उन्होंने अपने घरों और फार्मों की, अपने परिवारों और पशुओं की रक्षा कर ली थी और अब उससे अधिक कुछ फूँस के तिनके के समान भी उनके लिए महत्व न रखता था, हालाँकि फ्रांसीसी लोग तटवर्ती ग्रामों में सभी जगह रक्तपात और अग्निकाण्ड करते घूमते थे।

१९

यह स्थान जहाँ डिक ने सड़क पकड़ी थी, हालीवुड से बहुत दूर नहीं था और टिल नदी पर बसे शोरबी नगर से केवल दस या ग्यारह मील दूर था और यहाँ यह निश्चय करके कि अब उनका पीछा नहीं किया जा रहा है, वे दोनों दल आपस में अलग-अलग हो गए। लार्ड फॉक्सम के लोग अपने मालिक को उस महान् गिर्जाघर की सुविधा और सुरक्षा की ओर लेकर बढ़ गए और डिक ने उन्हें बर्फ़ के गहरे परदे में से घूमते और दूर जाते हुए देखा। वह अपने लगभग एक दर्जन वनचारियों के मध्य फिर से खड़ा रह गया था। यही टुकड़े उसके दल की अन्तिम शक्ति थी।

उनमें कुछ घायल थे और उस असफलता और खुले मौसम में घोर पीड़ा उठाने के कारण सभी खिन्न थे और हालाँकि वह अब किसी भी कार्य को करने में असमर्थ थे, किन्तु फिर भी क्रुद्ध निगाहों से अपने नेताओं की ओर देख रहे थे। डिक ने अपनी थैली उनके लिए खोल दी। उसने अपने पास कुछ भी नहीं रखा; हालाँकि उसका हृदय उनकी कायरता के लिए उनकी जोरों की भर्त्सना करना चाहता था, परन्तु उसने उनकी बहादुरी के लिए उन्हें साधुवाद दिया और एक-एक या दो-दो के रूप में शोरबी के 'गोट' और 'बैग पाइप' मद्यपान-गृहों की ओर बढ़ने का आदेश दिया।

उसने लॉलेस को अपना साथी चुना था। 'गुडहोप' पर उसने जो कुछ देखा था, उससे यही निष्कर्ष निकाल सका था। बर्फ़ बिना रुके निरन्तर गिर रहा था, और इस आँखों को अंधा करने वाले बर्फ़ ने हवा का भी गला घोंट दिया था। हवा बिल्कुल बन्द थी और सारी दुनिया इस बर्फ़ की वर्षा के नीचे ढक-

सी गई थी। रास्ते में भटक जाने और नष्ट होने का भय बराबर बना हुआ था। और लॉलेस जो कि अपने साथी से केवल एक क़दम आगे चल रहा था, और एक शिकारी कुत्ते की तरह सूँघता हुआ आगे बढ़ रहा था, प्रत्येक वृक्ष से अपना रास्ता चीन्हता चल रहा था, और अपने रास्ते को उसी प्रकार खोज रहा था, जैसे वह कुछ ही पहिले तूफ़ानी सागर के अन्दर अपने जहाज़ को खेता हुआ बढ़ रहा था।

वन में लगभग एक मील चलने के बाद वह एक ऐसे स्थान पर आए, जहाँ अनेक रास्ते आकर मिलते थे। यह स्थान ऊँचे-ऊँचे सनोवर के वृक्षों से बना एक कुंज था। बर्फ से आच्छादित क्षितिज के बावजूद भी यह ऐसा स्थल था जिसे पहिचानने में कोई भी दिक्कत हो नहीं सकती थी। लॉलेस के मन में इस स्थान को देखकर विशेष उत्साह पैदा हो गया था।

"अब मास्टर शैल्टन" उसने कहा, "तुम अब ऐसे आदमी के मेहमान हो, जो न जन्म से कुलीन है, और न अच्छा ईसाई है; लेकिन अब तुम्हें एक पेग शराब मिलेगी जो कि तुम्हारी ठिठराई हुई हड्डियों में गर्मी ज़रूर पैदा कर देगी।"

"तो शीघ्र उधर ले चलो 'बिल," डिक ने उत्तर दिया, "एक शराब का प्याला और शानदार आँच। मैं उन्हें प्राप्त करने के लिए कहीं तक भी जा सकता हूँ।"

लॉलेस कुंज की नंगी शाखाओं के नीचे कुछ देर के लिए चलता रहा और फिर एक ढलाऊ खड्ड पर पहुँचा, जिसमें आधे से अधिक बर्फ जमा हुआ था। किनारे पर एक विशाल नाशपाती का वृक्ष लटका हुआ था। उसकी जड़ें नाजुक थीं। यहाँ पर कुछ झाड़ियों को एक ओर हटाता हुआ लॉलेस सशरीर पृथ्वी के अन्दर समा गया।

यह नाशपाती का वृक्ष किसी विशाल अन्धड़ में गिर गया था और आधा उखड़ा हुआ था। उसने अपने साथ आसपास की झाड़ियों को भी उखाड़ दिया था। यही जगह थी जहाँ इस वनचारी ने अपने लिए एक गुफा बना ली थी। ये जड़ें उसके लिए शहतीरों का और घास-फूंस छप्परों का काम करते थे और दीवारें और फ़र्श स्वयं माता पृथ्वी ने बनाए थे। यह स्थान बहुत ही ऊबड़-खाबड़ था; एक कोना आतिशदान के रूप में प्रयोग किए जाने से काला

पड़ गया था और एक बड़े सनोवर की लकड़ी से बने बक्स में, जो कि चारों ओर लोहे से जड़ा हुआ था—सोने की जगह बनाली गई थी। इससे पता चलता था कि वह किसी लोमड़ी द्वारा खोदकर बनाया गया बिल नहीं, वरन् एक आदमी द्वारा बनाई गई गुफा थी।

हालाँकि बर्फ गुफा के मुँह तक आ गया था और नीचे फ़र्श तक भी पहुँच गया था, परन्तु बाहर की अपेक्षा यह स्थान बहुत गर्म था। लॉलेस ने एक चिन्गारी सुलगा ली थी और सूखी झाड़ियाँ धड़ाधड़ जलनी शुरू हो गई थीं; यह स्थान देखने में पूर्णतः एक आवासगृह प्रतीत होने लगा था।

संतोष की एक गहरी साँस लेकर लॉलेस ने अपने हाथ आग पर फैला दिए और धूएँ को फेफड़ों में भरता-सा दिखाई दिया।

"अब देख लीजिए," उसने कहा, "यही इस गरीब वनचारी का बिल है। ईश्वर की कृपा है कि इस स्थान का आज तक किसी शिकारी कुत्ते को भी पता नहीं चला। क्योंकि सर्वप्रथम जब मैं १४ वर्ष का था एक पुजारी की सोने की जंजीर और प्रार्थना-पुस्तक लेकर भागा था, और उन्हें चार मार्क में बेचा था, तभी से मैं इधर से उधर डोलता फिरता हूँ। मैं इंगलैण्ड, फ्रांस, बर्गण्डी और स्पेन में भी घूम चुका हूँ और समुद्रों की यात्राएँ अपनी आत्मा की शान्ति के लिए कर चुका हूँ जो कि किसी भी आदमी का मुल्क नहीं होता; लेकिन यह वह जगह है मास्टर शैल्टन, जिसे मैं अपनी जगह कह सकता हूँ। पृथ्वी के अन्दर बना यह बिल ही मेरी मातृभूमि है। चाहे वर्षा आए; चाहे तूफ़ान, चाहे यहाँ अप्रैल का महीना होवे और चारों ओर बसंत हँसता हो, पक्षी चहचहाते हों और फूल मेरे बिस्तर के चारों ओर फैले हुए हों, चाहे शरदकाल हो, मैं अपनी प्रिय साथिन अग्नि के साथ बैठकर गपशप करता हूँ और रोबिन रेड-ब्रेस्ट जंगल में यह चाहता घूमा करता हूँ। यही मेरा मन्दिर और यही मेरा बाजार बनती है और मेरी पत्नी और मेरा शिशु बनती है। यही वह जगह है जहाँ दुनिया भर में घूमने के बाद मैं लौटकर आता हूँ और अगर भगवान की इच्छा रही तो यहीं पर मैं अपनी अन्तिम साँस भी लेना चाहता हूँ।"

"यह बहुत ही गर्म जगह है, इसमें शक नहीं है।" डिक ने उत्तर दिया। "और अत्यन्त सुहावनी होने के साथ बहुत अच्छा गुप्त स्थान भी है।"

"उसके गर्म होने की तो आवश्यकता ही थी", लॉलेस ने उत्तर दिया, "और

अगर इसका पता लोगों को लग गया तो मेरा दिल टूट जाएगा मास्टर शैल्टन, लेकिन यहाँ", उसने बात जारी रखते हुए और अपनी मजबूत अंगुलियों से भूमि को खोदते हुए कहा, "यहाँ मेरा शराब का कोष है और अब तुम्हें श्रेष्ठ स्टिंगो का शानदार पेग पेश किया जाएगा।"

सचमुच ही अपनी अंगुलियों से थोड़ा-सा खोदने के बाद उसने एक चमड़े का पात्र निकाल लिया—जिसमें एक गैलन के करीब शराब थी। इसका तीन चौथाई भाग बहुत ही नशीली और मीठी शराब से भरा हुआ था। और उन्होंने एक दूसरे की मंगल कामना करते हुए जब एक दौर समाप्त कर लिया, तो इसके आतिशदान में नई लकड़ियाँ डाल दी गई। आग जोरों से दहक उठी। बाद वे दोनों पाँव पसार कर सोए।

"मास्टर शैल्टन", वनचारी ने कहा, "तुम्हें अभी-अभी दो बार बुरी तरह असफलता मिली। मुझे शक है कि कहीं वह रमणी तुम्हारे हाथ से निकल न जाए। क्या मेरा अनुमान ठीक नहीं है?"

"ठीक है", डिक ने गर्दन हिलाते हुए स्वीकृति दी।

"तो फिर अब", लॉलेस ने पुनः बात शुरू की, "तो फिर इस पुराने बेवकूफ की बातें सुनो, जिसने सारी दुनिया काफ़ी निकट से देखी है। तुम दूसरे लोगों के ऊपर बहुत अधिक विश्वास करते हो मास्टर डिक ! तुम एलिस पर विश्वास करते हो, लेकिन उसका उद्देश्य केवल सर डेनियल को मार देना भर है। तुम लार्ड फॉक्सम पर विश्वास करते हो—हालाँकि देवता उसकी रक्षा करें उसके उद्देश्य में कोई स्वार्थ या लिप्सा नहीं है—परन्तु तुम अपनी इच्छानुसार कार्य क्यों नहीं करते; भले आदमी, सीधे उस रमणी के पास पहुँचो। उससे प्रेम-प्रलाप करते रहो; कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें भूल ही बैठे। हमेशा तैयार रहो, और जब अवसर आए तब घोड़े को एड़ लगाओ; धनुष-बाण कन्धे पर डालकर चलते बनो।"

"ठीक है लॉलेस", डिक ने कहा, "लेकिन निश्चय ही वह अब सर डेनियल की बड़ी हवेली में है।"

"तब फिर हम उधर ही चलते हैं", लॉलेस ने उत्तर दिया।

डिक उसकी ओर घूरकर देखने लगा।

"नहीं मेरा मतलब है", लॉलेस ने गर्दन हिलाई, "अगर तुममें थोड़ी धार्मि-

कता है, और कुछ बोल सकते हो, तो उधर देखो।"

और वनचारी ने अपनी गर्दन के पास से चाबी लेते हुए वह बड़ा बक्सा खोल डाला और उसमें रखी चीज़ों में किसी चीज़ के लिए गहराई तक हाथ डालकर तलाश करने लगा। तब पहिले उसने एक पुजारी की पोशाक निकाली, फिर रस्सियों का एक बंडल और फिर एक बड़ी लकड़ी की माला निकाली, जिसे कि समय पड़ने पर एक शस्त्र के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता था।

"ये चीजें आपके लिए हैं" उसने कहा, "इन्हें धारण कर लो।"

और जब डिक ने वह पुजारियों के वस्त्र धारण कर लिए लॉलेस ने कुछ रंग और पेन्सिल निकाली और उसका चेहरा बनाने लगा। उसने भौंहें गहरी कर दीं और मूँछें बना दीं, जो कि अभी केवल उभर रही थीं। उसने आँखों के चारों तरफ़ कुछ रेखाएँ अंकित कर दीं। उसने साफ़ तौर से उसकी मुख-मुद्रा बदल डाली और उस महन्त की आयु कई वर्ष बड़ी कर दी।

"अब," उसने फिर कहना शुरू किया, "जब मैं भी इस प्रकार का वेश बना लूँगा तो हम दो साथी महन्त बन जाएँगे और तब हम खम ठोकते हुए सर डेनियल के निवासस्थान की ओर बढ़ेंगे। तब मदर चर्च के प्रेम के कारण हमारा भव्य स्वागत किया जाएगा।"

"और तब प्रिय लॉलेस", डिक ने कहा, "मैं इस महान् कृपा के लिए तुम्हें क्या प्रतिदान दे सकूँगा।"

"टट्, भाई", वनचारी ने कहा, "मैं किसी लिप्सा के लिए नहीं वरन् आनन्द के लिए वैसा करता हूँ। मेरे लिए बिलकुल चिन्ता मत करो, मैं ऐसा आदमी हूँ, धर्म से, जो अपने लिए स्वयं काफ़ी खबरगीरी कर लेता हूँ। जब मेरा पुरुषार्थ थकने लगता है तो मेरी गिर्जाघर की घण्टी के समान बजने वाली मेरी जिह्वा मेरी सहायता करती है और जब वह भी नहीं तो मैं भागता हूँ और जब भागने से भी बन नहीं पड़ता तो प्रेम से माला उठा लेता हूँ!"

इस पुराने बदमाश ने एक हँसोड़ी सूरत बनाई और हालाँकि डिक उस महान् व्यक्तित्व के इतने अहसानों के भार से दबने में मन ही मन काफ़ी खिन्नता अनुभव कर रहा था, उसका मुँह देखकर उसका चेहरा भी ख़ुशी से खिल उठा।

इतना कहने के बाद लॉलेस फिर बक्स की ओर बढ़ गया और शीघ्र ही

उसने भी वैसी ही पोशाक पहिन ली। और अपनी गाउन के नीचे, डिक को आश्चर्य हुआ, कि उसने काले तीरों से भरा एक तरकश भी छिपा लिया।

"तुमने वह तीर किसलिए रख लिए हैं", छोकरे ने पूछा, "इन तीरों की आवश्यकता ही क्या है जब कि तुम्हारे पास कमान ही नहीं है।"

"नहीं", लॉलेस ने साधारणतया उत्तर दिया, "यह हो सकता है कि हमारे और तुम्हारे सफल होने से पहिले हमें सिर से सिर बजाना पड़े; अगर हम दोनों अपने उद्देश्य में सफल हुए और अगर कहीं हममें से कोई एक खेत रहता है तो मैं चाहूँगा कि हमारा दल उसका प्रतिशोध ले। काला तीर हमारी चर्च की मुहर है। इससे यह भली भाँति पता चल जाता है कि बिल पर हस्ताक्षर किसने किए हैं।"

"और तुम इतनी सावधानी से तैयारी कर रहे हो", डिक ने कहा, "मेरे पास कुछ काग़ज़ हैं जिन्हें अपने हित में और उनके हित में जिन्हें मुझ पर विश्वास है, मैं चाहता हूँ कि यहीं छोड़ चलूँ ताकि बुरा वक्त आने पर मेरे पास न पकड़े जाएँ। मैं उन्हें कहाँ रख दूँ 'विल' ?"

"ठीक है", लॉलेस ने उत्तर दिया, "मैं जंगल में चला जाता हूँ और एक गाने की तीन पंक्तियाँ गुनगुनाता हूँ। इतने तुम इन्हें खोदकर दबा दो, और दबाकर रेत उसके ऊपर से समतल कर देना।"

"यह कभी नहीं हो सकता", डिक चिल्लाया, "मैं तुम पर यकीन करता हूँ लॉलेस! यह तो हद दर्जे का कमीनापन होगा, अगर मैं तुम पर विश्वास न करूँ।"

"प्यारे भाई, तुम अभी बच्चे हो", लॉलेस ने गुफा के द्वार पर रुकते हुए और डिक की ओर देखते हुए कहा, "मैं पुराने क़िस्म का ईसाई हूँ और मनुष्य जाति के साथ विश्वासघातपूर्वक आक्रमण नहीं करता, और अगर मेरा मित्र संकट में हो तो उसके लिए अपना रक्त बहाने में भी संकोच नहीं करता लेकिन मैं एक पेशेवर चोर हूँ, मेरे प्यारे, पैदायशी चोर! चोरी करना मेरी आदत है। अगर मेरी बोतल खाली हो, और मुँह खुश्क हो तो बालक, मैं तुम्हें उतने ही विश्वास से लूट भी सकता हूँ जितनी हार्दिकता से तुम्हें प्यार करता हूँ, तुम्हारी प्रतिष्ठा और प्रशंसा करता हूँ। क्या इससे अधिक स्पष्टता से कोई बात बयान की जा सकती है? मेरा ख़्याल है, नहीं।"

और अपनी विशाल अंगुलियों से झाड़ियों को दबोचता हुआ वह बाहर निकल गया।

डिक अब अकेला रह गया और अपने इस विचित्र साथी की उन असमर्थ-ताओं पर आश्चर्य करता हुआ जल्दी-जल्दी अपने दस्तावेज़ों को निकालने लगा। उन्हें एक बार पढ़ा और फिर ज़मीन में गाड़ दिया। तथापि एक कागज़ उसने अपने साथ रख लिया। वह सोचता था कि शायद सर डेनियल के विरुद्ध अवसर पड़ने पर वह कभी काम आ जाए। यह पत्र नाइट का लार्ड विन्स्लेडेल को लिखा गया अपना पत्र था, जिसे राईसिंघम की पराजय के बाद दूसरे ही दिन थ्रोगमोर्टन द्वारा भेजा गया था और अगले दिन उस संवादवाहक के शरीर पर से डिक को मिला था।

तब, आग की बची हुई चिन्गारियों के ऊपर क़दम रखता हुआ डिक गुफ़ा से बाहर निकल आया और अपने वनचारी साथी के साथ मिल गया, जो कि एक पत्तियों रहित सनोवर के वृक्ष के नीचे बर्फ की वर्षा में खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह दोनों एक दूसरे को देखकर खूब हँसे क्योंकि वह छद्मवेश बहुत ही सम्पूर्ण और यथार्थ बन उठा था।

"फिर भी मेरी इच्छा है कि यह एक ग्रीष्मकालीन साफ़ दिन होता", वनचारी ने कहा, "ताकि मैं किसी चश्मे के मुकुर में अपना मुँह देख सकता। सर डेनियल के अनेक आदमी ऐसे होंगे जो मुझे पहिचानते होंगे। अगर हम पहिचान लिए गए तो तुम्हारे लिए तो शायद वह विचार भी करें किन्तु मेरा तो केवल एक अन्त होगा और वह यह कि इस रस्सी के अन्त में मेरी लाश तड़पती हुई होगी।"

वह सड़क पकड़कर शोरबी की ओर चल पड़े। रास्ता वन के कुछ अधिक निकट पड़ता था जो कि कभी पड़ोस के ग़रीब लोगों की बस्ती और कभी उनके खलिहानों के पास से गुज़रता था।

तभी एक झोंपड़ी को देखकर लॉलेस ने कहा :

"ब्रदर मार्टिन", उसने अपनी आवाज़ को पूर्ण रूप से एक साधु की आवाज़ में बदलते हुए कहा, "चलो उधर इन ग़रीब गुनहगारों से कुछ भिक्षा ग्रहण करें पैक्स वोबिस्कम!" उसने अपनी आवाज़ में कहा, "आह यही तो मुझे भय था। इसीलिए तो मैं कहता हूँ, मास्टर शैल्टन, कि सर डेनियल के लोगों के हाथों

में अपनी मोटी गर्दन देने से पहिले मुझे वैसी आवाज़ का अभ्यास करना जरूरी है। लेकिन तुम ज़रा देखो तो, हरफ़नमौला होना कितनी शानदार बात है। अगर मैं एक जहाजराँ न होता तो तुम सब लोग गुडहोप सहित समुद्र की पेंदी में बैठ गए होते, और अगर मैं चोर न होता तो तुम्हारा यह छद्मरूप बनाने में कभी सफल न हो पाता, और चूंकि मैं एक साधु रह चुका हूँ और अखाड़ों में रहकर ऊँचे स्वरों में प्रार्थनाएँ कह चुका हूँ और खूब माल उड़ा चुका हूँ, इसलिए मैं यह साधु-छद्मवेश बना सकने में सफल हो सका हूँ वरना हमें तो ये जासूस कुत्ते खोजकर निकाल सकते थे।"

वह इस समय तक एक किसान की खिड़की के पास पहुँच चुका था। अपने अँगूठों के बल पर ऊपर उठकर वह अन्दर झाँकने लगा।

"बहुत ठीक है," वह चिल्लाया, "बहुत अच्छा है, यहाँ हम अपने छद्मवेश का पूरी तरह अभ्यास कर सकेंगे, भाई कैपर वहाँ है।" और इतना कहते हुए उसने दरवाज़ा खोल लिया और अन्दर प्रवेश करने लगा।

उनकी कम्पनी के तीन आदमी वहाँ बैठे हुए थे और बड़ी सरगर्मी से खाने में लगे हुए थे। उनकी खुखरियाँ उनके पास ही मेज़ों पर धँसी हुई थीं और घर के मालिकों पर उनकी सन्दिग्ध निगाहें यह स्पष्ट करती थीं कि भोजन उन्हें सम्मानपूर्वक नहीं बल्कि बलपूर्वक प्राप्त हुआ है। इन दो साधुओं पर, जो कि अत्यन्त विनीत भाव के साथ फार्म के आहार-गृह में दाखिल हुए थे, अब उनकी कोप-दृष्टि घूम पड़ी थी और उनमें से एक ने—वह स्वयं जॉन कैपर ही था जो कि उनका आगुआ बन रहा था—तत्काल धृष्टतापूर्वक उनसे चलते बनने के लिए कहा।

"हमें यहाँ भिखारियों की जरूरत नहीं है," उसने कहा।

लेकिन दूसरा, जिसके द्वारा लॉलेस और डिक के पहिचानने की कोई दूर की सम्भावना भी नहीं थी—उसे थोड़ा उदारतापूर्वक व्यवहार करने की सलाह दे रहा था।

"ऐसा न कहो," वह चिल्लाया, "आज हम शक्तिशाली आदमी हो सकते हैं, लेकिन अन्त में इन्हीं का हाथ ऊपर रहेगा और हम नीचा देखेंगे। उसके कहने की चिन्ता न करो; फादर, आओ और मेरे प्याले में पीओ और हमें अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करो।"

"तुम लोग बड़े छिछले मस्तिष्क के हो, सांसारिक और अभिशापित हो," साधु ने कहा, "भगवान न करे कि हमें कभी भी ऐसे साथियों के साथ बैठकर पीने का संयोग हो। लेकिन गुनहगारों के प्रति अपनी स्वाभाविक करुणा के वशीभूत मैं तुम्हारे पास अपनी एक स्मृति छोड़ जाऊँगा, जिससे तुम्हारी आत्माएँ पवित्र होंगी। मैं तुम्हारे लिए एक प्यार और मंगल कामना छोड़े जाता हूँ।"

अब तक लॉलेस एक उपदेश देने वाले साधु की तरह उन पर गर्ज रहा था। लेकिन ऐसा कहते हुए उसने अपनी पोशाक के नीचे से एक काला तीर निकाला और मेज पर फेंक दिया। तीनों वनचारी उसे देखकर चौंक उठे थे और तभी आनन-फानन में लॉलेस डिक को साथ लेकर बाहर झपट आया और बाहर गिरते हुए बर्फ के अन्दर ग़ायब हो गया और वह तीनों एक शब्द भी मुँह से न निकाल सके और अंगुली तक न उठा सके।

"अब," उसने कहा, "हमने अपना छद्मवेश पूरी तरह से परख लिया है। मास्टर शैल्टन ! अब मैं अपनी इन हड्डियों को किसी भी दुस्साहस की भेंट चढ़ाने के लिए तैयार हूँ।"

"बहुत अच्छा," रिचर्ड ने उत्तर दिया, "मुझे और अधिक परीक्षा करने में भय मालूम होता है, अब हमें शोरबी के लिए रवाना हो जाना चाहिए !"

२०

सर डेनियल का शोरबी स्थित मकान एक ऊँचा और खुला हुआ मकान था, जिस पर प्लास्टर किया हुआ था और सनोबर की चित्रकारीयुक्त किवाड़ों की जोड़ियाँ उस पर चढ़ी थीं। बहुत ही नीचाई पर एक छप्पर भी पड़ा था। मकान के पीछे एक बाग़ था, जिसमें विभिन्न प्रकार के मेवा लगे हुए थे। बाग़ में अनेक वीथियाँ और मनोरम कुंज थे और बाग़ के दूर कोने से एबे चर्च की मीनार दिखाई देती थी।

आवश्यकता पड़ने पर इस हाउस के भृत्यवर्ग की संख्या और शान-शौक़त सर डेनियल से भी अधिक बड़े आदमी की प्रतिष्ठा के अनुरूप हो सकती थी, लेकिन यह भवन अजीब तरह के शोर-गुल से भरा हुआ था। सहन में शस्त्रों और घोड़ों के सुमों में जड़े लोहे की आवाज़ें प्रतिध्वनित हो रही थीं, मधु-मक्खियों के छत्ते की तरह पाकशाला से 'कोकरी' के घनघनाने की आवाज़ आ रही थी, गायक और विभिन्न वाद्ययंत्रों के वादक वहाँ थे और हाल में से गिलासों की झंकार बाहर निकल रही थी। सर डेनियल अपनी शान-शौकत और शौर्य में लार्ड शोरबी का मुकाबला कर रहा था और लार्ड राईसिन्घम को पीछे छोड़ चुका था।

सब प्रकार के अभ्यागतों का स्वागत किया जा रहा था। गायक, कबूतर लड़ाने वाले और शतरंज के खिलाड़ी, प्राचीन स्मारकों के विक्रेता, औषधि, सुगन्धि बेचने वाले और मन्त्र-बोल देने वाले और इन सबके साथ पुजारी, महन्त, या धर्म-यात्री लोग नीचे वाली मेज़ पर बुलाये जा रहे थे। ये लोग या तो मचानों पर सोए हुए थे, या हाल के बड़े-बड़े बोर्डों पर सोए हुए थे।

'गुडहोप' की बर्बादी के दिन, दोपहर के बाद शस्त्रागार, पाकशाला, घुड़साल और छाए हुए रथखाने जो कि सहन के चारों ओर बने हुए थे, सबके सब सुस्ती से घूमने वाले लोगों से भरे हुए थे। इनमें कुछ लोग सर डेनियल की नीली पोशाक में थे और कुछ अजनबी लोग थे, जो स्वयं लालच के वश आ धमके थे और सर डेनियल ने नीतिवश अपने यहाँ ठहरा रखे थे। उन दिनों कुछ इसी प्रकार का प्रचलन था।

वर्फ अभी तक बिना रुके गिरता जा रहा था। वायु की काटने वाली सर्दी, रात्रि का आगमन, ये सभी चीजें उन्हें सायेदार स्थानों पर रखे हुई थीं। अंगूर और जौ की शराब और पैसा चारों ओर बिखरे हुए थे, बहुत-से लोग अन्नागार में बैठकर जूआ खेल रहे थे और बहुत-से लोग दोपहर के खाने-से मद-मन्द हुए घूम रहे थे। एक आधुनिक प्रेक्षक के लिए यह मालूम पड़ता था कि शहर भर जैसे रौंद डाला गया है और किसी प्रतिद्वन्द्वी के लिए यह हाउस आमोद-प्रमोद के मौसम में वैभव और विलास की सामग्रियों से भरा किसी सामन्त का निवास-गृह है।

दो साधु—एक युवा और एक बूढ़ा—बड़ी देर से आए थे और एक महताबी में जलती हुई आग ताप रहे थे। एक मिली-जुली भीड़ ने उन्हें घेर रखा था, बाजीगर, नीम-हकीम और सैनिक, इन दोनों साधुओं में से बड़े के साथ बड़े-ज़ोर-शोर के साथ बातचीत में व्यस्त थे। और यहाँ इतनी गपशप, और देहाती हाज़िर-जवाबी का बाज़ार गर्म था कि चारों तरफ़ से एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

इन दोनों में से छोटा साथी जिसे पाठक-वर्ग ने डिक शैल्टन के रूप में पहिले ही पहिचान लिया होगा, वह पहिले से कुछ दूरी पर बैठा था और धीरे-धीरे दूर खिसकता जा रहा था। वह बड़े ग़ौर से सबकी बातें सुन रहा था, लेकिन मुँह नहीं खोलता था, और अपनी गम्भीर मुद्रा से वह हँसी-मज़ाक को किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं देता था।

आख़िरकार उसकी आँखें, जो कि लगातार इधर-उधर तैर रही थीं, और घर में प्रवेश करने वाले सभी लोगों पर पहरा दे रही थीं, एक दल के अन्दर प्रवेश करते ही आनन्द से चमक उठीं। यह छोटा-सा जलूस सहन को पार करके एक टेढ़ी दिशा में मुड़ गया था। दो महिलाएँ जो कि समूर के वस्त्रों से आवेष्टित थीं,

उनके शीर्ष पर चल रही थीं। इनके पीछे दो और औरतें थीं और चार सशस्त्र आदमी थे। अगले ही क्षण वह लोग हाउस के अन्दर गायब हो गए। और डिक, जो कि इन मस्त डोलने वाले लोगों में से छिपकर निकल चुका था, उनका पीछा करने लगा था।

"इन लोगों में से ऊँचे क़दवाली लेडी ब्रैकले होनी चाहिए," उसने सोचा, "और जहाँ लेडी ब्रैकले है, जोन को उस स्थान से बहुत अधिक दूर नहीं होना चाहिए।"

हाउस के द्वार पर चारों सशस्त्र आदमी ठहर गए। और ये दोनों महिलाएँ सनोवर के पालिश किए हुए चिकने जीने पर चढ़ने लगीं। उनकी रक्षार्थ उन दो महिलाओं से अधिक और कोई भी नहीं था, जो उनके पीछे जा रही थीं। डिक बहुत निकट ही पीछे-पीछे चलता जा रहा था। गोधूलिवेला हो चुकी थी और मकान के अन्दर रात्रि का अंधकार अपना साया फेंक चुका था। जीने के मोड़ों पर लोहे के हत्थों में मशालें जल रही थीं। और चित्रकारी युक्त बराण्डों के हर द्वार पर एक लैम्प जल रहा था। जिस स्थान पर द्वार खुले हुए पड़े थे डिक आतिशदान में जलती हुई आग और कार्निस के ऊपर ताजे गुलदस्ते देख सकता था।

जाने वालों ने दो मंज़िल पार कर लिए थे और प्रत्येक मोड़ पर दोनों भद्र महिलाओं में से छोटी बड़ी उत्सुकता से उस साधु की ओर देखती रही थी। परन्तु वह अपनी पोशाक के अनुरूप मुद्रा बनाए आँखें नीची किए आगे बढ़ रहा था, इसलिए केवल वही उसकी ओर देख सकी, किन्तु साधु को संदेह न हो सका कि उसने किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है, और तीसरी मंज़िल पर पहुँचकर वह तरुणी ऊपर चढ़ती रही, जब कि प्रौढ़ा दोनों सेविकाओं सहित दाईं ओर को घूम गई।

डिक तेज़ी के साथ ऊपर चढ़ गया, और कोने में खड़ा होकर उन जाने-वाली तीन स्त्रियों को देखने लगा। वह पीछे बिना घूमे या देखे सीधे बराण्डे में आगे बढ़ती चली गईं।

"यह तो बहुत ही अच्छा हुआ," डिक ने सोचा, "मुझे लेडी ब्रैकले के निवास-स्थान का भी पता चल जाएगा और अगर श्रीमती हैच उनके पास तैनात न हुई तो आज उसके लिए थोड़ी मुश्किल पैदा हो जाएगी।"

और तब उसके कन्धे पर एक हाथ पड़ा और एक धीमी चीख के साथ वह अपने आक्रान्ता से गुत्थम-गुत्था होने के लिए मुड़ा और उसने उस कोमलांगी को इतने कठोर पंजों में पकड़ लिया कि वह इतनी डर गई थी कि काँपती हुई उसकी बाहों में झूलने लगी ।

"मैडम," डिक ने उसे छोड़ते हुए कहा, "मैं तुमसे हज़ार बार क्षमा माँगता हूँ, मेरी पीठ पर आँखें नहीं हैं, इसलिए देख सकना असम्भव था और धर्म की सौगन्ध, मैं यह नहीं जान पाया कि तुम पुरुष नहीं हो ।"

वह लड़की निरन्तर उसकी ओर देखती रही । और अब यह भय आश्चर्य और आश्चर्य संदेह में बदलता जा रहा था । डिक, जो उस तरुणी के चेहरे पर उन बदलती हुई भावनाओं को भली भाँति समझ रहा था, अपने शत्रुओं के उस घर में अपनी सुरक्षा के लिए बहुत ही घबरा उठा ।

"अच्छी तरुणी," उसने अत्यन्त विनम्रता ने कहा, "कृपा करके मुझे अपना हाथ दो ताकि मैं उसे चूम सकूँ और तुमसे क्षमा-याचना कर सकूँ । और अगर तुम चाहोगी, तो मैं चला भी जाऊँगा ।"

"तुम अजीब साधु हो, महोदय," उस युवती ने चतुराई और साहस से उसके चेहरे की ओर ताकते हुए उत्तर दिया, "और अब जब कि मेरा कुतूहल समाप्त हो चुका है, मैं तुम्हारे प्रत्येक शब्द से नौसिखियापन देख सकती हूँ । आप यहाँ किस लिए तशरीफ़ लाए हैं ? तुम इतनी दूषित भावना से उधर क्यों देखते थे ? क्या तुम भेदी हो ? लेडी ब्रैकले की ओर चोर की तरह क्यों ताक रहे थे ?"

"मैडम," डिक ने कहा, "एक चीज़ का मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं चोर नहीं हूँ । और अगर मैं शत्रु-पक्ष की ओर से भी आया हूँ—जैसा कि लगभग सत्य है—तो भी मैं सुन्दर महिलाओं से युद्ध नहीं करता और न ही अपने सैनिकों को वैसा करने देता हूँ, लेकिन अगर आप फिर भी यही मुनासिब समझती हैं तो चिल्ला सकती हैं और अपने आदमियों को बुला सकती हैं, और थोड़ी देर में मेरी लाश यहाँ पड़ी होगी । लेकिन मैं यह नहीं सोच सकता कि आप इतनी बेरहमी कर सकती हैं ।" और उस लड़की का हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर उसने बड़ी कोमल दृष्टि से उसके रूप की प्रशंसा करते हुए उसे दुलारना शुरू कर दिया ।

"तब क्या तुम कोई जासूस हो यार्किस्ट," युवती ने पूछा।

"मैडम," उसने उत्तर दिया, "वास्तव में मैं एक यार्किस्ट ही हूँ। और एक प्रकार से जासूस ही समझ लो। लेकिन जिस कारण से मैं यहाँ आया हूँ और जिसके लिए आपका तरुण हृदय मुझे क्षमा कर देगा, वह न तो यार्क से सम्बन्धित है और न लंकास्टर से। मै पूर्णरूप से अपना जीवन आपके रहम पर छोड़ दूँगा। मैं एक प्रेमी हूँ और मेरा नाम···।"

लेकिन तभी अकस्मात् उस युवती ने अपने हाथ डिक के मुँह पर रख दिए और शीघ्रतापूर्वक नीचे-ऊपर और दाएँ-बाएँ देखने लगी और मैदान साफ़ देखकर वह उस युवक को घसीटती हुई ऊपर ले चली।

"चुप रहो," उसने कहा, "आओ बाद में बातें करना।"

कुछ आश्चर्य चकित-सा डिक ऊपर खिचता रहा; वह बराण्डे में घिसटता रहा और एक कक्ष में धकेल दिया गया। यह कक्ष भी अन्य दूसरे कक्षों के समान ही प्रकाश से भरा हुआ था और डिक एक लपटों से भरे आतिशदान के निकट बैठा दिया गया।

"अब," उस युवती ने उसे आग के पास एक स्टूल पर बलपूर्वक बैठाते हुए कहा, "अब तुम यहाँ बैठो और मेरी राजकुमारी के हुजूर में पेश होओ। तुम्हारा जीवन और मरण मेरे हाथ में है, लेकिन मैं अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करूँगी। अपने आप देख लो, तुमने मेरे हाथ पर कैसे निशान बना दिए हैं। आप जानते नहीं थे कि मैं एक औरत हूँ और अगर यह जानते कि मैं एक औरत हूँ तो अपनी पेटी निकालकर मुझे मारने लगते, क्यों न ?"

और इतना कहते हुए वह कमरे से बाहर लपक गई और डिक को आश्चर्य-सागर में गोते खाने के लिए छोड़ गई और इसमें भी आश्चर्य नहीं था कि वह कहीं कोई दिवास्वप्न ही लेने लगा हो।

"अपनी पेटी से उसे मारने लगता," उसने दोहराया, "अपनी पेटी से उसे मारने लगता," और तभी जंगल की वह बात उसके मस्तिष्क में उभर आई और मैचम की वह याचनामय निगाहें भी उसके सामने स्पष्ट हो गई।

और तब वह वर्तमान के संकट की भावना से भर उठा। दूसरे कक्ष में उसने कुछ हलचल होती देखी और एक व्यक्ति को आते देखा और तब एक उसाँस सुनी जो कि बहुत ही निकट से आई थी और तब वस्त्रों की खरखराहट

और पैरों की आहट एक बार फिर आने लगी। और ज्योंही वह सुनने लगा दीवार में से पर्दे के एक स्थान पर हिलने की आहट हुई और तब वह एकदम खुल गया और तब जोना सैंडले, एक लैम्प लेकर कमरे में दाखिल हुई।

वह गहरे ऊनी रंगों की बनी बेशक़ीमती पोशाक पहिने हुए थी, जैसी कि जाड़े के बर्फ़ानी दिनों में अकसर पहिनी जाती है। उसके सिर पर केशराशि मुकुट के समान शोभायमान थी और वह जो मैचम के रूप में इतनी छोटी और भद्दी लगती थी, अब एक लता के समान तन्वंगी प्रतीत होती थी और वह जैसे तैरती हुई कमरे में प्रविष्ट हुई थी, पैरों से चलकर आने में जैसे उसे शिथिलता अनुभव होती थी।

बिना किसी चर्चा या आन्दोलन के उसने अपना लैम्प ऊपर उठाया और उस तरुण साधु को देखने लगी।

"किस उद्देश्य से तुम यहाँ आए भाई", उसने पूछा, "तुम शायद भूल से इधर आ निकले हो। तुम किसे चाहते हो?" और उसने ब्रैकेट पर अपना लैम्प रख दिया।

"जोना", और आगे उसकी आवाज़ ने उसका साथ नहीं दिया, "जोना," उसने दोबारा कहना शुरू किया, "तुम कहती थीं कि तुम मुझे प्रेम करती हो और मैं इतना मूर्ख था कि मैंने तुम्हारी बातों पर विश्वास भी कर लिया।"

और तब उस युवक को आश्चर्यान्वित करती, उस युवती ने केवल एक ही क़दम में उस दूरी को पार कर लिया और उसकी गर्दन में अपनी बाहें डाल दीं और उसके ऊपर सहस्रों चुम्बनों की बौछारें कर दीं।

"ओह, मेरे मूर्ख मित्र", वह चिल्लाई, "मेरे प्यारे डिक, अगर तुम अपने को देख सकते, अफसोस।" उसने थोड़ा रुकते हुए कहा, "मैंने तुम्हें बर्बाद कर दिया डिक! मैंने तुम्हारे मेक-अप के कुछ रंग खराब कर डाले हैं लेकिन वह अब भी ठीक किए जा सकते हैं। और जिसका अब कोई भी इलाज नहीं हो सकता डिक, जिससे मैं डरती थी—वह यह बात है कि कल लार्ड शोरबी से मेरा विवाह हो जाएगा।"

"तो क्या सब तय हो चुका है?" युवक ने पूछा।

"कल, दोपहर से पहिले डिक, एबे चर्च में" उसने उत्तर दिया, "जॉन मैचम और जोना सैंडले, अपने उचित अन्त को प्राप्त हो जाएँगे। आज रोने

से कोई लाभ नहीं है और रोते-रोते मैं केवल अपनी आँखें ही खो सकती हूँ। मैंने अनेक मन्नत-मनौतियाँ की हैं, लेकिन देवता और भी क्रुद्ध होते दिखाई देते है। और प्यारे डिक, अच्छे डिक, चूँकि कल प्रातःकाल तक तुम मुझे मुक्त नहीं कर सकते, इसलिए हमें अन्तिम बार चुम्बन करके एक दूसरे से हमेशा के लिए विदा माँग लेनी चाहिए।"

"नहीं", डिक ने कहा, "मैं अलविदा नहीं कहूँगा। यह तो निराशाजनक-सी बातें हैं। जब तक शरीर में प्राण हैं, जोना, तब तक आशा रखनी चाहिए। मैं अभी भी उम्मीदों से भरा हूँ और धर्म की सौगन्ध, मैं विजय प्राप्त करूँगा। देखो तो, जबकि तुम्हारा अस्तित्व मेरे लिए नाममात्र का था, क्या मैंने तुम्हारा पीछा नहीं किया, मैंने लोगों को लेकर विद्रोह का झण्डा खड़ा नहीं किया, और मैंने झगड़ा करके अपने प्राणों को संकट में नहीं डाला? और अब जबकि मैं अपनी आँखों से तुम्हें देख चुका हूँ—तुम्हें जोकि इंगलैण्ड की सर्व-सुन्दरी वीरांगना हो, क्या मैं तुमसे विमुख हो जाऊँगा? अगर मेरे रास्ते में सागर भी पड़ता हो, तो सीधा उसको पार कर लूँगा और अगर मेरा रास्ता सिंहों से भी भरा हो तो मैं उन्हें चूहों की तरह तितर-बितर कर डालूँगा!"

"ठीक तो है", उसने नीरसतापूर्वक कहा, "जैसी आकाश के समान तुम्हारी पोशाक है, वैसी ही तुम्हारी बातें हैं!"

"नहीं जोन", डिक ने प्रतिरोध किया, "यह केवल पोशाक की ही बात नहीं है, लेकिन सुन्दरी, उस समय तुम छद्मवेश में थीं और आज मैं छद्मवेश में हूँ। क्या मैं इस पोशाक में बेवकूफ-सा नहीं लगता हूँ?"

"तो क्या तुम असल में पुजारी नहीं बन गए हो?" उसने मुस्कराते हुए पूछा।

"अच्छा, याद तो करो", उसने विजय-गर्व से कहा, "जिस समय तुम मैचम के रूप में जंगल में थीं, तब कितनी हास्यास्पद लगती थीं, लेकिन अब?"

इस प्रकार वह बातें करते रहे, दोनों एक दूसरे के हाथ अपने हाथों में लिए हुए, एक दूसरे की ओर मधुर मुस्कान और दृष्टिपात करते हुए और मिनटों को सैकिंडों में परिवर्तित करते हुए इसी प्रकार वे रात्रि भर गुज़ार सकते थे। लेकिन तभी एक आवाज़ पीछे से आई और वह नाटे क़द की युवती अपने हाथों पर चुप रहने का अंगुलि-संकेत करती हुई बोली, "हे भगवान्!

तुम किस तरह चीख़-पुकार मचा रहे हो, क्या तुम चुप होकर बातें नहीं कर सकते और अब जोना, मेरी वन-सुन्दरी; तुम अपने प्रेमी को लाकर देने के लिए अपनी सखी को क्या पुरस्कार दोगी ?''

जोना उत्तर में उसके पास दौड़कर गई और उसे आवेशपूर्वक आलिंगन में लेकर दबाने लगी।

''और आप महोदय'', उस युवती ने कहा, ''आप मुझे क्या देने का इरादा रखते हैं ?''

''मैडम'', डिक ने कहा, ''मैं तो आपको इसी प्रकार का कोई पुरस्कार देने की महत्वाकांक्षा रखता हूँ।''

''तब आओ'', युवती ने कहा, ''तुम्हें इजाज़त है।''

लेकिन इस निमंत्रण पर डिक एक सेविका की तरह लजा उठा और केवल उसका कर चुम्बन करके पीछे हट गया।

''मेरा चेहरा देखकर आप इतने उदासीन क्यों होते हैं, मेरे प्रिय महोदय!'' उसने पृथ्वी पर झुकते हुए कहा और जब आख़िरकार डिक ने उसे उठाकर अपने सीने से लगा लिया तो उसने कहा, ''जोना, तुम्हारे प्रेमी तुम्हारी उपस्थिति में बड़ा संकोच कर रहे हैं लेकिन मैं तुम्हें यह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि जब हम पहिले मिले थे तो ये बहुत आगे बढ़ रहे थे। लेकिन मैं बहुत धोखेबाज़ हूँ। अच्छा अब'', उसने आगे कहा, ''शायद तुम लोग अपनी प्रेमवार्ता कर चुके हो। अब मैं तेज़ी से इस पालादीन (छद्मवेशी योद्धा) को यहाँ से रुख़सत करती हूँ।''

लेकिन इस विचार को सुनकर दोनों ही प्रेमी चिल्ला उठे कि उन्होंने अभी तो कुछ भी कहा-सुना नहीं है। रात अभी कितनी तरुण है और वह इतनी जल्दी किसी भी प्रकार विदा नहीं होंगे।

''और खाना'', उस नवयुवती ने कहा, ''क्या हमें खाने के लिए नीचे नहीं जाना है ?''

''नहीं, ज़रूर जाना है'', जोना चिल्लाई, ''मैं तो बिलकुल भूल ही गई थी।''

''तब मुझे छिपा तो दो'', डिक ने कहा, ''मुझे इन पर्दों के पीछे छिपा दो, या बक्से में बन्द कर दो या चाहे जिस प्रकार करो ताकि मैं आप लोगों के लौटने तक यहीं रह सकूँ। सच सुन्दरियो !'' उसने कहा, ''यह ख्याल रखो कि

हम दुर्भाग्य के मारे हैं और आज के बाद फिर जीवन में कभी भी नहीं मिल सकेंगे।''

इस पर वह युवती पिघल गई। और जब कुछ देर बाद एक घण्टी ने सर डेनियल के परिवार को भोजनालय की ओर आमन्त्रित किया तो डिक को ऐसी जगह बन्द करके खड़ा कर दिया गया जहाँ उसे थोड़ा-सा साँस लेने मात्र की ही सुविधा थी। और यहाँ से वह कमरे में भी देख सकता था।

वह इस स्थिति में बहुत देर खड़ा नहीं रहा जबकि बड़े आश्चर्यजनक तरीके से उसका ध्यान भंग हुआ। उस कमरे में लपटों की आवाज़ और हरे लट्ठे के सुँदकने की सी-सी की आवाज़ आती थी। लेकिन तभी डिक ने साँस बन्द कर के सुना कि कोई अत्यन्त सावधानी से कमरे में चल रहा है, लेकिन तत्काल दरवाजा खुला और एक काले मुँह वाला बौना-सा आदमी दरवाज़े पर दिखाई दिया। पहिले उसने मुँह अन्दर करके झाँका और फिर अपना आड़ा-तिरछा शरीर अन्दर कर दिया। उसका मुँह खुला था ताकि वह थोड़ी भी आवाज़ सुन ले, और उसकी आँखें, जो कि बहुत चमकीली थीं बड़ी तेजी के साथ इधर-उधर घूम रही थीं; वह दीवार में जगह-जगह पर टक-टक करता हुआ घूमने लगा किन्तु संयोग से डिक हर बार उसकी खोज से बच गया; तब उसने फर्नीचर को देखा, और लैम्प की परीक्षा की और बाद में बहुत बड़ी मायूसी के साथ जिस प्रकार आया था, उसी प्रकार बाहर जाने वाला ही था कि वह नीचे झुका और फ़र्श पर से कुछ उठा लिया और उसे ग़ौर से देखकर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ उसने अपनी पेटी में खोंस लिया और चलने लगा।

डिक का दिल बैठ गया क्योंकि वह वस्तु स्वयं डिक की गाउन का एक फुंदा थी। और उसे यह स्पष्ट हो गया कि यह बौना जासूस, जो कि लार्ड शोरबी का जासूस था, इस आविष्कार पर इतनी प्रसन्नता अनुभव कर रहा है; वह इसे अपने स्वामी-सामंत को तत्काल जाकर दिखाएगा। एक बार उसने सोचा कि वह उस पर्दे को एक तरफ़ फेंक दे और उस बदमाश का गला घोंटकर उस अप्रिय कहानी को सदैव के लिए समाप्त कर दे, लेकिन वह हिचकिचा ही रहा था कि एक और बेचैनी का कारण पैदा हो गया। एक आवाज़ जो बहुत भखरा रही थी और शराब के कारण टूट रही थी, जीने की ओर बढ़ती

दिखाई दी। और तभी शराब के नशे में मस्त लड़खड़ाते पैर उसी ओर बढ़ते दिखाई दिए।

"ग्रीनवुड के कुंजों में मेरे आनन्दी मित्रो, तुम क्या किया करते हो", वह गा रहा था, "तुम यहाँ क्या करते हो, दोस्तो, हे—तुम क्या किया करते हो" और तब एक उन्मत्त हँसी भी उसके साथ मिल गई। और तब फिर एक बार गीत की आवाज गूँज उठी :

"अगर तुम पुजारी होकर शराब पियोगे,
मोटे पुजारी जॉन, तुम मेरे दोस्त—
अगर मैं खाता रहूँ, और तुम शराब पीते रहो—
तो फिर प्रार्थना कौन गाएगा—तुम्हारा क्या ख्याल है।"

लॉलेस, अफसोस है, शराब पीकर मकान में इधर-उधर लड़खड़ाता फिर रहा है कि कहीं पड़कर सोए और शराब से नशे से मुक्त हो।

डिक अन्दर ही अन्दर क्रोध से जल उठा। वह जासूस पहिले तो डर गया क्योंकि उसे यह भय हो उठा था कि उसे एक शराबी आदमी से टक्कर लेनी है और अब बिल्ली के समान तेजी से वह कमरे से बाहर हो गया और रिचर्ड की आँखों से ओझल हो गया।

अब क्या किया जाय ? अगर वह आज रात लॉलेस से बिलकुल सम्पर्क न रखे तो फिर जोना की मुक्ति का द्वार बन्द ! और अगर वह इस मदमत्त वनचारी से बातचीत करे और जासूस कहीं छिपकर ताकता हो तो फिर ऐसा भयानक परिणाम होगा कि उसका कोई इलाज नहीं किया जा सकता।

लेकिन फिर भी डिक ने अन्तिम बात करने का ही फैसला किया। इस पर्दे से निकलकर वह दरवाजे में खड़ा हो गया कि हाथ उठाकर उसे सावधानी का संकेत कर दे। लॉलेस शराब के नशे में आँखों सहित लाल पड़ गया था और अपने पैरों पर लड़खड़ाता हुआ उत्तरोत्तर निकट आने लगा और आखिरकार उसने अपने तरुण कमाण्डर को देख लिया और उसका स्वागत किया और नाम लेकर ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा।

डिक आगे कूद आया और उस शराबी को जोरों से हिला डाला।

"जानवर !" वह फुसफुसाया—"तुम जानवर हो—आदमी नहीं। इस प्रकार मूर्खता करना तो दग़ाबाज़ी से बदतर है। हम सभी को मौत की टिकटिकी पर लटका दिया जाएगा।"

लेकिन लॉलेस केवल हँसता था और लड़खड़ाता था और शैल्टन को अपनी पीठ पर लादकर ले जाना चाहता था।

और तभी डिक के तेज़ कानों ने सुना कि उसी चित्रकारीयुक्त पर्दे के पीछे कपड़ों की खरखराहट हुई और वह ज़ोर से हिला। वह कूदकर उस आवाज़ पर पहुँच गया और वह दीवार पर लटकने वाला पर्दा टूटकर गिर गया और डिक और जासूस उस कपड़े के अन्दर ही लिपट गए। वह एक दूसरे की गर्दन पकड़ने के लिए बराबर लुढ़कते रहे, कभी-कभी वह पर्दा पर भटक जाते और कभी उस महान् क्रुद्धावस्था में भी बिलकुल खामोश होकर कुछ सुनने लगते। लेकिन जासूस दुर्बल था और अंतिम वार में वह डिक के खंजर के एक ही प्रहार से उसके घुटनों के पास लटक रहा और फिर कभी साँस न ले सका।

२१

इस भयानक और तीव्र क्रियाकाल में लॉलेस असमर्थ की तरह खड़ा रहा और जब डिक अपना काम समाप्त करके उठ खड़ा हुआ और नीचे की मंजिल से आती हुई आवाज़ को सुनने के लिए कान देने लगा, तब भी वह हवा में झूलती हुई एक टहनी के समान खड़ा-खड़ा डोल रहा था और मरे हुए आदमी के चेहरे की ओर ताक रहा था।

"यह ठीक हुआ", डिक ने आखिरकार कहा, "कि उन लोगों ने हमें सुना नहीं। देवताओं को धन्यवाद दो। लेकिन अब इस बेचारे जासूस का क्या करूँ, कम से कम उसकी जेब से मैं अपनी फुनगी तो ले ही लूँ।"

और ऐसा कहते हुए उसने उसकी जेब में हाथ डाला। उस फुंदा के अतिरिक्त उसमें सिक्के भी थे। साथ ही एक चिट्ठी भी थी जो कि लार्ड शोरबी ने लार्ड वेन्सलेडेल को लिखी थी। डिक ने उसकी मोहर और पत्र को पढ़ा। इससे यह स्पष्ट पता चलता था कि शोरबी का लार्ड विश्वासघातपूर्वक यार्क वंश से बातचीत चला रहा था।

यह युवक लिखने का कलम और दूसरा सामान बहुधा अपने पास रखता था। उसने अपने घुटनों पर कागज रखकर दो पंक्तियाँ उस पत्र में और जोड़ दीं :

"माई लार्ड शोरबी, तुमने पत्र तो लिखा लेकिन तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारा आदमी किस प्रकार मारा गया। लेकिन मेरा लिखा भी जरा पढ़ लो। खुश होने की जरूरत नहीं है।

जॉन एमेण्ड-आल"

उसने यह पत्र उस लाश की छाती पर टांक दिया और तब लॉलेस ने, जो अब तक इस व्यापार को मूर्खतापूर्वक खड़ा देखता रहा था, एकदम चैतन्य हो गया और उसने अपनी गाउन के नीचे से एक काला तीर निकाला और उस कागज़ में फँसाकर फिर उसी स्थान पर लगा दिया।

मृतक के प्रति इस अप्रतिष्ठा और बेरहमी के व्यवहार से डिक का मन बहुत बेचैन हुआ, लेकिन वह पुराना वनचारी खड़ा-खड़ा हँसता ही रहा।

"नहीं, इसका श्रेय मेरे हुक्म को जाएगा", वह पुनः हिचकियाँ लेने लगा, "मेरे आनन्दी वनचारियों को इसका श्रेय जाना चाहिये भाई" और तब अपनी आँखें बन्द करके और मुँह खोलकर वह ज़ोर से गाने लगा :

"अगर तुम भी शराब पीने लगोगे—"

"शान्त रहो, लफंगे", और उसने जोरों से उसे दीवार से टकराया, "मैं केवल दो शब्दों में, मरियम की सौगन्ध, तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हारे भेजे में क्या बिलकुल शराब ही शराब भर गई है, अक्ल बिलकुल नहीं ? मैं कहता हूँ कि तुम यहाँ से बाहर चले जाओ, और अगर तुम यहीं भटकते रहे तो न केवल तुम ही वरन मैं भी सूली पर लटका दिया जाऊँगा। तब चलो, जल्दी करो और अगर तुमने भूल की तो याद रखो मुझे यह भूलना पड़ेगा कि मैं तुम्हारा कप्तान हूँ और तुम्हारा अहसानमन्द भी !"

तब डिक की आँखों की वह चमक और डिक की आवाज़ की उस लरज ने उस साधु का मस्तिष्क कुछ ठीक कर दिया और उन शब्दों का अर्थ भी उसकी समझ में कुछ-कुछ आने लगा।

"धर्म की सौगन्ध", लॉलेस चिल्लाया, "अगर मेरी ज़रूरत नहीं है, तो मैं जाता हूँ !", और वह लड़खड़ाता हुआ बराण्डे से बाहर चला गया। और दीवार के सहारे-सहारे खिसकता हुआ वह नीचे उतर गया।

और ज्योंही वह नज़र से ओझल हुआ, डिक स्फूर्ति के साथ अपनी जगह पर पहुँच गया और छिपकर उस घटना की प्रतिक्रिया की जाँच करने लगा। बुद्धिमत्ता का तक़ाज़ा था कि वह वहाँ से चला जाता, परन्तु प्रेम और औत्सुक्य भावना ने उसे रोक लिया।

डिक उस चित्रकारीयुक्त पर्दे के पीछे बिलकुल सीधा खड़ा हुआ था, इसलिए प्रतीक्षा करना अत्यन्त दूभर प्रतीत होता था। कमरे के अन्दर की आँच

जलकर समाप्त हो रही थी और लैम्प की बत्ती जलकर धुआँ छोड़ने लगी थी और अभी तक इस ऊपर की मंज़िल वाले लोगों के लौटकर आने की कोई आहट नहीं थी। अभी तक भी खाना खाने वाली पार्टी की धुँधली-सी आवाज़ ऊपर चढ़ती आ रही थी। और अब भी इस वर्फ़ की गहरी चादर के नीचे शोरबी नगर चुपचाप सोया पड़ा था।

आख़िरकार पदचाप और बोलने की आवाज़ें निकट बढ़ने लगीं और जिस समय सर डेनियल के कुछ मेहमान उस घटनास्थल पर पहुँचे तो उन्होंने उस फटे हुए पर्दे और उस मरे हुए जासूस को देखा।

कुछ लोग आगे की तरफ और कुछ पीछे की ओर भाग खड़े हुए। और सभी एक साथ मिलकर चिल्लाने लगे।

इस चिल्लाने की आवाज़ को सुनकर मेहमान, शस्त्रधारी सैनिक, स्त्रियाँ, नौकर और संक्षेप में इस विशाल हाउस के सभी लोग उस ओर दौड़ आए।

तत्काल रास्ता साफ़ हुआ क्योंकि सर डेनियल और उनके पीछे आने वाले दिन के वर महोदय—लार्ड शोरबी—भी घटनास्थल की ओर बढ़ रहे थे।

"माई लार्ड", सर डेनियल ने कहा, "क्या मैंने आपको इस पाजी काले तीर के बारे में नहीं बताया है ? सबूत के लिए, इसे देख लीजिए। वह वहाँ खड़ा है और संयोग से आपकी ही वर्दी पहिने हुए किसी आदमी की छाती में गड़ा हुआ है या किसी आदमी ने आपकी वर्दी चुराली है ?"

"खुदा ख़ैर करे, यह तो मेरा ही आदमी था", लार्ड शोरबी ने पीछे होते हुए कहा, "यह तो शिकारी कुत्ते की तरह तेज़ और तिल की तरह अदृश्य हो जाने वाला आदमी था।"

"आह ठीक ही कहा आपने", सर डेनियल ने कहा, "लेकिन क्या सूँघकर वह मेरी हवेली में आया था, लेकिन अफसोस कि अब यह कभी भी कुछ न सूँघ सकेगा।"

"आप प्रसन्न हों सर डेनियल, एक कागज़ पर कुछ लिखा हुआ है और वह उसकी छाती पर पिन से टँका हुआ है !"

"सब कुछ मुझे दे दो, तीर भी और दूसरा सब कुछ भी।" और जब उसने वह तीर अपने हाथ में ले लिया तो वह कुछ देर तक उसे हाथ में लिए हुए ही देखता हुआ कुछ सोचता रहा। "ऐ" उसने लार्ड शोरबी से कहा, "यह वह

घृणा है जो मेरे क़दमों के बिल्कुल नज़दीक घूमती रहती है। यह काली लकड़ी या इसके समान ही कोई चीज़ एक न एक दिन मुझे गिराकर रहेगी। और दोस्त, एक स्पष्टवादी नाइट की सलाह मानो, कहीं ऐसा न हो कि ये तुम्हारे पीछे भी पड़ जाएँ। यहाँ से भाग जाओ। यह एक ऐसी बीमारी है, जो निरंतर अंग-प्रत्यंग को मड़ोरती रहती है। लेकिन देखें तो सही, इस पत्र में क्या लिखा है? ओह, मैं ठीक ही कहता था, उन्होंने तुम्हें भी निशाना बना लिया है, कल या परसों वह तुम पर वार करेंगे, लेकिन तुमने पत्र में लिखा क्या था।"

लार्ड शोरबी ने तीर पर से कागज़ खींच लिया, उसे पढ़ा और मरोड़कर अपने हाथों में दबा लिया और अपनी झिझक को दूर करता हुआ, वह उस लाश के निकट घुटने टेककर बैठ गया और बड़ी तत्परता से उसकी जेबें टटोलने लगा।

"देखो तो", उसने कहा, "सचमुच एक बहुत जरूरी कागज़ मेरे हाथ से जाता रहा है। आह, अगर उस पाजी की गर्दन मेरे हाथ में एक बार आ जाती, जिसने वह पत्र लिया है। बहुत बड़ी हानि हो चुकी है, चारों तरफ़ के नाके-बन्दी कर दो।"

उस हवेली के चारों ओर और बगीचे में सन्तरी लोग तैनात कर दिए गए। हवेली के जीनों के हर मोड़ पर एक सन्तरी खड़ा किया गया, एक पूरी टुकड़ी द्वार के निकट वाले हॉल में और दूसरी टुकड़ी बाहर जलने वाली आग के चारों तरफ़ तैनात कर दी गई। सर डेनियल के अनुयायियों में लार्ड शोरबी के अनुयायियों की संख्या बढ़ा दी गई। इस प्रकार हवेली को बाह्य आक्रमण के प्रति एकदम सुरक्षित कर लिया गया और अगर कोई शत्रु अभी अन्दर ही छिपा हुआ था तो उसको भी जाल में फँसाने की पूरी तैयारियाँ हो चुकी थीं।

इसी बीच उस जासूस की लाश गिरते हुए बर्फ़ के अन्दर ही बाहर निकाली गई और एबे चर्च में रख दी गई।

जब तक यह सब कुछ हो न गया, और उसके बाद चारों तरफ़ खामोशी छा न गई, तब तक उन दोनों युवतियों ने रिचर्ड शैल्टन को उसके छिपने के स्थान से नहीं निकाला। उन्होंने उसे बाहर निकाला और घटना की पूरी रिपोर्ट दे दी। उसने भी अपनी तरफ़ से जासूस के आगमन और उसके आकस्मिक अन्त की कहानी कह सुनाई।

जोना यह सुनकर मूच्छितप्राय-सी पीछे दीवार से टिक गई।

"लेकिन इससे भी कुछ लाभ होगा नहीं," उसने कहा, "कल तो मेरी शादी होना निश्चित है, उसे कोई टाल नहीं सकता।"

"क्या," उसकी सखी चिल्लाई, "और यह हमारा पालादीन है, जो शेरों को चूहों की तरह तितर-बितर कर सकता है। तुम्हें उसकी शक्ति में इतना कम विश्वास क्यों है ? आओ, शेरों को हाँकने वाले, अपने वीरोचित परामर्श से हमारे दिलों को सान्त्वना दो।"

डिक अपने ही शब्दों का इस प्रकार प्रयोग किए जाने पर अत्यन्त लज्जित होने लगा, लेकिन यद्यपि वह लजा रहा था फिर भी वह अत्यन्त मुस्तैदी के साथ बोल रहा था।

"सच है," उसने कहा, "हम विपत्ति की खोह में गिरे पड़े हैं, लेकिन फिर भी अगर मैं आधे घण्टे के लिए भी इस हवेली से बाहर जा सकता तो मैं ईमान के साथ कहता हूँ कि अब भी सब कुछ ठीक हो सकता है, और शादी भी सरलतापूर्वक रोकी जा सकती है।"

"और सिंह", लड़की ने मुँह बनाया, "उन्हें खदेड़ा जा सकता है !"

"मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ," डिक ने कहा, "मैं इस समय दर्प की वाणी में नहीं बोल रहा हूँ लेकिन आप लोगों से परामर्श और मन्त्रणा की आशा करता हूँ। अगर मैं सन्तरियों की इस घनी भीड़ को पार करके इस हवेली के बाहर नहीं जा सका तो मेरे बस का कुछ भी नहीं रहेगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरा आशय ठीक-ठीक समझकर मुझे परामर्श दिया जाए।"

"तुम यह क्यों कहती थीं जोन कि वह गँवार है ?" उस लड़की ने कहा, "मैं घोषित करती हूँ कि उसकी वाणी में विलास है, सिर में उसके मस्तिष्क है, वह प्रत्युत्पन्नमति है, विनम्र और दुर्धर्ष है। तुम्हें और क्या चाहिए था ?"

"नहीं" जोना एक गहरा उसाँस लेती हुई मुस्कराई, "उन्होंने मेरे डिक को बदल दिया है। जब मैंने उसे देखा था तो वह बड़ा गँवार था। लेकिन इससे अब क्या अन्तर पड़ता है। कल तो मैं फिर भी लेडी-शोरबी बना ही दी जाऊँगी ?"

"नहीं तो फिर मैं यह दुःसाहस भी करूँगा ही" डिक ने कहा, "जिस तरह एक उड़नपरी मुझे यहाँ पहुँचा गई, उसी प्रकार कोई चीज मुझे यहाँ से बाहर

ले जा सकती है । उस जासूस का नाम क्या था ?"

"रटर," उस युवती ने कहा, "और पुकारने में वह कितना अच्छा भी लगता है लेकिन अब तुम उस नाम का क्या करोगे सिंहों को हाँकने वाले ! अब तुम्हारे मन में क्या है ?"

"अब मैं साहस करके बाहर निकलूँगा," डिक ने उत्तर दिया, "और अगर किसी ने जाते हुए टोका तो मैं कहूँगा कि बेचारे रटर की लाश पर धर्म-मन्त्र पढ़ने जाता हूँ । वह लोग अब भी वहाँ प्रार्थना कर रहे होंगे ।"

"यह उपाय तो बहुत सामान्य-सा प्रतीत होता है," लड़की ने कहा, "लेकिन फिर भी शायद यह सफल हो जाए ।"

"नहीं," शैल्टन ने कहा, "यह कोई योजना नहीं है, केवल साहस है, जो संकट के समय अनेक उपायों से अधिक सफल होता है ।"

"तुम ठीक कहते हो," उसने कहा, "तब तुम मरियम का नाम लेकर जाओ, देवता तुम्हारी यात्रा सफल करें । तुम यहाँ एक ग़रीब लड़की को छोड़े जा रहे हो जो तुम्हें और केवल तुम्हें ! प्रेम करती है और दूसरी जो तुम्हारी सच्ची मित्र है । उनके लिए अपने को सावधान रखना और किसी भयंकर जोखिम में अपने प्राणों को मत फँसाना !"

"ठीक है," जोना ने कहा, "जाओ डिक, अब तुम यहाँ रहो या जाओ, लेकिन मेरे लिए अपने प्राणों को संकट में मत डालना । तुम जा रहे हो, लेकिन मेरा हृदय तुम्हारे साथ जा रहा है । देवता तुम्हारी रक्षा करें !"

डिक पहिले सन्तरी के पास से इतने विश्वास के साथ गुज़र गया कि वह केवल उसके मुँह की ओर घूरता रह गया लेकिन दूसरे मोड़ पर जब सन्तरी के पास से गुजरने लगा तो उसने उसके सामने अपना भाला फैलाकर रास्ता रोक लिया और बाहर जाने का उद्देश्य पूछा ।

"पैक्स वाबिस्कम," डिक ने उत्तर दिया, "मैं ग़रीब रटर की लाश के ऊपर धर्म-मंत्र पढ़ने के लिए जा रहा हूँ ।"

"ठीक है," सन्तरी ने कहा, "लेकिन तुम्हें अकेले नहीं जाने दिया जा सकता । उसने एक सनोवर के तने पर टिककर सीटी बजाई और कहा, "एक आदमी जा रहा है ।"

उस जीने के नीचे उसे एक गार्ड उसकी प्रतीक्षा करता हुआ मिला । और

जब उसने एक बार फिर अपनी कहानी दोहराई तो उस टुकड़ी के नायक ने चार आदमियों के साथ उसे चर्च की ओर रवाना कर दिया।

"उसे खिसकने न देना मेरे जवानो," उसने कहा, "अपने प्राणों की यदि चिंता है तो उसे सर ओलीवर के पास ले जाना।"

द्वार तब खोल दिया गया। एक आदमी ने डिक को बाँह से पकड़ लिया, दूसरा मशाल लेकर आगे बढ़ा और चौथा झुकी हुई कमान पर तीर चढ़ाकर पीछे-पीछे चलने लगा। इस प्रकार वह उसे बाग में से निकालकर ले गए। उस समय चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था और बर्फ़ पड़ रहा था। और वह चर्च की धीमी-धीमी टिमटिमाती बत्तियों की ओर बढ़ रहे थे।

पश्चिमी सीमान्त पर तीरंदाजों की एक टुकड़ी खड़ी थी, ये लोग दरवाज़ों के घुमावों के साये में झुके खड़े थे। डिक के रहवरों ने उनसे कुछ कहा और तब उसे आगे जाने की इजाजत मिल सकी। और वह उस पवित्र स्थान में प्रवेश कर सका।

चर्च में रोशनी बहुत कम थी और गोलाकार छत से कहीं-कहीं कुछ बड़े लोगों के नीजी प्रार्थना-गृहों में कुछ लैम्प जल रहे थे। गिर्जा के पूर्वी भाग में मृतक की लाश पड़ी हुई थी। उसका शरीर सम्मानपूर्वक अर्थी पर रखा हुआ था।

गुम्बदों में प्रार्थना का स्वर गूँज रहा था; बहुत-सी आकृतियाँ उस प्रार्थना-गृह में झुकी हुई थीं और एक पादरी वेदी पर बैठा हुआ शोक-समय की वेशभूषा पहिने हुए प्रार्थना पढ़ रहा था।

इस नवागन्तुक के आगमन पर उन कफन बाँधकर झुके हुए पादरियों में से एक ने सिर उठाया और चर्च के बाहर खड़े सन्तरियों के पास जाकर उनके नेता से पूछा कि वह आदमी चर्च में किस उद्देश्य से लाया गया। प्रार्थना और मृतक के प्रति सम्मान की भावना से वह बहुत ही सतर्क स्वर में बोले लेकिन उस विशाल इमारत के रिक्त स्थान में वह शब्द प्रतिध्वनित होते रहे और बार-बार प्रतिध्वनित होते रहे।

"साधु ?" सर ओलीवर ने कहा (क्योंकि वह स्वयं ही आज के लिए नियुक्त साधु था) जब उसने तीरंदाज की रिपोर्ट सुन ली, "मेरे भाई, मुझे तुम्हारे आने की कोई प्रतीक्षा नहीं थी।" उसने शैल्टन की ओर आमुख होते हुए कहा, "मैं

शिष्टतापूर्वक तुमसे पूछता हूँ कि तुम कौन हो ? और तुम किसके कहने पर हमारी प्रार्थना में शरीक होना चाहते हो।"

डिक, अपनी कफ़नी से मुँह ढके हुए था, उसने सर ओलीवर को सन्तरियों से दो क़दम हटकर आने का इशारा किया। और ज्योंही पादरी ने वैसा किया, "मैं आपको धोखा देने का साहस नहीं कर सकता महोदय !" उसने कहा, "मेरी ज़िन्दगी अब आपके हाथों में है।"

सर ओलीवर एकदम चौंक उठे। उनका मुँह पीला पड़ गया और एक क्षण के लिए वह बिलकुल चुपचाप रह गए।

"रिचर्ड," उसने कहा, "मैं नहीं जानता कि तुम किस उद्देश्य से यहाँ आए हो, लेकिन तुम्हारा इरादा नेक ही होगा, इस पर मुझे संदेह है। लेकिन फिर भी मेरे अन्दर जो कुछ दया-माया है—उसे लेकर मैं सीधे तुम्हें विपत्ति में नहीं फँसाऊँगा। तुम रात भर मेरे साथ स्टाल में बैठोगे। तुम यहीं बैठे रहोगे, जब तक माई लार्ड शोरबी का विवाह सम्पन्न हो चुकेगा और पार्टी सुरक्षित रूप से अपने घर पहुँच चुकेगी और अगर सब कुछ विधिपूर्वक सम्पन्न हो गया और अगर तुम्हारा रचा हुआ कोई षड्यन्त्र सफल न हुआ तो तुम जिधर चाहो उधर जा सकते हो। लेकिन अगर तुम्हारा इरादा खून बहाने का है तो वह तुम्हारे सिर काटकर बदला अवश्य लेगा, आमीन ?"

और पादरी ने श्रद्धापूर्वक उसको क्रास प्रदान किया और अपने साथ उसे वेदी की ओर लेकर बढ़ गया।

इसके साथ ही उसने सैनिकों से कुछ शब्द कहे और डिक को बाँह से पकड़कर वह प्रार्थना-गृह में ले गया। और उसे अपने ही निकट स्टाल में बैठा लिया। शिष्टाचारवश युवक तत्काल झुक गया और प्रार्थना में मग्न होने का बहाना करने लगा।

उसकी आँखें और उसका मस्तिष्क फिर भी चारों ओर घूम रहे थे। उन सैनिकों में से तीन—उसने देख लिया था—अंधेरे में छिपकर स्थिति समझकर खड़े हो गए थे। उन्होंने हवेली की ओर न लौटकर वैसा किया था, इससे स्पष्ट था कि सर ओलीवर की आज्ञा से ही वह सब हुआ था। इस प्रकार वह इस चर्च के उस पैशाचिक वातावरण में सारी रात काटेगा और जिसे उसने कत्ल किया था,

उसके पीले चेहरे की ओर देखता हुआ ! अगले दिन प्रातःकाल उसकी प्राणाधिक प्रेयसी उसीकी आँखों के सामने एक दूसरे आदमी के साथ ब्याह दी जाएगी !

लेकिन फिर भी उसने अपने मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया था और भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का सामना करने का साहस हृदय में बटोरते हुए फिर ध्यानमग्न हो गया।

२२

शोरबी के उस गिर्जाघर में बिना व्यवधान के रात्रि भर प्रार्थना चलती रही। कभी-कभी स्तोत्रगान होने लगता था और कभी-कभी एक-दो टंकार घंटे पर बज उठती थीं।

वह जासूस रटर बड़े आदरपूर्वक विदा किया गया था। वह वहाँ पादरियों द्वारा सम्यक् विधि से लेटा दिया गया। उसके हाथ उसके वक्ष पर रखे थे और उसकी आँखें छत की ओर निहार रही थीं। और स्टाल में बैठा हुआ वह युवक, जिसने उसे कत्ल किया था, बड़ी व्यग्रतापूर्वक दिन के निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इन कई घण्टों में केवल एक बार सर ओलीवर अपने बन्दी की ओर झुका था।

"रिचर्ड", उसने फुसफुसाया, "अगर तुम मेरी ज़िन्दगी पर कोई कुत्सित इरादा लेकर आए हो तो बेटे, तुम एक बेगुनाह आदमी की जान लोगे। स्वर्गस्थ देवताओं की दृष्टि में मैंने गुनाह अवश्य किए हैं किन्तु तुम्हारे प्रति मैं लेशमात्र भी गुनहगार साबित नहीं हो सकता।"

"मेरे पिता", उसने उसी स्वर में उत्तर दिया, "मेरा विश्वास करो। मेरा कोई भी कुत्सित उद्देश्य नहीं है। रहा आपकी निर्दोषिता के बारे में। आपने अपनी सफ़ाई दे तो दी है, लेकिन वह अत्यन्त सन्दिग्ध सफ़ाई थी।"

"एक आदमी अपराधी होते हुए भी निर्दोष हो सकता है", पुजारी ने कहा, "अंधी आँखों से किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी कोई आदमी जा सकता है, जबकि उसके परिणाम से वह भली प्रकार अवगत न हो। इसी प्रकार मेरे

साथ हुआ। मैंने तुम्हारे पिता की मौत के फन्दे में फँसाया था अवश्य, लेकिन इस धर्मस्थान में देवताओं के समक्ष मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं नहीं जानता मैंने किया क्या था।"

"यह हो सकता है", डिक ने उ र दिया, "लेकिन देखो, आपने मुझे कैसे जाल में फँसा लिया है। मैं यहाँ . आपका जज और बन्दी दोनों बना हुआ हूँ कि आपको देखकर मुझे अपने जीवन का संकट भी सताता है और मेरा क्रोध भी भड़कता है। मेरा ख़्याल है कि अगर आज तक आपने एक पादरी का सच्चरित्र जीवन व्यतीत किया होता तो आप न मुझसे भयभीत होते और न मुझसे घृणा करते और रहा आपकी प्रार्थना के बारे में, उसकी आवश्यकता है—इसलिए मैं आपका आदेश मानता हूँ, लेकिन मैं आपके सम्पर्क का भार अपने ऊपर अधिक नहीं सहन कर सकूँगा।"

पादरी ने इतनी गहरी साँस ली कि उसे सुनकर उस युवक के हृदय में भी एक बार दया उमड़ आई, और उसने अपना सिर इस प्रकार झुका लिया जैसे वह चिन्ता के वशीभूत टूटा हुआ कोई ग़रीब आदमी हो। डिक ने अधिक देर तक प्रार्थना नहीं की। लेकिन उसकी अंगुलियों में माला अब भी घूम रही थी और उसके दाँतों की किटकिटाहट जैसे प्रार्थना-मन्त्रों का उच्चारण कर रही थी।

प्राची में रजत प्रकाश का उदय हो रहा था और चर्च के रंगीन वातायनों से छनकर अन्दर की मोमबत्तियों को लज्जित कर रहा था। प्रकाश धीरे-धीरे विस्तार और उज्ज्वलता पकड़ता जा रहा था और दक्षिण-पूर्वी खिड़कियों पर गुलाबी रंग खेलने लगा था। तूफ़ान समाप्त हो चुका था, विशाल बादल अपना बर्फ़ का पासा समेटकर किसी दूर दिशा को कूच कर गए थे। और इस प्रकार एक शरद कालीन उज्ज्वल प्रकाशमय दिन का अभ्युदय हो रहा था।

चर्च के अफ़सरों के आवागमन से शोर मच गया था। अर्थी मृतक-स्थल में पहुँचा दी गई थी। फर्श पर से रक्त के दाग़ धो दिए गए थे, और कोई भी ऐसा चिह्न कहीं नहीं छोड़ा गया था, जिससे माई लार्ड शोरबी के शुभ विवाह के लिए अमंगल होता। तब ही उन पुजारियों ने जो रातभर एक उदासी की मुद्रा में प्रार्थना कर रहे थे, प्रातःकाल अपनी मुखाकृतियों की छटा बदल ली थी और वह उस आनन्दपूर्ण उत्सव के अनुरूप अपने आपको बनाने का प्रयत्न

कर रहे थे। और उससे भी आगे साधु-जन नगर के विभिन्न मन्दिरों में एकत्रित हो गए थे और दिन के आगमन की सूचक प्रार्थनाएँ करनी आरम्भ कर दी थीं।

इस उथल-पुथल में सर डेनियल के सन्तरियों को धोखा देकर अन्दर आने का अवसर मिल गया। और तभी जब डिक ने थकी आँखों से इधर-उधर देखना आरम्भ किया, उसने विल लॉलेस को देखा जो कि अभी तक साधु वेश में इधर-उधर घूम रहा था।

इस वनचारी ने भी उसी समय अपने नायक को पहिचान लिया और उसने अपने हाथों और आँखों से इशारा किया।

डिक हालाँकि कल रात की उन्मादयुक्त हरकतों के लिए लॉलेस को क्षमा नहीं कर सका था, परन्तु वह अपनी विपत्ति में उसे किसी भी प्रकार फँसाना उचित नहीं समझता था और उसने भी इशारे से कहा कि वह भाग जाए।' लॉलेस ने जैसे उसका इशारा समझ लिया था। वह फौरन एक खम्भे के पीछे गायब हो गया। और डिक ने एक संतोष की साँस खींच ली।

लेकिन तभी वह डाकू आस्तीन पकड़कर उसे झटक रहा था और उसके निकट वाले स्थान पर बैठकर पूरी तरह से भक्तिभावों में लीन हो गया था।

तभी सर ओलीवर उठे और स्टालों के पीछे से होते हुए बाहर प्रतीक्षा करते हुए सैनिकों की ओर बढ़ गए। पुजारी का संदेह अब पक्का होता जा रहा था और उसी क्षण लॉलेस चर्च में बन्दी बन गया था।

"हिलो मत," डिक ने फुसफुसाया, "इस समय हम महान संकट में हैं और यह सब तुम्हारे कल के मतवालेपन का परिणाम है कि तुमने मुझे ऐसे स्थान पर बैठे देखा जिसमें न मुझे दिलचस्पी है और न जहाँ बैठने का मुझे अधिकार है; क्या तुम्हें इस शंका का आभास नहीं मिला था कि तुम यहाँ से विदा हो जाते ?"

"नहीं," लॉलेस ने कहा, " मैंने समझा था कि तुम एलिस के आदेश से यहाँ पर आकर बैठे हो।"

"एलिस," डिक प्रसन्नता से चमका, "तो क्या एलिस लौट आया है ?"

"निश्चय से," वनचारी ने उत्तर दिया, "वह कल रात लौटकर आ गया। और उसने इस तरह शराब पीकर मतवाला होने के लिए मुझे पेटी से पीटा।

इस प्रकार मेरे मालिक तुम्हारा प्रतिशोध पूरा हो गया; एलिस डकवर्थ बड़ा प्रचण्ड आदमी है। वह क्रेबन से कूच बोलता हुआ इस विवाह को रोकने इधर आया है और ऐसा वह करके ही रहेगा, यह समझ लो।"

"तब तो समझ लो," डिक ने विश्वासपूर्वक कहा, "कि तुम और मैं मर चुके हैं; मैं यहाँ संदेह के कारण बन्दी बना बैठा हूँ और अगर इस विवाह में कोई विघ्न पड़ा तो उसके बदले में मेरी गर्दन साफ़ कर दी जाएगी। मेरे सामने अब एक केवल यही सुविधा है कि या तो मैं अपनी प्रेयसी को छोड़ दूँ या अपनी जिन्दगी से हाथ धो लूँ। लेकिन मैं यह निश्चय कर चुका हूँ कि मैं अपने प्राणों का ही उत्सर्ग करूँगा।"

"धर्म की सौगन्ध," लॉलेस चिल्लाया और आधा उठते हुए उसने कहा, "मैं तो चला।"

लेकिन डिक ने अपना हाथ उसके कन्धे पर जमा दिया :

"मित्र लॉलेस, चुपचाप यहीं बैठ जाओ," उसने कहा, "क्या तुमने उधर नहीं देखा ? वहाँ गुम्बद में जो सैनिक खड़े हैं, तुम्हारे उठने का संकेत पाते ही वह तुम पर झपट पड़ेंगे। तुम जहाज़ पर जब थे तो तुमने अपने प्राण देने के लिए काफ़ी साहस का परिचय दिया था, अब यहाँ सूली पर टँगकर प्राण देने के लिए भी थोड़ा साहस दिखाओ।"

"मास्टर डिक," लॉलेस ने साँस भरी, "यह भावना मुझ पर अकस्मात् यह खबर सुनकर सवार हो गई। लेकिन मुझे एक क्षण दो कि मैं अपना साँस बाहर खींच लूँ और मैं सिद्ध कर दूँगा कि मैं भी तुम्हारी तरह शक्तिशाली हृदय रखता हूँ!"

"वाह, तुम तो बड़े साहसी हो जी," डिक ने उत्तर दिया, "लेकिन फिर भी लॉलेस, इस प्रकार प्राण देना मेरे स्वभाव के बिलकुल प्रतिकूल है, लेकिन जहाँ सिर धुनने के अलावा कोई चारा नहीं, वहाँ सिर ही धुना जाए।"

"नहीं, तुम ठीक कहते हो," लॉलेस ने कहा, "मौत से डरना कैसा मेरे मालिक, छिः ! एक न एक दिन वह सबको उठा ही लेगी; लेकिन मैंने सुना है कि संघर्ष करते हुए मरना एक शानदार मौत होती है, हालाँकि आजतक मैंने किसी को भी स्वर्ग से लौटकर वैसी रिपोर्ट देते सुना नहीं।"

और इतना कहते हुए वह तगड़ा बदमाश अपनी स्टाल में पीछे झुक गया।

और उसने अत्यन्त अशिष्टता और लापरवाही से अपने हाथ इधर-उधर फेंके।

"लेकिन वास्तव में बात यह है कि," डिक ने कहा, "अभी हमारे लिए चुपचाप रहने का ही अवसर है। हमें मालूम नहीं है कि एलिस डकवर्थ करना क्या चाहता है। अगर फिर भी कुछ आशा की झलक दिखाई न दी, तो हम हाथ-पैर मारेंगे ही।"

अब जबकि उन्होंने बातें करना आरम्भ कर दी थीं, उन्हें बहुत दूरी से आता हुआ, एक मधुर वादन स्वर सुन पड़ने लगा जो कि ऊँचा और अधिक मधुरतर होता जा रहा था। चर्च की घण्टियाँ जोरों से बजना शुरू हो गई थीं और लोगों की एक विशाल भीड़ चर्च के सहन में भरना शुरू हो गई थी। वह लोग बर्फ को अपने पैरों से कुचलते और कभी-कभी हाथों में लेकर उड़ाते हुए आगे बढ़ रहे थे। पश्चिमी द्वार खोल दिया गया था जिससे बर्फ से ढकी सड़क और उस पर पड़ती हुई लाल रोशनी चमक रही थी। अभी प्रातः कालीन बयार चल रही थी लेकिन इन तमाम तैयारियों को देखने से विदित होता था कि लार्ड शोरबी ने नितान्त प्रातःकाल ही अपना विवाह रचाने का फैसला कर लिया है। और यह बरयात्री-समूह ही चर्च की ओर गाजे-बाजे के साथ बढ़ता आ रहा था।

लार्ड शोरबी के कुछ लोग चर्च के बग़ल वाले रास्ते से लोगों की भीड़ को हटा रहे थे और बाहर सहन में शादी पर गाने-बजाने वाले गवैये बर्फ पर आगे बढ़ते आ रहे थे। शहनाई और ताशे बजाने वाले अपने मुँह को लाल करते हुए अपने वाद्य यन्त्रों में प्राण फूंक रहे थे और ढोल वाले तो इस प्रकार जुटे हुए थे जैसे आज किसी से बाज़ी लगाकर आए हों।

ये लोग जैसे ही इस पवित्र धर्मस्थान के निकट पहुँचे वे दोनों ओर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए थे। और वे अपने संगीत को और भी बल प्रदान करते हुए अपने पैर बर्फ में पटक रहे थे। जैसे ही उन्होंने यह पंक्ति बना ली थी, उसके पीछे अभिजात वर्गीय बरयात्री आने आरम्भ हो गये थे। उनकी पोशाकों की शोभा और बहुमूल्यता अलग-अलग थी। वह लोग रेशम और मखमल, समूर, सैटिन, कढ़े हुए और फीतेदार पोशाक पहने हुए थे। ये लोग बर्फ से ढकी हुई सड़क पर रंग-बिरंगे फूलों के समान प्रतीत होते थे। या ऐसे लगते थे जैसे किसी दीवार पर रंगीन चित्रकारी युक्त खिड़की चढ़ी हुई हो।

सर्वप्रथम दुलहिन आई जो अत्यन्त उदास थी और उसका चेहरा शरद् की तरह पीला पड़ा हुआ था। वह सर डेनियल की बाँह पकड़े हुए थी, और उसके पीछे उसकी सखी थी, जो कि वही लड़की थी जिसने बीती रात डिक से मित्रता कर ली थी। थोड़ा ही पीछे वर महोदय थे जिनके मुँह पर अंगराग चम-चम चमक रहा था, और ज्योंही वह उस पवित्र स्थान से गुज़रा और उसने अपना टोप उतारा तो उसकी खल्वाट खोपड़ी दिखाई पड़ी जोकि भावोत्तेजना के कारण लाल पड़ गई थी।

और अब एलिस डकवर्थ का अवसर आ पहुँचा था।

डिक ने जो कि विरोधी भावनाओं से उद्वेलित अपने सामने के डैस्क को पकड़ रखा था, भीड़ में एक जबर्दस्त आन्दोलन होते देखा। लोग पीछे की ओर हटने के लिए कशमकश कर रहे थे और उन्होंने अपने बाज़ू ऊपर उठाए हुए थे। इन इशारों को देखते ही, उसने चर्च की गैलरी से तीन आदमियों को तनी हुई कमान लेकर झाँकते हुए देखा। तत्काल ही उन्होंने अपना काम पूरा कर दिया, और इतने वह आश्चर्यचकित भीड़ कोई प्रतिकार करने का निश्चय करती, वह तीनों वहाँ से हट गए और ग़ायब हो गए।

गिर्जाघर का वह केन्द्रस्थल भयभीत और चीखती हुई आवाज़ों से गूँज उठा। पुजारी लोग अपने स्थानों पर प्राणों का भय लेकर भाग खड़े हुए, चारों ओर गाना-बजाना बिलकुल बंद हो गया और हालाँकि सिर पर की घंटियाँ अभी तक बजती जा रही थीं, विनाश का स्वर चैम्बर में भी बज उठा था और रस्सियों पर कूदकर खेल दिखाने वाले नटों ने अपने काम को बंद कर दिया था।

इस केन्द्रस्थल के बीचोंबीच वर महोदय पत्थर की तरह गिरे पड़े थे और दो काले तीर उनके शरीर में बिंधे पड़े थे। वधू मूर्च्छित होकर गिर पड़ी थी। सर डेनियल इस भीड़ में क्रोध से आग-बबूला हुए भीड़ के अन्दर खड़े थे; एक गज़भर लम्बा तीर उनकी बाँह में लगा हुआ नाच रहा था और एक दूसरे ने जो उनकी भौंहों को छीलता हुआ निकल गया था, उनके समस्त चेहरे को लोहू-लुहान कर दिया था।

इस दुःखद घटना के रचयिता, इसके पूर्व कि उनको पकड़ने की चेष्टा की

जाती, घुमावदार सीढ़ियों से उतरकर पिछले द्वार से निकलकर भीड़ में ग़ायब हो गए थे।

डिक और लॉलेस अभी भी असमंजस की स्थिति में अपनी जगहों पर बैठे थे, वह हालाँकि सर्वप्रथम खतरे की सूचना पर ही उठ बैठे थे और बलपूर्वक द्वार की ओर बढ़ने की चेष्टा करने लगे थे, लेकिन स्टालों की तंगी और पादरियों की भयभीत भीड़ में जगह न मिलने के कारण, पुनः अपने स्थानों पर आ बैठे थे।

और अब भय से पीले पड़ते हुए सर ओलीवर सर डेनियल की ओर बढ़े और अंगुली से डिक की ओर संकेत किया।

"वहाँ", वह चिल्लाया, "रिचर्ड शैल्टन बैठा है। उस पर खून का अपराध है। उसे पकड़ लो, उसको पकड़ लेने की आज्ञा दो। हम सभी लोगों के प्राणों के लिए उसे पकड़ लो और बांध लो। उसने हमें भूमिसात करने की शपथ ग्रहण की है।"

सर डेनियल क्रोध से अंधा हो गया था और अंशतः उस रक्त से भी अंधा हो रहा था, जो उनके जख्म से बहकर आँखों में भरता जा रहा था।

"कहाँ", वह धौंकनी की तरह गूँजा, "उसे घेरकर पकड़ लो, वरना वह इस घड़ी को और भी दुःखद बना देगा।"

भीड़ पीछे हट गई और तीरंदाज़ों के एक दल ने अन्दर प्रवेश किया। डिक को जकड़ कर पकड़ लिया और सिर पकड़कर उसे स्टाल से खींच लिया और वेदी के नीचे उतार लिया गया। लॉलेस एक भयभीत चूहे की तरह अपने स्थान पर अभी भी बैठा रहा।

सर डेनियल ने अपनी आँखों से खून पोंछते हुए अपने बन्दी पर पलकें मारते गए घूरा।

"ओ", उसने कहा, "दग़ाबाज़ और पाजी, अब तुम मेरी गिरफ्त में आ गए हो, और मैं बड़ी से बड़ी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मेरी आँखों में खून की जितनी बूँदें टपक रही हैं, मैं तुम्हारी देह को मरोड़कर उतनी ही कराहें उसमें से निकालूँगा। तो ले जाओ इसे", उसने गरजकर कहा, "यह उचित स्थान नहीं है। उसे मेरे घर ले जाओ। मैं उसकी गाँठ-गाँठ को तोड़कर रख दूँगा।"

लेकिन डिक ने अपने बन्दी बनाने वालों को झटककर अपनी आवाज़ ऊपर उठाते हुए कहा, "यह पवित्र स्थान है", वह चिल्लाया, "यह पवित्र स्थान है और यहाँ अनेक पादरी लोग एकत्रित हैं ? वह लोग मुझे चर्च से घसीटकर ले जाएंगे ?"

"हाँ, उस पवित्र स्थान से जिसे तुमने खूँरेज़ी करके अपवित्र बना दिया है नौजवान !" एक बहुमूल्य वेश-भूषित ऊँचे क़द के भद्र पुरुष ने कहा।

"आखिर किस कारण", डिक ने कहा, "वे मुझे इस रक्तपात से सम्बन्धित करते हैं जबकि उसे सिद्ध नहीं किया गया। मैं तो वस्तुतः इस युवती से विवाह करने का उम्मीदवार था। और उसने, मैं यह कहने की धृष्टता कर सकता हूँ, कि मेरे प्रेम को स्वीकार किया था। लेकिन फिर क्या हुआ ? किसी युवती से प्रेम करना कोई अपराध नहीं है। मैं अब भी उसके प्रेम को लेकर खड़ा हूँ और मैं हर तरह से निर्दोष हूँ।"

डिक ने अपना पक्ष इतनी मुस्तैदी से प्रस्तुत किया कि भीड़ के कुछ लोग उसका पक्ष लेने लगे लेकिन तभी दूसरी ओर से एक भीड़ ने शोर मचाया कि वह कल रात सर डेनियल के मकान में घूमता देखा गया था। और तभी सर ओलीवर ने लॉलेस की ओर संकेत करते हुए कहा कि वह भी इसी का साथी है। दोनों ने साधु-वेश धारण कर रखा है। वह भी घसीट कर लाया गया और अपने नायक के साथ लाकर खड़ा कर दिया गया। भीड़ की भावनाएँ दोनों ओर से उत्तेजित होती जा रही थीं; कुछ लोग उन्हें भगाने के दृष्टि से उन्हें इधर-उधर घसीट रहे थे और कुछ उन्हें हत्यारा कहकर उन्हें लात घूंसे जमा रहे थे। डिक के कान बज रहे थे और उसका सिर घूम रहा था। जैसे कि वह किसी तूफ़ानी नदी के भँवर में फँस गया हो।

लेकिन उस लम्बे आदमी ने, जो पहिले ही डिक को उत्तर दे चुका था, एक भारी आवाज़ में भीड़ को शान्त रहने का आदेश दिया।

"इनकी तलाशी लो," उसने कहा, "क्योंकि इनके शस्त्रों को देखकर ही हम इनके उद्देश्यों से परिचित हो सकते हैं ?"

डिक के पास उसके खंजर को छोड़कर और कोई हथियार नहीं निकला, जो कि उसके पक्ष में रहा; लेकिन एक आदमी ने उसे मियान से बाहर निकाला। रटर का रक्त उस पर ज्यों का त्यों लगा हुआ था। इस पर सर डेनियल के

अनुयायियों ने शोर मचाया लेकिन उस लम्बे आदमी ने अपनी आवाज के बल पर ही दमन कर दिया। लेकिन जिस समय लॉलेस की तलाशी ली गई तो उसकी गाउन के नीचे, उन्हीं काले तीरों से भरा एक तरकश निकल आया।

"अब तुम क्या कहते हो ?" उस लम्बे आदमी ने डिक पर क्रुद्ध होते हुए कहा।

"सर," डिक ने उत्तर दिया, "मैं इस पवित्र स्थान में हूँ। और यहाँ से हिला-जुला भी नहीं हूँ। महोदय, आपकी भद्र आकृति से मैं पहिचान सकता हूँ कि आप कोई महापुरुष हैं, और आपके हृदय में धर्म और न्याय के लिए स्थान है। मैं आपके सम्मुख अपने को बन्दी के रूप में उपस्थित करता हूँ, और जान-बूझकर इस पवित्र स्थान की सुरक्षा को छोड़कर। लेकिन मैं किसी भी प्रकार उस आदमी के हाथों में अपने को न पड़ने दूँगा जो कि मैं ऊँची आवाज़ से कहता हूँ—मेरे स्वर्गीय पिता का क़ातिल है, और मेरी भूमि और सम्पत्ति को हड़प रहा है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने हाथों मेरा यहाँ बध कर दें, अगर मुझे अपराधी पाएँ। आपने अपने कानों से सुना है कि मेरा अपराध सिद्ध किए बिना ही उसने किस तरह मुझे यातनाएँ देने की धमकियाँ दी हैं। आपको यह शोभा नहीं देता कि आप मुझे मेरे शत्रु के हाथों में दे दें। मुझे कानून के द्वारा न्याय प्रदान करें और अगर अपराधी पाएँ तो दयालुता-पूर्वक मुझे मृत्यु दण्ड दें।"

"माई लार्ड," सर डेनियल चिल्लाया, "आप इस भेड़िये की बातों पर कान न दें। इसका खूनी खञ्जर इसके अपराध की इसके मुँह पर अभी भी कालिख लगाए हुए है।"

"लेकिन मेरी बात तो सुनें, गुड नाइट," उस ऊँचे आदमी ने कहा, "तुम्हारी उत्तेजना प्रकट करती है कि तुम्हारा मामला कुछ कमज़ोर है।"

और तब वधू, जो कि मूर्च्छा खुलने के बाद से उस दृश्य को भौंचक्क होकर देखती रह गई थी, अब अपने पकड़ने वालों से छूटकर उस भद्र पुरुष के सम्मुख घुटने टेककर बैठ गई थी।

"माई लार्ड राईसिंघम," वह चिल्लाई, "मेरी बातें सुनकर न्याय कीजिए। मुझे इस आदमी ने बलपूर्वक अपनी सुरक्षा में रख छोड़ा है और आज तक कभी भी मेरे प्रति दया और उदारता का व्यवहार नहीं किया और न ही कभी

कोई सुख-सुविधा मुझे प्राप्त हुई; मुझे केवल रिचर्ड शैल्टन से ये सब चीजें प्राप्त हुई जिसे वह अब नेस्तनाबूद करना चाहता है। माई लार्ड, वह केवल मेरे कहने और मेरी प्रार्थना पर सर डेनियल की हवेली में आया और उसका इरादा कुछ भी बुराई करने का नहीं था। जिस समय सर डेनियल उससे अच्छा व्यवहार करते थे, तो उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर वह इन काले तीरों के विरुद्ध युद्ध करता था लेकिन जब वह उसकी जान लेने पर उतारू हो गया तो अपने प्राण बचाने के लिए वह भाग खड़ा हुआ। उस खूनी हवेली से भागकर उन चोरों और उचक्कों से जा मिलने के सिवा उसके पास चारा ही क्या था। लेकिन इसमें उसका दोष नहीं है, अगर उसका संरक्षक उसके साथ दयालुता के साथ व्यवहार करता और उसकी अमानत का दुरुपयोग न करता तो आज उसका यह अन्त क्यों होता ?"

और तब वह नाटे क़द की युवती अपने घुटनों के बल जोना के पास ही बैठ गई और प्रार्थना करने लगी :

"और माई गुड लार्ड और सगे चाचा, मैं अपने अन्तःकरण को साक्षी करके कहती हूँ और सबके सम्मुख कि यह युवती जो कुछ कहती है वह सच है। यह मैं थी जिसने उस युवक को अन्दर आने का रास्ता दिखाया था।"

राईसिंघम के सामन्त ने चुपचाप सब कुछ सुना था और जब सब कुछ कहा जा चुका, तब भी वह एक क्षण खड़ा सोचता ही रहा। तब उसने जोना को उठाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, हालाँकि उल्लेखनीय बात यह थी कि जिसने उसे चाचा कहा था, उसके प्रति उसने उतनी शिष्टता भी दिखाने का कष्ट नहीं किया था।

"सर डेनियल," उसने कहा, "यह मामला कुछ उलझा हुआ मालूम पड़ता है लेकिन इसकी परीक्षा और न्याय मैं करूँगा। तुम विश्वास रखो कि इस मामले पर बहुत ही सतर्कतापूर्वक विचार किया जाएगा। अब तुम घर जाओ, और मरहम-पट्टी जख्मों पर बंधवा कर आराम करो। फिर सर्द हवा लगने से घावों के खराब होने का डर रहता है।"

उसने अपने हाथ का संकेत किया और उसके संकेत का पालन करने में तत्पर दोनों सेवकों ने उसका पालन किया। तभी चर्च के बाहर एक बिगुल बजा और लार्ड राईसिंघम की वर्दी पहिने हुए सभी सैनिक पंक्तिबद्ध हो गए। और

चर्च के अन्दर मार्च करते हुए बढ़ आए और उन दोनों बन्दियों को अपने अधिकार में करते हुए वह उसी तरह मार्च करते हुए बाहर चले गए और अदृश्य हो गए।

जैसे वे जा रहे थे, जोना अपने दोनों हाथ उठाकर डिक को बिदा कर रही थी और दुलहिन की सखी अपने चाचा की नाराजी को स्पष्ट नजर-अन्दाज करती हुई उसे एक हवाई चुम्बन भेजती हुई कह रही थी, "अपना हौसला क़ायम रखना, सिंहों को हाँकने वाले!" उसकी इस उक्ति को सुनकर उस दुर्घटना के बाद पहिली बार डिक के मुँह पर मुस्कराहट खिल उठी थी।

२३

अर्ल राईसिंघम जो कि उस समय शोरबी में सबसे महत्वपूर्ण आदमी था, उस शहर के सीमान्त पर एक अत्यन्त सामान्य नागरिक के यहाँ अपना डेरा डाले हुए था। घोड़ों पर चढ़े हुए सवार और सशस्त्र आदमी ही जो कि इधर-उधर जाकर संवाद ला और ले जा रहे थे, यह स्पष्ट करते थे कि वह किसी बड़े लार्ड का स्थान है।

और यहीं स्थानाभाव के कारण डिक और लॉलेस को एक ही स्थान में बन्द कर दिया गया।

"तुमने बहुत शानदार बातें कहीं मास्टर शैल्टन," वनचारी ने कहा, "तुमने बड़ी ही चतुराई से अपना पक्ष प्रस्तुत किया। मैं हार्दिकतापूर्वक तुम्हें धन्यवाद करता हूँ। अगर हम अच्छे हाथों में हैं तो न्यायपूर्वक हमारा फैसला किया जाएगा और आज शाम को किसी समय एक ही वृक्ष पर दोनों को टाँग दिया जाएगा।"

"ठीक तो है मेरे अभागे दोस्त! मेरा भी बिलकुल यही विचार है।" डिक ने कहा।

"लेकिन अभी भी हमारी कमान में प्रत्यंचा है!" वनचारी ने कहा, "एलिस डकवर्थ हजार में एक आदमी है और तुम्हें अपने हृदय का अङ्ग समझता है और यह जानते हुए कि तुम इस मामले में बिलकुल निर्दोष हो, वह तुम्हें छुड़ाने के लिए पृथ्वी और आकाश दोनों एक कर देगा।"

"यह नहीं हो सकता", डिक ने कहा, "वह कर ही क्या सकता है? उसके पास केवल मुट्ठी भर आदमी हैं। अफ़सोस अगर केवल कल को ही ऐसा होता।

अगर केवल कल दोपहर बाद तक मुझे प्राणदान मिल सकता। मेरे पास जो संवाद है उसे मैं ठीक समय पहुँचा सकता तो सब कुछ बिलकुल उल्टा हो सकता था, पर सोचता हूँ, अब वैसा सोचने से लाभ ही क्या हो सकता है।"

"अच्छा तो बात यूँ रही", बनचारी ने बात समाप्त करते हुए कहा, "तुम मुझे निरपराध बताना और मैं तुम्हें निरपराध घोषित करूँगा। और दोनों मज़बूती के साथ वैसा करेंगे। अगर मैं सूली पर चढ़ाया भी गया तो कम से कम सौगन्ध में ही भगवान् का नाम काफ़ी मात्रा में लिया जा सकेगा।"

और तब डिक विचारमग्न हो गया, लेकिन वह पुराना बदमाश अपनी साधु-वेश-भूषा को मुँह पर ढाँपकर एक कोने में पड़ रहा और सो गया। और थोड़ी ही देर बाद वह खर्राटे भरने लगा था। उसकी कठोर और दुस्साहस-पूर्ण जिन्दगी ने भय की भावना उसके हृदय से धोकर बिल्कुल साफ़ कर दी थी।

दोपहर बीत गई थी और दिन छिपने ही वाला था कि वह कमरा खोला गया। डिक को ऊपर के एक गर्म कमरे में ले जाया गया, जहाँ अर्ल राईसिंघम एक कुर्सी में बैठे आँच ताप रहे थे। और विचारों में खोए हुए थे।

अपने बन्दी के प्रवेश करने पर उन्होंने ऊपर निगाह उठाई।

"जनाब", उन्होंने कहा, "मैं आपके पिता को जानता हूँ जो कि अत्यन्त प्रतिष्ठवान आदमी था, इसलिए मेरे दिल में तुम्हारे लिए और भी रहम आता है। लेकिन मैं तुमसे यह छिपाना नहीं चाहता कि तुम्हारे विरुद्ध बहुत संगीन आरोप है। तुम क़ातिलों और डाकुओं के साथ मेल रखते हो, तुमने साफ़ तौर पर बादशाह के खिलाफ़ युद्ध घोषित कर रखा है, तुम पर एक जहाज के चुराने का भी सन्देह है और तुम अपने शत्रु के मकान में भी छिपकर गए थे और उसी रात्रि को एक आदमी भी तुमने वहाँ क़त्ल किया।"

"आप प्रसन्न हों माई लार्ड", डिक ने उन्हें टोकते हुए कहा, "जितना कुछ मेरा अपराध है, उसे मैं स्पष्टतः स्वीकार कर लूँगा। मैंने रटर का क़त्ल किया है, और उसके सबूत के लिए यह एक पत्र मुझे उसकी जेब में से मिला है।"

लार्ड राईसिंघम ने वह पत्र ले लिया और उसे दो बार पढ़ा।

"तुमने यह पत्र पढ़ा है?" उन्होंने पूछा।

"मैंने इसे पढ़ा है।" डिक ने उत्तर दिया।

"तो फिर तुम यार्क वंश के हो अथवा लंकास्टरों के ?" अर्ल ने पूछा।

"कुछ दिन हुए, पहिले भी मुझसे यह प्रश्न पूछा गया था, किन्तु मैं नहीं जानता कि उसका उत्तर क्या दूँ," डिक ने कहा, "लेकिन एक बार उत्तर देने के बाद मैं फिर वही दोहरा सकता हूँ माई लार्ड, कि मै यार्कों का पक्ष-पाती हूँ।"

अर्ल ने स्वीकारात्मक रूप से गर्दन हिलाई।

"सचाई से उत्तर दिया," उसने कहा, "तो फिर किस वास्ते तुमने यह पत्र मुझे दिया ?"

"लेकिन विश्वासघातियों के विरुद्ध माई लार्ड, क्या हर द्वार बन्द नहीं होना चाहिए ?" डिक ने कहा।

"मैं चाहता हूँ कि ऐसा ही होता नौजवान," अर्ल ने कहा, "और मैं कम से कम तुम्हारे कथन का समर्थन करता हूँ। तुम्हारे अन्दर युवकोचित असावधानी अधिक है; बुराई उतनी नहीं, लेकिन अगर सर डेनियल जैसा बलवान आदमी हमारे पक्ष में न होता तो मैं तुम्हारा फैसला अवश्य करने की कोशिश करता क्योंकि मैंने छान-बीन की है और इसके काफ़ी सबूत हैं कि तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया गया है; लेकिन देखो जवान, मैं साम्राज्ञी के पक्ष का नेता हूँ, और स्वभाव से न्यायप्रिय और रहम दिल होने के बावजूद भी मैं अपने दल के पक्ष में ही न्याय करूँगा और सर डेनियल का ही पक्ष समर्थन करूँगा !"

"माई लार्ड," डिक ने कहा, "आप मुझे अत्यन्त धृष्ट समझेंगे यदि मैं आपको परामर्श देने की चेष्टा करूँ तो। लेकिन क्या आप सर डेनियल के विश्वास पर भरोसा रखते हैं ? मेरा ख्याल है वह अनेक बार पक्ष-परिवर्तन कर चुके हैं।"

"नहीं, यह तो इंगलैण्ड की परम्परा है, तुम्हें आखिर क्या मिलेगा," अर्ल ने पूछा, "लेकिन तुम टन्सटाल के नाइट के लिए अनुचित कार्यवाहियाँ करते रहे हो। इस विश्वासघाती पीढ़ी के मध्य, जहाँ तक विश्वास का प्रश्न है, वह बहुत सम्मानपूर्वक हमारे प्रति वफ़ादार रहा है और कठोर से कठोर घड़ियों में उसने कभी हमारा साथ नहीं छोड़ा।"

"तब आप प्रसन्न हों", डिक ने कहा, "और एक नज़र इस पत्र पर भी डालें तो शायद आप थोड़ी-बहुत मात्रा में अपने विचार उसके बारे में बदलने पर मजबूर होंगे", उसने सर डेनियल का वह पत्र भी उनके हाथ में पकड़ा दिया जो उसने लार्ड वेन्स्लेडेल को लिखा था।

इसका असर अर्ल की मुद्रा पर तात्कालिक हुआ, वह एक क्रुद्ध शेर की तरह तड़प उठा और उसका हाथ सीधा अपने खंजर पर गया।

"तुमने यह भी पढ़ा है?" उसने पूछा।

"यह भी माई लार्ड", डिक ने कहा, "यह आपकी ही मिल्कियत है, जो कि वह लार्ड वेन्स्लेडेल को रिश्वत के रूप में प्रस्तुत करने को तैयार है।"

"यह मेरी ही रियासत है जैसा कि तुम कहते हो", अर्ल ने उत्तर दिया, "अब मैं इस पत्र को पढ़कर तुम्हारा पक्षपाती हो गया हूँ। इसने मुझे लोमड़ी का बिल दिखा दिया है। जो कुछ माँगते हो माँगो मास्टर शैल्टन, मैं इस अह-सान के प्रति अकृतज्ञ नहीं रहूँगा। और इसके परिचयस्वरूप तुम चाहे यार्क हो या लंकास्टर, साधु हो या चोर—मैं तुम्हें आज़ाद करता हूँ। मरियम के नाम पर जाओ, लेकिन समझ रखो कि मैं तुम्हारे साथी को सूली पर लटका दूँगा—लॉलेस को। यह अपराध इतने प्रकट रूप से किया गया है कि किसी न किसी को तो उसके लिए दण्ड ज़रूर ही दिया जाएगा।"

"माई लार्ड, मेरी पहली माँग आपसे यही है कि उसे भी मुक्त कर दीजिए" डिक ने कहा।

"यह पुराना गुनहगार है; गुंडा, चोर और बदमाश, मास्टर शैल्टन", अर्ल ने कहा, "बीस वर्ष के गुनाहों ने उसे सूली पर टाँगने के योग्य बना दिया है और चाहे आज या कल, चाहे इस अपराध में चाहे उस अपराध में; किसी न किसी बहाने उसे सूली पर चढ़ा ही दिया जाना चाहिए—इसमें सोचना क्या है ?"

"फिर भी, माई लार्ड, वह मेरे प्रेम के कारण ही उधर आ निकला था", डिक ने कहा, "और मैं उसे संकट में छोड़कर जाने की अकृतज्ञता नहीं कर सकता।"

"मास्टर शैल्टन, तुम बड़े उद्दण्ड मालूम होते हो", अर्ल ने कठोरतापूर्वक कहा, "इस प्रकार इस दुनिया में चलना ही बुराई की जड़ है। लेकिन तुम्हारे

उपकार से उऋण होने के लिए मैं तुम्हारी यह इच्छा भी पूर्ण करूँगा। तब दोनों जाओ, लेकिन भागकर और छिपकर जाना और शोरबी नगर को छोड़कर भाग जाओ क्योंकि सर डेनियल, ईश्वर उसे बर्बाद करे, तुम्हारे खून का बुरी तरह से प्यासा हो उठा है।"

"माई लार्ड, अब मैं शब्दों में आपके उपकार के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और निकट भविष्य में कोई सेवा करके मैं उससे उऋण होने की चेष्टा करूँगा।" डिक यह उत्तर देते हुए उस कक्ष से बाहर आ गया।

२४

जिस समय डिक और लॉलेस उस मकान के पृष्ठभाग से भागे तो शाम हो चुकी थी। वह बाग़ की दीवार की आड़ में रुककर सोचने लगे कि अब आगे क्या किया जाए। खतरा बहुत ही भारी था। अगर सर डेनियल के किसी आदमी ने उन्हें देख लिया और शोर मचा दिया तो उन पर घोड़े दौड़ा दिए जाएंगे और उन्हें काट डाला जाएगा। न केवल शोरबी शहर ही इस दृष्टि से उनके लिए ख़तरनाक था, वरन् बाहर खुले प्रदेश में निकलना भी गश्त के हाथों में पड़ने के संकट से भरा हुआ था।

थोड़ी ही दूर पर उन्हें एक हवाई चक्की दीखी और उसके पास ही एक किसान का घर भी, जिसके द्वार खुले हुए थे।

"कैसा रहे अगर थोड़ी रात पड़े तक हम उसी में रहें ?" डिक ने पूछा और लॉलेस के पास उससे बेहतर सुझाव न होने के कारण वह दोनों तीर की तरह उसी ओर भाग खड़े हुए और पुआल के पीछे उन्होंने अपने आपको छिपा लिया। दिन का प्रकाश शीघ्र ही समाप्त हो गया और अब चन्द्रमा पृथ्वी पर जमे बर्फ को चाँदी से मढ़ रहा था।

यही समय था जब कि वह गोट और बैंग पाइप मद्यपान-गृहों की ओर बढ़ सकते थे और अपनी इस विदूषकों जैसी वेश-भूषा से मुक्ति पा सकते थे। लेकिन फिर भी उचित यही था कि बाहर-बाहर ही निकला जाए और शहर के अन्दर जाने का ख़तरा न उठाया जाए। क्योंकि वहीं पर उनके पहिचान लिए जाने और क़त्ल कर दिए जाने की अधिक सम्भावना थी।

रास्ता बहुत लम्बा था। यह रास्ता सागर तट पर बनी उस हवेली के

बहुत निकट से गुज़रता था और बन्दरगाह के भी बिल्कुल पास ही पड़ता था। मौसम के साफ़ होने के कारण बन्दरगाह में पड़े हुए अनेक जहाज़ अपना लंगर उठाकर दूर देशों की यात्रा के लिए चल खड़े हुए थे और सागर तट पर खड़ा हुआ वह मद्यपान गृह (हालाँकि कर्फ्यू के आदेश का उल्लंघन करता हुआ, अब भी मोमबत्तियों से प्रकाशित था और उसका आतिशदान गर्म था।) अब भीड़ से विमुक्त था और उसमें अब समुद्र-गीतों का स्वर भी प्रति ध्वनित नहीं हो रहा था।

जल्दी-जल्दी और प्रायः दौड़ते हुए अपनी उस साधु-भूषा को घुटनों तक उठाए वे गहरे बर्फ पर से लपके जा रहे थे। और प्रायः पूरे बन्दरगाह की परिक्रमा ही कर चुके थे कि एक मदिरालय के द्वार अकस्मात् खुले और उनकी दौड़ती हुई पीठों पर घनी रोशनी पड़ने लगी।

वह तत्काल रुक गए और ऐसा प्रकट करने लगे जैसे किसी अत्यन्त महत्व-पूर्ण चर्चा में व्यस्त हों।

एक के बाद एक, तीन आदमी उस मदिरालय से निकले और तीसरा पीछे दरवाज़ा भी बन्द करता आया। ये तीनों आदमी अपने पैरों पर लड़खड़ा रहे थे। मालूम होता था कि वह बहुत अधिक पीते रहे हैं। और वह चन्द्रमा की रोशनी में असमंजस में खड़े थे जैसे उनके पास कोई काम ही करने को न हो। इनमें से सबसे लम्बा आदमी बड़े खेदपूर्ण स्वर में जोर-जोर से कह रहा था :

"आह, बढ़िया गैस्कोनी शराब के सात पीपे, डर्टमाउथ के बन्दरगाह भर में श्रेष्ठतम जहाज़, वर्जिन मेरी और तेरह पाउण्ड सोने का सिक्का··· आह···"

"मुझे भी बहुत-सी हानियाँ हुई हैं", उनमें से एक दूसरा कह रहा था, "लेकिन मेरे नुकसान अपनी ही तरह के थे। मुझे मार्टिन्मास में पाँच शिलिंग और एक पाकेट जिसकी कीमत नौ पैन्स होगी, किसी ने पार कर दिए थे।"

डिक का हृदय यह बातचीत सुनकर अन्दर ही अन्दर कचोट खा रहा था। उन दिनों में लोग अपने से छोटों की हानि और विपत्ति के लिए इतने कम उदासीन रहते थे कि डिक ने एक से अधिक बार यह कभी सोचने का कष्ट नहीं किया था कि उस ग़रीब की 'गुड होप' के नष्ट हो जाने पर उसके दिल पर क्या बीती होगी। लेकिन इस आकस्मिक मुठभेड़ ने उस अत्याचार और भयानक यात्रा

की याद करा दी और उन दोनों ने अपने मुँह दूसरी ओर घुमा लिए ताकि पहिचान न लिए जाएँ ।

जहाज़ का कुत्ता उस विध्वंसित जहाज से बचकर निकल आया था और लौटकर शोरबी की ओर चला गया था। वह अब अल्बास्टिर,के निकट ही खड़ा था और अकस्मात् सूँघता और अपने कान खड़े करता वह दोनों साधुओं पर जोर-जोर से भौंकने लगा था।

उसका मालिक उसके पीछे-पीछे लड़खड़ाता आ रहा था। "हँ, ओ जहाज़ियो", वह चिल्लाया, "क्या तुम्हारे पास कुछ सिक्के एक बर्बादशुदा आदमी के लिए हैं—जिन्हें समुद्री डाकुओं ने बर्बाद कर डाला। मैं उन आदमियों में से हूँ—जो वृहस्परिवार तक साधुओं को दक्षिणा दिया करता था और आज शनिवार को स्वयं एक बोतल शराब के लिए पैसे माँगता फिरता है। सात पीपे, बढ़िया गैस्कोनी की शराब, एक जहाज़ जो स्वयं मेरा था, और मुझसे पहले मेरे बाप का था, अनेक प्रकार का माल-असबाब और तेरह पौण्ड सोने का सिक्का। हे, क्या कहते हो? मैं अनेक फ्रांसीसियों से लड़ा हूँ और मैंने इस डर्टमाउथ बन्दरगाह में सबसे अधिक फ्रांसीसियों के गले काटे होंगे। आओ एक पेनी ही दे डालो।"

न ही डिक और न ही लॉलेस उसके प्रश्न का उत्तर देने का साहस कर सका। उन्हें डर था कि कहीं उनमें से कोई उनकी आवाज़ न पहिचान ले। और वह वहाँ ऐसे खड़े थे जैसे किनारे पर कोई जहाज खड़ा हो और उसे अपनी अगली मंजिल का पता ही न हो।

"ऐ क्या तुम गूंगे हो छोकरे," कप्तान ने पूछा, "दोस्तो," उसने एक हिचकी लेते हुए कहा, "वे शायद गूँगे हैं। मैं इस अशिष्टता को पसन्द नहीं करता क्योंकि अगर आदमी गूंगा हो तो उसे सभ्य होना चाहिए। अगर उससे कोई बोले तो वह फिर भी उत्तर अवश्य देगा, मेरा ऐसा ख़्याल है!"

इस समय तक नौ-सैनिक टाम को, जो कि व्यक्तिगत रूप से बहुत शक्तिशाली आदमी था, शायद इस गूंगेपन पर कुछ संदेह होने लगा था। और उसने दो क़दम आगे बढ़कर लॉलेस की बाँह पकड़ ली और उससे पूछने लगा कि आखिर उसे कौन-सा कष्ट बोलने से रोकता था। इसका उत्तर वनचारी ने एक पहलवानी दाँव का प्रयोग करके दिया और टाम को रेत पर पटक दिया और

डिक को अपने पीछे आने को कहते हुए वह भाग खड़ा हुआ।

यह सब मामला एक सैकिण्ड में घटित हो गया। डिक के भागने से पूर्व ही अल्बास्टिर ने उसे बाँह से पकड़ लिया था और टाम ने मुँह के बल रेंगकर उसकी एक टाँग पकड़ ली थी और तीसरा आदमी एक चौड़ी मुड़ी हुई तलवार उसके सिर के ऊपर घुमा रहा था।

इस घटना से वह उतना भयभीत नहीं था, न इतनी परेशानी उसे हुई थी बल्कि यही शर्म उसे चढ़ रही थी कि वह सर डेनियल के पंजों से निकल आया, अर्ल राईसिन्घम को उसने अपनी वाक्शक्ति से जीत लिया और अब अन्त में इस शराबी कप्तान के हाथ में फँस गया है। वह केवल लाचार ही नहीं था वरन, उसके अन्तःकरण पर एक भारी बोझ भी था कि उस ग़रीब कप्तान के सर्वनाश का वही उत्तरदायी था और वह आज बिलकुल साधन हीन अवस्था में अपने कर्जदार के हाथ पड़ गया था।

"उसे पकड़कर शराब घर में लाओ, ताकि मैं उसका चेहरा देख सकूँ," अल्बास्टिर ने कहा।

"नहीं, नहीं पहिले उसकी जेब खाली कर लेने दो, बाद में दूसरे लोग हिस्सा न करने लगें," टाम ने कहा।

और हालाँकि उसके सिर से पैर तक तलाशी ली गई लेकिन उसके शरीर पर एक छदाम भी मिला नहीं। केवल लार्ड फॉक्सम की अंगूठी थी जो कि उन्होंने बर्बरतापूर्वक उसकी अंगुलियों में से निकाल ली।

"उसका चेहरा चन्द्रमा की ओर घुमाओ!" कप्तान ने कहा और डिक की ठोड़ी को हिलाते हुए उसने कहा, "मरियम भला करे," वह चिल्लाया, "यही तो वह डाकू है!"

"हे!" टाम चिल्लाया।

"बोरडाक्स की मरियम की कसम यह तो वह आदमी स्वयं ही है," उसने दोहराया, "अब बोलो समुद्री डाकू, अब तुम मेरी पकड़ में हो," वह चिल्लाया, "मेरा जहाज कहाँ है! मेरी शराब कहाँ है! हे, अब तुम मेरे हाथों में आ गए हो! मैं तुम्हें इस तरह कस दूँगा—समुद्री डाकू, हाथ और पैर एक साथ! जैसे कुक्कड़ हो और फिर इतना ठोकूँगा, इतना ठोकूँगा कि मरियम भला करे!"

और इतना कहकर वह सामुद्रिकों जैसी चतुराई से रस्सी लेकर उसके चारों

ओर लपेटने लगा और हर मोड़ पर वह एक गाँठ देकर उसे सुरक्षित करता जाता था और सारी रस्सी को एक वहशियाना सख़्ती के साथ लपेट रहा था।

और जब वह यह कर चुका तो यह छोकरा उसके हाथ में एक बंडल के समान बनकर रह गया था—बिलकुल मृतकवत्। कप्तान ने एक हाथ की दूरी पर उसे थाम लिया और ज़ोर-ज़ोर से अट्टहास करने लगा। और तब उसने उसके कान पर एक ठनठनाता हुआ घूसा मारकर उसे गिरा दिया और फिर लात मारता गया, मारता गया। डिक की छाती में क्रोध तूफ़ान की तरह उफ़ान खा रहा था। क्रोध ने उसका गला घोंट-सा दिया था और वह अपनी मृत्यु के लिए कामना करने लगा था लेकिन जब उस कप्तान ने इस बेरहमी पूर्ण खेल से थककर उसे रेत पर पड़ा छोड़ दिया और अपने साथियों से उसका कोई इलाज बताने का परामर्श करने लगा तो उसने अपने क्रोध पर काबू कर लिया। वह कोई उपाय सोचना चाहता था, पूर्व इसके कि वह उसे यन्त्रणा देने का कोई और नया उपाय करना शुरू कर दें।

उसी समय जब कि उसके गिरफ्तार करने वाले अभी परामर्श ही कर रहे थे कि उसका क्या किया जाए, उसने बड़ी स्वस्थ आवाज़ में पुकारा और अत्यन्त विश्वासपूर्वक कहा :

"मेरे मालिको," उसने कहा, "तुम लोग बिलकुल बेवकूफ़ हो चुके हो। आज ईश्वर ने तुम्हारे हाथ में एक सुनहरा अवसर प्रदान किया है जिससे तुम इतनी दौलत पा सकते हो कि जहाज़ पर तिजारत करते हुए तीस विदेश यात्राओं में भी उतना कभी पैदा न कर सकोगे। लेकिन तुम कर क्या रहे हो? मुझे मार रहे हो? नहीं ऐसा तो क्रोधी बालक ही कर सकता है। लेकिन तुम्हारे जैसे बहादुर आदमी जो न आग से डरते हैं न पानी से और सोने को गोश्त की तरह प्यार करते हैं—उनके लिए यह व्यवहार शोभा नहीं देता।"

"ऐ," टाम ने कहा, "अब तुम पकड़ लिए गए तो फिर हमें ठगना चाहते हो?"

"तुम्हें ठगना," डिक ने दोहराया, "नहीं अगर तुम बेवकूफ़ होते तो ठगना सम्भव था। लेकिन अगर तुम बुद्धिमान आदमी हो—जैसा कि मैं विश्वास करता हूँ कि तुम हो—तो तुम साफ़ तौर पर देख सकते थे कि तुम्हारा हित किस चीज़ में है। जब मैंने तुमसे तुम्हारा जहाज़ लिया था, हम बहुत संख्या में थे।

हमारे पास अच्छे कपड़े और हथियार भी थे। सोचो तो वह व्यूह-रचना किसने की थी ? उसने जिसके पास काफ़ी सोना था और जो तूफ़ानी सागर की छाती पर सवार होकर भी अधिक सोना लेने की तलाश में जाना चाहता था। तो क्या जहाँ वह जाना चाहता था, वहाँ सोने का कोई बड़ा ख़जाना न छिपा पड़ा होगा ?"

"इसका क्या मतलब है ?" एक ने पूछा।

"क्या बात है अगर तुम्हारी एक छोटी-सी किश्ती खो गई है और कुछ पीपे अंगूरी शराब के चले गए हैं", डिक कहता रहा, "उन्हें भूल जाओ। क्योंकि वह फिजूल-सी चीजें थीं और अब तुम एक बड़े दुस्साहस के लिए बकसुए कस लो। तुम केवल बारह घण्टे के अन्दर या तो सदैव के लिए समृद्ध या फिर बर्बाद हो जाओगे। लेकिन मुझे इस तरह यहाँ डाल क्यों रखा है, मुझे पहिले खोलो। मेरा सारा शरीर अकड़ गया है और मेरे मुँह में बर्फ भरा जा रहा है; कहीं गर्म जगह चलो और मैं तुम्हें सारा रहस्य बता दूँगा।"

"वह हमें ठगना चाहता है", टाम ने घृणापूर्वक कहा।

"ठगना, ठगना", तीसरा आदमी चिल्लाया, "मैं सोचता हूँ कि कोई आदमी मिले तो मुझे ठगकर दिखाए। वह एक धोखेबाज हो सकता है लेकिन मैं भी तो कल पैदा नहीं हुआ हूँ। मैं कहता हूँ भाई अल्बास्टर, यह जवान जो कुछ कहता है, उसमें कुछ तत्व है अवश्य। क्या हम उसकी बातें सुनें ? दरअसल क्या हमें उसके पास जाकर उसकी पूरी बातें नहीं सुननी चाहिएँ ?"

"मैं सुन सकता हूँ अगर एक बोतल तगड़ी जौ की शराब कहीं से मिल जाए मास्टर पिर्रेट", अल्बास्टर ने कहा, "लेकिन जेब तो बिल्कुल खाली है।"

"पैसा मैं दूँगा, मैं दूँगा", दूसरे ने कहा, "मैं इस मामले को आरपार देखना चाहता हूँ। मेरा अन्तःकरण कहता है कि इसमें सोना है।"

"नहीं, अगर तुम फिर पीने बैठ गए तो सब चौपट हो जाएगा !" टाम चिल्लाया।

"सखा अल्बास्टर, तुमने इस आदमी को अधिक मुँह चढ़ा लिया है", मास्टर पिर्रेट ने कहा, "क्या तुम एक-दो टके के आदमी से अपनी रहनुमाई कराओगे, छिः-छिः !"

"शान्त रहो आदमी", अल्बास्टर ने टाम को संकेत करते हुए कहा, "क्या

तुम अपनी पतवार नीचे रख दोगे ? दरअसल जब एक मल्लाह अपने कप्तान को सलाह देने लगता है तो उससे पतवार रखवा ली जाती है ! है न ?"

"तो ठीक है, जैसी मर्ज़ी हो करो, लेकिन बाद में मुझे दोष न देना !"

"तब उसे उसके पैरों पर खड़ा कर दो", मास्टर पिर्रेट ने कहा, "मैं एक गुप्त स्थान जानता हूँ, जहाँ पीते हुए हम अपनी योजना पर विचार भी कर सकते हैं।"

"अगर मुझे चलना है दोस्तो, तो तुम मेरे हाथ और पैर खोल डालो", डिक ने कहा जबकि वह फिर एक खम्भ की तरह खड़ा कर दिया गया।

"वह ठीक तो कहता है", पिर्रेट हँसा, "ठीक तो है वह बंधा हुआ है तो चल किस प्रकार सकता है ? काट डालो रस्सी। अपने चाकू से काटकर उसे साफ़ कर डालो दोस्त !"

इस सुझाव पर एक बार तो अल्बास्टर ने भी अपने कन्धे बिचकाए। लेकिन चूँकि उसका साथी बराबर अनुरोध करता जा रहा था और डिक में भी इतनी समझ आ गई थी कि वह काठ की तरह किसी भी भावना को प्रकट न करता हुआ उदासीन खड़ा था और विलम्ब के लिए केवल अपने कन्धे मात्र बिचका देता था, इसलिए कप्तान आख़िरकार सहमत हो गया। उसने बन्दी के हाथों और पैरों की रस्सियाँ काट डालीं। इससे डिक न केवल चलने लायक ही हो गया था, वरन उसकी बाँहों पर भी रस्सियाँ इतनी ढीली हो गई थीं कि वह अपने हाथ आगे-पीछे हिला सकता था और आवश्यकता पड़ने पर रस्सी से मुक्त भी हो सकता था। इतनी सुविधा उसे मास्टर पिर्रेट की उल्लू के समान औंधी अक्ल और अतिशय लालची होने के कारण प्राप्त हो गई थी।

उसने अब नेतृत्व ग्रहण कर लिया था और वह इस पार्टी को उसी मदिरालय की ओर ले जा रहा था, जहाँ लॉलेस तूफ़ान वाले दिन अल्बास्टर को ले गया था। यह मदिरालय उस समय बिलकुल खाली था और आतिशदान में केवल अंगारे झाँक रहे थे। कमरा एक तेज़ आँच से गर्म हो रहा था और जब उन्होंने अपने-अपने स्थान ग्रहण कर लिए और शराब वाले ने उनके सामने तगड़ी शराब के पेग भरकर रख दिए तो मास्टर पिर्रेट और अल्बास्टर ने इस तरह अपने पैर और कोहनियाँ पसार दिए, जैसे किसी अत्यन्त खुशी की घड़ी का आनन्द ले रहे हों।

"और अब नौजवान", पिरेंट ने कहा, "अपनी कहानी कह डालो। मालूम ऐसा पड़ता है कि तुमने हमारे दोस्त कप्तान अल्बास्टर को काफ़ी कष्ट पहुँचाया है, लेकिन उससे क्या ? अब उसकी हानि को पूरा कर दो। अगर इस अवसर पर वह दौलतमंद हो गया, तो मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वह तुम्हें क्षमा कर देगा।"

"अब तक वह काफ़ी व्यर्थ की बातें बोल चुका था। लेकिन अब उन छै निगाहों के सामने यह अत्यन्त आवश्यक हो गया था कि वह कोई शानदार कहानी गढ़े। और अगर किसी प्रकार सम्भव हो सके तो वह अत्यन्त महत्वपूर्ण अंगूठी भी उनसे वापस प्राप्त कर ले। समय को खींचते जाना पहिली आवश्यकता थी। जितनी ही देर वह वहाँ ठहरेंगे, उतना ही वे लोग अधिक पीएंगे और उतना ही अधिक उसे अपनी मुक्ति का विश्वास हो जाएगा।

लेकिन डिक कोई ईजाद करने वाला तो था नहीं और जो कुछ उसने कहा था वह अलीबाबा की कहानी से कुछ भी अधिक नहीं था। पूर्व के स्थान पर शोरबी और टन्सटाल जंगल जोड़ लिए गए थे और गुफ़ा को घटाकर कहने की बजाए और बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया था। जैसा कि पाठकों को विदित है कि यह कहानी बहुत दिलचस्प है और उसकी कमी केवल यही है कि वह झूठी है, लेकिन उन मल्लाहों ने जब पहली बार वह कहानी सुनी तो उनकी आँखें बटनों की तरह उनके माथे से आगे उभर आईं और उनके मुँह इस प्रकार फैल गए जैसे काँटे में लटकी हुई मछली का मुँह शिकारी के सामने फैल जाता है।

शीघ्र ही शराब का दूसरा दौर और चल पड़ा और जबकि डिक चतुरता-पूर्वक घटनाएँ एक दूसरे से पिरोता जा रहा था, तीसरा दौर और चल पड़ा था।

यहाँ उस दल की स्थिति सब तरह से अन्तिम स्थिति को पहुँच चुकी थी। अल्बास्टर तीन हिस्से शराब से मत्त और एक हिस्सा नींद के खुमार में खोया अपने स्टूल पर लटक गया था। टाम को उस कहानी से बड़ा आनन्द मिला था और उसने अपनी चौकसी में थोड़ी शिथिलता लानी शुरू कर दी थी। इसी बीच डिक अपना दायाँ हाथ रस्सी की जकड़ से बिलकुल मुक्त कर चुका था और अपना सब कुछ दाँव पर लगा देने के लिए कटिबद्ध हो गया था।

"तो यह बात है," पिरेंट ने कहा, "तुम उनमें से एक हो ?"

"लेकिन मुझे वैसा बना दिया गया," डिक ने उत्तर दिया, "मेरी इच्छा के

प्रतिकूल, लेकिन अगर मेरे हिस्से में भी एक या दो बोरे सोने के सिक्कों के आ जाएँ तो मैं एक मूर्ख की तरह उस गंदी गुफ़ा में अपनी ज़िन्दगी बर्बाद क्यों करूँ, और क्यों एक सैनिक की तरह तीरों के निशाने और घूँसे सहता रहूँ। अब हम चार यार मिल गए हैं। हमें अब कल दिन निकलने से पहिले ही जंगल की ओर रवाना हो जाना चाहिए। अगर खच्चर होता तो अच्छा होता, लेकिन छोड़ो। हमारी मजबूत कमर तो हैं। मैं कहता हूँ कि जब हम लौटेंगे तो सोने के भार के नीचे हमारे पैर खड़खड़ाते हुए होंगे।"

पिर्रेट अपने होंठ चाटने लगा।

"और वह जादू," उसने कहा, "यह मंत्र जिससे गुफा का द्वार खुलता है, वह क्या है दोस्त ?"

"नहीं कोई उस मंत्र को नहीं जानता। बस तीनों सरदार ही जानते हैं।" डिक ने उत्तर दिया, "लेकिन तुम्हारा भाग्य बदला ही समझो, कि आज ही रात को मेरे पास उस गुफा को खोलने का जादू आ जाएगा। कप्तान की पाकेट से वह चीज़ वर्ष में केवल दो बार बाहर निकल सकती है।"

"जादू," अल्बास्टिर ने आधा जागते हुए और एक आँख डिक की ओर टिमटिमाते हुए कहा, "आह, मैं जादू में विश्वास नहीं करता। मैं एक सच्चा ईसाई हूँ। चाहे मेरे टाम से पूछ देखो।"

"नहीं, लेकिन यह सफेद जादू है," डिक ने कहा, "इसका शैतान से कोई भी सरोकार नहीं है। यह तो बूटियों और नक्षत्रों का चमत्कार मात्र है।"

"हाँ-हाँ," पिर्रेट ने कहा, "एक सफेद जादू भी होता है दोस्त ! इसे प्रयोग करने में कोई पाप भी नहीं, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ। लेकिन अच्छे नौजवान्, आगे कहो। इस जादू में क्या चीज़ होती है।"

"नहीं, वह तो मैं तुम्हें पहिले ही दिखादूँगा," डिक ने उत्तर दिया, "क्या तुम्हारे पास वह अंगूठी है, जो तुमने मेरी अंगुली से निकाली थी। अब उस अंगूठी को सामने करो, हाथ पूरा फैला दो और इसे दहकते हुए अंगारों की रोशनी में फैला दो। यह तब पूरी तरह जादू की अंगूठी बन जाएगी।"

एक झिझकती हुई निगाह से डिक ने देखा कि उसके और दरवाज़े के अन्दर कोई भी रुकावट नहीं है। उसने अन्दर ही अन्दर प्रार्थना की। तभी उसने अपने हाथ को झटका देकर मुक्त कर लिया और अंगूठी उतारते हुए उसने पूरी

मेज एक झटके के साथ टाम पर उलट दी। वह बेचारा लड़खड़ाता हुआ उस मलबे के नीचे दब गया और इसके पूर्व कि अल्बस्टिर को यह पता चले कि कुछ गड़बड़ हो चुका है और पिरेंट अपनी ठगी हुई बुद्धि को वापस प्राप्त करे, डिक दरवाजा खोलकर साफ़ हो चुका था और चन्द्रमा की चांदनी में चमकती हुई रात के अन्दर भागा हुआ जा रहा था।

चन्द्रमा इस समय आकाश के बीचोबीच चमक रहा था और पृथ्वी पर के बर्फ से मिलकर चांदनी ने इतना प्रकाश पैदा कर दिया था कि सारी चीजें दिन के प्रकाश के समान स्पष्ट कर दी थीं। और डिक अपनी साधु-भूषा को ऊपर उठाए दौड़ रहा था, लेकिन उसे दूर से ही देखा जा सकता था।

टाम और पिरेंट शोर मचाते हुए उसके पीछे दौड़ रहे थे। हरेक मदिरा-लय से निकल-निकलकर लोग उनके साथ मिलते जाते थे और थोड़ी ही देर में जहाज़ियों का बड़ा दल उनके साथ हो लिया था। लेकिन इस पन्द्रहवीं सदी में भी वह मल्लाह बहुत हल्के दौड़ने वाले थे और डिक जोकि पहिले ही काफ़ी बित्ता ले चुका था, अब काफ़ी दूर निकल गया था और यह दूरी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। जब वह एक तंग गली के मुँह पर पहुँच गया तो वह थोड़ा रुका और हँसते हुए अपने पीछे दौड़ने वालों की ओर देखने लगा।

बर्फ़ के उस सफेद फ़र्श पर शोरबी के सभी मल्लाह एक झुण्ड बनाकर भागे आ रहे थे और अनेक दलों में विभाजित होकर पीछे लटके रह गए थे। उनमें से प्रत्येक आदमी चिल्ला रहा था या चीख रहा था। हर आदमी अपनी बाहों को हवा में फेंक-फेंककर धमकियाँ दे रहा था। कोई न कोई बराबर गिरता जाता था और अगर एक गिरता था तो एक दर्जन उसके ऊपर लुढ़क पड़ते थे।

उन लोगों की मिली-जुली आवाज़ पर चांद अंशतः मुस्कराता नज़र आता था और अंशतः उस भगौड़े को आतंकित कर रहा था जिसका वह पीछा कर रहे थे। लेकिन चन्द्रमा शायद उन मूर्ख जहाज़ियों का ही मजाक बनाता अधिक प्रतीत होता था क्योंकि यह स्पष्ट था कि उनमें कोई भी उसे पकड़ नहीं सकता था। लेकिन यह आवाज़ ही इतनी भयानक थी कि उसे सुनकर सारा शोरबी नगर जागकर बैठ जाता और आसपास के पहरे पर तैनात संतरी भी खिंचकर उधर की ओर ही लपक सकते थे। और एक इससे भी बड़ा संकट उसके सम्मुख

उपस्थित हो सकता था। सो एक कोने पर एक अंधेरे घर को देखकर वह उसी में खिसक गया और उस भीड़ के पास से गुज़र जाने की प्रतीक्षा करने लगा। वह लोग आए और शोर मचाते हुए तथा बर्फ में ठोकर खाकर सफेद हुई एड़ियों से भागते चले गए।

शहर का यह आक्रमण बहुत देर में जाकर शान्त हुआ। बहुत देर तक वह जहाज़ी लोग शहर के अन्दर सभी सड़कों पर घूँसे ताने और शोर मचाते घूमते रहे। इसके बाद झगड़े होने लगे। कभी-कभी उनमें आपस में ही, कभी-कभी गश्त लगाने वाले सिपाहियों से ही युद्ध होने लगा। छुरे तन गए, घूँसे-बाज़ी होने लगी और बहुत बड़ी संख्या में मृतक वर्फ पर पड़े रह गए।

जब एक पूरा घण्टा व्यतीत हो गया और जहाज़ी लोग शहर से निकलकर बन्दरगाह पर पहुँच गए तो उनके लिए यह भी बताना मुश्किल हो गया था कि वह किस तरह के आदमी का पीछा कर रहे थे। दरअसल सभी आदमी उस भगौड़े को बिलकुल ही भूल चुके थे। अगले प्रात:काल अनेक प्रकार की कहा-नियाँ फैलनी शुरू हो गईं। शोरबी के बच्चे-बच्चे की जबान पर यह चर्चा थी कि रात को एक शैतान शोरबी शहर में आया था।

हालाँकि जहाज़ी लोग भी लौटकर जा चुके थे लेकिन उससे भी डिक को मुक्ति कहाँ मिली थी। वह अभी भी एक मकान के बन्द दरवाज़ों के पीछे छिपा पड़ा था।

उस उथल-पुथल के थोड़ी देर बाद तक गश्त की हलचल बहुत जोरों पर रही। एक के बाद दूसरी टुकड़ी गश्त लगाने आती थी और अपने मालिकों को सूचना ले जाकर देती थी।

जिस समय डिक ने अपने छिपने के स्थान में से बाहर जाने की तैयारी की, रात्रि बहुत बीत चुकी थी। अब वह गोट और बैग पाइप में सुरक्षित पहुँच सका था। उसका शरीर ठण्ड और खरोंचों से दर्द कर रहा था। उस मकान में कानून के मुताबिक रोशनी और अग्नि नहीं थी लेकिन उसने अंधेरे में ही अपना रास्ता देख लिया था और मेहमानों के कमरे में किसी के कम्बल का कोना पकड़कर अपने ऊपर खींचकर अपने निकट सोने वाले के पास खिसक गया और शीघ्र ही गहरी नींद में खो गया।

२५

अगले दिन नितान्त प्रातःकाल डिक ने अपने कपड़े बदले। उसने पुनः एक सभ्य आदमी की तरह शस्त्र धारण किए और जंगल की ओर लॉलेस की गुफा में पहुँचने के लिए चल पड़ा। अभी तक दिन का कहीं नाम-निशान भी नहीं था। यह स्मरण रखने की बात है कि उस गुफा में वह लार्ड फॉक्सम के द्वारा दिए गए काग़ज़ात छोड़ आया था और उन काग़ज़ात को लेकर उक्त गुप्त स्थान पर ड्यूक आव ग्लौसेस्टर से भेंट करने का यह तकाज़ा था कि वह जल्दी ही चल खड़ा हो और वह भी बहुत तेज़ चाल से चले।

इस समय हमेशा से भी अधिक घना कोहरा पड़ रहा था। हवा में झोंके नहीं थे। हवा सूखी थी, इसलिए नथनों को चोट पहुँचती थी। चन्द्रमा अस्त हो चुका था, लेकिन सितारे अभी तक चमक रहे थे और उनका प्रकाश बर्फ़ पर प्रतिबिम्बित होकर सारे वातावरण में एक उजाला फैला रहा था। इस समय लैम्प लेकर चलने की कुछ भी आवश्यकता नहीं थी और खामोश, पर गूँजती हुई हवा में प्रस्थान करने की प्रेरणा के प्रचुर तत्व विद्यमान थे।

डिक शोरबी नगर और जंगल के बीच खुले मैदान का काफ़ी हिस्सा पार कर चुका था और सेण्ट ब्रिज के क्रास से लगभग सौ गज़ दूर वह पहाड़ी की तलहटी तक पहुँच चुका था, जबकि भोर के अन्धियारे में उसने बिगुल की एक तेज़ आवाज़ सुनी। यह आवाज़ इतनी महीन, साफ़ और चुभने वाली थी कि वह सोचने लगा कि शायद उसने अपने जीवन भर में उस तरह का बिगुल नहीं सुना; वह बिगुल एक बार बजा, तत्काल फिर दोबारा बजा और तब शस्त्रों के टकराने की आवाज़ आने लगी।

यह सुनकर शैल्टन ने अपने कान खड़े किए और अपनी तलवार लेकर वह पहाड़ी के ऊपर दौड़कर चढ़ने लगा।

अब क्रास उसकी आँखों के सामने प्रकट हो गया और उसने देखा कि सड़क पर एक भयानक युद्ध हो रहा है। कम से कम सात या आठ आक्रमण-कारी थे और उनसे केवल एक आदमी अपनी रक्षा कर रहा था। परन्तु वह अकेला योद्धा इतना कुशल और फुर्तीला था, वह इतनी विकटता से हाथ फेंककर अपने आक्रान्ताओं को छिन्न-भिन्न कर रहा था, और इतनी दृढ़ता से वह बर्फ़ पर अपने पैर जमाए हुए था, कि पूर्व इसके कि डिक हस्तक्षेप करता उसने एक आक्रान्ता को तलवार के घट उतार दिया था, एक को जख्मी कर दिया था और अब भी सबके वार सफलापूर्वक रोके हुए था।

फिर भी डिक के लिए एक महान आश्चर्य था कि वह अपनी रक्षा करने में सफल हो रहा था। अगर संयोग से बर्फ़ पर उसका पैर फिसल जाता, या उसका हथियार थोड़ा भी चूक जाता तो उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता।

"बहादुरी से अड़े रहो महोदय, मदद आ पहुँची है?" रिचर्ड चिल्लाया और यह भूलते हुए कि वह अकेला है और उसकी आवाज भी कुछ अस्वाभा-विक-सी है, "तीर के लिए, तीर के लिए।" वह चिल्लाया और आक्रमण-कारियों पर पीछे से टूट पड़ा।

वह आक्रमणकारी भी कुछ कम न थे, बाँके जवान थे। इस आकस्मिक आक्रमण से वह तिल भर भी विचलित नहीं हुए, वरन पीछे घूम पड़े और आश्चर्यजनक क्रोध के साथ डिक पर टूट पड़े। उस अकेले के विरुद्ध चार खड़े होकर वार कर रहे थे। सितारों की रोशनी में लोहा उसके गले के निकट चमक रहा था, शस्त्रों की टक्कर से चिन्गारियाँ निकल रही थीं। उस पर टूटने वाले चार में से एक क्यों गिर पड़ा—उसे नहीं मालूम था। तब उसके माथे पर स्वयं एक प्रहार हुआ लेकिन सिर पर बंधे बख्तर ने उसको बचा लिया लेकिन फिर भी वह बर्फ़ पर जा टिका और उसका सिर हवाई चक्की की तरह चक्कर खाने लगा।

इसी बीच वह योद्धा जिसकी सहायता के लिए वह गया था, युद्ध में उत्साह-पूर्वक भाग लेने की अपेक्षा कूदकर पीछे हट गया था और पुनः उस तेजी से

चीखने वाले बिगुल को बजाने लगा था। दूसरे ही क्षण उसके शत्रु फिर उस पर झपट पड़े थे। और वह फिर एक बार प्रहार करने लगा था और पीछे भागता जाता था। वह कूदता था, बैठक लगाता था और खुखरी और तलवार के विभिन्न प्रकार से प्रहार करता था। उसके पैर भी चलते थे, और हाथ के शस्त्र बिजली की तरह कौंधते और वह दुर्दमनीय साहस और लपट के समान वेग और शक्ति से प्रहार करता जा रहा था।

लेकिन वह कानों को फोड़ डालने वाली चेतावनी आखिरकार सुन ली गई थी। बर्फ़ में खरखराहट की आवाज आने लगी थी और निमिपमात्र में अनेक सशस्त्र घुड़सवार चारों ओर से निकलकर आ गए थे। वह सिर से पैर तक लोहे से मढ़े हुए थे, उनकी कलगियाँ नीचे झुकी हुई थीं और उनके घोड़े आराम से उछलते आ रहे थे। इस दृश्य को देखते ही वह अपने-अपने घोड़ों से कूद पड़े और चारों ओर से घिर आए।

उन आक्रान्ताओं ने शत्रु की विशाल संख्या को देखकर बिना एक शब्द कहे हथियार डाल दिए।

"इन लोगों को पकड़ लो," उस बिगुल वाले नायक ने कहा और जब उसकी आज्ञा का पालन हो चुका, तो वह डिक की ओर बढा और निकट से उसके चेहरे को देखने लगा।

डिक ने भी इस परीक्षा का वैसे ही उत्तर दिया और उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि युद्ध में जिस आदमी ने इतनी शक्ति, कौशल और दृढ़ता दिखाई थी, वह आयु में उससे कुछ भी अधिक नहीं था, वरन् एक छोकरा मात्र था—उसके शरीर में हलका-सा कूबड़ था, एक कन्धा दूसरे से ऊँचा था और उसकी मुखाकृति पीली, करुण और भद्दी थी। लेकिन आँखें बड़ी साफ़ और निर्भीक थीं।

"सर," उस युवक ने कहा, "तुम बहुत अच्छे समय में मेरी सहायता लेकर आए और काफ़ी जल्दी।"

"माई लार्ड," डिक ने यह समझते हुए कि वह किसी बड़े आदमी की उपस्थिति में है, वैसा सम्बोधन किया, "आप स्वयं इतने शानदार खड्गधारी हैं कि मेरे विचार में आप अकेले भी उन्हें छका सकते थे। लेकिन मेरे बारे में यह ज़रूर सच था कि अगर आपके आदमी थोड़ी भी देर कर देते तो··· ।"

"तुम्हें कैसे पता चला कि मैं कौन हूँ ?" उस अजनबी ने पूछा।

"सच तो यह है माई लार्ड," डिक ने उत्तर दिया, "मैं यह नहीं जानता कि मैं किससे बातें कर रहा हूँ।"

"ओ ऐसा है ?" दूसरे ने कहा, "और तब भी तुमने इस असमान युद्ध में अपना सिर झोंक दिया।"

"मैंने देखा कि एक आदमी अनेक के मुकाबले में बहादुरी के साथ लड़ रहा है," डिक ने उत्तर दिया, "उसकी सहायता से हाथ खींचने को मैंने अपना असम्मान समझा।"

उस युवक के चेहरे पर एक अजीब-सी सिकुड़न दौड़ गई, जैसे ही उसने उत्तर दिया।

"ये शब्द बड़े वीरोचित हैं, लेकिन अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम लंकास्टर हो अथवा यार्क ?"

"माई लार्ड, मैं छिपाऊँगा नहीं, मैं यार्क हूँ साफ़ तौर पर !" डिक ने कहा।

"ओ बहुत अच्छा," दूसरे ने उत्तर दिया, "यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है।"

और इतना कहते हुए वह अपने अनुयायियों में से एक से बोला, "इन बहादुर जवानों को ख़त्म कर दो। उन्हें बाँध लो।"

इस आक्रामक दल में से केवल पाँच आदमी बचे थे। तीरंदाजों ने उन्हें बाहों से कसकर पकड़ लिया और जंगल के किनारे पर ले गए। हरएक को एक वृक्ष के नीचे खड़ा कर दिया गया और थोड़ी ही देर में उनकी लाशें वृक्षों की शाखाओं में झूलने लगीं।

"और अब," वह विकलांग नेता चिल्लाया, "अपने स्थानों पर वापस पहुँच जाओ और अगर दोबारा तुम्हें बुलाया जाए तो अधिक तत्परता के साथ आना।"

"माई लार्ड ड्यूक," एक ने कहा, "आपसे प्रार्थना है कि यहाँ अकेले न ठहरें। थोड़े से घुड़सवार अपने पास रख लें।"

"भले आदमी," ड्यूक ने कहा, "मैं तुम्हारी शिथिलता के लिए तुम्हें झिड़कना चाहता था। इसलिए मुझे छेड़ो मत। मैं शरीर से चुस्त नहीं हूँ फिर भी मैं अपने हाथ और बाजू पर भरोसा रखता हूँ। जब बिगुल बजाया गया तो

तुम सो रहे थे और अब परामर्श देने में काफ़ी तत्परता दिखा रहे हो। लेकिन दुनिया का दस्तूर ही यह है—भाला पीछे और जबान आगे। लेकिन अब की बार जबान पीछे और भाला आगे रखना, अच्छा।"

और तब उसने एक भयानक भद्रता के साथ उन्हें हाथ दिया और वह लोग पीछे हटने लगे।

पैदल लोग पुनः चढ़कर अपनी जगहों पर पहुँचकर सशस्त्र लोगों के पीछे खड़े हो गए और सारा दल अलग-अलग दिशाओं में बँट गया और जंगल में जाकर छिप गया।

इस समय दिन निकलता आ रहा था और सितारे अस्त होते जा रहे थे। सुबह की पहली लाल किरण दोनों युवकों के चेहरों पर नाच रही थी। पुनः एक बार वे दोनों एक दूसरे के प्रति आमुख हुए।

ड्यूक ने कहा, "तुमने मेरी प्रतिहिंसा भी देख ली जो कि मेरी तलवार की धार की ही तरह तेज़ और तत्पर है। लेकिन मैं अपने को—धर्म की सौगंध—तुम्हारे प्रति किसी प्रकार भी अकृतज्ञता का प्रमाण न दूँगा। तुम मेरी सहायता के लिए कूदे, तुम्हारी खड्ग में कौशल है और तुम्हारी वीरता प्रशंसनीय है, अगर तुम मेरी कुरूपता को देखकर झिझको नहीं तो आओ...।"

और ऐसा कहते हुए उस जवान ने अपनी बाहें आलिङ्गन के लिए फैला दीं। इस व्यक्ति के प्रति एक भयंकर भावना, जिसके प्राणों की उसने स्वयं रक्षा की थी, उसके हृदय में पैदा हो चुकी थी, और वह उससे कुछ-कुछ घृणा भी करने लगा था लेकिन यह निमन्त्रण ऐसे शब्दों में कहा गया था कि यदि वह उसको स्वीकार न करता तो वह अत्यन्त असभ्य और बेरहमी से भरा व्यवहार सिद्ध होता, इसलिए डिक को वह निमन्त्रण स्वीकार करना पड़ा।

और उसके आलिंगन से मुक्ति पाते हुए उसने कहा, "और माई लार्ड ड्यूक! क्या मेरा अनुमान ठीक है? क्या आप ही माई लार्ड ड्यूक आव ग्लौसेस्टर हैं?"

"मैं ही, रिचर्ड आव ग्लौसेस्टर हूँ", दूसरे ने उत्तर दिया, "और तुम—तुम्हारा नाम क्या है?"

डिक ने उसे अपना नाम बताया और लार्ड फॉक्सम द्वारा दी गई अंगूठी पेश की जिसे ड्यूक ने तत्काल पहिचान लिया।

"तुम बहुत ही जल्दी आ पहुँचे", उसने कहा, "लेकिन मैं शिकायत क्यों करूँ ? तुम भी मेरी ही तरह हो जो कि दो घण्टे पहिले ही इस स्थान पर आ पहुँचा। लेकिन समर-प्रयाण पर यह मेरा सर्वप्रथम शस्त्र-कौशल ही तुमने देखा है। इस युद्ध में मेरा यश या तो दूर-दूर तक फैल जाएगा, या फिर वह बिल्कुल डूब जाएगा। दो मँजे हुए कप्तानों की अध्यक्षता में मेरे शत्रु पड़े हुए हैं—राईसिंघम और ब्रैकले—जो कि शक्ति की दृष्टि से बहुत अच्छी यौद्धिक स्थिति में हैं—मैं सोचता हूँ—लेकिन फिर भी दो पक्षों पर उनके पीछे हटने तक का रास्ता नहीं है। वे सागर, बन्दर और नदी से घिरे हुए हैं; मैं सोचता हूँ शैल्टन, उन पर प्रहार करने का यही सर्वोचित अवसर है और आकस्मिकता के साथ हमें यह आक्रमण कर ही देना चाहिए।"

"मेरा भी यही विचार है", डिक उत्साहपूर्वक चिल्लाया।

"क्या तुम्हारे पास माई लार्ड फॉक्सम के नोट हैं ?" ड्यूक ने पूछा। और तब डिक ने यह बताया कि किस कारण वह उस समय उसके पास नहीं हैं। और उत्साहपूर्वक अपनी ही जानकारी के आधार पर हर चीज़ के बारे में सूचना देने का उसने आश्वासन दिया।

"रही मेरी इच्छा के बारे में", डिक ने कहा, "अगर आपके पास काफ़ी आदमी होते तो मैं इस समय ही आक्रमण करने की सलाह देता। क्योंकि आप विचार कीजिए कि इस समय रात भर की गश्त बदलती है। इस समय लोग शहर में पहरा नहीं देते—केवल शहर के चारों ओर घुड़सवारों का पहरा होता है। और अब जबकि रात्रि का पहरा उठ चुका है और दूसरे लोग अपना सुबह का प्याला पी रहे होंगे, यही अवसर है कि उन्हें तोड़ डाला जाए।"

"उनकी संख्या तुम कितनी समझते हो ?" ग्लौसेस्टर ने पूछा।

"उनकी संख्या दो हज़ार के लगभग होगी।" डिक ने उत्तर दिया।

"मेरे पास इस समय जंगल में सात सौ जवान हैं ?" ड्यूक ने कहा, "सात सौ कैटले से आ रहे हैं और शीघ्र ही कुछ इनके पीछे आते होंगे। चार सौ और हैं और पाँच सौ माई लार्ड फॉक्सम के पास हॉलीवुड में हैं—जो कि यहाँ से केवल आधे दिन का रास्ता है। क्या हम उनकी प्रतीक्षा करें या आक्रमण कर दें ?"

"माई लार्ड", डिक ने कहा "इन पाँच अभागे बदमाशों को लटकाकर आपने

प्रश्न का हल स्वयं कर दिया है। हालाँकि इस कुसमय में चहलकदमी करने वह निकले थे, लेकिन आखिरकार उनकी क्षति को अनुभव किया जाएगा और उनकी तलाश शुरू की जाएगी। और खतरे का घण्टा बजा दिया जाएगा। इसलिए, माई लार्ड, अगर आप आकस्मिक आक्रमण करने का विचार रखते हैं, तो प्रतीक्षा के लिए अब एक घण्टा भी आपके पास शेष नहीं है।"

"मैं भी यही सोचता हूँ।" क्रुकबैंक ने कहा, "ईश्वर ने चाहा तो एक घण्टे से पहिले ही तुम अपने घोड़ों पर एड़ लगाते हुए होगे। एक तेज़ हलकारा हालीवुड की तरफ़ लार्ड फॉक्सम की अंगूठी लेकर भेज दो और एक हलकारा मेरे पीछे वाली सेना को बुलाने के लिए। हाँ शैल्टन, धर्म की सौगन्ध, आक्रमण अभी किया जा सकता है!"

इसके बाद उसने फिर अपना बिगुल मुँह से लगाया और बजा दिया।

इस बार उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। एक मिनट में क्रास के चारों तरफ़ का क्षेत्र घुड़सवारों और पैदलों से भर उठा। रिचर्ड आव ग्लौसेस्टर ने सीढ़ियों पर खड़े होकर एक के बाद दूसरे हलकारे को रवाना करना शुरू कर दिया और अपने सात सौ जवानों को जो कि कुछ दूर ही पर जंगल में छिपे हुए थे, तत्काल शोरबी की ओर कूच करने का हुक्म देते हुए उसने केवल एक चौथाई घण्टे में ही सब व्यवस्था कर ली। और सेना के शीर्ष पर अपने को स्थापित करते हुए उसने पहाड़ी से उतरकर शोरबी की तरफ कूच बोल दिया।

उसकी योजना अत्यन्त सरल थी। वह दाहिनी ओर से शोरबी नगर पर कब्ज़ा करके नगर के एक प्रदेश को अपनी सुरक्षा के लिए अपने कब्जे में कर लेना चाहता था। इन तङ्ग गलियों पर कब्ज़ा करके वह अपनी कुमुक के आने की प्रतीक्षा कर सकता था।

अगर लार्ड राईसिंघम पीछे हटना पसन्द करेगा तो रिचर्ड उसकी पीठ पर से आक्रमण करेगा और इस प्रकार वह दो दलों के बीच पिस जाएगा। अगर वह शहर पर टिका रहना चाहेगा, तो इस जाल में फँस जाएगा; और एक बड़ी संख्या के सम्मुख जो कि क्रमशः वहाँ एकत्रित होते जाएगी वह टूट जाएगा।

केवल एक खतरा था और वह खतरा तात्कालिक था। अगर लार्ड ग्लौसेस्टर के ये सात सौ कट गए तो? इसलिए इस प्रथम आक्रमण को सफल

बनाने के लिए आत्यन्तिक सावधानी की आवश्यकता थी ।

पैदल सिपाही घुड़सवारों के पीछे डाल दिए गए और डिक को असाधारण प्रतिष्ठा यह मिली थी कि उसे लार्ड ग्लौसेस्टर के ठीक पीछे चलने का आदेश हुआ । जब तक वन का ओलट रहा तब तक सेना धीरे-धीरे चलती रही लेकिन खुले मैदान में आने से पहिले वे थोड़ी देर साँस लेने के लिए रुक गए ।

सूर्य अब कई बाँस ऊपर चढ़ आया था । सूर्य का पीला मण्डल कोहरे जैसा प्रकाश नीचे चाँदी-सी फैली बर्फ़ पर फेंक रहा था और इस वातावरण के साथ ही शोरबी के मकानों की चिमनियों से धुएँ के काले बादल उठकर मिलते जा रहे थे ।

ग्लौसेस्टर ने पीछे मुड़कर डिक से कहा :

"उस अभागी भूमि पर", उसने कहा, "जहाँ लोग अपना नाश्ता पका रहे होंगे या तो तुम्हारी ठोकर कामयाब होगी और मैं दुनिया की आँखों में एक महान् यश और गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करूँगा, या हममें से दोनों—मेरा ख्याल है—इस समर-भूमि में सदैव के लिए सो जाएँगे और हमें कोई भी न जान सकेगा । हम दोनों ही रिचर्ड हैं । तब रिचर्ड शैल्टन, ये दोनों नाम प्रख्यात होंगे और हमारी तलवारें शत्रुओं के सिरों पर उतने ज़ोर से नहीं खनखनाएँगी, जितनी जोर से लोगों के कानों में हमारी कहानियाँ गूँजा करेंगी ।"

डिक दूसरे रिचर्ड की ख्याति-प्राप्ति की इस विराट भूख को देखकर, उसकी आवाज और शब्दों को सुनकर आश्चर्य से अभिभूत हो उठा और उसने अत्यन्त सतर्कता और चातुर्य के साथ उत्तर दिया कि वह अपनी ओर से भर-सक प्रयत्न करेगा और उसे पूरा विश्वास है कि अगर हरएक आदमी ने उतनी ही जिम्मेदारी से अपना काम किया तो विजय का सेहरा उन्हीं के माथे बँधेगा।

इस समय तक घोड़ों ने काफ़ी साँस ले लिया था और नेता के अपनी तलवार और बाग सँभालते ही घोड़ों ने सरपट दौड़ना शुरू कर दिया । घोड़ों की पीठ पर दो-दो सिपाही जमे हुए थे । और उनके वज़नी टापों की आवाज़ पहाड़ी प्रदेश और शोरबी के बीच वाले बर्फ़ से ढके प्रदेश को गुँजा रही थी ।

२६

यह पूरा रास्ता एक-चौथाई मील से अधिक नहीं था। ज्योंही वृक्षों की छाया से यह दल बाहर आया तो उन्होंने दोनों तरफ़ बर्फ़ से ढके चरागाहों में लोगों को भागते और चिल्लाते हुए देखा। उसी समय चारों तरफ़ अफ़वाह फैलनी शुरू हो गई और शहर भर में फैलती हुई और भी ऊँची उठनी शुरू हो गई। उसी समय मीनार में ख़तरे का घंटा बजना शुरू हो गया। अभी तक वह आधी दूर भी चलकर नहीं आ सके थे।

वह तरुण ड्यूक अपने दाँत पीस रहा था। उसे भय था कि इस पूर्व चेतावनी से दुश्मन पूरी तरह ख़बरदार हो जाएगा। और अगर उसने नगर में अपने पैर जमा नहीं लिए तो मैदान में उसकी शक्ति विश्रृंखल होकर नष्ट हो जाएगी।

शहर में लंकास्ट्रियन लोग अच्छी स्थिति में नहीं थे। डिक का कथन अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ था। रात्रि की गश्त ने अपनी जीनें उतार दी थीं और बाक़ी लोग इतने सज्जित नहीं थे कि तत्काल युद्ध में कूद सकते। सारे के सारे शोरबी में पचास आदमी भी ऐसे नहीं थे, जो अस्त्र-शस्त्रों से पूरी तरह सज्जित हों या पचास घोड़े भी ऐसे नहीं थे, जिन पर चढ़कर फौरन युद्ध के लिए कूच बोला जा सके।

ख़तरे की घण्टी के निरन्तर बजने, लोगों के शोर मचाकर इधर-उधर सड़कों पर भागने और दरवाज़े पीटने से फिर भी पचास में से चालीस आदमी घोड़ों पर चढ़कर इधर-उधर दौड़ पड़े थे।

स्थिति यह हुई कि जिस समय रिचर्ड आव ग्लौसेस्टर शोरबी के पहिले

घर के निकट पहुँचा तो केवल मुट्ठी भर बरछाधारी उसके सामने पड़े जिन्हें उसने इस तरह समाप्त कर दिया जैसे तूफ़ान घास-पात को उड़ा देता है।

शहर में लगभग सौ क़दम बढ़ने के बाद डिक शैल्टन ने ड्यूक की बाँह का स्पर्श किया और उसने घूमकर सुना और उत्तर में अपना बिगुल बजाया और एक ख़ास आवाज़ देता हुआ वह सामने का रास्ता छोड़कर दाहिने बाज़ू की ओर मुड़ गया। एक सवार की तरह सिकुड़ते हुए उसके घुड़सवार उसका पीछा कर रहे थे। और सरपट चाल से दौड़ते हुए उन्होंने उस गली को पार कर लिया। केवल पिछले बीस घुड़सवार घूमकर खड़े हो गए और दरवाज़े को रोकने के लिए तत्पर हो गए। पैदल सैनिक जिन्हें वह अपनी पीठपीछे चढ़ाकर लाए थे, नीचे कूद पड़े और कुछ ने अपनी कमान तानना शुरू कर दिया और कुछ ने मकानों के दरवाज़े तोड़कर उनमें मोर्चा जमाना शुरू कर दिया।

एक आकस्मिक परिवर्तन से चकित होकर और शत्रु सेना के मजबूत पृष्ठ-भाग के रक्षकों से घबराकर लंकास्ट्रियनों ने एक क्षण के लिए परामर्श किया और फिर अधिक कुमक लेने के लिए शहर के अन्दर लौट गए।

शहर के उस भाग में जिस पर डिक के परामर्श से रिचर्ड आव ग्लौसेस्टर ने अधिकार कर लिया था, केवल ग़रीब लोगों के घर थे और यह इलाका थोड़ी-सी ऊँचाई पर बसा हुआ था जिसके पीछे बहुत खुला हुआ मैदान था।

अब पाँच सड़कें उनके कब्जे में आ गई थीं। हरएक सड़क के मुँह पर सुरक्षा करने वाले तैनात थे, केन्द्र में एक सुरक्षित दस्ता था जिस पर कहीं से भी निशाना नहीं लगाया जा सकता था, फिर भी यह दल, जहाँ कहीं अपने लोगों के पैर उखड़ते देखे, वहीं पर ताज़ा कुमुक भेज सकता था।

इस इलाके की स्थिति ऐसी ही थी जहाँ लंकास्ट्रियन लार्डों या उनके सेवकों ने रहने का कभी ख्याल भी न किया था। इन घरों के निवासी एक साथ भाग खड़े हुए और बाग़ की दीवारों को फाँदते हुए पीछे निकल गए। कुछेक रोते-चिल्लाते सड़कों पर भागने लगे।

केन्द्र में जहाँ ये पाँचों गलियाँ मिलती थीं, एक टूटा-फूटा मदिरालय था, यहाँ ड्यूक आव ग्लौसेस्टर ने अपना मुख्य शिविर स्थापित किया।

डिक को उसने इन पाँचों गलियों में से एक की रक्षा का भार सौंप दिया।

"जाओ," उसने कहा, "अपने मोर्चे को फतह करो, मेरे लिए ख्याति प्राप्त करो, एक रिचर्ड दूसरे रिचर्ड के लिए। मैं तुमसे कहता हूँ, अगर मैं ऊपर उठा तो तुम भी उसी सीढ़ी पर मेरे साथ ऊपर उठोगे। जाओ," उसने उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

लेकिन ज्योंही डिक रवाना हुआ, वह अपनी बग़ल में खड़े तीरंदाज़ की ओर मुड़ा।

"जाओ डटन, और जल्दी करो," उसने कहा, "जाओ छोकरे के पीछे जाओ, अगर वह तुम्हें वफ़ादार मालूम पड़े तो उसकी रक्षा करना और एक सिर के लिए एक सिर लेना। ध्यान रहे कि तुम उसके बिना लौटकर नहीं आओगे। लेकिन वह विश्वासघात करे या तुम्हें उस पर संदेह हो, तो पीठ पर खञ्जर से साफ़ कर देना।"

इसी बीच डिक अपने स्थान की रक्षा के लिए बढ़ गया। जिस गली की उसे रक्षा करनी थी, वह बहुत ही तंग थी और दोनों ओर घने मकान बने हुए थे और उनके छज्जे सड़क पर निकले हुए थे। हालाँकि गली बहुत सँकरी और अंधियारी थी किन्तु शहर के मुख्य बाजार के सामने पड़ने के कारण युद्ध का विशेष दबाव वहीं पर पड़ने की आशंका थी।

शहर का बाजार घबराए हुए और भागते हुए नागरिकों की भीड़ से भरा हुआ था लेकिन उस समय शत्रु द्वारा आक्रमण होने के कोई आसार नजर नहीं आते थे। डिक ने सोचा कि इस बीच में वह अपने मोर्चे को मजबूत कर ले।

अन्तिम छोर पर दो घर बिलकुल खाली पड़े थे। जिन्हें उनके मालिक भागते समय खुला ही छोड़ गए थे। उन घरों से उसने बहुत-सा फर्नीचर बाहर मँगवाकर सुरक्षा के लिए गली के नुक्कड़ पर लगवा दिया। कुछ आदमियों को मकानों के अन्दर भेज दिया ताकि वहाँ से सुरक्षित रूप से निशाना लगा सकें। उसके पास कुल सौ आदमी थे। बाकी को अपने कमान में लेकर वह गली की रक्षा के लिए खड़ा हो गया।

इस बीच सारे शहर में चीख़-पुकार और दौड़-धूप मचती रही; घंटियाँ ज़ोर से बजती रहीं, तुरहियाँ आकाश को भेदती रहीं, घोड़े सरपट भागते रहे, नायकों के आदेशों की आवाज और कहीं-कहीं स्त्रियों के चीखने की पुकार सारे वातावरण में छाई हुई थी और कान के पर्दे फटे जा रहे थे। धीरे-धीरे वह

उथल-पुथल शान्त होने लगी और उसके तत्काल बाद सशस्त्र सैनिकों और तीरंदाज़ों की पंक्तियाँ सामने आती दिखाई पड़ने लगीं और बड़े बाजार में आकर टक्कर लेने के लिए जुटने लगीं।

इस एक दल का बहुत बड़ा भाग नीली वर्दी में था और घोड़े पर चढ़ा हुआ योद्धा—डिक ने पहिचान लिया—स्वयं सर डेनियल ब्रैकले ही था।

तब एक हल्की-सी शान्ति थोड़ी देर के लिए छा गई। इसके बाद शहर के चार भागों में चार स्थानों पर तुरही बजी। पाँचवीं बाज़ार में बजी और उसके साथ ही उन कतारों ने आगे बढ़ना शुरू कर दिया। और तीरों की बौछार उस बाड़े पर पड़नी शुरू हो गई। और ऐसा लगने लगा, जैसे निकटवर्ती मकानों पर हथौड़े चलाये जा रहे हों।

पाँचों मोर्चों पर एक समान संकेत द्वारा आक्रमण आरम्भ हुआ था।

ग्लौसेस्टर चारों तरफ़ से घेर लिया गया था। डिक ने भली भाँति यह समझ लिया था कि अगर उसे अपने मोर्चे पर विजय लाभ करनी है तो उसे अपने सौ आदमियों पर ही भरोसा रखना होगा।

एक के बाद एक तीरों की सात बौछारें हुईं और जिस समय तीरों की यह घोर वर्षा हो रही थी, डिक ने पीछे से अपनी बाँह पर कुछ अनुभव किया और देखा कि एक भृत्य चमड़े की बख्तरबन्द जाकेट लिए खड़ा है।

"यह माई लार्ड ग्लौसेस्टर ने भिजवाई है", सेवक ने कहा, "उन्होंने कहा है सर रिचर्ड, कि आप बिना कवच धारण किए ही चले आए हैं।"

इस प्रकार के सम्बोधन से डिक का हृदय उछाह से भर गया। वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया और सेवक की सहायता से कवच धारण करने लगा। उसी समय दो तीर कवच पर टकराए और हानि पहुँचाए बिना ही नीचे गिर गए। एक तीर उस सेवक को लगा और वह उसके पैरों के निकट ही ढेर हो गया।

इस बीच शत्रु की सारी सेना बाजार में से बढ़ती हुई रक्षा-द्वार के निकट आ रही थी। और अब तक वह इतने निकट आ गए थे कि डिक ने उनके वारों का उत्तर देने की आज्ञा दी, तत्काल बाड़े के पीछे से और निकटवर्ती मकानों से तीरों की बाढ़-सी आई और मौत बरपा करने लगी। और लंकास्ट्रियन जो कि जैसे अब तक संकेत की प्रतीक्षा मात्र करते रहे थे, भागकर गली के मुँह की

ओर आने लगे। घुड़सवार अभी तक पीछे की ओर लटक रहे थे और उनकी कलगियाँ नीचे झुकी हुई थीं।

तब फिर एक गुत्थम-गुत्था युद्ध शुरू हो गया। आक्रान्ता लोग एक हाथ से अपनी हथियार चला रहे थे और दूसरे हाथ से उस व्यवधान को साफ़ करने का प्रयत्न कर रहे थे। दूसरी ओर से रक्षक लोग पागलों की तरह गली की रक्षा करने के लिए हुंकार भरकर हथियार फेंक रहे थे। एक क्षण के लिए अपने-पराये की सुधि किसी को नहीं रही थी और एक के ऊपर एक लाश पड़ती जा रही थी। लेकिन किसी चीज़ को विस्मार करना अधिक सरल होता है। लेकिन आक्रान्ताओं के लिए जिस समय एक तुरही बजी और उन्हें इस आत्मघाती युद्ध से पीछे हटने का संकेत हुआ तब तक वह सुरक्षात्मक वाड़ा आधा साफ़ हो चुका था। और अब मोर्चा गिरने के निकट आ गया था।

और अब पैदल सैनिक बाजार में सब जगहों से भागकर पीछे हट रहे थे। घुड़सवार जो कि एक मजबूत पंक्ति बनाए खड़े थे, एड़ियाँ लगाते और एक विषधर की तेजी से आगे बढ़े। अब इस्पाती बख्तर धारण किए हुए घुड़सवार उस विस्मार किए गए बाड़े पर धावा बोल रहे थे।

पहिले दो घुड़सवारों में से एक गिर गया, घोड़ा और सवार दोनों! और दूसरा घुड़सवार उस बाड़े पर झपटा और उसने तीरन्दाज़ को अपने भाले से छेद डाला। उसी समय वह घोड़े पर से खींच लिया गया और उसका घोड़ा मार दिया गया। तब एक पूरा धावा बोल दिया गया और बिखरी हुई रक्षा-पंक्ति पर टूट पड़ा। वह सशस्त्र आदमी अपने गिरे हुए साथियों को कुचलते हुए धावे को आगे सफल वनाने में जुटे हुए थे और वह डिक की टूटी हुई पंक्ति में से निकलकर आगे बढ़ने लगे थे।

लेकिन अभी तक युद्ध समाप्त नहीं हुआ था। अभी भी सकरी गली में डिक अपने साथियों के साथ लकड़ी के आदमियों की तरह भाला फेंक रहा था और गली में मरे हुए और छटपटाते हुए सैनिकों और घोड़ों को एकत्रित करके एक और बाड़ा तैयार कर लिया गया था।

इस नए विघ्न को देखकर घुड़सवार एक बार और पीछे हट गए थे। दोनों पक्षों के मकानों से तीरों की बौछार दुगनी हो गई थी। उनका पीछे हटना एक तरह से भागने में परिवर्तित हो गया था।

उसी समय जो घुड़सवार उस बाड़े को पार करके गली में निकल गए थे, अब आगे बढ़ गए थे; उन्हें यार्किस्टों के सुरक्षित दस्तों ने धर दबाया था; और वह घबराकर पीछे भाग खड़े हुए थे।

डिक और उसके साथियों ने पीछे घूमकर लोहा लेना शुरू कर दिया था। दोनों मकानों से एक बेरहमीपूर्ण तीरों की बौछार इन भगोड़ों पर पड़ने लगी थी। ग्लौसेस्टर उनकी पीठ पर अब भी दबाता हुआ आगे बढ़ रहा था। और आधी मिनट में एक भी लंकास्ट्रियन गली में ज़िन्दा नहीं बचा था।

उस समय डिक ने अपने शस्त्र को विश्राम दिया था और उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट दौड़ गई थी।

इसी बीच ग्लौसेस्टर अपने घोड़े पर से उतर पड़ा था और मोर्चे का निरीक्षण करने आगे बढ़ गया था। उसका चेहरा लिनेन की तरह पीला था लेकिन उसके सिर में उसकी आँखें किसी अजीब मोती के समान चमक रही थीं और उसकी आवाज़ युद्ध में विजय के गर्व से बिखर रही थी। और वह बाड़े पर पहुँच गया था जहाँ शत्रु अथवा मित्र कोई भी बढ़ने का साहस नहीं कर सकता था। घोड़े मौत के मुँह में पड़े हुए बुरी तरह छटपटा रहे थे, और वह उस दृश्य को देखकर अट्टहास कर रहा था।

"इन घोड़ों को खत्म कर दो", उसने कहा, "ये तुम्हारे लिए विघ्न पैदा करते हैं रिचर्ड शैल्टन", उसने आगे कहा, "नीचे झुको।"

लंकास्ट्रियनों ने तीरों की बौछार फिर आरम्भ कर दी थी और गली के मुँह पर बाढ़-सी आ गई थी, लेकिन ड्यूक को लेशमात्र भी चिन्ता नहीं थी। उसने उत्साह के साथ अपनी तलवार निकाली और उसी स्थल पर रिचर्ड को नाइट के गौरव से विभूषित कर दिया।

"और अब सर रिचर्ड", उसने कहना जारी रखा, "अगर तुम लार्ड राईसिंघम को देखो तो तत्काल मुझे खबर भेजना। चाहे वह तुम्हारा अन्तिम आदमी क्यों न हो लेकिन मुझे तत्काल सूचना मिलनी चाहिए। मैं इस मोर्चे के टूटने की परवाह नहीं करूँगा, लेकिन शत्रु पर प्रथम प्रहार करने के प्रण को नहीं तोड़ सकता। और सब लोग कान खोलकर सुन लो," उसने अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए कहा, "अगर अर्ल राईसिंघम किसी दूसरे के प्रहार से धराशायी

हुआ तो मैं इस विजय को भी पराजय के समान ही समझूँगा।"

"माई लार्ड ड्यूक", उसके अंगरक्षकों में से एक ने कहा, "क्या माननीय, खतरे के सम्मुख अपने को खुला रखने का आपका उद्देश्य पूरा नहीं हुआ कि आप अपनी बेशकीमत ज़िन्दगी से खिलवाड़ कर रहे हैं ? हम यहाँ अब और क्यों ठहरे हुए हैं ?"

"कैट्सबी", ड्यूक ने उत्तर दिया, "इस जगह पर ही वास्तविक युद्ध लड़ा जा रहा है। दूसरी जगहों पर सिर्फ इक्के-दुक्के हमले हो रहे हैं। हमें जीत इसी मोर्चे पर मिलेगी। रहा खतरे के सम्मुख अपने को खुला रखने के बारे में, अगर तुम एक भद्दे कुबड़े आदमी होते और सड़क पर खेलने वाले बच्चे तुम्हारी मखौल उड़ाते होते, तो तुम यहाँ एक घंटे का वीरतापूर्वक जीवन व्यतीत करके अपनी पूरी ज़िन्दगी का मज़ा ले सकते थे। सर रिचर्ड, मेरे नामराशि दोस्त, तुम यहाँ मोर्चे को रोको। और कट्सबी, कैसा रहे अगर तुम हमें सभी मोर्चों पर घुमा लाओ। हम सर रिचर्ड पर भरोसा कर सकते हैं जोकि अब भी टखनों तक खून से भीगे खड़े हैं। लेकिन सर रिचर्ड अभी और बुरा समय आगे आना है, इसलिए बेखबर नहीं होना।"

वह सीधा शैल्टन की ओर बढ़कर आ गया और सख्ती के साथ उसकी आँखों में देखते हुए इतने ज़ोर से उसके हाथ दबाए कि शैल्टन को लगा कि रक्त शिराओं से फटकर बाहर निकल आएगा। डिक उसके सम्मुख झेंप गया। वह वहशियाना उत्तेजना और साहस और वह बेरहमी जो उसने उसके चेहरे पर पढ़ी, उसे देखकर उसे अपना भविष्य संकटमय प्रतीत होने लगा। यह महान् योद्धा ड्यूक युद्धकाल में शौर्य में सर्वोपरि था, लेकिन युद्ध के बाद शान्तिकाल में और अपने मित्रों की गोष्ठी में भी वही मस्तिष्क, यह शंका उसको होती जा रही थी, कि मृत्यु का स्वाद चखने में भी पीछे नहीं रहेगा।

२७

डिक को एक बार फिर अपने भविष्य का स्वयं निर्णय करने के लिए छोड़ दिया गया और वह अपने चारों ओर देखने लगा। तीरों की बौछार कुछ-कुछ घटती जा रही थी। चारों तरफ़ शत्रु पीछे हट रहा था और बाज़ार अब खाली होता जा रहा था। बर्फ वहाँ पर नारंगी रंग की कीचड़ के समान मालूम पड़ने लगा था। तमाम मरे हुए सैनिकों और घोड़ों के शरीरों में बिंधे पंखदार तीर ऐसे मालूम पड़ते थे कि जैसे जंगल में झाड़ियों पर काँस फूल आया है।

उसके अपने मोर्चे पर भी बहुत अधिक हानि हुई थी। उस सँकरी गली का मुँह और उस बाड़े के अवशेष सभी मृतकों और छटपटाने वाली लाशों से भरे पड़े थे और उसके अपने सौ आदमियों में से सत्तर भी ऐसे नहीं बचे थे जो अच्छी तरह से हथियार उठा सकते हों।

लेकिन उस समय दिन भी गुज़रता जा रहा था और पहिली कुमुक के किसी भी समय आ पहुँचने की प्रतीक्षा की जा रही थी। और लंकास्ट्रियन अपने इस भरपूर किन्तु विफल आक्रमण से इस तरह टूट चुके थे कि एकदम नए शत्रु से लोहा लेना उनके लिए बिलकुल ही असम्भव था।

इन दोनों पक्षों पर खड़े हुए मकानों में से एक में घड़ी थी और उसमें शाम के दस बजने वाले थे।

डिक अपने पास ही खड़े एक तीरंदाज़ की ओर मुड़ा जो कि अपनी बाँह के एक जख्म पर पट्टी बांध रहा था।

"यह लड़ाई बहुत ही शानदार रही," उसने कहा, "और मुझे उम्मीद है कि वह अब दोबारा आक्रमण नहीं करेंगे।"

"सर," उस छोटे-से तीरंदाज ने कहा, "आपने यार्को और स्वयं अपने लिए बहुत ही शानदार युद्ध किया है। किसी भी आदमी ने इतने थोड़े समय में ड्यूक का स्नेह आज तक प्राप्त नहीं किया। लेकिन जिसे वह जानता भी नहीं, उसे इतने महत्वपूर्ण मोर्चे पर तैनात कर देता, एक उससे भी बड़ा आश्चर्य था। लेकिन देखो सर रिचर्ड, अगर तुम विजय प्राप्त करते हो, तभी तक अच्छा हो लेकिन अगर तुम एक क़दम भी पीछे हटते या मुझे आप पर संदेह होता तो मुझे कुल्हाड़ी या भाले से—आपसे सच कहता हूँ—आप पर वार करने की आज्ञा हुई थी।"

डिक ने कुतूहलपूर्वक उस छोटे-से आदमी की ओर देखा।

"तुम," उसने कहा, "और पीछे से वार करते ?"

"यह ठीक है," तीरंदाज ने कहा, "लेकिन चूँकि मुझे यह काम पसंद नहीं है, इसलिए आपसे बोल दिया। आपको, सर रिचर्ड, अपने प्राणों के लिए इस मोर्चे को फतह करना ही चाहिए, वरना, हालाँकि हमारा कुबड़ा एक महान योद्धा और लड़ाका है, लेकिन चाहे उत्तेजित हो अथवा शान्त, वह अपने आदेश के अनुसार ही हर चीज़ को कराना चाहता है। अगर कोई अपना काम ठीक प्रकार नहीं कर सकता तो केवल मौत ही उसका पुरस्कार होता है।"

"क्या वाकई ऐसा है," रिचर्ड ने कहा, "और आदमी फिर भी उसका अनुसरण करते हैं।"

"वही तो, वह अत्यन्त आह्लादपूर्वक उसके पीछे चलते हैं; वह बहुत ही खुले दिल से इनाम देता है। और अगर वह दूसरों का खून-पसीना बहाने में संकोच नहीं करता तो वह अपने रक्त को भी बहुत अधिक मूल्यवान नहीं समझता। युद्ध में सदैव सबसे पहिली पंक्ति में लड़ता है, और सबसे बाद में सोता है, वह बहुत बड़ी मंजिल तै करेगा, वह कुबड़ा ! ड्यूक आव ग्लौसेस्टर !"

और इस तरुण नायक ने और भी सतर्कतापूर्वक अपना दायित्व सँभालना शुरू कर दिया। यद्यपि अब तक भी उसने कोई कमी बाक़ी नहीं छोड़ी थी, उसे अपने इस आकस्मिक अभ्युत्थान में पतन के तत्व भी नजर आने लगे थे। वह उस तीरंदाज़ के पास से हट गया और एक बार बाज़ार की ओर देखने लगा जो कि इस समय बिलकुल खाली पड़ा हुआ था।

"मैं इस शान्ति में आसार देख रहा हूँ," उसने कहा, "निश्चय ही वे हम

पर कोई आकस्मिक आक्रमण करने वाले हैं।"

और तभी जैसे उसकी उक्ति का उत्तर देने के लिए तीरंदाजों ने उस बाड़े की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। लेकिन उनके आक्रमण में फिर भी कुछ झिझक थी। सम्भवतः वह किसी दूसरे संकेत की प्रतीक्षा कर रहे थे।

डिक बेचैनी से चारों ओर देखने लगा कि कहीं कोई गुप्त संकट तो उसके ऊपर घिरता नहीं आ रहा है। और निश्चय ही गली के अन्दर कुछ दूर पर एक मकान के द्वार खुले और एक क्षण खुले रहे और तब अकस्मात् एक बड़ी संख्या में लंकास्ट्रियन तीरंदाज गली में भरने लगे। ये लोग जैसे ही कूदे वैसे ही अपनी कमानों को तानकर डिक की पीठ पर से तीरों की बौछार करने के लिए बढ़ने लगे।

डिक ने अपने पूरे दस्ते को मकानों से बाहर आ जाने का आदेश दे दिया था और वह अब अपने सैनिकों को स्वर और संकेतों से दोनों ओर के आक्रमण का भरपूर उत्तर देने के लिए निरन्तर प्रोत्साहन देता जाता था।

इसी बीच एक के बाद दूसरा मकान गली में खुलने लगा और दरवाज़ों से निकलकर और खिड़कियों से कूदकर अनेक लंकास्ट्रियन तीरंदाज गली में भरने लगे, यहाँ तक कि पिछले तरफ़ से वार करने वालों की संख्या भी सामने की ओर से आक्रमण करने वालों के समान ही विशाल हो गई। यह स्पष्ट हो गया था कि वह और अधिक अपने मोर्चे को रोक नहीं सकता। उससे भी भयंकर बात यह थी कि उस मोर्चे के गिरते ही समस्त यार्किस्ट सेना सर्वनाश के छोर पर खड़ी रह जाने वाली थी।

उसने सोचा कि मोर्चे की कामयाबी के लिए पीठ पीछे के शत्रु को समाप्त करना ही अधिक आवश्यक है और डिक उन्हीं की ओर मुड़ा और अपने सैनिकों के शीर्ष पर लड़ते हुए उसने इतना जोरदार प्रत्याक्रमण किया कि लंकास्ट्रियन तीरंदाज़ उस मार को सहन न कर सके और तितर-बितर होकर उन्हीं मकानों में घुस गए जहाँ से बाहर निकले थे।

इसी बीच बाज़ार वाले तीरंदाज़ बाड़े को रक्षाहीन पाकर उमड़ पड़े थे और दूसरी तरफ़ से टूट पड़े थे। अबकी बार फिर घूमकर आक्रमण को रोकना था और उन्हें पीछे हटाना था। एक बार फिर उसके आदमियों का शौर्य उभर आया और उन्होंने विजय-गर्व से सड़क को शत्रुओं से बिलकुल साफ़ कर दिया।

लेकिन ज्योंही यह सब हुआ, पीठ पीछे वाले तीरंदाज़ों ने मकानों से निकलकर एक बार फिर आक्रमण आरम्भ कर दिया ।

अबकी बार यार्किस्टों ने बिखरना शुरू कर दिया । कई बार डिक ने देखा कि वह अकेला शत्रुओं के बीच खड़ा हुआ अपने प्राणों के लिए अपनी चमकदार तलवार फेंक रहा है । कई बार उसे यह भी संदेह हुआ कि उसके जख़्म लग गए हैं । फिर भी गली में युद्ध का पासा कभी इधर और कभी उधर पलट रहा था और कोई भी परिणाम शीघ्र निकलने की आशा नहीं थी ।

उसी समय डिक ने सुना कि नगर के सीमान्त पर बिगुलों और दमामों की आवाज़ उठना शुरू हो गई है । यार्किस्टों के युद्ध-नारे और विजय-घोष आकाश को भेदने लगे । उसी समय उसके सामने के आदमी भाग खड़े हुए और बाज़ार में लौट गए । किसी ने उन्हें भागने का आदेश दिया था । तुरही विभिन्न प्रकार से बज रही थी, कहीं प्रदर्शन करने के लिए और कहीं आक्रमण करने के लिए । यह स्पष्ट था कि एक ज़ोरदार आक्रमण हुआ है और फिलहाल लंकास्ट्रियनों के पैर कुछ समय के लिए बिलकुल उखड़ गए हैं । उनके खेमें में भगदड़ और चीख-पुकार मचनी प्रारम्भ हो गई थी ।

और तब एक थियेटर के करतब के समान शोरबी के युद्ध का अन्तिम अध्याय लिखा गया । रिचर्ड के सामने के लोग उस कुत्ते के समान कान दबाकर भागे जिसे उसके मालिक ने सीटी बजाकर बुला लिया हो । उसी समय बाज़ार में घुड़सवारों का एक रेला आया । लंकास्ट्रियन पीछे घूमकर तलवार से लड़ने को खड़े हो गए और यार्किस्ट उन्हें बर्छों से बींधने लगे ।

इस भीड़ में डिक ने क्रुकबैक(कुबड़ा ड्यूक)को देखा । वह आज उस शौर्य और शस्त्र-कौशल का परिचय दे रहा था—जो वर्षों बाद उसने बोसवर्थ के समर-क्षेत्र में आगे चलकर दिखाया जबकि उस पर अनेक अपराध लगाए गए—जिसे देखकर उस दिन के परिणाम और अंग्रेज़ी सिंहासन के भविष्य को बहुत अच्छी तरह घोषित किया जा सकता था । स्वयं बचता हुआ, शत्रु पर प्रहार करता हुआ, कभी नीचे उतरकर वह इस तरह चौमुखी युद्ध कर रहा था और अपने घोड़े को साध रहा था कि अपना रास्ता साफ़ करता हुआ अपने प्रमुख योद्धाओं से भी काफ़ी आगे पहुँच गया था । वह उधर बढ़ रहा था, जहाँ अर्ल राईसिंघम ने वीरतापूर्वक मोर्चे की कमान सँभाली हुई थी । एक क्षण बाद

ही उन दोनों का सामना हो गया। वह लम्बा, शानदार और प्रसिद्ध योद्धा राईसिन्घम का एक भद्दे और रोगी-से दीखने वाले छोकरे से सामना हुआ।

फिर भी शैल्टन को परिणाम के बारे में लेशमात्र भी संदेह नहीं था और लड़ाई जब दोबारा शुरू हुई तो अगले ही क्षण अर्ल गायब हो गया था। लेकिन क्रुकबैक अब भी शस्त्र फेंकता दीख पड़ रहा था और जहाँ युद्ध सबसे घटाटोप था वहीं अपना घोड़ा फेंकता जा रहा था।

इस प्रकार इस गली के मोर्चे को रोके रखने में शैल्टन के साहस और ठीक अवसर पर सात सौ सैनिकों की कुमुक से उस छोकरे ने, जोकि आगे चलकर रिचर्ड तृतीय के नाम से सिंहासन पर बैठा और आने वाली पीढ़ियों द्वारा नफरत से याद किया गया, यह अपनी सर्वप्रथम और प्रबल विजय प्राप्त की थी।

२८

चारों ओर एक भी शत्रु ऐसा नहीं था, जिस पर प्रहार किया जा सकता। डिक ने जिस समय क्लान्तमन अपने सैनिकों की ओर देखा तो उसने अपनी विजय के मूल्य का अनुमान लगाना शुरू कर दिया। अब चूँकि संकट टल गया था, वह इतना अकड़ गया था और उसके अंग-प्रत्यंग इस तरह दर्द करने लगे थे, और अनवरत युद्ध करते-करते वह इतना बेदम हो गया था कि उसे लगा कि अब वह किसी प्रकार भी कोई नया प्रहार करने के योग्य नहीं रह गया है।

लेकिन उसके लिए अभी विश्राम का समय नहीं था। शोरबी पर आक्रमण कर दिया गया और हालाँकि वह नगर बिलकुल खुला था और किसी प्रकार का भी प्रतिरोध करने में असमर्थ था, परन्तु ये बीहड़ लड़ाके युद्ध के बाद भी कम बीहड़ता के साथ पेश नहीं आएंगे; उसे मालूम था कि युद्ध का सबसे बीभत्स दृश्य अभी उपस्थित होना है। रिचर्ड आव ग्लौसेस्टर अपने सैनिकों के क्रोध से नागरिकों की रक्षा करने के लिए उनका कप्तान नहीं था। और वह रोकने की कोशिश करता भी तो इसमें संदेह था कि उसमें वैसा करने की सामर्थ्य थी।

यह अब डिक का कर्तव्य था कि वह जोना का पता चलाए और उसकी रक्षा करे। जैसे ही उसके मन में यह विचार आया, उसने अपने आदमियों की ओर देखा। उनमें तीन या चार अभी ऐसे दीख पड़ते थे, जोकि आदेश पालन के इच्छुक थे। और उन लोगों को एकान्त में ले जाकर उसने कहा कि अगर वह उसके साथ चलेंगे तो वह ड्यूक से उनकी खास शिफारिश करेगा और वह

स्वयं भी उन्हें इनाम देगा और वह उन्हें लेकर बाज़ार के बीच से चल खड़ा हुआ।

खुली सड़क पर कहीं इक्के-दुक्के और कहीं दर्जन की संख्या में लोग लड़ रहे थे। कहीं पर किसी मकान का घेरा डाला जा रहा था और मकान मालिक आक्रमणकारियों पर स्टूल और टेबिल फेंक रहे थे। बर्फ पर हथियार और लाशें चारों ओर बिखरी हुई थीं। इन इक्की-दुक्की लड़ाइयों को छोड़कर सड़कें बिलकुल खाली थीं। अनेक मकान बिलकुल खाली पड़े थे और कुछ की खिड़कियाँ बंद थीं और द्वारों पर बाड़े लगाये हुए थे। लेकिन किसी भी मकान में से धुआँ नहीं निकल रहा था।

डिक इन लड़ने वालों को एक ओर छोड़ता हुआ, सीधा चर्च की ओर बढ़ गया। लेकिन जब वह बड़ी सड़क पर आया तो उसके मुँह से अकस्मात् एक चीख़ निकल गई। सर डेनियल के घर पर धावा बोल दिया गया था, दरवाज़े टूटे पड़े थे, और एक बड़ी संख्या में लोग लूट का सामान ले-लेकर बाहर निकल रहे थे। लेकिन ऊपर की मंजिलों में लूट मचाने वालों का प्रतिरोध अब भी किया जा रहा था। जैसे ही डिक मकान के निकट आया उसने देखा कि ऊपर की एक खिड़की में से नीली वर्दी पहिने हुए एक सैनिक चीखता हुआ बाहर फेंके जाने के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था। लेकिन एक क्षण बाद उसे सड़क पर फक ही दिया गया।

डिक का मन एक गहरी आशंका से अभिभूत हो उठा। मन्त्रमुग्ध की भाँति वह सीधा भीड़ में धँसता हुआ अन्दर पहुँच गया और तीसरी मंजिल पर उसी कमरे में दाखिल हुआ जहाँ उसने जोना से अन्तिम विदा ली थी। लेकिन वह कमरा अब एक खंडहर के समान विध्वस्त हुआ पड़ा था। फर्नीचर तोड़ दिया गया था और परदे आतिशदान के अंगारों पर जलकर राख हुए पड़े थे।

डिक बिना एक क्षण भी सोच-विचार में बिताए उस अग्निकांड से बाहर निकल आया। सर डेनियल, सर ओलीवर और जोना सभी वहाँ से ग़ायब थे। लेकिन वह सब क़त्ल कर दिये गए थे या शोरबी से बचकर साफ़ निकल गए थे, यह कौन बता सकता था।

उसने अपने पास से गुज़रते हुए एक तीरंदाज का अंगरखा पकड़कर रोक लिया।

"दोस्त" उसने पूछा, "क्या जिस समय इस मकान पर आक्रमण हुआ था तुम यहीं थे ?"

"छोड़ो मुझे" तीरंदाज़ ने कहा, "तुम्हें मौत मारे, मुझे छोड़ो; वरना मैं प्रहार करता हूँ।"

"ऐ इधर सुनो" रिचर्ड ने उत्तर दिया "प्रहार दोनों ही कर सकते हैं। खड़े होकर साफ़-साफ़ बताओ।"

लेकिन वह तीरंदाज शराब और युद्ध के नशे से मतवाला हो रहा था। उसने एक हाथ से अपना अंगरखा झटक लिया और दूसरे से डिक के कन्धे पर प्रहार किया। इस पर उस तरुण नायक का क्रोध भड़क उठा। उसने उस आदमी को अपनी बाहों में जकड़कर मेख चढ़े हुए बख्तर पर इस तरह कस लिया जैसे कि वह एक बच्चा हो और तब उसका गला पकड़कर कहा कि अगर वह अपनी ज़िन्दगी को बचाना चाहता है तो ठीक-ठीक बता दे।

"मुझ पर दया करो" तीरंदाज़ गिड़गिड़ाया, "अगर मुझे मालूम होता कि आप इतने क्रुद्ध हो उठेंगे तो मैं कभी इस तरह का व्यवहार न करता। मैं तो दरअसल यहीं पर था।"

"क्या तुम सर डेनियल को जानते हो ?" उसने पूछा।

"मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ" उस आदमी ने उत्तर दिया।

"क्या वह हवेली में थे ?"

"हाँ साहब, थे" तीरंदाज ने उत्तर दिया "लेकिन ज्योंही हम दरवाज़े से घुसे वह बाग़ की ओर से घोड़े पर सवार होकर निकल गए।"

"अकेले ही ?" डिक चिल्लाया।

"शायद उनके पास एक बीसी बर्छाधारी थे" उस आदमी ने कहा।

"सिर्फ बर्छाधारी, औरतें वगैरा कोई नहीं ?" शैल्टन ने पूछा।

"सच कहता हूँ कि और कुछ मैंने नहीं देखा" तीरंदाज ने कहा—"लेकिन अगर आप औरतों की तलाश में हैं तो आपको इस हवेली में एक भी औरत नहीं मिलेगी।"

"धन्यवाद" डिक ने कहा, "लो, यह लो अपना इनाम", डिक ने अपनी जेब टटोलते हुए कहा, लेकिन जेब को बिल्कुल खाली पाकर उसने कहा, "अच्छा याद रखना, रिचर्ड शैल्टन—सर रिचर्ड शैल्टन। किसी से भी मालूम

करके मेरे पास कल आना। तुम्हें ढेर-सा पारितोषिक दिया जाएगा।"

और तब डिक के दिमाग़ में एक विचार दौड़ गया। वह तेजी के साथ सहन में आया और बाग़ में भागता हुआ चर्च की ओर दौड़ा। चर्च के द्वार खुले पड़े थे और फ़र्शों पर भागकर आए हुए नागरिक अपने माल-असबाब और परिवारों को लिए हुए पड़े थे। जबकि वेदी पर पुजारी लोग ईश्वर से दया की याचना कर रहे थे। जिस समय डिक ने अन्दर प्रवेश किया छत में घण्टे जोरों के साथ घनघनाने लगे थे।

उन भगोड़ों के बीच से रास्ता साफ़ करते हुए डिक जीने के मुँह पर आ गया और ऊपर के गुम्बद की ओर बढ़ने लगा। यहाँ एक लम्बा पुजारी उसके सामने आ गया और उसने सख्ती से पूछा, "किधर चले, बेटा।"

"माई फादर", डिक ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ एक मोर्चे की ख़बर लेने आया हूँ। मेरे रास्ते में से हट जाओ। मैं यहाँ ग्लौसेस्टर के लार्ड के सेना-नायक की हैसियत से आया हूँ।"

"माई लार्ड आव ग्लौसेस्टर के सेनानायक के रूप में!" पादरी ने वही वाक्य दोहराया, "तब क्या युद्ध में हमारी पराजय हुई?"

"युद्ध, फादर, समाप्त हो चुका है। लंकास्टरों को साफ़ कर दिया गया। और अर्ल राईसिंघम—भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे—युद्ध के मैदान में ही खेत रहे। और अब आपकी आज्ञा से मैं अपना काम करने अग्रसर होता हूँ।"

इस समाचार को सुनकर पादरी पत्थर हो गया था, डिक ने बाँह पकड़कर उसे किनारे किया और फाटक खोलते हुए वह एक साथ चार सीढ़ियाँ पार करते हुए ऊपर लपका। बिना ठोकर खाए या साँस लिए वह छत के विशाल प्लेटफार्म पर पहुँच गया था।

शोरबी की चर्च से पूरा नगर ही एक मानचित्र के समान दिखाई नहीं देता था, वरन् वहाँ से समुद्र और स्थल पर चारों ओर दूर-दूर तक प्रत्येक चीज़ साफ़-साफ़ दिखाई देती थी। अब प्रायः दोपहर का समय हो चुका था और सूर्य आकाश में बहुत तेज़ी के साथ चमक रहा था। बर्फ़ की ओर देखने से चौंध मालूम पड़ती थी। डिक ने चारों तरफ़ को निगाह दौड़ाई ताकि वह युद्ध के परिणामों का अन्दाज़ लगा सके।

एक भूली-भटकी गुर्राहट उसके कानों में सड़क पर से अब भी पहुँचती

रही थी, किन्तु कहीं भी शस्त्रों की टकराहट न सुन पड़ती थी। बन्दरगाह में एक भी जहाज़, यहाँ तक कि एक भी किश्ती दिखाई नहीं देती थी; लेकिन सागर की छाती पर दागों की तरह मस्तूलदार जहाज़ और पतवारों वाली किश्तियाँ भगोड़ों को लादे दूर बढ़ती दिखाई देती थीं। किनारे पर भी बर्फ़ से ढके चरागाहों की शान्ति घुड़सवारों ने प्रायः भंग कर दी थी और कुछ लोग जो वन की ओर भाग खड़े हुए थे, यार्किस्ट घुड़सवार उन्हें शहर की ओर मार-कर खदेड़ने का प्रयत्न कर रहे थे। समस्त समतल मैदान लाशों और मरे हुए घोड़ों से भरा पड़ा था और बर्फ़ पर उन्हें साफ़-साफ़ पहचाना जा सकता था।

चित्र को पूरा किया जाए तो यह भी उल्लेख करना पड़ेगा कि वे सैनिक लोग जिन्हें जहाजों पर बैठकर भाग जाने की सुविधा नहीं मिली थी, अब भी प्रतिरोध स्वरूप लड़ रहे थे और आसपास की सरायों को अपना अड्डा बनाए हुए थे। इस क्षेत्र में भी एक या दो मकानों को आग लगा दी गई थी और कोहरे से भरे आकाश में धुआँ बहुत ऊँचाई पर मँडरा रहा था और रूई के फाहों के समान सागर की ओर बढ़ रहा था।

इससे कुछ पूर्व ही जंगल के सीमान्त पर हालीवुड की ओर कुछ सैनिकों के बढ़ने की आवाज़ ने इस तरुण प्रेक्षक का ध्यान अपनी ओर खींच लिया था। सैनिकों की संख्या काफ़ी थी और दूसरे किसी भी स्थान पर इतनी संख्या में लंकास्ट्रियन सैनिक एक स्थान पर एकत्रित नहीं थे। उनके जाने से बर्फ़ पर एक बहुत बड़ा रास्ता-सा बन गया था और डिक अच्छी तरह पहिचान सकता था कि वह कहाँ से चले हैं।

डिक जब तक खड़ा ही रहा ये लोग बिना किसी प्रतिरोध के जंगल के अन्दर प्रवेश करने लगे थे। ज्यों ही उन्होंने अपनी दिशा बदली, त्योंही सूर्य की रोशनी पूरी तरह से उन पर पड़ी और डिक ने पहिचान लिया कि सैनिक सर डेनियल की ही वर्दी पहने हुए हैं।

अगले ही क्षण वह जीने से उतर आया, अब उसके सामने यह समस्या थी कि वह ड्यूक आव ग्लौसेस्टर को किस प्रकार खोज निकाले क्योंकि उस उथल-पुथल की स्थिति में केवल वही उसे काफ़ी संख्या में सैनिक दे सकता था। सड़कों पर युद्ध अब प्रायः समाप्त हो चुका था और डिक कमाण्डर को ढूँढ़ता हुआ इधर से उधर दौड़ रहा था। सड़कों पर मदमस्त सैनिक डोल रहे थे।

कुछ लोग लूट का माल इस कदर सिर पर लादे हुए थे कि चलते हुए उनके पैर लड़खड़ा रहे थे और कुछेक शराब के नशे में मस्त, इधर-उधर शोर मचाते हुए घूम रहे थे। इनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जिसे लेशमात्र भी ड्यूक का अता-पता मालूम हो, और यह केवल संयोग की ही बात थी कि डिक ने उसे पा लिया। उस समय वह बंदरगाह की तरफ़ के तीरंदाजों को बाहर निकलने की आज्ञा दे रहा था और घोड़े पर बैठा हुआ था।

"सर रिचर्ड शैल्टन, तुम खूब आए," उसने कहा, "मैं तुम्हारा एक चीज के लिए कृतज्ञ हूँ—जिसका मैं बहुत कम मूल्य लगाता हूँ—मेरी जिन्दगी—और दूसरी चीज यह कि जिसका मुआवज़ा मैं तुम्हें कभी भी नहीं चुका सकूँगा—वह है यह विजय ! कैट्सबी, अगर मेरे पास दस कप्तान भी सर रिचर्ड के समान हों तो मैं इंगलैण्ड पर आज ही धावा बोल सकता हूँ; लेकिन सर रिचर्ड, तुम अपना पारितोषिक माँग लो।"

"बड़े आराम से माई लार्ड," डिक ने कहा, "आराम से और धोखा न खा कर। वह आदमी बचकर निकल चुका है जिससे मुझे प्रतिशोध लेना है। और अपने साथ उसे भी ले गया है जिसके प्रेम से मैं प्रणबद्ध हूँ और जिसकी खिदमत मुझे करनी है। कृपा करके मुझे पचास भाले वाले सैनिक दीजिए ताकि मैं उसका पीछा कर सकूँ और इतनी कृपा प्राप्त करके ही, माई लार्ड, मैं अपने को कृतकृत्य समझूँगा।"

"कौन है वह ?" ड्यूक ने पूछा।

"सर डेनियल ब्रैकले," रिचर्ड ने उत्तर दिया।

"फौरन उसका पीछा करो, दग़ाबाज़ का !" ग्लौसेस्टेर चिल्लाया, "यह कोई पारितोषिक नहीं है सर रिचर्ड, यह तो एक अतिरिक्त सेवा होगी और अगर तुम उसका सिर मेरे पास लाओगे तो मैं तुम्हारा उपकार मानूँगा। कैट्सबी, इनके लिए पचास भाले वाले तैयार कर दो और आज कृपा करके इस बीच में यह सोच लो कि मैं तुम्हें क्या सम्मान या पुरस्कार प्रदान कर सकता हूँ।"

उसी समय यार्किस्ट सैनिकों ने एक सराय को समर्पण करने पर बाध्य कर दिया था। सराय को तीन ओर से घेर लिया गया था और एक-एक भागने वालों को गिरफ्तार किया जा रहा था। क्रुकबैक डिक की इस सफलता पर

बहुत प्रसन्न था और उसने बन्दियों को देखने के लिए अपना घोड़ा और भी निकट बढ़ा लिया था।

शायद कुल मिलाकर चार या पाँच कैदी होंगे। दो आदमी माई लार्ड शोरबी के, एक आदमी राईसिंघम का और अन्तिम एक लम्बा, उजड़ा-सा और खैरे-से रंग का जहाजी था, जो या तो बहुत शान्त हो गया था या फिर अधिक पी जाने के कारण बोलने में असमर्थ था और उसका कुत्ता उसके पैरों के पास ही गुर्रा रहा था और कूद रहा था।

तरुण ड्यूक ने थोड़ी देर तक उनका अच्छी तरह निरीक्षण किया। "बहुत अच्छा," उसने कहा, "इन्हें सूली पर लटका दो!" और वह दूसरी तरफ़ युद्ध की प्रगति को देखने के लिए मुड़ गया।

"माई लार्ड," डिक ने कहा, "आप प्रसन्न हों, मैंने अपना पारितोषिक खोज लिया है। कृपा करके उस पुराने जहाजी का प्राणदान मुझे दीजिए।"

ग्लौसेस्टेर मुड़ा और उसने सीधे वक्ता के मुँह पर निगाहें जमा दीं।

"सर रिचर्ड," उसने कहा, "मैं मोरों के पंख लेकर युद्ध नहीं करता बल्कि इस्पात के तीरों से युद्ध करता हूँ। जो मेरे शत्रु हैं उन्हें मैं कत्ल करता हूँ और बिना किसी प्रकार की दया-माया दिखाए। तुम सोचो कि इंगलैण्ड के इस उथल-पुथल के दिनों में मेरी सेना में शायद ही कोई आदमी हो, जिसका कोई भाई-बन्धु मेरे शत्रु की सेना में न हो। इस प्रकार अगर मैंने माफियाँ देनी शुरू कर दीं तो मुझे अपनी तलवार भी म्यान में रख लेनी पड़ेगी।"

"चाहे कैसा ही क्यों न हो माई लार्ड, और आपकी अप्रसन्नता का खतरा शिरोधार्य करते हुए भी मैं यह कहने का साहस करूँगा, कि आप अपने वचन को स्मरण करके मेरी प्रार्थना पर विचार करें।"

रिचर्ड आव ग्लौसेस्टेर क्रोध से भर गया।

"अच्छी तरह सोच लो," उसने कठोरतापूर्वक कहा, "मैं दया को पसंद नहीं करता हूँ और न ही दयालुओं की बहुत अधिक कद्र करता हूँ। तुमने आज ही एक महान भविष्य की नींव रखी है। अगर तुम मेरे वचन को सामने रखकर अनुरोध करके ऐसा कहते हो तो मैं तुम्हारी माँग पूरी करूँगा। किन्तु तुम्हारा अधिकार समाप्त हुआ।"

"हानि मेरी ही है, माई लार्ड," डिक ने कहा।

"उसे वह जहाज़ी दे दो," और उसने अपना घोड़ा दूसरी ओर घुमा लिया। उसने तरुण शैल्टन की ओर पीठ कर ली।

डिक न प्रसन्न था और न दुखी। उस तरुण ड्यूक के स्नेह की महिमा को वह बहुत कुछ देख चुका था और उसके उत्थान का क्रम इतना आकस्मिक और धुँधला था कि उसे अपने भविष्य पर कोई भरोसा नहीं था। केवल एक चीज़ का उसे भय था कि वह दुर्धर्ष नेता कहीं पचास बर्छाधारी देने का वचन भंग न कर दे। लेकिन यहाँ न उसने ग्लौसेस्टर की प्रतिष्ठा के साथ न्याय किया और न अपनी निर्णय बुद्धि के साथ। अगर उसने यह सोच लिया था कि सर डेनियल का मुकाबला करने के लिए डिक ही उचित पात्र है तो वह अपने आदेश को वापस नहीं ले सकता। और वह कैट्सबी को चिल्लाकर उसे पचास बर्छाधारी सैनिक देने का आदेश दोहराते हुए कहा कि वह तत्काल वैसा प्रबन्ध कर दे, क्योंकि पालादीन उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

इसी बीच डिक उस पुराने जहाज़ी के निकट पहुँच चुका था, जो अपने प्राणदण्ड और मुक्ति दोनों की ओर से समान रूप से उदासीन था।

"अल्बास्टर," डिक ने कहा, "मैंने तुम्हारे साथ बुरा किया है; अब, धर्म की सौगन्ध, मैं समझता हूँ कि मैंने उसका बदला दे दिया।"

लेकिन उस पुराने जहाज़ी ने उसके मुँह की ओर उदासीन आँखों से देखा और बिलकुल शान्त रहा।

"आओ," डिक ने कहा, "जीवन जीवन है। और उसका महत्व जहाज़ या शराब से भी अधिक है। कहो कि तुमने मुझे क्षमा कर दिया है। क्योंकि अगर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिए महत्व नहीं रखता, परन्तु मेरे भाग्य का निर्माण तो उसीने किया है; आओ, मैंने एक बहुत बड़ा मूल्य चुकाकर उसे बचाया है। बचपना न करो।"

"और अगर मेरे पास मेरा जहाज़ होता," अल्बास्टर ने कहा, "तो मैं आनन्द के साथ समुद्र की ओर बढ़ जाता और मेरा मैन टाम भी। लेकिन तुमने मेरा जहाज़ लेकर मुझे तबाह कर दिया। मैं अब एक फ़कीर से अधिक कुछ भी नहीं हूँ। और मैन टाम, उसको किसी पाजी ने मार डाला। मरते समय मरेन (Murrain!) उसने कहा था। और कोई भी शब्द वह कह नहीं

सका। और इतना कहकर उसकी आत्मा उड़ गई। अब वह कभी जहाज़ चलाने के लिए लौटकर न आ सकेगा।"

डिक का हृदय पश्चात्ताप और दया से भर आया। उसने कप्तान का हाथ अपने हाथ में लेना चाहा, परन्तु उसने अपना हाथ उसके हाथ में दिया नहीं।

"नहीं, तुमने मेरे साथ एक शैतान की तरह सलूक किया है और तुम इसमें ही सन्तोष करो।" उसने कहा।

बहुत-से शब्द डिक के गले में रुँधकर रह गए। उसने अपनी आँसुओं से भरी आँखों से देखा कि वह बेचारा ग़रीब कप्तान शराब और दुःख के भार से झुका बर्फ़ को पार करता हुआ जा रहा है और उसका कुत्ता उसके पीछे-पीछे च्याऊँ-च्याऊँ करता दौड़ रहा है। आज पहली बार डिक ने यह अनुभव किया कि हम अपने जीवन में जो भूलें करते हैं, और एक बार पागलपन में जो कुछ कर बैठते हैं, उसे फिर बदला नहीं जा सकता और न ही किसी प्रकार के पश्चात्ताप से उसकी क्षतिपूर्ति हो सकती है।

लेकिन उसके पास इन व्यर्थ के पश्चात्तापों के लिए समय न था। कैट्सबी ने घुडसवार इकट्ठे कर लिए थे। डिक के पास आकर वह घोड़े पर से उतर पड़ा।

"आज प्रातःकाल" उसने कहा, "आज सुबह आपकी तरक्की पर ईर्ष्या हुई थी क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि बहुत लम्बी नहीं थी, और अब सर रिचर्ड, मैं बहुत ही मधुर भाव से आपको अपना घोड़ा प्रस्तुत करता हूँ। आप इस पर ही चढ़कर कूच बोलें ?"

"कृपा करके एक क्षण ठहरें", डिक ने उत्तर दिया, "मुझे जो कृपा प्राप्त हो रही है, इसका आधार क्या है ?"

"इस कृपा का कारण है तुम्हारा नाम", कैट्सबी ने कहा, "यह माई लार्ड का प्रमुख शकुन है। अगर मेरा नाम भी रिचर्ड होता तो क्या नामुमकिन नहीं था कि मैं कल ही अर्ल बना दिया जाता।"

"आपकी इस कृपा के लिए महोदय, मैं आपका कृतज्ञ हूँ", डिक ने उत्तर दिया, "और क्योंकि मेरे लिए इन कृपाओं का आकांक्षी होना बहुत अधिक समय तक सम्भव नहीं है, इसलिए यह सम्भव है कि मैं बहुत शीघ्र ही विदाई ग्रहण कर लूँ। मुझे यह स्वीकार करते हुए लेशमात्र भी झिझक नहीं

है कि सौभाग्य के इस सोपान पर आरूढ़ होने से मुझे कोई विशेष आह्लाद नहीं हुआ था किन्तु मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि अगर अब उन्हें मुझसे छीन लिया गया तो भी मुझे नितान्त दुःख होगा। कमान और सुख-साधन ये सब देखने-सुनने में बड़ी चीजें मालूम पड़ती हैं। लेकिन अगर एक शब्द भी कोई कान में फूँक दे'''सचमुच तुम्हारा ड्यूक बहुत ही खतरनाक नौजवान है।"

कैट्सबी हँसने लगा।

"नहीं", उसने कहा, "यह तो निश्चय है कि वह जो क्रुकेड डिक के साथ एड़ लगाकर बढ़ेगा वह बहुत आगे तक बढ़ेगा। ईश्वर हम सबकी शैतान से रक्षा करे। अब तुम एड़ लगाओ। तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो।"

इतना सुनकर डिक ने अपने सैनिकों का नायकत्व ग्रहण कर लिया और कूच की आज्ञा देते हुए वह टुकड़ी के सम्मुख एड़ लगाकर आगे बढ़ने लगा।

वह सीधा शहर के बीच दूसरी ओर बढ़ गया। उसका अनुमान था कि सर डेनियल उसी मार्ग से गए हैं। रास्ते में दोनों ओर वह ऐसे चिह्नों की भी तलाश करता जाता था, जिससे यह स्पष्ट हो जाए कि वह सही रास्ते पर जा रहा है अथवा नहीं।

सड़कों पर लाशें बिछी पड़ी थीं, कहीं-कहीं अनेक घायल भी कराह रहे थे। इस बर्फ़ानी मौसम में घायलों की स्थिति और भी करुणाजनक हो गई थी। विजेताओं के दल के दल इधर से उधर मारते और छुरे भोंकते हुए घर-घर को लूटते फिर रहे थे। कभी-कभी वह आपस में मिलकर गाते भी सुन पड़ते थे।

नगर के विभिन्न प्रकोष्ठों से हिंसा और अनाचार की चीखें उसे सुन पड़ती थीं।

किसी बन्द द्वार पर हथौड़ों के प्रहार किए जा रहे थे और किसी मकान से निकलने वाली औरतों की चीखें दिल को कँपा देती थीं।

डिक के हृदय में एक जागरूकता पैदा होती जा रही थी। उसने अपने आचरण के वर्बरतापूर्ण परिणामों को देख लिया था और समस्त शोरबी में इस समय जो अनाचार और क्रूरता का ताण्डव हो रहा था, उसे देखकर उसके हृदय में एक गहरी मायूसी भरती जा रही थी।

आखिरकार वह सीमान्त पर पहुँच गया। जिस सड़क को उसने गिर्जाघर

की छत पर चढ़कर देखा था वही सड़क उसके सामने सीधी पड़ी हुई थी और उस पर पड़े हुए बर्फ़ पर अभी तक किसी सैनिक टुकड़ी के गुज़रने के चिह्न बने हुए थे। यह सब देखकर उसने अपनी टुकड़ी की रफ्तार और भी तेज़ कर दी, परन्तु अभी तक वह सड़क पर गिरे हुए सैनिकों को ग़ौर से देखता जाता था। इन सैनिकों और घोड़ों में अधिकांश सर डेनियल के ही थे, उसे इस बात का संतोष था। उनमें अनेक सैनिकों के चेहरे तो वह व्यक्तिगत रूप से पहिचानता भी था।

शहर और जंगल के आधे रास्ते में पहुँचकर ऐसा प्रतीत होता था कि सर डेनियल की टुकड़ी पर तीरंदाज़ों का भयानक आक्रमण हुआ है क्योंकि प्रत्येक सैनिक जो गिरा पड़ा था एक तीर से बिंधा हुआ था। इन्हीं लोगों में डिक ने एक तरुण के शरीर को भी देखा—जिसका चेहरा उसे अत्यन्त घनिष्ठ परिचित प्रतीत हुआ।

उसने अपनी टुकड़ी को रुकने का आदेश दिया। घोड़े पर से उतरा और उस तरुण का सिर ऊपर उठाया। ज्योंही सिर ऊपर उठा, उसके सिर पर रखा हुआ नक़ाब पीछे गिर गया और लम्बे-लम्बे केश बिखर गए, उसी समय उसने अपनी आँखें खोल दीं।

"ओह, सिंहों को हाँकने वाले", एक शिथिल-सा वाणी ने कहा, "वे अभी आगे बढ़ गए हैं। जल्दी पीछा करो—तेज़ी से पीछा करो।"

और तब वह युवती पुनः मूर्च्छित हो गई।

डिक के किसी आदमी ने अपनी बोतल में से कोई पेय निकालकर उसके मुँह में डाला और डिक को उसकी चेतना वापस लाने में सफलता प्राप्त हो गई। तब उसने जोना की मित्र को अपनी जीन पर बैठा लिया और एक बार फिर घोड़े को तेजी से आगे बढ़ा दिया।

"तुम मुझे अपने साथ क्यों घसीटते हो, इससे तो तुम्हारी रफ्तार और भी कम होती है।" उस युवती ने कहा।

"नहीं, कुमारी राईसिंघम", डिक ने उत्तर दिया, "शोरबी इस समय रक्त-पात, लूट-मार और हत्याकाण्ड की रंगस्थली बना हुआ है। लेकिन यहाँ तुम सुर-क्षित हो, इस बात का विश्वास रखो।"

"मैं तुम्हारी किसी भी कृपा के लिए कृतज्ञ नहीं होना चाहती", वह चिल्लाई "मुझे फौरन नीचे उतार दो।"

"मैडम, आपको मालूम नहीं आप क्या कह रही हैं ?" डिक ने उत्तर दिया, "आपको सख्त चोट आई है।"

"मुझे कोई चोट नहीं आई", उसने कहा, "केवल मेरा घोड़ा कत्ल कर दिया गया है।"

"इससे तो स्थिति में लेशमात्र भी अन्तर नहीं पड़ता।" रिचर्ड ने उत्तर दिया, "आप यहाँ पर खुले बर्फ़ में फँसी हुई हैं। और चारों तरफ़ शत्रुओं से घिरी हुई हैं। चाहे आपकी मर्जी हो या न हो, लेकिन मैं तो आपको यहाँ अकेली छोड़ ही नहीं सकता। मुझे प्रसन्नता है कि आपकी सेवा करने का यह सुअवसर मुझे प्राप्त हो रहा है, क्योंकि ऐसा करके मैं आपके ऋण से उऋण हो सकूँगा।"

कुछ समय के लिए वह चुप हो गई। तब उसने सहसा पूछा :

"मेरे चाचा ?"

"माई लार्ड राईसिंघम" डिक ने उत्तर दिया, "मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं आपको कोई खुशखबरी दे सकता, लेकिन अफ़सोस कि मैं वैसा नहीं कर सकता। मैंने उन्हें समर-क्षेत्र में केवल एक बार देखा, बस केवल एक बार। हमें आशा करनी चाहिए कि वह सकुशल होंगे।"

२९

अब यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गई थी कि सर डेनियल ने मोट हाउस में पहुँचने का उद्देश्य बनाया था, लेकिन तुषारापात की घनता और समय की तंगी और खतरे से बचने के लिए कुछ सड़कों को छोड़कर जंगल के रास्ते से सफ़र करने की मजबूरी से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि वे लोग अगले दिन से पहिले अपनी मंज़िल पर नहीं पहुँच सकते।

अब डिक के सामने दो रास्ते थे, एक तो यह कि वह सर डेनियल का पीछा करता चला जाए और अगर सम्भव हो तो रात्रि को जब वह कैम्प करें तो उन पर टूट पड़े या अपना एक दूसरा रास्ता खोज निकाले और सुबह होते-होते अपनी टुकड़ी को उनके और उनकी मंज़िले मकसूद के बीच खड़ा कर दे।

ये दोनों ही योजनाएँ अत्यन्त संकटपूर्ण थीं। और डिक—जो कि जोना को युद्ध की विकरालता में झोंकना नहीं चाहता था—इतना निश्चय भी नहीं कर पाया था कि वह जंगल की सीमा पर पहुँच गया है।

इस स्थल से आगे सर डेनियल ने अपना पथ थोड़ा-सा बाईं ओर घुमा दिया था। और वे लोग ऊँचे-ऊँचे वृक्षों के समूह में चले गए थे। इसके बाद पूरे दल ने बहुत ही सँकरा पथ बना लिया था, जिसके कारण बर्फ अधिक गहराई तक कुचला हुआ था। आँखें दूर तक इस बटिया को देख सकती थीं क्योंकि सनोवर के ऊँचे और नंगे वृक्षों के नीचे यह रास्ता सँकरा और सीधा पड़ा हुआ था। वृक्ष ऊपर खड़े हुए थे और उनकी शाखाओं की परछाईं रास्ते पर एक जाल बना रही थीं। किसी ओर भी कोई आवाज़ नहीं थी, यहाँ तक कि किसी रोबिन के चहकने की भी नहीं। और बर्फ़ से आच्छादित खेतों के

ऊपर शरद्‌कालीन सूर्य की रक्तिम किरणें एक सुन्दर ताना-बाना बुन रही थीं।

"आप लोग क्या कहते हैं", डिक ने अपने आदमियों में से एक से पूछा, "सीधा उनका पीछा किया जाए अथवा टन्सटाल को पार करके सीधा आगे बढ़ा जाए ?"

"सर रिचर्ड", सशस्त्र सैनिक ने कहा, "जब तक वह तितर-बितर न हो जाएँ तब तक मैं उनका पीछा करना ही उचित समझता हूँ।"

"निस्सन्देह तुम्हारा कहना उचित है", डिक ने उत्तर दिया, "लेकिन जितना समय हमें मिल सका, हम सीधे उनका पीछा करते चले आए हैं। लेकिन यहाँ पर खाने और विश्राम करने के लिए घर नहीं हैं और अगले दिन की सुबह तक हमारे हाथ-पैर ठंड से अकड़ चुके होंगे और हमारे पेट खाली हो चुके होंगे। तुम्हारा क्या खयाल है ? जवानो ! क्या तुम मुहिम के लिए थोड़ा-सा कष्ट सहन कर लोगे अथवा हम लोग हालीवुड की तरफ चलें और मदर चर्च में भोजन-विश्राम करें। मामला सन्दिग्ध है, इसलिए मैं किसी पर अपनी मर्जी लादना नहीं चाहूँगा, फिर भी यदि आप लोग मेरे नेतृत्व को प्रतिष्ठित करना चाहें तो मैं यही चाहूँगा कि आप लोग पहिले रास्ते को ही चुनें।"

सैनिकों ने प्रायः एक स्वर से कहा कि जहाँ कहीं सर रिचर्ड जाएँगे, वह सहर्ष उनका अनुसरण करेंगे।

और डिक ने एड़ लगाते हुए एक बार फिर अपने घोड़े को सरपट छोड़ दिया। आगे जाने वाली टुकड़ी के पैरों से खूँदा जाकर बर्फ़ इतना सख्त हो गया था कि पीछा करने वालों के लिए रास्ता अधिक सुविधाजनक बन गया था। वह एक अच्छी रफ्तार पर दौड़ रहे थे और दो सौ कदमों के एक साथ पड़ने, हथियारों की झनझनाहट और घोड़ों की साँसों से सारा वातावरण एक युद्ध-स्थल के समान दिखाई पड़ने लगा था।

उसी समय आगे जाने वालों की एक पैदल टुकड़ी हालीवुड से आने वाली सड़क पर दिखाई पड़ी। सरसरी निगाह से देखने में वह पैंछड़-सी मालूम भी नहीं पड़ती थी। और किस स्थल पर जाकर वह बिनाखुदे बर्फ़ पर फिर से आरम्भ हुई है, यह कहना कठिन था। डिक को यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि पैंछड़ अपेक्षाकृत छोटी और तंग होती जा रही है। यह तो साफ़ था कि सड़क का लाभ उठाते हुए सर डेनियल ने अपनी कमान को इधर बाँट दिया है।

अनुमान लगाने पर हर सम्भावना दूसरी से कम विश्वसनीय नहीं मालूम होती थी। डिक ने सीधी पैछड़ का ही पीछा करना उचित समझा और एक घण्टे की घुड़सवारी के बाद सहसा वह पैछड़ दो दर्जन पथों में इस तरह बँट गई जैसे किसी गोले के फूटने से अनन्त सरणियाँ फूट निकलती हैं।

डिक ने निराश होकर घोड़े की लगाम रोक ली। शरद् का छोटा दिन अवसान को प्राप्त हो रहा था। सूर्य एक लाल-सुर्ख़ गोला बनकर झाड़ियों के नीचे अस्तमान होता जा रहा था। परछाइयाँ बर्फ़ पर एक मील लम्बी हो उठी थीं, अंगुलियों की पोरियों पर तुषार की चोट पीड़ा पहुँचाने लगी थी और घोड़ों की साँस और भाप बादल बनकर छितराने लगी थी।

"मालूम पड़ता है, हम दुश्मन की कूट चाल में फँस गए हैं।" डिक ने स्वीकार किया, "अब हमें हालीवुड की ओर बढ़ना ही पड़ेगा। हालीवुड टन्सटाल की अपेक्षा अब भी हमसे अधिक निकट है, या सूरज के डूबने तक अधिक निकट हो जाएगा।"

इसलिए वह बाईं ओर बढ़ गए। सूरज उनकी पीठ पीछे एक ढाल के समान दिखाई पड़ने लगा था। टुकड़ी अब मैदान को पार करके गिर्जाघर की ओर रवाना हो गई थी। अब परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं थीं। वह तेज़ी से आगे नहीं बढ़ सकते थे क्योंकि शत्रु द्वारा तैयार किए उस बर्फ़ानी पथ पर चलने की सुविधा अब सुलभ न थी और न ही उस मंज़िल की ओर तेज़ी से बढ़ने का उत्साह था जिसकी ओर वह पथ स्वतः उन्हें उन्मुख करता था। इस बर्फ के बढ़ते हुए ढूहों को पार करके धीमी गति से ही चलना था। रुक-रुककर उन्हें अपना रास्ता तै करना पड़ रहा था। बार-बार वह ढूहों में घुसकर भटक जाते थे। सूरज ने भी शीघ्र ही उनका साथ छोड़ दिया। पश्चिम का प्रकाश-पुञ्ज अस्त हो गया था। शीघ्र ही वह लोग तुषार से आच्छादित तारों के नीचे अंधकार में भटकने लगे।

शीघ्र ही सम्भावना थी कि चन्द्रमा उदय हो जाएगा और वह अपनी यात्रा प्रारम्भ कर सकेंगे। किन्तु उस समय तक प्रत्येक अटकल उन्हें उनके उचित मार्ग से दूर ही ले जा सकती थी। अब कैम्प लगाकर प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त उनके सामने कोई चारा ही न रह गया था।

सन्तरी नियुक्त कर दिये गए। थोड़ी-सी भूमि पर से बर्फ साफ़ कर डाली

गई और कुछ असफलताओं का सामना करने के उपरान्त उन्हें शानदार आग दहकाने में सफलता मिल गई। उस वन प्रान्त में सैनिक लोग इस अलाव को घेरकर बैठ गए। जो कुछ खाद्य-सामग्री उनके पास थी वह उन्होंने आपस में बाँट ली और पीने के लिए बोतलें इधर से उधर घूमने लगीं। डिक को इस रुखे-सूखे में से जो कुछ भी सर्वाधिक कोमल खाद्य सामग्री मिल सकी थी, उसी को लेकर वह अर्ल राईसिंधम की भतीजी के पास पहुँचा जो कि उस समय इस सैनिक टुकड़ी से कुछ दूर वृक्ष का सहारा लिए बैठी थी।

वह घोड़े की झूल के ऊपर बैठी थी और दूसरी झूल में लिपटी हुई थी और इस आग्नेय दृश्य पर उसकी टकटकी बंध गई थी। खाने का प्रस्ताव सुनकर वह इस तरह चौंक उठी जैसे किसी स्वप्न से जागी हो और तब उसने खामोशी से उसको अस्वीकार करने के लिए सिर हिला दिया।

"मैडम," डिक ने कहा, "आपसे प्रार्थना है कि मुझे इतनी बेदर्दी के साथ दण्ड न दें। मैंने किस आचरण से आपके हृदय को ठेस पहुँचाई है, मैं अभी तक समझ नहीं सका हूँ। निस्सन्देह मैं आपको उठा लाया हूँ लेकिन एक मैत्रीपूर्ण बल प्रयोग द्वारा ही; हाँ मैंने आपको रात्रि की इस बीहड़ता का सामना करने की स्थिति में ला दिया है, लेकिन इसका कारण भी मेरा जल्दी में होना है और फिर किसी एक और की जान बचाने का भी प्रश्न है जो कि किसी प्रकार भी आपसे कम नाजुक और अक्षम नहीं है और आपके समान ही भयानक शत्रु से घिरी है; कम से कम मैडम! अपने को तो प्रताड़ित न करो; कम से कम भूख के लिए न सही तो शक्ति के लिए ही कुछ खाने की कृपा करो।"

"मैं उन हाथों से दिया कुछ भी नहीं खाऊँगी जिन्होंने मेरे आत्मीय का खून किया है।" उसने उत्तर दिया।

"प्रिय मैडम," डिक चिल्लाया, "मैं धर्म की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैंने उन्हें छुआ भी नहीं है।"

"कसम खाकर कहो कि वह अभी तक जीवित हैं," उसने उत्तर दिया।

"मैं आपसे छल नहीं करूँगा," डिक ने उत्तर दिया, "यद्यपि मेरी भावना आपके जख्म को और भी ठेस पहुँचाने से रोकती है किन्तु फिर भी अपने हृदय में मैं यह अनुमान लगाता हूँ कि वह अब दुनिया में नहीं हैं।"

"और तुम मुझसे फिर भी खाने के लिए कहते हो," वह चिल्लाई, "हाँ

ठीक तो है, अब तुम सर बन गए हो न ? मेरे आत्मीय की हत्या करके ही तुमने यह पदवी पाई है । और अगर मैं एक मूर्खा और विश्वासघातिनी होकर तुम्हारे शत्रु के घर में तुम्हारी रक्षा न करती तो तुम मर चुके होते और वह, जिसके जीवन का मूल्य तुम्हारे जैसे बारह के बराबर था—आज जीवित होता ।"

"मैंने अपने पक्ष की ओर से भरसक प्रयत्न किया, जिस प्रकार तुम्हारे आत्मीय ने अपने दल की ओर से अपना प्रयत्न किया," डिक ने उत्तर दिया, "और काश, अगर वह जीवित होते—और मैं भगवान से कामना करता हूँ कि वह जीवित हों—तो वह भी मेरी प्रशंसा ही करते, दोषी कदापि न ठहराते ।"

"सर डेनियल ने मुझे बतलाया है," उसने कहा, "कि उसने तुम्हें उस बाड़े पर देखा था । और यह भी कहा कि यह विजय तुम्हीं ने प्राप्त की और यह स्पष्ट हो गया कि तुम्हीं ने मेरे अच्छे अर्ल राईसिंघम को वैसे ही मारा जैसे कि उनका गला घोटकर मारते । और तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ भोजन करूँ, जबकि उनके खून से रंगे तुम्हारे हाथ अभी साफ भी नहीं हुए हैं ? सर डेनियल ने तुम्हें नीचा दिखाने की शपथ खाई है, वही मेरा प्रतिशोध तुमसे लेंगे ।"

अभागा डिक उदासी से भर उठा । वह बूढ़ा अल्वास्टर उसके मस्तिष्क में फिर घूमने लगा था और वह जोर-जोर से कराहने लगा ।

"क्या तुम वस्तुतः मुझे इतना ही अपराधी समझती हो," उसने कहा, "तुम जो कि जोना की मित्र हो, तुम जिसने कि मेरी रक्षा की थी ?"

"तुमने युद्ध से क्या प्राप्त किया," उसने उत्तर दिया, "तुम्हारा कोई पक्ष न था, तुम तो मात्र एक छोकरे हो—टाँगों और जिस्म के केवलमात्र ठूह हो। तुममें अभी न तो सद्बुद्धि है और न इतनी समझ । तुमने किसके लिए युद्ध किया । केवल अपनी हिंसावृत्ति को परितोष देने के लिए ही न ?"

"नहीं," डिक चिल्लाया, "यह सब कुछ मैं नहीं जानता, लेकिन जैसा कि इंगलैण्ड का दस्तूर है, वह आदमी जो एक पक्ष से युद्ध नहीं करता, उससे बल-पूर्वक दूसरे पक्ष की ओर से युद्ध कराया जाता है । वह अकेला खड़ा होकर टुकुर-टुकुर देखते रहने में संतोष अनुभव नहीं कर सकता, मानव की ऐसी प्रवृत्ति ही नहीं है ।"

"जिनके पास निर्णय बुद्धि नहीं है, उन्हें खड्ग म्यान से नहीं निकालनी चाहिए," उस युवती ने कहा, "तुम केवल एक व्यशन के लिए लड़ते हो; तुम तो एक कसाई से अधिक कुछ भी नहीं हो। युद्ध तो अपने उद्देश्य के कारण ही शुभ होता है; तुमने इस उद्देश्य को कलंकित किया है।"

"मैडम," दुखी डिक ने कहा, "मैं आंशिक रूप से अपना दोष पहचानता हूँ। मैंने बहुत शीघ्रता की और उचित समय आने के पूर्व ही मैं अपना भाग्य निर्माण करने के लिए खड़ा हो गया। मैंने पहिले ही एक जहाज चुराया था, और सौगन्ध के साथ मैं कहता हूँ कि मेरा इरादा उस समय भी शुभ था परन्तु इस दुस्साहस ने अनेकों की जान ली और आखिर एक बूढ़े आदमी को मौत की गोद में डाल दिया, जिसका चेहरा मेरी नजरों के सामने घूमकर अभी-अभी मेरे दिल को खन्जर भोंक गया है। और उस प्रातःकाल की बात ही देखो! मैं अपने लिए यश प्राप्त करने की इच्छा और विवाह करने की इच्छा से कितना बेचैन हो उठा था। और देखो, मैं तुम्हारे उन दिवंगत आत्मीय की मृत्यु का कारण बना जो कि मेरे प्रति कितने उदार थे। और कौन जानता है कि मेरे द्वारा यार्क को राजसिंहासन पर बैठाया जाना भी आगे चलकर कोई अच्छा उद्देश्य सिद्ध न हो। और इंगलैण्ड को उससे हानि ही पहुँचे। ओ मैडम, मैं अपने पाप को अब बिलकुल स्पष्ट देख सकता हूँ। मैं इस मुहिम को सर करके आत्मशुद्धि के लिए वन में चला जाऊँगा। मैं जोना को भी छोड़ दूँगा और साधु बन जाऊँगा और तुम्हारे आत्मीय की आत्मा की शान्ति के लिए आजीवन प्रार्थना करता रहूँगा।"

डिक को अपनी विनम्रता और पश्चात्ताप के क्षणों में लगा कि वह युवती हँसने लगी है।

अपने मुख को ऊपर उठाकर उसने देखा कि वह उसकी तरफ देख रही है। जंगल में जलने वाली उस अग्नि के प्रकाश में लगा कि वह किसी विचित्र भावना से उसकी ओर देख रही है। और वह भावना निश्चय ही किसी प्रकार भी आक्रोश से युक्त नहीं थी।

"मैडम," वह उस हास्य को अपनी श्रुति का भ्रम समझता हुआ तथापि उसकी परिवर्तित भावना से उसके हृदय-स्पर्श कर सकने की कल्पना करता हुआ बोला, "मैडम, कहो इससे भी तुम्हें संतोष नहीं होगा। मैं जो कुछ पाप कर चुका हूँ उसका प्रायश्चित्त करने के लिए सब कुछ करूँगा। मैं अर्ल राईसिंघम

के लिए स्वर्ग निश्चित कर दूंगा और आज जब कि मैंने युद्ध में विजय प्राप्त की है और यश और उपाधि से अलंकृत किया गया हूँ, अपने इस सौभाग्य को साक्षी बनाकर मैं यह सब कह रहा हूँ ।"

"ओ युवक," उसने कहा, "अच्छे युवक !"

और तब डिक ने आश्चर्यपूर्वक देखा कि पहिले तो उसने बड़ी कोमलता से उसके गालों पर बहने वाले आँसुओं को पोंछा और फिर किसी आवेश के वशीभूत अपनी दोनों बाहें डिक की गर्दन में डालकर झूल गई और फिर उसका मुँह ऊपर उठाकर चूम लिया । एक दयालुतापूर्ण अचरज डिक के ऊपर छा गया ।

"लेकिन इधर आओ तो," उसने अत्यन्त आह्लादपूर्वक कहा, "तुम एक कप्तान हो तुम्हें तो खाना ही चाहिए । तुम खाते क्यों नहीं हो ?"

"प्रिय कुमारी राईसिंघम," डिक ने उत्तर दिया, "पहिले तो मैंने अपने बन्दी की प्रतीक्षा करने के लिए नहीं खाया था किन्तु अब सच तो यह है कि पश्चात्ताप-भावना से भोजन का कौर मेरे मुँह में ही नहीं चल सकता । मेरे लिए उचित यही है कि मैं उपवास करूँ और प्रार्थना करूँ ।"

"मुझे अलीसिया कहकर पुकारो," उसने कहा, "क्या हम पुराने दोस्त नहीं हैं ? और अब आओ मैं तुम्हारे साथ खाऊँगी । एक-एक कौर और एक-एक घूँट में तुम्हारा साथ दूँगी । लेकिन अगर तुम नहीं खाओगे तो मैं भी नहीं खाऊँगी । लेकिन अगर तुम छककर खाओगे तो मैं भी एक हलवाहे की तरह भोजन पर टूट पड़ूँगी ।"

इतना कहकर वह भोजन पर टूट पड़ी और डिक जिसे यूँ भी खुलकर भूख लगती थी अपनी साथिन का साथ देता हुआ भोजन करने लगा । पहिले कुछ झिझकता हुआ लेकिन ज्यों-ज्यों पहिले जैसी हार्दिकता लौटती गई त्यों-त्यों शक्ति और चाव के साथ उसने भोजन पर प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया । आखिरकार वह अपने आदर्श पर भी आँख रखना भूल गया और उसने दिनभर के श्रम और दौड़-धूप की क्षतिपूर्ति करने के लिए पर्याप्त अन्न उदरस्थ कर लिया ।

"सिंहों को हाँकने वाले," उसने कहा, "तुम आदमी के वस्त्रों में किसी स्त्री को पसंद नहीं कर पाते हो ?"

चाँद अब निकल आया था और वे अब घोड़ों के थोड़ा साँस लेने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उस चाँद की रोशनी में, अभी तक थोड़ा पश्चात्ताप करते हुए किन्तु भोजन का स्वास्थ्य अनुभव करते हुए डिक ने देखा कि वह युवती कुछ अजीब अंदाज़ से उसकी ओर देख रही है।

"मैडम," उसने उसके उस बदले हुए अन्दाज़ को परिलक्षित करते हुए कहा।

"नहीं," उसने उसे बीच में ही टोका, "इन्कार करना शोभनीय नहीं प्रतीत होता। जोना मुझे बता चुकी है। लेकिन आओ सर, सिंहों को हाँकने वाले, मेरी ओर देखो, क्या मैं तुम्हें सुन्दर नहीं प्रतीत होती ?"

और उसने आँखों में मद भरकर उसकी ओर देखा।

"इसमें शक नहीं कि तुम कद में थोड़ी छोटी ज़रूर लगती हो"—डिक ने कहना प्रारम्भ किया। लेकिन यहाँ फिर उसने उसे बीच में ही टोक दिया और हास्य का एक झंकारयुक्त स्वर छोड़ते हुए उसके विभ्रम को और भी स्पष्ट कर दिया।

"कद में थोड़ी छोटी," वह चिल्लाई, "नहीं, साहसपूर्वक कहो, जैसे कि साहसी तुम हो। मैं तो प्रायः बौनी हूँ या उससे कुछ बेहतर। लेकिन बोलो, इस सबके बावजूद भी मैं देखने में सुघर मालूम पड़ती हूँ न ?"

"नहीं, मैडम अत्यन्त रूपवती," आपत्तिग्रस्त योद्धा ने अपनी भावनाओं पर यथाशक्ति संयम करते हुए कहा।

"और कोई भी आदमी मुझे शादी करके पूर्ण प्रसन्न हो सकेगा ?" उसने बात जारी रखी।

"ओह, मैडम पूर्ण प्रसन्न !" डिक ने समर्थन किया।

"मुझे अलीसिया कहकर पुकारो" उसने कहा।

"अलीसिया," सर रिचर्ड ने कहा।

"अच्छा तो सिंहों को हाँकने वाले," उसने आगे कहा, "बैठो।" तुमने मेरे आत्मीय को कत्ल कर दिया और मुझे बेघरबार भी कर दिया, क्या तुम्हारे सिर पर इस सबका मुआवज़ा चढ़ा नहीं है।"

"मैं आपका देनदार हूँ मैडम," डिक ने कहा, "हालाँकि अपने दिल में मैं

अपने को उस बहादुर योद्धा की मृत्यु का केवल आंशिक उत्तरदायी ही मानता हूँ।"

"क्या तुम मुझे नज़र-अन्दाज़ करके चले जाओगे ?" वह चिल्लाई।

"मैडम ! मेरा यह अभिप्राय कदापि नहीं है। मैंने तो आपके आदेश पर यह भी कह डाला है कि मैं तो साधु बन जाऊँगा।" रिचर्ड ने कहा।

"तब हक़ीक़त में तुम मेरे हो !" उसने अपनी बात समाप्त कर दी।

"हक़ीक़त में तो मैडम···" युवक ने कहना प्रारम्भ किया।

"बस रहने दो···", उसने टोकते हुए कहा, "तुम बड़े पेंचदार आदमी मालूम पड़ते हो। हक़ीक़त में तुम मेरी मिल्कियत हो, जब तक तुम मेरे साथ किए गए आचरण का मुआवज़ा पूरा न कर दो।"

"वास्तव में तो ऐसा ही है।" डिक ने कहा।

"तो सुनो", उसने कहना जारी रखा, "तुम साधू तो हो जाओगे लेकिन सदैव उदास ही रहा करोगे और चूँकि तुम्हारे साथ निपटना मुझे है, इसलिए मैं तुम्हें अपना पति बनाकर अपनी क्षतिपूर्ति करूँगी। नहीं, अब एक भी शब्द मैं सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ", वह चिल्लाई, "उनसे अब कुछ बनेगा नहीं। क्योंकि देखो तो, इसमें कितना इन्साफ़ है कि अभी तुमने मेरा एक घर बर्बाद कर दिया तो दूसरा उसके बदले में प्रदान कर दो। रहा जोना के बारे में, तो वह इस परिवर्तन पर अत्यन्त आह्लादित होगी। आखिर हम दोनों मित्र हैं। इससे क्या अन्तर पड़ता है कि तुमने एक से शादी की या दूसरी से, लेशमात्र भी तो नहीं।"

"मैडम", डिक ने कहा, "अगर आपका आदेश होगा तो मैं किसी मठ में जाकर रह सकता हूँ किन्तु इतनी बड़ी दुनिया में कोई यह चाहे कि मैं जोना सैंडले के अतिरिक्त किसी और से विवाह करूँ तो यह तो न तो किसी पुरुष के आतंक द्वारा ही सम्भव हो सकता है और न ही किसी महिला को प्रसन्न करने के लिए। अगर मेरी अपनी सीधी-सादी बात को दो टूक कहने से आपको कष्ट पहुँचा हो, तो आप मुझे क्षमा करें, लेकिन अगर कहीं आप जैसी अत्यन्त साहसी महिला से साबिका पड़ जाए तो मेरा ख्याल है कि आदमी को अपनी बात कहने के लिए और भी साहसी बन जाना चाहिए।"

"डिक", उसने कहा, "प्यारे युवक, इन शब्दों के लिए तुम आओ और

मेरा एक चुम्बन करो। नहीं, घबराओ नहीं, तुम जोना समझकर ही मेरा चुम्बन करो और जब हम मिलेंगे तो मैं तुम्हारा चुम्बन उसको दे दूँगी। और यह कह दूँगी कि मैंने वह चुरा लिया था। रहा मेरे कर्ज़ के भुगतान के बारे में, तो उस युद्ध में केवल तुम ही तो नहीं थे, केवल अकेले तुमने ही तो यार्क को राजसिंहासन पर आरूढ़ नहीं कर दिया। लेकिन तुम्हारा हृदय कितना निश्छल है कि तुम प्रत्येक दायित्व अपने कन्धे पर लेकर चलने को तैयार हो। अगर मेरी आत्मा में तुम्हारी जोना से स्पर्धा करने योग्य कुछ है तो मैं उसके प्रति तुम्हारे प्रेम की ही स्पर्धा करती हूँ।"

३०

घोड़े इस समय तक अपना चारा पूरी तरह खा चुके थे और लोट-पीटकर अपनी थकान दूर कर चुके थे। डिक के आदेश पर अग्नि को बर्फ़ के नीचे दफ़न कर दिया गया; और उसके सैनिक जिस समय निरुत्साहपूर्वक अपनी रकाबों में पैर रखने लगे, उसे वन्य प्रदेश में मार्ग खोजने की अपनी पुरानी परिपाटी याद आ गई और वह निकट में खड़े हुए एक बहुत ऊँचे सनोवर के वृक्ष पर चढ़ गया। वहाँ से वह चांद की रोशनी में दूर-दूर तक बर्फ़ से ढके जंगल को अच्छी तरह देख सकता था। दक्षिण-पश्चिम की ओर वह ऊँचा प्रदेश खड़ा हुआ था जहाँ उसे और जोना को उस भयानक कोढ़ी के अकस्मात् दर्शन हुए थे। और वहीं पर उसकी नज़र एक हल्की-सी टिमटिमाती हुई रोशनी पर अटक गई—जोकि सुई के नकवे से किंचित भी बड़ी नहीं थी।

उसने पहिले उस शैली का प्रयोग न करने की भूल के लिए अपने को धिक्कारा। क्या वह, जैसा कि देखने में मालूम पड़ता था, सर डेनियल के कैम्प में जलने वाली आग की रोशनी है? उसे तो वह बहुत पहिले देख सकता था और अब तक मार्च करता हुआ उसके निकट भी पहुँच सकता था। और अगर पहिले से देख पाता तो उसी अग्नि के निकट अपने कैम्प की आग जलाकर वह अपनी उपस्थिति की सूचना उन्हें दे सकता था, लेकिन अब उसे किसी प्रकार भी ये बचे हुए बहुमूल्य घण्टे खोने न चाहिएँ। उस ऊँचान की तरफ़ का सीधा रास्ता अधिक से अधिक दो मील लम्बा था। लेकिन रास्ते में बहुत बड़े-बड़े गड्ढे और ढलान पड़ते थे और घुड़सवारों के लिए उनको पार करना नितान्त मुश्किल था। डिक ने सोचा कि अगर वे अपने घोड़ों को छोड़कर पैदल

चलें तो अधिक सुगमता से उस रास्ते को पार कर सकते हैं।

दस आदमी घोड़ों की चौकसी करने के लिए छोड़ दिए गए। आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे को सूचना पहुँचाने के लिए संकेत भी निश्चित कर लिए गए। और बाकी दल के शीर्ष पर डिक चल खड़ा हुआ। अलीसिया राईसिंघम अत्यन्त मुस्तैदी के साथ उसके साथ-साथ चल रही थी।

सैनिकों ने भारी जरें-बख्तर को छोड़ दिया था और अपने घोड़ों को पीछे छोड़कर अब वे उत्साहपूर्वक कूच कर रहे थे। नीचे वर्फ़ जमा हुआ था और ऊपर चांद की आह्लादकारी चांदनी छिटक रही थी। एक गड्ढ़े में उतरते हुए—जहाँ कि एक चश्मा तुषार और बर्फ़ से टकराकर खिसक रहा था—उन्होंने यह निश्चित किया कि यहाँ ठहरकर आक्रमण करने से पूर्व थोड़ा विश्राम कर लिया जाए। रोशनी वाला स्थान यहाँ से केवल आधा मील रह गया था।

जंगल की उस विराट् खामोशी में हल्की-सी आवाज़ भी दूर-दूर तक सुनाई पड़ती थी और अलीसिया जिसके कान बहुत ही चौकन्ने थे, जगह-जगह अपनी अंगुली मुँह पर रखकर ठहरने और कन्हेर लेने के संकेत करती जाती थी। सभी उसका अनुकरण करने लगते थे। दम घुटे हुए चश्मे की हल्की-सी कल-कल और कई मील की दूरी पर एक लोमड़ी के रोने की आवाज़ के अतिरिक्त चारों तरफ़ खामोशी का घोर साम्राज्य था। डिक को इसके अतिरिक्त एक साँस भी कहीं सुन नहीं पड़ता था।

"फिर भी मैं निश्चय से कह सकती हूँ कि उधर कहीं लगाम के खटकने की आवाज़ हुई है।" अलीसिया ने आहिस्ते से फुसफुसाया।

"मैडम," डिक ने उत्तर दिया, जोकि दस योद्धाओं से भी अधिक उस युवती से भय खाता था, "मैं आपके अनुमान को ग़लत तो नहीं बताना चाहता परन्तु यह आवाज दोनों कैम्पों में से किसी भी कैम्प से आ सकती है।"

"यह उधर से आने वाली आवाज़ नहीं हो सकती। यह पश्चिम की तरफ़ से आई है," उसने कहा।

"अब वह कहीं से भी आई हो," डिक ने कहा, "और अब जो भी देवता चाहते हैं वही हो। अब हमें लेशमात्र भी गफ़लत नहीं करनी है। बल्कि और

भी दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना है। अब आगे बढ़ो दोस्तो! अब हम काफ़ी विश्राम कर चुके हैं।"

और डिक के आदेश का पालन करते हुए, उसके आदमियों ने आगे बढ़ना शुरू कर दिया। और आड़ के सहारे रेंगते हुए उन्होंने कैम्प को चारों ओर से घेरने की तैयारी शुरू कर दी। और डिक स्वयं अलीसिया को एक विशाल सनोवर वृक्ष की आड़ में खड़ा करके सीधा रोशनी की दिशा में बढ़ने लगा।

आखिरकार जंगल की दरार में से उसे कैम्प की झाँकी दिखाई देने लगी। अलाव ज़मीन को खोदकर बनाया गया था, वह चारों ओर से घनी झाड़ियों से घिरा हुआ था। उसमें लक्कड़ दहक रहे थे और आग धू-धू करके प्रचण्ड लपटें फेंक रही थी। उसके चारों ओर एक दर्जन आदमी भी न बैठे होंगे। सभी अच्छी तरह गर्म कपड़े पहिने हुए थे। और हालाँकि आसपास का बर्फ घोड़ों के खुरों से कुचला हुआ था किन्तु डिक को एक भी घोड़ा दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। उसे भयंकर सन्देह होने लगा कि उसे जबर्दस्त चकमा दिया गया है। उसी समय उसने एक लम्बे आदमी को आँच तापते हुए देखा। वह अपना हाथ बढ़ाये हुए था और हस्तत्राण पहिने हुए था। उसके पीछे उसने देखा कि जोना सैडले और सर डेनियल की पत्नी, उसके पुराने मित्र और अब भी कृपाल शत्रु, बैनेट हैच के पीछे बैठी हुई थी। हालाँकि वे दोनों मर्दाने कपड़े पहिने हुए थीं।

"चाहे मुझे अपने घोड़े ही क्यों न खो देने पड़ें लेकिन मुझे आज अपनी जोना को प्राप्त कर लेना ही चाहिए।" उसने सोचा।

और तभी इस पड़ाव के दूसरी ओर से एक हल्की-सी सीटी का संकेत आया कि दूसरे आदमी भी स्थल पर पहुँच चुके हैं, और मुहासरा पूरा हो चुका है।

बैनेट इस संकेत को सुनकर लपककर उठ खड़ा हुआ। लेकिन पूर्व इसके कि वह अपने शस्त्र धारण कर सके, डिक ने उसे ललकारा।

"बैनेट", उसने कहा, "मेरे पुराने दोस्त, हथियार डाल दो। अगर तुम प्रतिरोध करोगे तो व्यर्थ ही अनेक आदमियों का खून बहाओगे।"

"ओह मास्टर शैल्टन हैं? सेण्ट बारबरी की सौगन्ध", हैच चिल्लाया,

"समर्पण कर दूँ ! यह तो तुम बहुत अधिक माँग कर रहे हो। तुम्हारे पास कितनी ताक़त है ?"

"मैं तुमसे कहता हूँ बैनेट हम तुमसे संख्या में भी बहुत अधिक हैं और तुम चारों तरफ़ से घिरे हुए भी हो", डिक ने कहा, "तुम्हारे स्थान पर सीज़र या चार्लमैग्ने भी होता तो वह भी रहम की प्रार्थना करता। मेरे पास चालीस आदमी हैं और केवल एक तीर तरकश से छूटा कि तुम सबका किस्सा समाप्त हो जाएगा।"

"मास्टर डिक", बैनेट ने कहा, "हालाँकि यह सब मेरे हृदय के अनुकूल नहीं है फिर भी मुझे अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। देवता तुम्हारी मदद करें।"

तभी उसने एक तुरही अपने मुँह पर लगाई और एक आवाहन-घोष किया।

इसके बाद के कुछ क्षण किंकर्तव्यविमूढ़ता से भरे थे। डिक जो अभी तक स्त्रियों की सुरक्षा के लिए चिन्तित था, तीर चलाने का आदेश देने में हिचक रहा था। हैच का छोटा-सा दल अपने हथियारों की ओर लपका और वे सभी विकट प्रतिरोध करने के लिए आपस में पीठ सटाकर खड़े हो गए। ज्योंही वह अपने स्थान बदल रहे थे, अवसर देखकर जोना तीर की तरह भागकर अपने प्रेमी के निकट पहुँच गई।

"मैं यहाँ हूँ डिक !" और उसने अपने हाथों में उसके हाथ दबा लिए।

लेकिन डिक अभी तक भी अपना कर्तव्य निश्चित नहीं कर सका था। युद्ध के अनेक कुत्सित प्रयोजनों के लिए अभी तक उसका हृदय तरुण था और लेडी ब्रैकले का ख्याल अभी भी उसकी जबान पर आए हुए आदेश को रोक लेता था। उसके अपने आदमी अत्यन्त व्यग्र हो चुके थे। कुछ लोग उसका नाम लेकर चिल्लाने लगे थे। और दूसरों ने अपनी ही मर्जी से वार करना प्रारम्भ कर दिया था। और तीर के पहिले सन्नाटे में ही बैनेट हैच पृथ्वी पर गिर गया। तब कहीं जाकर डिक जागा।

"आगे," वह चिल्लाया, "तीर चलाओ, आड़ में रहकर। इङ्गलैण्ड और यार्क के लिए !"

लेकिन तभी अनेक घोड़ों के बर्फ पर दौड़ने की धीमी आवाज़ सुनाई पड़ने

लगी और आवेशनीय तीव्रता के साथ निकट बढ़ने लगी और ऊँची उठने लगी। साथ ही बैनेट के आवाहन के उत्तर में घोष करने वाली तुरही बार-बार सहायता के पहुँचने की चेतावनी देती आती थी।

"मेरी पीठ पर एकत्रित हो जाओ", डिक चिल्लाया "मेरे साथ मिल जाओ, अपने प्राणों के लिए।"

लेकिन उसके सैनिक जो कि पैदल थे और जिन्हें अनायास विजय-लाभ करने की उम्मीद बँध गई थी, इस आकस्मिक आपत्ति को आया देखकर बिखर गए, कुछ हक्के-बक्के खड़े रह गए और कुछ झाड़ियों में बिखर गए और जिस समय पहिला घुड़सवार खुले मैदान में दौड़ता हुआ आया और उन्होंने अपने घोड़ों को झाड़ियों में फेंककर शत्रु की सफ़ाई करनी शुरू की, और कुछ को भालों का शिकार बनाया, तब तक डिक के सैनिकों में से अधिकांश सैनिक खिसक चुके थे।

डिक एक क्षण के लिए हतप्रभ-सा खड़ा अपने इस अनुपयुक्त शौर्य के परिणाम पर विचार करता रहा। सर डेनियल ने उनके कैम्प की आग देख ली थी और वह अपनी प्रमुख टुकड़ी लेकर अलग हो गया था। ऐसा उसने अपना पीछा करने वालों पर आक्रमण करने के लिए किया था, अथवा उनके द्वारा आक्रमण करने पर उन्हें पीछे से धर-दबाने के विचार से ही किया था—यह नहीं कहा जा सकता, परन्तु इस अवधि में उसने एक कुशल और दूरदर्शी नायक होने का परिचय दिया और डिक ने अपनी भावुकता का। वह तरुण योद्धा अब एकाकी खड़ा रह गया था—यद्यपि उसकी प्रेमिका अभी भी उसकी बाँह को पकड़े खड़ी थी—उसके आदमी और घोड़े सब खो चुके थे और अब उन्हें तलाश करना वैसा ही प्रयत्न था जैसा घास के ढेर में सुई की तलाश करना।

"देवता मुझे सद्बुद्धि दें", उसने सोचा, "भला हुआ जो आज प्रातःकाल के काम के लिए मुझे नाइट बना दिया गया। इस कारनामे से तो मुझे कम ही प्रतिष्ठा मिलेगी।"

और इतना कहकर जोना का हाथ पकड़कर उसने भागना शुरू कर दिया।

टन्सटाल के सैनिकों की ऊँची आवाजों से जंगल की खामोशी भंग हो गई थी। वह अपने घोड़ों को झाड़ियों में दौड़ाकर भगोड़ों का शिकार कर रहे थे। डिक साहस के साथ झाड़ियों में घुसता हुआ, सीधा हिरन की तरह भागने

लगा। सफेद बर्फ के ऊपर चमकते हुए चांद के विरोधाभास के कारण झाड़ियाँ कुछ कम साफ़ दिखाई देती थीं। पराजित सेना के बिखरकर इधर-उधर भागने से पीछा करने वालों का दल भी इधर-उधर भटक गया था। इसलिए बहुत थोड़ी देर के लिए जोना और डिक एक निकट की झाड़ी में रुक गए और पीछा करने वालों की कन्हेर लेने लगे। पीछा करने वालों की आवाज़ धीमी पड़ती जा रही थी और वह विभिन्न दिशाओं में दूर से दूरतर होती जाती थी।

"अगर मैंने उनमें से कुछ को सुरक्षित रख छोड़ा होता", डिक ने अपनी पराजय की तिक्तता अनुभव करते हुए कहा, "तो मैं अब भी पासा पलट सकता था। अच्छा ही है हम जीते हैं, तो सीखते हैं।"

"नहीं तो, डिक", जोना ने कहा, "इससे क्या अन्तर पड़ता है। अब हम दोनों फिर एक बार साथ-साथ आ गए हैं।"

उसने उसकी ओर देखा जो आज भी पहिले की तरह जॉन मैचम बनी हुई थी। वह योद्धाओं जैसी कवचनुमा मिर्ज़ई और शिरस्त्राण पहिने हुई थी। लेकिन अब तो वह उसे जानता था और उस अशोभनीय वेश-भूषा में भी उसने इतना उज्ज्वल हास्य समुपस्थित किया कि उसका हृदय प्रेम और उत्साह में परिप्लावित हो उठा।

"प्रिये", उसने कहा, "अगर तुम मेरी त्रुटियों को अनदेखा कर सको, तो फिर मुझे सारी दुनिया में किसी की भी परवाह नहीं है। क्या अब हम सीधे हालीवुड की ओर बढ़ें जहाँ तुम्हारे अभिभावक और मेरे सहृदय मित्र लार्ड फॉक्सम रहते हैं! वहाँ हम सदैव के लिए विवाह द्वारा एक सूत्र में बँध जाएँगे। इसकी चिन्ता नहीं कि हम बड़े आदमी बन सकेंगे अथवा नहीं और प्रख्यात भी होंगे अथवा नहीं। आज तो, मेरी प्रिय, मेरी रक़ाब सुर्ख़रू हुई है और मेरी सेवाओं की इतनी प्रशंसा हुई है कि मैं समझता हूँ कि शायद सारे इंगलैंड में मेरे समान सौभाग्यशाली योद्धा दूसरा कोई नहीं होगा। लेकिन आज एक महान व्यक्ति से मुझे भर्त्सना मिली और मेरे सैनिक भी खो गए हैं। मेरा पतन अवश्यंभावी है; परन्तु प्रिय, अगर तुम अब भी मुझे स्वीकार करोगी, तो हम विवाह करेंगे। मुझे इसकी भी चिन्ता नहीं कि वह मुझसे नाइटहुड भी ले लें। यह सब मुझे लेशमात्र भी विचलित नहीं कर सकेगा।"

"मेरे डिक," वह बोली, क्या उन्होंने तुम्हें नाइट भी बना दिया है ?"

"हाँ, तुम अब मेरी लेडी हो," उसने स्नेहिल स्वर में कहा, "या कल दोपहर से पहिले तक हो जाओगी, क्यों नहीं ?"

"क्यों नहीं, डिक मैं तो बनूँगी ही," पूर्ण हार्दिकता से उसने उत्तर दिया।

"ओह, हुजूर मैंने तो सोचा था कि तुम तो साधु होने वाले हो।" एक आवाज़ उनके कानों में गूँजी।

"अलीसिया !" जोना चिल्लाई।

"हाँ, ऐसा ही," उस युवती ने सामने आते हुए कहा।

"अलीसिया, वही अलीसिया जिसे तुमने मृतक जानकर छोड़ दिया था और जिसे तुम्हारे सिंहों को हाँकने वाले ने फिर उठा लिया। और पुनः जीवनदान दिया। और मैं अपने सिर की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि उसने मुझसे प्रेम-प्रलाप भी किया, अगर वह भी तुम जानना चाहो तो।"

"मैं यह विश्वास कभी नहीं कर सकती," जोना चिल्लाई, "क्यों डिक ?"

"डिक," अलीसिया ने अभिनय किया, "डिक, वास्तव में ? ओह महोदय, आप वह आदमी हैं जो अपने परिजनों को संकट में छोड़कर भाग जाते हैं," उसने युवक नाइट की ओर आमुख होते हुए कहा, "तुम उन्हें सनोवर के वृक्षों के पीछे खड़ा करके भूल जाते हो लेकिन लोगों का कहना है कि अब पराक्रम का युग समाप्त हुआ।"

"मैडम," डिक अपनी असमर्थता का अनुभव करते हुए बोला, "मैं अपनी आत्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं अपनी उपस्थिति को बिलकुल ही भूल गया था। मैडम, आपको मुझे क्षमा करना ही होगा। आप जानती हैं कि मैंने जोना को कितने दिन बाद पाया था।"

"मैं नहीं सोचती थी कि तुमने जान-बूझ कर वैसा किया है," उसने उत्तर दिया, "लेकिन मैं बड़ी निर्दयतापूर्वक अपना प्रतिशोध लूँगी; मैं सारा रहस्य लेडी शैल्टन को कहे बिना नहीं रहूँगी।" उसने शिष्टाचारपूर्वक कहा, "जोना," उसने अपनी बात जारी रखी, "मैं अपनी आत्मा की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि तुम्हारे प्रेमी केवल समर-क्षेत्र में ही पराक्रम दिखा सकते हैं—लेकिन—मैं तुम्हें साफ़-साफ़ बता दूँ—शायद उनके समान कोमल हृदय व्यक्ति सारे इंगलैंड में न हो; जाओ और उसे लेकर अपने दिल की मुराद पूरी करो। और अब, मूर्ख बच्चो, पहिले मेरा चुम्बन करो—तुम दोनों बारी-बारी से—सौभाग्य और

ईश्वर की कृपा के लिए और फिर एक मिनट तक आइने के सामने आपस में चुम्बन करो—पर देखना एक मिनट से एक सैकिण्ड भी ऊपर नहीं और फिर हम तीनों हालीवुड की तरफ़ भरसक तीव्रता के साथ प्रस्थान करें। क्योंकि यह जंगल, मेरा ख्याल है, अत्यन्त विकट संकटों और शीत से भरा हुआ है।"

"लेकिन क्या मेरे डिक ने तुम्हारे प्रति प्रेम-प्रदर्शन किया ?" जोना ने अपने प्रेमी के निकट होते हुए कहा।

"नहीं, बेवकूफ लड़की," अलीसिया ने उत्तर दिया, "मैंने ही उससे प्रेम-चर्चा छेड़ी थी। मैंने तो उससे विवाह करने का भी प्रस्ताव किया था लेकिन उसने कहा कि मैं अपनी पसंद को लेकर नाचती फिर सकती हूँ। यही शब्द थे। मैं तो कहूँगी कि उसमें प्रियता से अधिक स्पष्टता है। लेकिन अब बच्चो, बुद्धिमत्ता के लिए यात्रा शीघ्र आरम्भ कर दो। क्या हमें फिर एक बार किसी वादी में होकर जाना पड़ेगा या सीधे ही हालीवुड चलेंगे ?"

"क्यों," डिक ने कहा, "मेरी तो हार्दिक इच्छा है कि मुझे चढ़ने को घोड़ा मिल जाए। मेरी तो सारी देह पिटी हुई-सी हो गई है। इन अन्तिम दिनों में तो किसी न किसी तरह मेरे सारे शरीर में खराशें आती रही हैं। अगर युद्ध के घोष को सुनकर ही सब लोग भाग खड़े हुए होंगे, तो इधर-उधर उनका खोजना कितना व्यर्थ होगा। अभी भी नौ नहीं बजे हैं। केवल तीन मील यहाँ से हालीवुड होगा। बर्फ काफ़ी सख्त है, और उस पर आराम से चला जा सकता है। आसमान में चांद भी साफ़ है; कैसा रहे अगर हम इसी समय यात्रा आरम्भ कर दें।"

"मान लिया," अलीसिया चिल्लाई, लेकिन जोना अपने प्रेमी से चिपक गई। तब उस शारदीय चांद की रोशनी में बर्फ से ढकी हुई वादियों से होते हुए और पतझड़े कुंजों से होते हुए वे लोग यात्रा पर चल पड़े। डिक और जोना एक दूसरे का हाथ पकड़े प्रसन्नता के लोक में विचरण करते चल रहे थे। और उनकी खुश मिजाज़ साथिन जो अपने दुःख को अब बिलकुल भूल गई थी, एक या दो क़दम पीछे उनकी खामोशी को तोड़ती और उनके भविष्य तथा संयुक्त-जीवन के अनेक सुखद चित्र खींचती आगे बढ़ रही थी।

हालाँकि दूर जंगल में अभी तक हथियारों की झंकार सुन पड़ती थी, और टन्सटाल जंगल में पीछा करने वालों की आहट अभी स्पष्ट होकर संकट की

चेतावनी दे जाती थी किन्तु यह युवावृन्द बचपन से ही युद्ध के वातावरण में पले थे और अभी-अभी इतने विशाल खतरों में से निकलकर आए थे कि उनके दिलों में भय अथवा दया की भावना का पैदा होना इतना आसान न था। अपने दिलों में यह विश्वास करके कि लड़ाई की आवाजें उत्तरोत्तर धीमी पड़ती जा रही हैं—उन्होंने अपनी यात्रा में आनन्द लेना प्रारम्भ कर दिया था। अलीसिया का कहना था कि वह लोग एक वरयात्रा पर जा रहे हैं। वस्तुतः वह इतने प्रसन्न थे कि न तो जंगल की दम घोटने वाली खामोशी, और न हाड़-मांस को जमा देने वाली सर्दी का उन्हें भान था। हर्ष और आह्लाद के उस वातावरण में उन्हें किसी प्रकार भय छू भी नहीं सकता था।

आखिरकार एक बहुत ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर उन्होंने हालीवुड को देखा—जोकि एक परित्यक्त घाटी के समान दिखाई देता था। इस जंगल के गिर्जाघर की विशाल खिड़कियाँ, उनमें चमकने वाली मशालें और मोमबत्तियाँ, उसकी आसमान में उठी हुई ऊँची चोटी और गुम्बद सभी चीजें साफ़ दिखाई दे रही थीं; चन्द्रमा के प्रकाश में सबसे ऊँची चोटी पर का स्वर्ण-सौंध बड़ी तेज़ी से जगमगा रहा था। खुली हुई घाटी में उसके चारों ओर कैम्प-फायर दहक रही थी और आस-पास एक बड़ी संख्या में झोपड़ियाँ छितराई हुई थीं। इस विशाल दृश्यावली के बीच से बर्फ से जमी नदी बलखाती हुई दिखाई पड़ती थी।

"धर्म की सौगन्ध," रिचर्ड ने कहा, "लार्ड फॉक्सम के लोग अभी तक कैम्प लगाए पड़े हैं। हमारे एलची को निश्चय ही भूल लग गई है। यह तो और भी अच्छा है। हमारे पास सर डेनियल का मुकाबला करने के लिए ताकत है।"

लेकिन जिस कारण से लार्ड फॉक्सम के लोग कैम्प डाले पड़े थे, वह कारण डिक के द्वारा निश्चित किए गए कारण से भिन्न था। उन्होंने शोरबी की तरफ़ कूच तो किया था किन्तु तत्काल ही एक दूसरे एलची ने आकर यह खबर दी थी कि वह अभी वहीं पड़े रहें और शोरबी से भागने वालों का सफ़ाया करते रहें और यार्क सेना के इतने निकट रहें कि यथाअवसर उसका प्रयोग किया जा सके। रिचर्ड आव ग्लौसेस्टर युद्ध को समाप्त करके और उस प्रदेश के शत्रुओं का सफाया करके अपने भाई से मिलने चल पड़ा था और लार्ड फॉक्सम के लोग ज्योंही अपना काम खत्म करके आए, त्योंही रिचर्ड भी चर्च के सामने

अपने घोड़े की लगाम फेंकता हुआ दिखाई दिया। इस महान आगन्तुक के स्वागत में ही चर्च की खिड़कियों में वह रोशनी की गई थी। और जिस समय डिक अपनी साथिनों को लेकर वहाँ पहुँचा तो चर्च की ओर से एक शानदार भोज उन्हें दिया जा रहा था।

डिक अपनी इच्छा के प्रतिकूल उधर ले जाया गया। ग्लौसेस्टर थकान से अभिभूत अपनी भयावह मुखाकृति को कोहनी पर टिकाकर एक ओर झुका हुआ था। लार्ड फॉक्सम अपने आधे अच्छे हुए जख्म को लिए बाईं ओर एक प्रतिष्ठित स्थान पर बैठा हुआ था।

"कहिए सर" रिचर्ड ने पूछा, "क्या सर डेनियल का सिर आप ले आए हैं।"

"माई लार्ड ड्यूक," डिक ने साहस के साथ परन्तु भारी दिल से कहा, "मेरा सौभाग्य तो अपनी कमान के साथ लौटने का भी नहीं हुआ। मैं बुरी तरह पिट गया हूँ।"

ग्लौसेस्टर ने क्रोध की दुर्धर्ष दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"मैंने तुम्हें पचास पैदल योद्धा दिए थे।" उसने कहा।

"माई लार्ड ड्यूक, मेरे पास केवल पचास हथियार-बन्द आदमी थे", युवक नाइट ने उत्तर दिया।

"यह कैसे हुआ", ग्लौसेस्टर ने कहा, "उसने मुझसे पचास पैदल सैनिक माँगे थे।"

"आपको सम्भवतः यह रुचिकर न हो माइ लार्ड" कैट्सबी ने अदब से कहा, "पीछा करने की दृष्टि से हमने उन्हें पचास घुड़सवार दिए थे।"

"ठीक तो है", रिचर्ड ने उत्तर दिया, "शैल्टन तुम जा सकते हो।"

"ठहरो", लार्ड फॉक्सम ने कहा, "मेरी तरफ़ से भी इस युवक पर एक काम सौंपा गया था। शायद उसमें इसने अधिक सफलता प्राप्त की हो। मास्टर शैल्टन क्या तुम उस युवती को पा सके हो?"

"मैं देवताओं का आभारी हूँ", डिक ने कहा, "वह घर में है!"

"क्या यहाँ तक, तब तो माई लार्ड" फॉक्सम ने कहा, "कल आपकी शुभेच्छा से हम लोग, सेना के कूच करने से पहिले एक विवाह सम्पन्न करेंगे! यह तरुण सज्जन······"

"तरुण नाइट", कैट्सबी ने टोकते हुए कहा।

"क्या आप कहते हैं सर विलियम", लार्ड फॉक्सम ने पूछा।

"मैंने उसकी शानदार सेवाओं के लिए स्वयं अपने हाथ से उसकी छाती पर नाइटहुड का पदक लगाया था", ग्लौसेस्टर ने कहा, "उसने दो बार एक बहादुर की तरह मेरी सेवा की। उसमें बाहुबल और शौर्य की कमी नहीं, उसका दिमाग एक फौलादी आदमी का नहीं है। वह उन्नति नहीं कर सकेगा, लार्ड फ़ॉक्सम। समर-क्षेत्र में वह हमेशा बहादुरी से लड़ेगा लेकिन उसका दिल मुर्ग़ जैसा है; तथापि अगर उसे शादी करनी ही है, तो मेरी के नाम पर उसकी शादी कर दीजिए और किस्सा खत्म कीजिए।"

"नहीं वह बहुत ही बहादुर युवक है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ", लार्ड फॉक्सम ने कहा, "तब आप निश्चिन्त रहें सर रिचर्ड, मैंने मास्टर हेमले से यह मामला तै कर लिया है और कल तुम्हारा विवाह हो जाएगा।"

इतना सुनकर डिक ने यही उचित समझा कि वह वहाँ से हट जाए। लेकिन उसके मस्तिष्क में अपना अगला कदम निश्चित भी नहीं हुआ था कि एक आदमी दौड़ता हुआ आया और चर्च के कर्मचारियों की भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ आया और अपने घुटनों के बल बैठकर ड्यूक से प्रार्थना करने लगा :

"फ़तह माई लार्ड", वह चिल्लाया।

और इसके पूर्व कि डिक अपने अतिथि-गृह में प्रवेश करता—जो कि माई लार्ड फॉक्सम ने उसके लिये बनवाया था, सैनिक लोग अपने डेरों में आग के चारों ओर आनन्द मनाने लगे थे। क्योंकि उसी दिन लगभग २० मील की दूरी पर लंकास्टरों को एक और भारी पराजय दी गई थी।

३१

अगले दिन सूरज निकलते ही डिक लार्ड फॉक्सम के तोशकखाने से पोशाक लेकर, अच्छी तरह वस्त्र धारण करके और जोना की खैर-खबर लेकर घूमने के लिए बाहर निकल गया ताकि अपने असन्तोष को दूर कर सके ।

कुछ देर तक वह सैनिकों के मध्य विचरता रहा, जो कि पौ फटने के पूर्व ही अपने शस्त्रों को साफ़ करके धारण करने लगे थे, लेकिन शनैः-शनैः वह घूमता हुआ बाहर खेतों की ओर निकल गया । वह शीघ्र ही चौकी को पार कर गया और जमे हुए जंगल में पहुँचकर सूर्य के अच्छी तरह उदय होने की प्रतीक्षा करने लगा ।

उसके विचारों में इस समय शान्ति और सुख दोनों वर्तमान थे । ड्यूक की कृपा के प्राप्त होने पर भी उसने उसे अपने हृदय में इतना स्थान न दिय था कि उसकी अकृपा पर वह दुःखी होता और अब जबकि जोना उसे पत्नी के रूप में मिल गई थी और माई लार्ड फॉक्सम का संरक्षण मिल रहा था तो उसे अपना भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल दिखाई देने लगा और व्यतीत काल में ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे लेकर वह अफसोस करता ।

इसी प्रकार विचारों में डूबता-उतराता वह इधर-उधर घूमता फिर रहा था । प्रातःकाल का प्रकाश ऊपर उठने लगा । पूर्व में रंगीनी छा गई थी और जमे हुए वर्फ से टकरा कर काटने वाली ठण्डी हवा का एक झोंका भी उसे आकर छू गया था । वह घर आने के लिए पीछे मुड़ा ही था कि एक वृक्ष के पीछे उसे कोई आकृति दिखाई दी ।

"खड़े हो जाओ !" उसने ललकारा, "कौन हो ?"

वह आकृति ओट से बाहर निकल आई और गूँगे आदमी की तरह हाथ हिलाने लगी। वह किसी धर्मशास्त्री की तरह वस्त्र धारण किए हुए थी। हुड मुँह पर पड़ा हुआ था। डिक ने निमिषमात्र में पहचान लिया कि सर डेनियल के अतिरिक्त वह और कोई दूसरा व्यक्ति हो नहीं सकता।

अपनी तलवार खींचकर वह उसकी ओर लपका और नाइट अपनी बग़ल में हाथ डालकर किसी अस्त्र को हाथ में थामकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा।

"वेल डिकेन," सर डेनियल ने कहा, "क्या करना चाहते हो तुम? क्या भाग्य के मारे हुए को और भी मारना चाहते हो?"

"मैंने तुम्हारा जीवन लेने के लिए कभी कोई प्रयत्न नहीं किया," युवक ने उत्तर दिया, "जिस समय तक तुमने मेरे जीवन पर आँख नहीं लगाई थी, मैं तुम्हारा मित्र था, लेकिन तुमने ही स्वार्थवश मेरी ज़िन्दगी पर क्रूर दृष्टि डाली।"

"नहीं, आत्मरक्षा की दृष्टि से," नाइट ने उत्तर दिया, "और अब मेरे बच्चे, इस युद्ध का समाचार मेरे ही वन में उस कुबड़े शैतान की उपस्थिति ने मेरी असमर्थता को और भी तीखा बना दिया है। मैं हालीवुड में शरण ग्रहण करने जा रहा हूँ। वहाँ से विदेश चला जाऊँगा। जो कुछ भी साथ ले जा सकूँगा उससे बर्गण्डी या फ्रान्स में फिर से जीवन आरम्भ करने की चेष्टा करूँगा।"

"आप हालीवुड जाने की चेष्टा न करें!" डिक ने कहा।

"क्यों, वहाँ मैं क्यों नहीं जा सकता?" नाइट ने पूछा।

"आप देखें सर डेनियल, आज मेरी शादी का दिन है।" डिक ने कहा, "और वह सूर्य पूर्व में उदय हो रहा है मेरे जीवन में एक ऐसे सौभाग्यशाली दिन का आविर्भाव करेगा जैसा आज तक मैंने कभी नहीं जाना। तुम्हारा जीने का अधिकार अब समाप्त हो चुका है—दो कारणों से—एक तो मेरे पिता का जीवन लेने के लिए और दूसरे स्वयं मेरे जीवन पर प्रयत्न करने के अपराध में। लेकिन मैंने स्वयं पाप किए हैं; मैंने अनेक लोगों के जीवन नष्ट होने में सहायता दी है। इसलिए आज के पवित्र दिन मैं न तो वधिक का काम करूँगा और न न्यायाधीश का। चूँकि तुमने शैतान का काम किया है मैं तुम पर हाथ नहीं डालूँगा। और चूँकि तुम शैतान थे, मेरी तरफ़ से तुम जहाँ चाहो वहाँ चले

जाओ। भगवान् से क्षमा माँगो। मैंने अपनी तरफ़ से तुम्हें क्षमा किया। लेकिन हालीवुड जाने की बात बिलकुल दूसरी है। मैंने यार्कों के लिए शस्त्र धारण किए हैं और मैं उनके मध्य किसी भी जासूस की उपस्थिति सहन नहीं कर सकूँगा। और यह विश्वास कर लो कि यदि तुमने एक कदम के बाद दूसरा कदम उस दिशा में उठाया तो पास वाली चौकी को खतरे का संकेत कर दूँगा और तुम तत्काल बन्दी बना लिए जाओगे।"

"तुम मेरा मखौल उड़ाते हो," सर डेनियल ने कहा, "हालीवुड से बाहर मेरे प्राण सुरक्षित नहीं हैं।"

"मुझे इसकी चिन्ता बिलकुल भी नहीं है," रिचर्ड ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें, पूर्व, पश्चिम अथवा दक्षिण कहीं भी जाने की इजाजत दे सकता हूँ लेकिन उत्तर की ओर जाने की नहीं। जाओ, और अब लौटने की कोशिश मत करना। क्योंकि तुम्हारे जाने के बाद ही मैं तुम्हारे बारे में हर चौकी पर ख़बर भेज दूंगा और इतनी तत्परतापूर्वक चौकसी की जाएगी, कि अगर तुमने इधर आने की चेष्टा की तो बस सर्वनाश ही तुम्हारे सामने उपस्थित होगा।"

"तुम मुझे सर्वनाश के मुँह में ढकेलते हो," सर डेनियल ने उदास होकर कहा।

"मैं तुम्हें सर्वनाश के मुँह में नहीं ढकेलता।" रिचर्ड ने उत्तर दिया, "लेकिन अगर तुम्हें अपनी सामर्थ्य को मुझसे टकराने का हौसला हो तो मैं तैयार हूँ और हालाँकि अपने पक्ष के साथ यह मेरा विश्वासघात होगा किन्तु मैं, अपनी अकेली शक्ति के आधार पर तुम्हें चुनौती देता हूँ कि तुम अपना जोर आजमा देखो। मैं अपनी सहायता के लिए किसी दूसरे को पुकारूँगा नहीं। इस प्रकार मैं पवित्र भावना के साथ अपने पिता का प्रतिशोध तुमसे ले सकूँगा।"

"ठीक है," सर डेनियल ने कहा, "तुम्हारे पास कितनी लम्बी तलवार है और मेरे पास केवल छोटी-सीं खुखरी ही है।"

"मैं तो भगवान् पर भरोसा करता हूँ," डिक ने अपनी तलवार अपने पीछे बर्फ पर फेंकते हुए कहा, "और अगर तुम्हारा दुर्भाग्य तुम्हें प्रेरित करता है तो सामने आओ और उस परम सत्ता की उपस्थिति में तुम्हारी हड्डियाँ लोमड़ियों के भक्षण के लिए यहीं बिखेर देता हूँ।"

"मैंने तुम्हारी ताक़त को देख लिया है डिकन," सर डेनियल ने हँसने का